अर्हम् ।

प्रातःस्मरणीय पंजाबकेसरी न्यायाम्भोनिधि

श्रीविजयानन्दसूरिवरविरचित

॥ नवतत्त्वसङ्ग्रह ॥

तथा

उपदेशबावनी

संपादक

प्रो० हीरालाल रसिकदास कापडिया, एम् ए.

प्रथम संस्करण

वि सं १९८८] वीरसंवत् २४५८ [ई स १९३१

 आत्मसंवत् ३६

मूल्य रु ४

प्रकाशक-हीरालाल रसिकदास कापडिया
भगनवाडी, भूलेश्वर,
मुंबई



मुद्रक-रामचंद्र येसू शेडगे,
निर्णयसागर मुद्रणालय
२६।२८, कोल्भाट लेन, मुंबई

न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरिपट्टधर श्रीमहावीर जैन विद्यालय
मुंबई, श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला श्री वरकाणा पार्श्वनाथ
जैन विद्यालय (मारवाड) इत्यादि अनेक संस्थाओंके उत्पादक



आचार्य १०८ श्रीमद्वि[illegible]सूरिजी महाराज

जन्म वडोदरा	दीक्षा [illegible]	आचार्यपद लाहौर
सं. १९२७ कार्तिक सुदि २	सं. १९४३ वैशाख सुदि १३	सं. १९८१ मागशीर्ष सुदि ५.

पालनपुरनिवासी पारेख डाह्याभाई सूरजमल तरफथी तमना वहाला बंधु
स्व. झवेरी मणिलाल सूरजमलना स्मरणार्थ

निवेदन

संवेगी दीक्षा अंगीकार कर्या पहेला परन्तु ढुंढक (स्थानकवासी) मतना परित्यागनी भावनाना उद्भव अने स्थिरीकरण बाद प्रथम कृति तरीके जेनी विश्वविख्यात पंजाबकेसरी न्यायांभोनिधि श्रीविजयानन्दसूरीश्वरना वरद हस्ते 'विनोली' गाममां वि सं १९२७ मां रचना थई ते आ नवतत्त्वसंग्रहने प्रकाशित थयेलुं जोई कोई पण सहृदयने आनंद थाय ज तेमां पण वळी मारा सद्गत पिताना सतीर्थ्य अने धर्मस्नेही तेमज मारा प्रत्ये पूर्ण वात्सल्यभाव राखनारा आचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिए 'मोहमयी' नगरीमां अग्र स्थान भोगवता श्रीगोडीजी महाराजना उपाश्रयमां आपेला सदुपदेशनुं आ मुख्य परिणाम छे[1] ए स्मरणमां आववा मारा जेवाने अधिक आनंद थाय छे अगाउथी ग्राहक तरीके नाम नोंधावी नकल दीठ चार रुपिया श्रीविजयदेवसूर संघ (पायधुनी, मुंबई)नी पेढीमां भरी जे ग्राहकवर्गे आ प्रकाशनमां जे आर्थिक प्रोत्साहन आप्युं छे तेटले अंशे आ प्रकाशनरूप पुण्यात्मक कार्यमां तेमनो हिस्सो छे, एम मारे कहेवुं ज जोईए आ कार्यमां २५१ नकलो नोंधावनारी जे पहेल श्रीविजयदेवसूर संघनी पेढीना कार्यवाहकोए करी ते बदल तेमने धन्यवाद घटे छे विशेषमां प्रकाशन माटे रकम एकठी करी आपवामां ए पेढीना ते वखते मेनेजिंग ट्रस्टी तरीके श्रीयुत मणीलाल मोतीलाल मूळजी तरफथी ए पेढी द्वारा जे अनुकूळता करी आपवामां आवी तेनी आभारपूर्वक नोंध लेवामां आवे छे आ ग्रंथ घोरेला समये बहार पडवाना कार्यमां केटलाक अनिवार्य प्रसंगोने लईने जे विलंब थयो ते बदल हुं दिलगीर छुं आ ग्रंथ तैयार करवामां जे हस्तलिखित प्रति मने काम लागी छे ते झंडियाला गुरु (Jandiala Guru) ना भंडारनी ७४ पत्रनी छे तेमज ते कर्ताए स्वहस्ते लखेली जणाय छे एमां पीळी हरताळनो केटलेक स्थळे उपयोग करायो छे अने कोईक स्थळे ग्रन्थकारे पोते ते सुधारेली जोवाय छे आ प्रति मने मेळवी आपवानुं जे स्तुत्य कार्य श्रीविजयवल्लभसूरिए कर्युं ते साहित्यप्रचार अंगेनी तेमनी सक्रिय सहानुभूतिना प्रतीकरूप छे एम कह्या विना नहि चाले आ प्रमाणे आ ग्रंथना प्रकाशनकार्यमां तेमनी तरफथी जे विविध प्रकारनो सहकार मळ्यो छे ते बदल हुं तेमनो अत्यंत ऋणी छुं एना स्मरणलेश तरीके आ संस्करणमां तेमनी प्रतिकृतिने सानंद अग्र स्थान आपुं छुं दक्षिणविहारी मुनिराज श्रीअमरविजयना विद्वान् शिष्य मुनि श्रीचतुरविजये आ ग्रन्थना १३६ पृष्ठ सुधीनां द्वितीय वेळाना शोधनपत्रोनी तेमना उपर मोकलायेली एकेक नकल तपासी मोकली छे ते बदल तेमनो सानंद उपकार मानवामां आवे छे.

---

1 आ संबंधमां श्रीविजयवल्लभसूरि कहे छे के–'चौमासे बाद हुशिआरपुरसे विहार करके दिल्ली शहर तरफ गये, और संवत् १९२४ का चौमासा, दिल्लीसे विहार करके जमना नदीके पार "विनोली" गाममे जा किया; जहां भी कितनेही लोकोने सनातन जैनधर्मका श्रद्धान अंगीकार किया इस चौमासेमें श्रीआत्मारामजीने "नवतत्त्व" ग्रंथ बनाना शुरू किया संवत् १९२५ का चौमासा श्रीआत्मारामजीने "बडौत" गाममें किया; जहां "नवतत्त्व" ग्रंथ समाप्त किया, जिस ग्रंथको देखनेसेंही ग्रंथकर्त्ताका बुद्धिवैभव मालुम होता है"

आ टिप्पणमां ग्रंथ 'बडौत मां सं १९२५ मां पूर्ण थयानो जे उल्लेख छे ते विसंवादी छे आ संबंधमां श्रीविजयवल्लभसूरिनुं सादर लक्ष्य खेंचतां तेओ सूचवे छे के 'मने जेवुं याद रहेल तेवुं लखायेल, कारणके आचार्यश्रीना स्वर्गवास पछी जीवनचरित्र लखवामां आवेल छे एथी स्खलना होवानो संभव छे माटे ग्रंथकार पोताना हस्तलिखित पुस्तकमां जे पोते ज संवत् लखे छे ते ज खरो समजवो"

2 जुओ "श्री आत्मानंद प्रकाश" (पु ३७, अं २, पृ ३१–३८) 3 एमनी शुभ नामावली अंतमां आपेली छे

नवतत्त्वसंग्रह ए नाम ज वही आपे छे तेम आ ग्रंथमां जीवादि नव तत्त्वोनुं स्वरूप आलेखवामां आव्युं छे, परंतु विशेषता ए छे के श्रीभगवतीसूत्र प्रमुख विविध आगमोना पाठोनी अत्र संकलना करवामां आवी छे अनेक मुद्दानी वस्तुओ यंत्ररूपे कोष्टक द्वारा रजु कराइ छे जेथी आ ग्रंथनी महत्तामां असाधारण वृद्धि थइ छे आ ग्रंथना कर्ताए चार विविधवर्णी चित्रो पडे एने अलंकृत कर्यो छे आ ग्रंथनी मुख्य भाषा हिंदी गणाय जोके केटलीक वार संस्कृत, प्राकृत अने गुजराती प्रयोगो एमां दृष्टिगोचर थाय छे, कोइक वेळा तो पंजाबी शब्दो पण नजरे पडे छे आवी परिस्थितिमां तेमज अतमां अतिशीघ्रताए आ ग्रंथ मुद्रित करावबो पड्यो तेथी मारे हाथे जो यथेष्ट संशोधनादि द्वारा आने पूर्ण न्याय न अपायो होय तो सहृदय साक्षरो क्षमा करशे एटली मारी तेमने विनति छे मूळ कृतिमांना आंतरिक स्वरूपमां भाग्ये ज स्वल्प परिवर्तन करवुं अने ते पण खास आवश्यकता होय तो ज करवुं एवी श्रीविजयवल्लभसूरिनी सूचना तरफ पण तेमनुं सविनय ध्यान खेंचीश आ ग्रंथमां कया कया विषयो आलेखाया छे तेनुं निरीक्षण करवा मारी पाठकमहोदयने विशिष्ट विनति छे मने पोताने तो एम स्फुरे छे के आ ग्रंथमां अतिसूक्ष्म वस्तुओनी भाषा द्वारा प्रथम ज गुंथणी थइ छे एटले जेमने आगमो जोवाजाणवानो शुभ प्रसंग मळ्यो न होय तेमने आमांथी घणुं नवुं जाणवानुं मळशे

विशेषमां उपदेशबावनी प्रसिद्ध करवानुं वचन अपायुं हतुं नहि, छतां श्रीविजयवल्लभसूरिनी सूचनाने मान आपी ते सुरम्य तेमज सुश्लिष्ट पद्यमय लघु ग्रन्थने पण अत्र स्थान आपवामां आव्युं छे

ग्रन्थप्रणेतानी तेमज तेमना प्रथम शिष्यरत्न स्व मुनिवर्य श्रीलक्ष्मीविजयनी प्रतिकृतिओ श्रीयुत लालचंद खुशालचंद (वालापुर) तरफथी, ग्रन्थकारना हस्ताक्षरनी तेमज प्रवर्तक मुनिराज श्रीकांतिविजयनी श्रीयुत दोसी कालीदास सांकलचंद (पालनपुर) तरफथी, शांतमूर्ति मुनिराज श्रीहंसविजयनी श्रीयुत कांतिलाल मोहनलाल (पालनपुर) तरफथी, स्व मुनिवर्य श्रीहर्षविजयनी लाला मानिकचंद छोटालाल दुग्गड (गुजरांवाला) तरफथी अने श्रीविजयवल्लभसूरिनी श्रीयुत डाह्याभाइ धरजमल तरफथी पूरी पाडवामां आवी छे ते बदल तेमने तेमज जेमणे ए कार्य माटे पोताना ब्लॉकोनो उपयोग करवा दीधो छे तेमने पण हार्दिक धन्यवाद घटे छे[3]

अंतमां आ निवेदनने बहु न लंबावतां आ ग्रंथना प्रणेताना जीवननी जे आछी रूपरेखा हवे पछी आलेखवामां आवे छे तेमांथी उद्भवता बोधदायक पाठो जीवनमां उतारवानुं सामर्थ्य प्रकटे एटली अभिलाषा पूर्वक विरमवामां आवे छे

गोपीपुरा, भूलेश्वर,
मुंबई
वीरसंवत् २४५७
भाद्रपद कृष्ण पंचमी

चारित्र्याकांक्षी
हीरालाल रसिकदास कापडिया

---

१ जुओ हस्तलिखित प्रतिना खास करीने पत्रांक–१६ ब, २१ ब ३३ ब, ३४ ब, ३७ अ, ५० अ, ५० ब, ५२ ब, ५३ अ, ५३ ब तथा ५४ अ आ चित्रोनुं मुद्रणकार्य चित्रशाळा मुद्रणालय (पुना)मां थयुं छे वळी लिथो तरीके एक फॉर्म पण त्यां ज तैयार करावायो छे

२ माता पिता एमने पोताना गुरुदेव तरीके सन्मानता हता

३ स्व श्रीविजयकमलसूरि तेमज उपाध्याय श्रीवीरविजयनी पण प्रतिकृतिओने अत्र सानंद स्थान अपात, किन्तु तेने लगता ब्लॉको मेळववा पूर्ण प्रयास करवा छतां ते न मळवाथी ए इच्छा सफळ थइ शकी नथी

श्रीयुत लालचंद खुशालचंद (नागपुर) तर्फसे गुरुभक्तिनिमित्ते



योगा भोगानुगामी द्विज भजन जनि शारदारक्ति रक्ता,
दिग्जेता जेतृजेतामतिनुतिगतिभि पूजितो जिष्णुजिहै ।
जीयाद्दायादयात्री खलबलदलनो लोल्लीलस्वलज्ज
केदारौदास्यदारी विमलमधुमदोद्दामधाम प्रमत्त ॥

Lak hm Art P mb 8

ग्रन्थप्रणेतानी जीवनरेखा

आर्हत शासनना शृङ्गाररूप, अने अमूल्य ग्रन्थोना विधाता, जैनाचार्य न्यायाम्भोनिधि श्रीविजयानन्द सूरीश्वरनु रोचक, सार्थक अने बोधदायक जीवनचरित्र अत्यार सुधीमा विविध स्थळेथी अनेक विबुधोने हाथे आलेखायेलु होवा छता आ सर्वेश्वर महात्माना गुणानुवाद गाइ मारा जीवननी क्षणोने सफळ करु एवी अभिलाषाथी तेमज आ ग्रन्थनु संपादनकार्य स्वीकारती वेळा ग्रन्थप्रणेतानी जीवन-दिशा दर्शाववानी करेली प्रतिज्ञाना पालनार्थे हु मारी मन्द मति अनुसार आ महामंगलकारी कार्यमा प्रवृत्त थाउ छु आ प्रसिद्ध जैन महर्षिनो जन्म आजथी ९४ वर्ष उपर एटले वि स १८९३ ना चैत्र मासना शुक्ल पक्षमा प्रतिपदा गुरुवारे, पजाबना जिल्ला फिरोजपुरनी तहसील जीरामा आवेला 'लेहरा' गाममा थयो हतो 'कपूर ब्रह्मक्षत्रिय' जातिना अने सामान्य स्थितिना गणेशचन्द्रनी धर्मपत्नी रूपादेवीने एमनी माता थवानो अद्वितीय प्रसंग प्राप्त थयो हतो आ गुणज्ञ दपतीए आत्माराम एवु एमनु शुभ नाम पाडी आनद अनुभव्यो हतो जन्मसमयथी ज एमना सौन्दर्यने अलौकिकता वरेली हती एमना वदन-कमलना दक्षिण भागमांनु रक्तिमापूरित चिह्न सुवर्णभूमिकामा पद्मराग मणिना जेवु कार्य करतु हतु एमना पिताश्री विशिष्ट प्रकारनी विद्वत्ताथी विभूषित न हता तेमज एमना जन्मस्थळमां कोइ पाठशाळा पण न हती, तेथी बाल्यक्रीडामा लगभग दश वर्ष एमने व्यतीत करवां पड्या एवामां एक ग्रामीण पडित पासे एमने हिंदी भाषानो अभ्यास करवानी तक मळी परंतु शिक्षानी प्रारंभिक दशामा ज पिता परलोकवासी थया, जेथी त्यार बाद एमना पिताना 'जीरा' निवासी अने 'ओसवाल' जातीय सन्मित्र जोधामल्ल एमने पोताना गाममा अभ्यासार्थ लइ गया आ वखते एमनी उम्मर चौद वर्षनी हती पिताना सदाना वियोगे एमना विचारोमा पुष्कळ परिवर्तन पेदा कर्यु पदार्थोनी यथार्थ स्थितिनु एमने भान थवा लाग्यु वैराग्यरसथी एमनु हृदयक्षेत्र रगायु अने एणे जीवनपलटानु कार्य कर्यु 'जीरा'मा ढुंढक पथना साधुओनी साथेना विशेष परिचयथी एमणे १७ वर्षनी सुकुमार वये, ए फिरकाना श्रीयुत जीवनराम साधु पासे 'मालेरकोटला'मां ढुढक मतनी दीक्षा अगीकार करी भोगी मटी एओ योगी थया आ प्रमाणे एमनी स्थितिमां—आत्मोन्नतिना क्षेत्रमा परिवर्तन थयु, परंतु नाम तो तेनु ते ज राखवामा आव्यु

एमनी प्रतिमानो प्रभाव एटलो बधो हतो के तेओ रोज त्रणसे श्लोको कठस्थ करी शकता आथी एमणे टुक समयमा 'ढुढक' मतने मान्य बत्रीसे सूत्रो कठस्थ करी लीधां. वीस वर्षनी उम्मरमा तो 'ढुढक' मतनां रहस्यभूत तत्त्वोथी एओ पूर्ण परिचित बनी गया. थोडा वखत पछी 'रोपड'निवासी पडित श्रीसदानद अने 'मालेरकोटला'ना वासी पडित श्रीअनतराम पासे एमणे व्याकरणनो अभ्यास कर्यो. त्यारबाद 'पट्टी'निवासी पडित श्रीआत्माराम पासे न्याय, सांख्य,

---

१ आ सबधमां मुनिरत्न श्रीवल्लभविजय (अत्यारे श्रीविजयवल्लभसूरि तरीके ओळखाता)ने हाथे आलेखायेलु अने तत्त्वनिर्णयप्रासादमां प्रसिद्ध थयेलु जीवनचरित्र विशेषत मननीय जणाय छे २ एमनी जन्मकुडळी माटे जुओ तत्त्वनिर्णय० (पृ १५) ३ एना वशवृक्ष माटे जुओ तत्त्वनिर्णय० (पृ ८४)

वेदान्तादि दर्शनशास्त्रोनु अध्ययन करवानी एमने सोनेरी तक मळी. विविध दार्शनिक साहित्य तेमज व्याकरणादिनो अभ्यास थता यथार्थ सत्यनु एमने दर्शन थयु आथी खोटी रीते मूर्तिपूजादिनो अपलाप करनारा दुढक मतनो एमणे परित्याग कर्यो केटलाक कदाग्रही स्थानकवासी साधुओए अने गृहस्थोए एमने हेरान करवामा कचास न राखी, परतु ए बधा कष्टो तेओ समभावे निर्भयतापूर्वक सहन करी गया, केमके "सत्ये नास्ति भय क्वचित्" ए वाक्य उपर एमने पूर्ण श्रद्धा हती एमने एवो अटल विश्वास हतो के जो हु साचे मार्गे चालु छु तो समग्र ब्रह्माण्डमा एवी कोइ शक्ति नथी के जे मने नाहक सतावी शके स्थाने स्थाने जैन धर्मनो विजयडको वगाडता अने अनेक स्त्रीपुरुषोने सन्मार्गे दोरवता एओ पजाबमाथी [1]१५ साधुओ साथे नीकळ्या अने श्रीअर्बुदाचळ, श्रीसिद्धाचळ (पालीताणा) वगेरे तीर्थोनी यात्रा करी 'अमदावाद'मा वि स १९३२ मा पधार्या आ समये वेष तो दुढक साधुनो हतो केवळ मुखवस्त्रिका उतारी नाखवामा आवी हती अहीं गणि श्रीमणिविजय महाराजश्रीना शिष्य मुनिरत्न गणि श्रीबुद्धिविजय (बुटेरायजी महाराजश्री) पासे एमणे तपागच्छनो वासक्षेप लीधो अने एमने गुरु तरीके स्वीकार्या आ समये एमनी उमर ३९ वर्षनी हती दीक्षासमये आनन्दविजय एवु एमनु नाम राखवामा आव्यु, परतु आत्मारामजी ए ज पूर्वेनु नाम विशेषत प्रचलित रह्यु एमनी साथे आवेला १५ साधुओ एमना शिष्य अने प्रशिष्य बन्या 'अमदावाद'थी विहार करी विविध तीर्थस्थानोनी यात्रा करता, मतातरीय विद्वानो साथे शास्त्रार्थ करी तेमने निरुत्तर करता, जैन शासननी विजयपताका देशे देशे फरकावता, अने स्याद्वादमार्गना यश पुजनो विस्तार करता तेओ वि स १९४३मा 'सिद्धाचळजी' आवी पहोंच्या बहु जनोनी प्रार्थनाथी एमनु चातुर्मास अहीं ज थयु एमनो सत्यपूर्ण अने सारगर्भित [2]उपदेश, एमनु निर्मळ अने निष्कलक चारित्र, एमनी अद्भुत प्रतिभा, विश्वधर्म बनवानी योग्यतावाळा जैन धर्मना प्रचार माटेनी एमनी तालावेली इत्यादि एमना सद्गुणोथी आकर्षाइने एमना दर्शन-वन्दनार्थे तथा तीर्थयात्राना निमित्ते विविध देशोमाथी आवेला लगभग ३५००० सज्जनो समक्ष देवोने पण दुर्लभ अने अनुमोदनीय 'आचार्य' पदवी श्रीजैन सघे एमने उत्साह अने आनदपूर्वक अर्पी अने एमनु श्रीविजयानन्दसूरि एवु नाम स्थाप्यु वि स १९४५ मा एमणे 'महेसाणा'मा चातुर्मास कर्यु आ समये संस्कृतज्ञ डॉ ए एफ् रुडॉल्फ हॉर्नेल् नामना गौराग महाशये एमने जैन धर्म सबधी

---

१ एमना नामो नीचे मुजब छे—

(१) विश्नचद (लक्ष्मीविजय), (२) चपालाल (कुमुदवि), (३) हुकमचंद (रंगवि०), (४) सलामतराय (चारित्रवि०), (५) हाकमराय (रत्नवि०), (६) खूबचद (संतोषवि) (७) घनैयालाल (कुशलवि०), (८) तुलसीराम (प्रमोदवि०) (९) कल्याणचद (कल्याणवि०), (१०) नीहालचद (हर्षवि), (११) निधानमल (हीरवि०), (१२) रामलाल (कमलवि) (१३) धर्मचद (अमृतवि०), (१४) प्रभुदयाल (चद्रवि०) अने (१५) रामजीलाल (रामवि)

अत्र कौंसमा सूचवेलां नामो सवेगी दीक्षा लीधा बाद पाडवामा आव्यां हतां

२ ज्यारे एओ उपदेश आपता त्यारे कोइ प्रश्न करतो ते तेओ पूर्ण गभीरताथी सांभळता अने तेनो शात चित्त संतोषकारक उत्तर आपता प्रश्नकार स्वधर्मी होय के परधर्मी होय, जिज्ञासु होय के दिखळी होय परंतु तेनु दिल दुभाव्या विना तओ तेने संतोष पमाडी निरुत्तर बनावता आ सबधमा जुओ सरस्वती मासिक (भा १६, खण्ड १) तेमज एमांथी उद्धृत सक्षिप्तजीवन (पृ ११-१५)

केटलाक प्रश्नो 'अमदावाद'निवासी श्रावक शाह मगनलाल दलपतराम द्वारा पूछ्या एनो उत्तर मळतां ए महाशयने पूर्ण संतोष थयो त्यारबादना प्रश्नोत्तरोनु सक्रिय परिणाम शु आव्यु तेना जिज्ञासुने डॉ. हॉर्नेलने हाथे संपादन थयेला सटीक उपासकदशांगमां ए विद्वाने जे कृतज्ञताप्रदर्शक निम्नलिखित पद्यो आ सूरिवरने उद्देशीने रच्यां छे तेनु मनन करवा हु विनवु छु —

"दुराग्रहध्वान्तविभेदभानो !, हितोपदेशामृतसिन्धुचित्त ! ।
सन्देहसन्दोहनिरासकारिन् !, जिनोक्तधर्मस्य धुरन्धरोऽसि ॥ १ ॥
अज्ञानतिमिरभास्कर-मज्ञाननिवृत्तये सहृदयानाम् ।
आर्हततत्त्वादर्श-ग्रन्थमपरमपि भवानकृत ॥ २ ॥
आनन्दविजय ! श्रीमन्नात्माराम ! महामुने ! ।
मदीयनिखिलप्रश्न-व्याख्यात ! शास्त्रपारग ! ॥ ३ ॥
कृतज्ञताचिह्नमिद, ग्रन्थसंस्करणं कृतम् ।
यत्नसम्पादितं तुभ्य, श्रद्धयोत्सृज्यते मया ॥ ४ ॥"

वि सं १९४८मां आ डॉ हॉर्नेल् महोदय एमना दर्शनार्थे 'अमृतसर' आव्या अहो तेमनी सुजनता ! वि सं १९४९मा 'चिकागो'मा भरावामा आवनार सर्वधर्मपरिषद्ने अलकृत करवानु एमने आमन्त्रणपत्र मळ्यु, प्रतिकृति तेमज जीवनचरित्र माटे पण अभ्यर्थना करवामा आवी परंतु नौकानो आश्रय लीधा विना 'अमेरिका' जवु अशक्य होवाथी, श्रीयुत वीरचद राघवजी गांधी बार ऍट् लॉ ए महाशयने पोतानी प्रतिकृति, सक्षिप्त जीवनचरित्र अने जैन सिद्धान्त विषयक निबध आपी पोताना प्रतिनिधि तरीके पसद कर्या थोडो वखत पासे राखी एमना सुवर्ण जेवा ज्ञानने श्रीविजयानन्दसूरिए सुगन्धनो योग अर्प्यो, 'मुबई'ना जैन संघे श्रीयुत गांधीने अमेरिका मोकल्या "The World's Parliament of Religions" नामना पुस्तकना २१ मा पृष्ठमां एमनी प्रतिकृति आपी निम्नलिखित उद्गारो मुद्रित कराया छे,—

"No man has so peculiarly identified himself with the interests of the *Jain* community as Muni *Ātmārāmji* He is one of the noble band sworn from the day of initiation to the end of life to work day and night for the high mission they have undertaken He is the high priest of the *Jain* community and is recognised as the highest living authority on *Jain* religion and literature by oriental scholars"

वि सं १९५२ ना जेठ मासनी सुद बीजे 'गुजरांवाळा' गाममा एओ आव्या. आ समये त्याना जैनोए एमनु अपूर्व स्वागत कर्यु ज्वराक्रान्त देह होवा छता एमणे धर्मोपदेश आप्यो, परंतु आ एमनो अंतिम उपदेश हतो हवे फरीथी 'भारत'वर्षना भाग्यमा आ महात्मानो प्रसनाद श्रवण करवानो सुप्रसंग मळे तेम न हतु सप्तमीनी रात्रिए नित्यकर्म समाप्त करी सूरिवर्य निद्राधीन बन्या एम करता थार वाग्यानो समय थयो आ वखते दशे दिशामा शान्तता अने निश्चलतानु साम्राज्य स्थपायेलु हतु कायर मृत्युमा एवी ताकात न हती के आ महर्षिना अखडित तेजनी ते सामे थइ शके

१ जे समये महाराजश्रीनो स्वर्गवास थयो तेवारे अष्टमी बेठी हती; एथी एमनी निर्वाणतिथि अष्टमी गणाय छे

आथी ते धीरे धीरे गुप्त रूपे पोतानी कुटिल जाळ पाथरी रह्यो हतो निर्भय सूरिवर तो क्यारना ए स्वस्थ बनी मृत्युनु स्वागत करवानी तैयारी करी रह्या हता आवे वखते पण एमना शरीरनी शोभा चन्द्र-कान्तिने हास्यास्पद बनावी रही हती एमना मुखमाथी 'अर्हन्' शब्दनो दिव्य ध्वनि नीकळी रह्यो हतो सामे बेठेलो शिष्यपरिवार आ सर्वोत्तम नादनु उत्सुक हृदये पान करी रह्यो हतो एटलामां समय पूरो थयो लो भाइ अब हम जाते है, अर्हन् एम कहेता कहेता ए सूरीश्वर स्वर्गे संचर्या मनोहर रात्रि भयानक रूपे परिणमी शात रस करुणरूपे परिवर्तन पाम्यो बीजे दिवसे एमना देहनो अग्निसंस्कार करवामां आव्यो आ प्रमाणे एमना स्थूल देहनो अस्त थयो, परतु साधुताना साचा आदर्शनी ए ज देह द्वारा आचरी बतावेल ज्योति तो सदाने माटे उदयवती बनी गइ

आ प्रात स्मरणीय सूरिवर्य विद्वानोना नि सीम प्रेमी हता [1]विद्याव्यासंगने लइने एमने हाथे बहु ग्रथोनो उद्धार थयो छे अनेक जनोने एमणे सन्मार्गी बनाव्या छे तेमा खास करीने 'पजाब' देश उपर एमनो पारावार उपकार छे ए देशने उद्देशीने एमने जैन धर्मना जन्मदाता तरीके संबोधी शकाय एमनी यश पताकारूप त्याना अनेक जैनमदिरो आजे पण आ वातनी साक्षी पूरी रह्या छे 'सिद्धाचल'मा एमनी पाषाणमयी प्रतिमा स्थापवामा आवी छे ए एमना प्रत्येना सज्जनोनो प्रेम जाहेर करे छे अमदावाद, पाटण, वडोदरा, जयपुर, अबाला, लुधियाना वगेरे स्थळे एमनी मूर्ति तेमज चरणपादुकाथी विभूषित बन्यां छे ए एमनी धर्मसेवानो प्रताप छे 'गुजरावाला' शहेरमा एमनी स्मृतिरूपे भव्य समाधिमदिर बनाव्यु छे ए त्यानी जनतानु मन एमनी तरफ केटलु आकर्षायेलु हतु ते सूचवे छे

जैन साहित्यने समृद्ध बनाववा तेमणे केवो सतत प्रयास कर्यो छे ए तेमनी नीचे मुजब तत्त्व-निर्णयप्रासादगत जीवनचरित्रने आधारे रजु कराती विविध कृतिओ कही रही छे —

(१) नवतत्त्वसग्रह सं १९२४ २५, (२) आत्मबावनी सं १९२७, (३) चोवीसजिनस्तवन सं १९३०, (४) जैनतत्त्वादर्श सं १९३७-३८, (५) अज्ञानतिमिरभास्कर स १९३९-४१, (६) सत्तरभेदी पूजा सं १९३९, (७) सम्यक्त्वशल्योद्धार सं १९३९-४१, (८) वीसस्थानक पूजा सं १९४०, (९) जैनमतवृक्ष सं १९४२, (१०) अष्टप्रकारी पूजा सं १९४३, (११) चतुर्थस्तुति-निर्णय (भा १) स १९४४, (१२) श्रीजैनप्रश्नोत्तरावली सं १९४५, (१३) चतुर्थस्तुतिनिर्णय (भा २) सं १९४८, (१४) नवपदपूजा सं १९४८, (१५) स्नानपूजा सं १९५० अने (१६) तत्त्वनिर्णयप्रासाद सं १९५१

अनमा एटलु ज निवेदन करीश के आत्मभावमा रमण करनार श्रीविजयानन्द सूरीश्वरनो जन्म साधक थयो छे जेमने एमना दर्शननो लाभ मळ्यो छे तेमनी नेत्रप्राप्ति सफळ थइ छे जेमने एमनो सुधामय उपदेश साभळवानी तक मळी छे तेमना कर्ण धन्यपात्र छे जे माताए आ सूरिरत्नने जन्म आप्यो तेमने सहस्रश धन्यवाद अने वन्दन घटे छे जे जैन संघे एमनु गौरव कर्यु छे ते विचक्षण सघने मारा प्रणाम छे जे 'भारत' भूमि आवा महात्माओनी जीवनभूमि बने छे ते बहुरत्ना वसुन्धरा सदा जयवती वर्तो

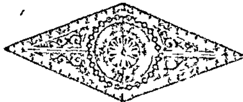
---

[1] सन्मतितर्क जेवा प्रौढ ग्रन्थनु एमने पठन कर्यु हतु एम मानवानां खास कारणो मळे छे

[2] [2] ... ढूंढीयाओने धर्ममार्गे चडाववा उपरांत एमणे केटलाए स्थानकवासी साधुओने पण जैन धर्मनी प्रशस्त नौकाना कर्णधार बनाव्या

[3] उपदेशबावनी ते आ ज होय एम जणाय छे

विषयानुक्रम



जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि (श्रीआत्मारामजी) महाराजके मुख्य शिष्य

१०८ श्रीमान् श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराज

जन्म (मारवाड) व पालित पुष्करणा ब्राह्मण स्वर्गवास १९४० पाली (मारवाड)



मुनिमहाराज श्रीहर्षविजयजी आचार्यमहाराज श्रीविजयकमलसूरिजी श्रीहंसविजयजी
महाराजजी के गुरुदेव प्रमुख के सब साधुओं के आद्य विद्यागुरु

बालापुर जिला आकोला (बराड) निवासी सेठ लालचंद खुशालचंदजी तरफसे गुरुभक्ति निमित्त



न्यायाम्भोनिधि-पञ्चनदोद्धारक-जैनाचार्य-१००८ श्रीमद्—

विजयानन्दसूरीश्वरविरचितः

॥ नवतत्त्वसङ्ग्रहः ॥

श्रीमत्सर्वज्ञाय नमः ।

शुद्धज्ञानप्रकाशाय, लोकालोकैकभानवे ।
नमः श्रीवर्धमानाय, वर्धमानजिनेशिने ॥ १ ॥

अथ नवतत्त्वसग्रह [1]लिख्यते. प्रथम 'जीव'तत्त्व लिख्यते—पन्नवणा पद १.

(जीवभेद)

नरकनाम—रत्नप्रभा १ शर्कर(कैरा)प्रभा २ वालु(का)प्रभा ३ पंकप्रभा ४ धूम्रप्रभा ५ तमा ६ तमतमा ७.*

पृथ्वीभेद—कृष्ण मृत्तिका १ नीली मट्टी २ [2]ऐवं पांच वर्णकी मट्टी ५ पाडु ६ पनग-धूल ७ कंकर ८ रेत ९ लवण १० [3]रांग ११ लोह १२ तांवा १३ सीसा १४ रूपा १५ सुवर्ण १६ हीरा १७ हरिताल १८ [4]सिंगरफ १९ मनसिल २० पारा २१ [5]मूगा २२ सोवीराजन २३ [6]भोडल २४ सर्व जातिके रत्न-पन्ना माणक आदि, सूर्यकांत आदि मणी इति.†

---

* "नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—रयणप्पभापुढविनेरइया १ सक्करप्पभा० २ वालुयप्पभा० ३ पंकप्पभा० ४ धूमप्पभा० ५ तमप्पभा० ६ तमतमप्पभा० ७" । (प्रज्ञा० सू० ३१)

† "सण्हबायरपुढविकाइया सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—किण्हमत्तिया १ नीलमत्तिया २ लोहियमत्तिया ३ हालिद्दमत्तिया ४ सुक्किलमत्तिया ५ पाडुमत्तिया ६ पणगमत्तिय ७, सेत्तं सण्हबायरपुढविकाइया" । (सू० १४) "खरबायरपुढविकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढवी १ य सक्करा २ वालुया ३ य उवले ४ सिला ५ य लोणूसे ६-७ । अय ८ तंब ९ तउ १० य सीसय ११ रुप्प १२ सुवन्ने १३ य वइरे १४ य ॥ १ ॥ हरियाले १५ हिंगुलए १६ मणोसिला १७ सासगंजणपवाले १८-२० । अब्भपडलब्भवालुय २१-२२ बायरकाए मणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जए २३ य रुयए २४ अंके २५ फलिहे २६ य लोहियक्खे २७ य । मरगय २८ मसारगल्ले २९ भुयमोयग ३० इंदनीले ३१ य ॥ ३ ॥ चंदण ३२ गेरुय ३३ हंसगब्भ ३४ पुलए ३५ सोगंधिए ३६ य बोद्धव्वे । चंदप्पभ ३७ वेरुलिए ३८ जलकंते ३९ सूरकंते ४० य ॥ ४ ॥" (प्रज्ञा० सू० १५)

---

१ लखाय छे । २ आ प्रकारे । ३ कलाई धातु । ४ हिंगलोक । ५ परवाळा । ६ अबरख ।

अप्काय—ओस १ पोला २ धूंयर ३ गैंडा ४ हरतणु ५ घर्षानो ६ समावे शीतल ७ समावे उष्ण ८ खारा पाणी ९ खट्टो पाणी १० लवणवत् खारा ११ वारुणसमुद्रोदग १२ खीरोदग १३ घृतोदग १४ इक्षुरसवत् १५ कूप आदि जलाश्रयना *

तेजस्काय—अगारा १ ज्वाला २ मुंमर ३ अर्ची ४ उंल्मुक ५ लोहपिंडमिश्रित ६ उल्कापातनी अग्नि ७ विजली ८ भ्रुभर ९ निर्घात अग्नि १० अरण आदि काष्ठ घसने सें उपनी ११ सूर्यकात मणीसे उपनी अग्नि १२ इत्यादि जाननी.†

वायु(काय)—दशो दिशना वायु १० उत्कलिका ११ मंडलि वायु १२ गुंजा १३ झखड १४ झंझा १५ सवर्तक वायु १६ घनवात १७ तनुवात १८ शुद्ध वायु १९ इत्यादि ज्ञेयम् ‡

वनस्पति प्रत्येक—आम्र आदि वृक्ष १ वैंगण आदि गुच्छा २ गुल्म–नवमल्लिका आदि ३ लता–चंपक आदि ४ वल्ली–कोहल आदि ५ पर्व–इक्षु आदि ६ तृण–दर्भ आदि ७ वलया–केतकी आदि ८ हरि(त)–वदुली प्रमृति ९ ओषधि सव जातना धान्य १० कमलादि ११ कुहण–भूमिस्फोट आदि १२.‖

अनंतकाय लिख्यते—हलदी १ आर्द्रक २ मूली ३ गाजर ४ आलू ५ पिंडालू ६ छेदे पछे (वाद) वधे ७ नवा अक्कुरा ८ कृष्ण कंद ९ वज्र कंद १० सूरण कंद ११ खेलूडा १२ इत्यादि. पंनवणापदात् ज्ञेय लक्षणम्.§

---

* "वादरआउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उस्सा १ हिमए २ महिया ३ करए ४ हर तणुए ५ सुद्धोदए ६ सीतोदए ७ उसिणोदए ८ खारोदए ९ खट्टोदए १० अंबिलोदए ११ लवणोदए १२ वारुणोदए १३ खीरोदए १४ घओदए १५ खोतोदए १६ रसोदए १७"। (प्रज्ञा० सू० १६)

† "वादरतेउक्काइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—इंगाले १ जाला २ मुमुरे ३ अच्ची ४ अलाए ५ सुद्धागणी ६ उक्का ७ विज्जू ८ असणी ९ णिग्घाए १० संघरिससमुट्ठिए ११ सूरकतमणिणिस्सिए १२"। (प्रज्ञा० सू० १७)

‡ "वादरवाउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—पाइणवाए १ पडीणवाए २ दाहिणवाए ३ उदीणवाए ४ उड्ढवाए ५ अहोवाए ६ तिरियवाए ७ विदिसीवाए ८ वाउब्भामे ९ वाउक्कलिया १० वायमंडलिया ११ उक्कलियावाए १२ मंडलियावाए १३ गुंजावाए १४ झंझावाए १५ संवट्टवाए १६ घणवाए १७ तणुवाए १८ सुद्धवाए १९"। (प्रज्ञा० सू० १८)

‖ "पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा—
रुक्खा १ गुच्छा २ गुल्मा ३ लता ४ य वल्ली ५ य पव्वगा ६ चेव।
तण वलय हरिय ओसहि जलरुह-कुहणा ७-१२ य बोद्धव्वा ॥ १ ॥" (प्रज्ञा० सू० २२)

§ "साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा—अवए १ पणए २ सेवाले ३ लोहिणी ४ मिहुत्थु ५ हुत्थिभागा ६ (य)। अस्सकन्नि ७ सीहकन्नी ८ सिउंढि ९ तत्तो मुसुंढी १० य ॥ १ ॥ रुरु ११ कुंडरिया १२ जीरु १३ छीर १४ विराली १५ तहेव किट्टीया १६। हालिद्दा

---

१ हिम। २ धूमस। ३ करा। ४ पृथ्वीने भेदीने तृणना अग्र भाग उपर रहेनारु पाणी। ५ जेम। ६ तणखा। ७ उबाडियुं। ८ आणवु। ९ आंबो। १० पन्नवणाना पदथी लक्षण जाणवुं।

बेइन्द्री—पूरा १ (पायु)कृम(मि) २ कुक्षिकृम ३ गडोला ४ गोरोमा ५ निकुरिया ६ मंगल ७ वसीमुख ८ सूचिमुख ९ गोजलोक १० जो(जलो)क ११ संख १२ लघु सख १३ कोडी १४ घोघे १५ सीप १६ गजाइ १७ चदणग १८ मातृवाहा १९ समुद्रलीख २० सबुक सखविशेष २१ नदियावर्त २२ इत्यादि जान लेना.*

तेइन्द्री—उपचिता १ रोहणी २ कुथुया ३ कीडी ४ उद्दंस माकड ५ दसक ६ उदेही ७ फलवेंटी ८ बीजवेंटी ९ जूका १० लीख ११ कानसिलाइ १२ कानखजूरा १२ 'पिसू १३ इद्रगोप १४ हस्तीसोंडा १५ सुरसली १६ तूरतुवक १७ चीचड.†

चतुरिन्द्री—अधक १ पोतिक कोच्छलीया २ माखी ३ डास ४ उडणा(उडणेवाले) कीडा ५ पतग ६ ढकुण ७ कुकुड ८ कुहण ९ नदावर्त १० सगरडा ११ कृष्ण पांखना १२ एव पांच वर्णनी पांखना १६ भमरा १७ भमरी १८ टीड १९ विछु २० जलविछु २१ गोवर माहिला कीडा २२ अक्षिवेद आख मे पडे २३ इत्यादि.‡

---

१७ सिंगबेरे १८ य आलुगा १९ मूलए २० इय ॥ २ ॥ कबूय २१ कन्नुक्कड २२ सुमत्तओ २३ वलई २४ तहेव महुसिंगी २५ । नीरुह २६ सप्पसुयधा २७ छिन्नरुहा २८ चेव बीयरुहा २९ ॥ ३ ॥ पाढा ३० मियवालुकी ३१ महुररसा ३२ चेव रायवत्ती ३३ य । पउमा ३४ माढरि ३५ दतीति ३६ चडी ३७ किट्टी ३८ त्ति यावरा ३९ ॥ ४ ॥ मासपण्णी ४० मुग्गपण्णी ४१ जीवियरसहे ४२ य रेणुया ४३ चेव । काओली ४४ खीरकाओली ४५ तहा भगी ४६ नही ४७ इय ॥ ५ ॥ किमिरासि ४८ भद्द ४९ मुच्छा ५० णगलई ५१ पेलुगा ५२ इय । किण्हे ५३ पउले ५४ य हढे ५५ हरतणुया ५६ चेव लोयाणी ५७ । कण्हे कदे ५८ वज्जे ५९ सूरणकदे ६० तहेव खल्लूरे ६१ । एए अणतजीवा जे यावन्ने तहाविहा ॥ ६ ॥" (प्रज्ञा० सू० २४)

साधारणनु लक्षण—

"चक्काग भज्जमाणस्स, गठी चुन्नघणो भवे । पुढविसरिसेण भेएण, अणतजीव वियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिराग पत्त सच्छीर ज च होइ निच्छीर । ज पि य पणट्ठसधि अणतजीव वियाणाहि ॥२॥" (सू० २५)

* "बेइदिया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—पुलाकिमिया १ कुच्छिकिमिया २ गडूयलगा ३ गोलोमा ४ णेउरा ५ सोमगलगा ६ वसीमुहा ७ सूइमुहा ८ गोजलोया ९ जलोया १० जालाउया ११ सखा १२ सखणगा १३ घुल्ला १४ खुल्ला १५ गुलया १६ खधा १७ वराडा १८ सोत्तिया १९ मुत्तिया २० कलुयावासा २१ एगओवत्ता २२ दुहओवत्ता २३ नदियावत्ता २४ सबुका २५ माइवाहा २६ सिप्पिसपुडा २७ चदणा २८ समुद्दलिक्खा २९" । (प्रज्ञा० सू० २७)

† "तेइदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—ओवइया १ रोहिणिया २ कुथू ३ पिपीलिया ४ उद्दसगा ५ उद्देहिया ६ उक्कलिया ७ उप्पाया ८ उप्पडा ९ तणहारा १० कट्ठहारा ११ मालुया १२ पत्ताहारा १३ तणवेंटिया १४ पत्तवेंटिया १५ पुप्फवेंटिया १६ फल वेंटिया १७ बीयवेंटिया १८ तेबुरणमिजिया १९ तओसिमिंजिया २० कप्पासट्ठिमिंजिया २१ हिल्लिया २२ झिल्लिया २३ झिंगिरा २४ किंगिरडा २५ बाहुया २६ लहुया २७ सुभगा २८ सोवत्थिया २९ सुयवेंटा ३० इदकाइया ३१ इदगोवया ३२ तुरुतुबगा ३३ कुच्छलवाहगा ३४ जूया ३५ हालाहला ३६ पिसुया ३७ सयवाइया ३८ गोम्ही ३९ हत्थिसोंडा ४०" । (प्रज्ञा० सू० २८)

‡ "चउरिंदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—अधिय १ पत्तिय

---

१ चांचड । २ धान्यमां उत्पन्न थतां लाल रंगनां जीवडां ।

पचेंद्री तिर्यंच—जलचर-मत्स्य आदि १ स्थलचर-गो आदि २ खेचर-हंस आदि ३ उरपर-सर्प आदि ४ भुजपर-गोह नकुल [1]गिलेरी किरली आदि ५ इति अलम्

मनुष्य—कर्मभूमिज १५ अकर्मभूमिज ३० अंतरद्वीपज ५६ (१०१) सम्मूर्छिम.*

भवनपति—असुरकुमार १ नागकुमार २ सुवर्णकुमार ३ विद्युत्कुमार ४ अग्निकुमार ५ द्वीपकुमार ६ उदधिकुमार ७ दिक्कुमार ८ वायुकुमार ९ स्तनितकुमार १०. [4]पंदरे परमाधार्मिक असुरकुमारभेद.

व्यंतर—पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गंधर्व ८.

जोतिषी—चंद्र, सूर्य, ग्रह ८८, नक्षत्र २८, तारे एवं पांच भेद जोतिषी.

---

२ मच्छिय ३ मसगा ४ कीडे ५ तहा पयंगे ६ य । ढंकुण ७ कुक्कड ८ कुक्कुह ९ नंदावत्ते १० य सिंगिरडे ११ ॥ १ ॥ किण्हपत्ता १२ नीलपत्ता १३ लोहियपत्ता १४ हालिद्दपत्ता १५ सुक्किल्लपत्ता १६ चित्तपक्खा १७ विचित्तपक्खा १८ ओहंजलिया १९ जलचारिया २० गंभीरा २१ णीणिया २२ तंतवा २३ अच्छिरोडा २४ अच्छिवेहा २५ सारंगा २६ नेउरा २७ दोला २८ भमरा २९ भरिली ३० जरुला ३१ तोट्टा ३२ विंछुया ३३ पत्तविच्छुया ३४ छाणविच्छुया ३५ जलविच्छुया ३६ पियंगाला ३७ कणगा ३८ गोमयकीडा ३९" । (प्रज्ञा० सू० २९)

* "मणुस्सा दुविहा प० तं०—समुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा प० तं०—कम्मभूमगा १ अकम्मभूमगा २ अंतरदीवगा ३ । अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा प० तं०—एगोरुया १ आभासिया २ वेसाणिया ३ णंगोली ४ हयकण्णा ५ गयकण्णा ६ गोकण्णा ७ सक्कुलिकण्णा ८ आयंसमुहा ९ मेंढमुहा १० अयोमुहा ११ गोमुहा १२ आसमुहा १३ हत्थिमुहा १४ सीहमुहा १५ वग्घमुहा १६ आसकण्णा १७ हरिकण्णा १८ अकण्णा १९ कण्णपाउरणा २० उक्कामुहा २१ मेहमुहा २२ विज्जुमुहा २३ विज्जुदंता २४ घणदंता २५ लट्ठदंता २६ गूढदंता २७ सुद्धदंता । सेत्तं अंतरदीवगा । (यादृशा एव यावत्प्रमाणा यावदन्तरालाः पश्चिमतो हिमवत्पर्वत पूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अष्टाविंशतिविधा अन्तर्द्वीपास्तादृशा एव तावत्प्रमाणा तावदन्तरालास्तनामान एव शिखरिपर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अपि, ततोऽत्र तुल्यसंख्यतया व्यक्तिभेदमनपेक्ष्य अन्तर्द्वीपा अष्टाविंशतिविधा एव विवक्षिता) अकम्मभूमिगा तीसविहा प० तं०—पंचहिं हेमवएहिं, पंचहिं हिरण्णवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पंचहिं देवकुरूहिं, पंचहिं उत्तरकुरूहिं । कम्मभूमगा पन्नरसविहा प० तं०—पंचहिं भरहेहिं, पंचहिं एरवएहिं, पंचहिं महाविदेहेहिं" । (प्रज्ञा० सू० ३७)

---

१ गिरोली । २ किरली । ३ एटले पंदर । ४ समवायांगना १५ मा स्थानकमां एनां नामो नीचे मुजब आपेल छे—

"अंबे १ अंबरिसी २ चेव, सामे ३ सबले ४ त्ति आवरे ।
रुद्दोवरुद्दकाले ५-७ अ, महाकाले ८ त्ति आवरे ॥ १ ॥
असिपत्ते ९ धणु १० कुंभे ११, वालुए १२ वेयरणीति १३ अ ।
खरस्सरे १४ महाघोसे १५, एते पन्नरसाहिआ ॥ २ ॥"

वैमानिक—सुधर्म १ ईशान २ सनत्कुमार ३ महेन्द्र ४ ब्रह्म ५ लांतिक ६ महाशुक्र ७ सहस्रार ८ आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२, नव ग्रैवेयक ९, पांच अनुत्तर—विजय १ विजयत २ जयत ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एवं सर्व २६.* इत्यादि जीवभेद जान लेना.

(संख्याद्वार)

पूर्वोत्पन्नसंख्या—मनुष्य वर्जी २३ [1]दंडकमें असंख्याते, वनस्पतिमें अनंते, मनुष्यमें संख्याते वा असंख्याते इति संख्याद्वारम्.

---

* "देवा चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—भवणवासी १ वाणमंतरा २ जोइसिआ ३ वेमाणिआ ४। भवणवासी दसविहा प० तं०—असुरकुमारा १ नाग० २ सुवन्न० ३ विज्जु० ४ अग्गि० ५ दीव० ६ उदहि० ७ दिसा० ८ वाउ० ९ थणिय० १०। वाणमंतरा अट्ठविहा प० तं०—किंनरा १ किंपुरिसा २ महोरगा ३ गंधव्वा ४ जक्खा ५ रक्खसा ६ भूया ७ पिसाचा ८। जोइसिया पंचविहा प० तं०—चंदा १ सूरा २ गहा ३ नक्खत्ता ४ तारा ५। वेमाणिआ दुविहा प० तं०—कप्पोवगा १ य कप्पाईया य। कप्पोवगा बारसविहा प० तं०—सोहम्मा १ ईसाणा २ सणंकुमारा ३ माहिंदा ४ बंभलोया ५ लंतया ६ महासुक्का ७ सहस्सारा ८ आणया ९ पाणया १० आरणा ११ अच्चुया १२। कप्पाईया दुविहा प० तं०—गेविज्जगा य अणुत्तरोववाइया य। गेविज्जगा नवविहा प० तं०—हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा १ हिट्ठिममज्झिम० २ हिट्ठिमउवरिम० ३ मज्झिमहेट्ठिम० ४ मज्झिममज्झिम० ५ मज्झिमउवरिम० ६ उवरिमहेट्ठिम० ७ उवरिममज्झिम० ८ उवरिमउवरिम० ९। अणुत्तरोववाइया पंचविहा प० तं०—विजया १ वेजयंता २ जयंता ३ अपराजिता ४ सव्वट्ठसिद्धा ५"। (प्रज्ञा० सू० ३८)

---

१ ते ते जातिना समुदायनुं ग्रहण करवा माटे (तज्जातीयसमूहप्रतिपादकत्वार्थं) 'दंडक' शब्द योजायो छे जेने विषे जीव पोते करेला कर्मोनो दंड पामे ते 'दंडक' कहेवाय छे आ संबंधमां एवो पण खुलासो नजरे पडे छे के एकार्थक सरखो पाठ जेमां आवतो होय ते 'दंडक' कहेवाय छे जेमके दंस, नम्ब, णख, वक्ख मख वगेरे धातुओ गतिवाचक होवाथी ते 'दंडक' धातुओ कहेवाय छे कुले दंडको चोवीस छे तेनां नामो माटे श्रीभगवतीसूत्र (सू० ८)नी व्याख्या करतां श्रीअभयदेवसूरि नीचे मुजबनी गाथानुं टांचण करे छे —

> 'नेरइया १ असुराई १० पुढवाई ५ बेंदियादओ ३ चेव।
> पंचिंदियतिरिय १ नरा १ वंतर १ जोइसिय १ वेमाणी १॥"

मोटे भागे 'नेरइया' शब्द द्वारा साते नरकने लगता सरखा पाठो–आलापको–सूचवाया छे, माटे ते एक दंडक गणवो 'असुरकुमारा जाव थणियकुमारा' इत्यादि शब्दो वडे जुदा जुदा आलावाओ सूचवायेला होवाथी एना दश दंडको गणाय छे एवी रीते एकेन्द्रियना अधिकारमां प्राय 'पुढविकाइया' इत्यादि शब्द वडे पृथक् पृथक् आलावाओ सूचवाया छे, तेथी एना पांच दंडको गणाय छे

नरकना सात, व्यंतरना आठ, ज्योतिष्कना पांच अने वैमानिकना २६ भेद होवा छतां ए प्रत्येकना एकेक ज दंडक गणाय छे, ज्यारे भुवनपतिना दश दंडको गणाय छे तेनो शो हेतु छे? आनो उत्तर एम सूचवाय छे के असुरकुमार अने नागकुमार वच्चे नरकना प्रस्तर (पाथडा)नुं तेमज नारकी जीवोनुं अंतर छे, एवी रीते नागकुमार अने विद्युत्कुमार वच्चे, एम भुवनपतिना अन्य भेदो आश्री छे आवुं अंतर नारक, व्यंतर वगेरेना संबंधमां नथी तेथी ते प्रत्येकनो एकेक दंडक गणाय छे, जोके रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभा वच्चे एना आधारभूत घनोदधि, घनवात, तनुवात अने आकाशनुं आंतरुं छे

(१)

अथ पूर्वोत्पन्नसंख्या लिख्यते

श्रीपन्नवणा शरीरपद १२ मे वा अनुयोगद्वारे (सू० १४२) तथा [1]पंचसंग्रहे च कथितम्

प्रथम नारकी के जीव वर्तमान मे है	प्रतरके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवें ती(इ)तने जीव प्रथम रत्नप्रभा नरकमे हैं प्रतरका सरूप अने (और) श्रेणिका सरूप कथ्यते-सात रज्जु लंबी अने सात रज्जु चौडी अने एक प्रदेशकी मोटी इसकूं तो घनीकृत लोककी एक प्रतर कहीये अने सात रज्जु प्रमाण लंबी अने एक प्रदेश प्रमाण चौडी अने एक प्रदेश प्रमाण मोटी इसकूं घनीकृत लोककी एक श्रेणि कहीये । जिहा कही समुचये प्रतर अने श्रेणिका भाषा है तिहा (वहा) ऐसी प्रतर अने श्रेणि जाननी इत्यल [3]विस्तरेण	श्रेणि अंगुलप्रमाण चौडी अने सात रज्जु प्रमाण लंबी तिस श्रेणीमे असत् कल्पना करके श्रेणि २५६ करपीये तिसका प्रथम वर्गमूल काढीये तो १६ होइ(वे) दूजा (सरा) वर्गमूल काढीये तो ४ निकले है तिस दूजे वर्गमूलकूं पहिले वर्गमूलसूं गुण्या ६४ होइ तिण चौसठ ६४ श्रेणि प्रमाण तो चौडी अने सात रज्जु लंबी असी सूची नीपजे तिस सूचीमे जितने आकाशप्रदेश हे तितने पहिली नरकमे छ नरकके नारकी कम करके इतने नारकी जान लेने
दूजी नरक मे	श्रेणिके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवे तितने दूजी नरकमें नारकी जान लेने	श्रेणिके प्रदेशाका वर्गमूल काढता जब बारमा वर्गमूल आवे तिस बार १२ मे घगमूलका भाग पूर्वोक्त श्रेणिके प्रदेशाकूं दीजे जो हाथ आवे तितने नारकी दूजी नरकमे जानने एवं [4]सर्वत्र ज्ञेयम्
तीसरी नरक	श्रेणि के असंख्यातमे भाग	श्रेणिका १० मा वर्गमूल भाग हाथ लगे
४थी नरक	,,	श्रेणि ८ म(मा?)मूल भाग हाथ लगे
पाचवी नरक	,,	श्रेणि ६ छठो वर्गमूलका भाग ,,
छट्ठी नरक	,,	श्रेणि ३ तीजो वर्गमूलका भाग ,,
सातवी नरक	,,	श्रेणि २ दूजे वर्गमूलका भाग ,,
बादरपर्याप्त तेउकाय	०	[5]किंचिन्यून घनावलिके समय प्रमाण
प्रत्येक निगोद पृथ्वीकाय अप्काय	पर्याप्त लोकके असंख्यातमे भाग	लोकके असंख्यातमे भाग

१ पंचसंग्रहमां पण कह्यु छे । २ कहेवाय छे । ३ विस्तारथी । ४ सर्वे स्थळोमां । ५ कइक ओछा ।

बादर अप र्याप्त पृथ्वी अप् तेज वायु प्रत्येक निगोद सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी अप् तेजो वायु निगोद	असख्याते लोकके प्रदेशप्रमाण	असख्याते लोकके प्रदेशप्रमाण
बे इ द्री ते इ द्री चौ रि द्री नी स ख्या	प्रतरके असख्यातमे भागमे कोडा कोड असख्यात जोजन प्रमाण तो चौडी अने सात रज्जु प्रमाण लबी ऐसी एक श्रेणी लीजे तेहने प्रदेशोनी असत् कल्पना ६५५३६ की करीये तिसके वर्गमूल काढीयें प्रथम वर्गमूल २५६ का, दूजा १६, तीजा ४, चौथा २ ए कल्पना करके चार वर्गमूल है पिण (किन्तु) परमार्थ थकी (से) असख्याते वर्गमूल नीक्ले ते सर्व वर्गमूल एकठा क्या अत्र तो २७८ हुइ पिण परमार्थथी असख्याते वर्गमूल प्रमाण तो चौडी श्रेणीया अने सात रज्जु लबीया एहवी बेंद्रीयानी सूची निपजे तिस सूचीमे जितने आकाश प्रदेश है तितने बेंद्री जीव जान लेने इति अनुयोगद्वारात् ज्ञेय तथा पन्नवणा पद बारमेथी है	एक प्रतर अगुल के असख्यातमे भागमें एक बेंद्री आदिक स्थापीये इम स्थापना करता घनीकृत लोकनी एक प्रतर सपूर्ण भरायें इतने बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री है; अथवा आवलिकाके असख्यातमे भागमें जितने समय आवे तितने कालमें एकेक बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अपहरीये तो असख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणीमें सपूर्ण एक प्रतरके बेंद्री अपहरे जावे एव तेंद्री, चौरेंद्री पिण जान लेने एह समास अने पिछला 'अनुयोगद्वार'ना समास एक ही जानना केवल प्रकारातर ही है पर परमार्थथी एक ही समजना इत्यल विस्तरेण
स मू र्छिम म नु ष्य	श्रेणिके असख्यातमे भाग	एक प्रदेशी श्रेणी सात रज्जु प्रमाण लबी तिसमे सु अगुल प्रमाण प्रदेश लबे लीजे, तिसमे असत् कल्पना करे के २५६ प्रदेश; तिसका प्रथम वर्गमूल १६ दूजा वर्गमूल ४ का, तीजा २ का तिस तीजे कू पहिले वर्गमूलसू गुण्या ३२ होइ परमार्थ तो असख्यात का जानना तिस ३२ प्रदेशके खडकू एक संमूर्च्छिम मनुष्यके शरीर करके अपहरीये जो एक मनुष्य और हुइ तो सात रज्जु लबी श्रेणिके प्रदेश अपहरे जावे ते तो नही है
गर्भज मनुष्य	पाचमे वर्गके घन प्रमाण	

१ आ प्रमाणे अनुयोगद्वारथी जाणवु ।

भवनपति	प्रतरके असख्यातमे भाग नभ प्रदेश तुल्य जानने	अगुल प्रमाण श्रेणीके प्रथम वर्गमूल के असख्यातमे भाग प्रदेश प्रमाण
व्यतर	प्रतरके असख्यातमे भाग	सख्याते योजन प्रमाण खड एकेक व्यतरे करी अपहरता सपूर्ण प्रतर अपहरे इहा सख्याते ओजन प्रमाण खड चतुरस्र
जोतिषी	"	२५६ अगुल का खड चउरस तितना खड एकेक जोतिषी करके अपहऱ्या सपूर्ण प्रतर अपहराय घनीकृत सर्वत्र है
सौधर्म ईशान २	"	अगुल प्रमाण चोडी सात रजु प्रमाण लबी श्रेणी तिसकी असत् कल्पना २५६ श्रेणी, तिसका प्रथम वर्गमूल १६ का, दूजा वर्गमूल ४ का, तीजा २ का तीजे वर्गमूलकू दूजे वर्गमूलसू गुण्या ८ होइ परमार्थथी तो असख्याती है इस कल्पना सरू(प) ८ श्रेणि प्रमाण चोडी, सात रजु लबी सूची नीपजे तिस सूचीमे जितने आकाशप्रदेश[1] है तितने सौधर्म ईशान देवलोकके देवता है वर्तमान कालमे इत्यलम्
सनत्कुमार महेन्द्र २	श्रेणीके असख्यातमे भाग है	श्रेणिका ग्यारमा वर्गमूल काढीने तिस ही श्रेणिके प्रदेशाकू ग्यारमे वर्गमूलका भाग दीये जो हाथ लगे तितने देवता है एव जितर(ना)मा वर्गमूल होवे तिस ही का भाग
ब्रह्मदेव	"	श्रेणिका ९ मा मूल श्रेणिके प्रदेशो भाग
लांतक	"	श्रेणि ७ समूल भाग उपरवत्
महाशुक्र	"	श्रेणि ५ समूल भाग देना उपरवत्
सहस्रार	"	श्रेणि ४ समूल भाग उपरवत् दे[लि]णा
आनतादि ४	"	पल्योपमके असख्यातमे भाग समयप्रमाण
ग्रैवेयक ९	"	पल्योपमके वृहत्तर असख्यातमे भाग
अनुत्तर ४	"	पल्योपमके अतिवृहत्तम असख्यातमे भाग
सर्वार्थसिद्ध	सख्याते	सख्याते, क्षेत्रह्रस्वत्वात्

[1] आकाश-प्रदेश।

मुनिमहाराज १०८ श्रीमान् श्रीहर्षविजयजी

ओसवाल रावलपिंडी (पंजाब) के वासिंद

स्वर्गवास [illegible] शहर तारीख १ अप्रैल १९ उमर वर्ष ५०



वर्तमान आचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिजीके गुरुदेव श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजके बादमें संघाडाके सब साधुओंके विद्यागुरु

गुजरांवाला (पंजाब) निवासी लाला माणिकचंद छोटालाल दुगडकी तर्फसे गुरुभक्ति निमित्त

यह यत्र श्री'*प्रज्ञापना' थकी तथा श्री'अनुयोगद्वार'थी	ए यत्र 'प्रज्ञापना,' श्री'अनुयोगद्वार'थी तथा †श्री'पचसग्रहे' श्वेतांबर आम्नायके ग्रथ थकी जान लेना

*"नेरइयाण भते! केवइया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य, तत्थ ण जे ते बद्धेल्लगा ते ण असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणिहिं अवहीरति कालतो, खेत्ततो असखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असखेज्जइभागो, तासि ण सेढीण विक्खभसूई अगुलपढमवग्गमूल वितीयवग्गमूलपडुप्पण्ण अहव ण अगुलवितीयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीतो" । (सू. १७८) "असुरकुमाराण भते! विक्खभसूई अगुलपढमवग्गमूलस्स सखेज्जतिभागो एव जाव थणियकुमारा" । (सू. १७९) पुढविकाइयाण भते! केवइया ओरालियसरीरगा प०? गो०! दुविहा प० त०—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य, तत्थ ण जे ते बद्धेल्लगा ते ण असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सपिणिओसप्पिणिहिं अवहीरति कालतो, खेत्ततो असखेज्जा लोगा, तेया कम्मगा जहा एएसिं चेव ओरालिया, एव आउक्काइयतेउक्काइया वि । वाउक्काइयाण भते! केवतिया ओरालियसरीरा प०? गो०! दु० प० त—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य, दुविहा वि जहा पुढविकाइयाण ओरालिया, वेउव्वियाण पुच्छा, गो० दु० त०—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य, तत्थ ण जे ते बद्धेल्लगा ते ण असखेज्जा, समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा पलितोवमस्स असखेज्जइभागमेत्तेण कालेण अवहीरति नो चेव ण अवहिया सिया, वणप्फइकाइयाण जहा पुढविकाइयाण, णवर तेयाकम्मगा जहा ओहिया तेयाकम्मगा । बेइदियाण भते! केवइया ओरालिया सरीरगा प०? गो०! दु० त०—बद्धे० मुक्के०, तत्थ ण जे ते बद्धेल्लगा ते ण असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सपिणिओसप्पिणिहिं अवहीरति कालतो, खेत्ततो असखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असखेज्जइभागो, तासि ण सेढीण विक्खभसूई असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडिओ असखेज्जाइ सेढिवग्गमूलाइ । बेइदियाण ओरालियसरीरेहिं बद्धेल्लगेहिं पयरो अवहीरति, असखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अगुलपयरस्स आवलियाते य असखेज्जतिभागपलिभागेण, एव जाव चउरिंदिया । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण एव चेव । मणुसाण भते! केवइया ओरालियसरीरगा प०? गो०! दु० त०—बद्धे० मुक्के०, तत्थ ण जे ते बद्धेल्लगा ते ण सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा, जहण्णपदे सखेज्जा सखेज्जाओ कोडाकोडीओ तिजमलपयस्स उवरिं चउजमलपयस्स हिट्ठा, अहव ण छट्ठो वग्गो अहव ण छण्णउईछेयणगदाइरासी, उक्कोसपए असखिज्जा, असखिज्जाहिं उस्सपिणिओसप्पिणीहिं अवहीरति कालतो, खेत्तओ रूवपक्खित्तेहिं सेढी अवहीरइ, तीसे सेढीए आकाससखेत्तेहिं अवहारो मग्गिज्जइ असखेज्जा असखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अगुलपढमवग्गमूल तइयवग्गमूलपडुप्पण, । वाणमतराण जहा नेरइयाणं ओरालिया आहारगा य, वेउव्वियसरीरगा जहा नेरइयाण, नवर तासि ण सेढीण विक्खभसूई सखेज्जजोअणसयवग्गपलिभागो पयरस्स । तासि ण सेढीण विक्खभसूई बिछप्पन्नगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स, वेमाणियाण एव चेव, नवर तासि ण सेढीण विक्खभसूई अगुलवितीयवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पन्न अहवण्ण अगुलतइयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ, । ।" (सू० १८०)

† पचसग्रहना द्वितीय 'बधक' द्वारनी गाथाओ—

"पत्तेय पज्जवणकाइया उ पयर हरति लोगस्स । अगुलअसखभागेण भाइय भूदगतणू य ॥ ४३ ॥
आवलिवग्गो ऊणावलीय गुणिओ हु बायरो तेऊ । वाऊ लोगासख सेसतिगमसखया लोगा ॥ ४४ ॥
पज्जत्तापज्जत्ता बितिचउअस्सन्निणो अवहरति । अगुलसखासखप्पएसभइय पुढो पयर ॥ ४५ ॥
सन्नी चउसु गईसु पढमाए असखसेढि नेरइया । सेढी असखेज्जसो सेसासु जहुत्तर तह य ॥ ४६ ॥
सखेज्जजोयणाण सूइपएसेहिं भाइओ पयरो । वतरसुरेहिं हीरइ एव एक्केक्कमेएण ॥ ४७ ॥

(२)*वृद्धि-हानि भगवती श० ५, उ० ८

०	वर्द्धति	हायति
जीव	०	०
नरकादि वैमानिक २४	उत्कृष्ट आवलि असंख्य भाग	उत्कृष्ट आवलि असंख्य भाग
सिद्ध	उत्कृष्ट ८ समय	०
जघन्य सर्वत्र	१ समय	१ समय

विरह सर्वत्र अद्धा सिद्धक विरह तुल्य.

छप्पन्न दोसयगुलसूईपएसेहिं भाइओ पयरो । हीरइ जोइसिएहिं सट्ठाणे त्थीउ ससगुणा ॥ ४८ ॥
अस्सखसेढिपएसतुल्लया पढमदुइयकप्पेसु । सेढिअसखसमा उवरिं तु जहोत्तर तह य ॥ ४९ ॥
सेढीएकेक्कपएसरइयसूइणमगुलप्पमियं । धम्माए भवणसोहम्मयाण माण इम होइ ॥ ५० ॥
छप्पन्नदोसयगुलभूओ भूओ निगिज्झ मूलतिगं । गुणिया जहुत्तरत्था रासीओ कमेण सूइओ ॥ ५१ ॥
अहवगुलप्पएसा समूलगुणिया उ नेरइयसूई । पढमदुइया पयाइ समूलगुणियाइ इयराण ॥ ५२ ॥
अगुलमूलासखियभागप्पमिया उ होंति सेढीओ । उत्तरविउव्वियाण तिरियाण य सन्निपज्जाण ॥ ५३ ॥
सामण्णा पज्जत्ता पणतिरि देवेहिं सखगुणा । सखेज्जा मणुया तहिं मिच्छाइगुणा वि सट्ठाणे ॥ ५४ ॥
उक्कोसपए मणुया सेढीं रूवाहिया अवहरति । तइयमूलाहएहिं अगुलमूलप्पएसेहिं ॥ ५५ ॥"

* आ तेमज आ पछीना बे यत्रो परत्वे नीचे मुजबनु सूत्र छे —

जीवा ण भते ! किं वड्ढति, हायति, अवट्ठिया? । गोयमा ! जीवा णो वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया । नेरइया ण भते ! किं वड्ढति, हायति, अवट्ठिया? । गोयमा ! नेरइया वड्ढति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि; जहा नेरइया एव जाव वेमाणिया । सिद्धा ण भते ! पुच्छा, गोयमा ! सिद्धा वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया वि ॥ जीवा ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया [वि]? । सव्वद्ध । नेरइया ण भते ! केवतिय काल वड्ढति? । गोयमा ! जहन्नेण एग समय, उक्को० आवलियाए असखेज्जतिभाग, एव हायति, नेरइया ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया? । गोयमा ! जह० एग समय, उक्को० चउव्वीस मुहुत्ता, एव सत्तसु वि पुढवीसु वड्ढति हायति भाणियव्व, नवर अवट्ठिएसु इम नाणत्त, तजहा-रयणप्पभाए पुढवीए अडतालीस मुहुत्ता, सक्कर० चोद्दस रातिदियाण, वालु० मास, पक० दो मासा, धूम० चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा । असुरकुमारा वि० वड्ढति हायति जहा नेरइया, अवट्ठिया जह० एक्क समय, उक्को अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, एव दसविहा वि; एगिंदिया वड्ढति वि हायति वि अवट्ठिया वि, एएहिं तिहि वि जह० एक्क समय, उक्को० आवलियाए असखेज्जतिभाग, बेइदिया वड्ढति हायति तहेव, अवट्ठिया जह० एक्क समय, उक्को० दो अतोमुहुत्ता, एव जाव चउरिंदिया अवसेसा सव्वे वड्ढति हायति तहेव, अवट्ठियाण णाणत्त इम, त० समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाण दो अतोमुहुत्ता, गब्भवक्कतियाण चउव्वीस मुहुत्ता, समुच्छिममणुस्साण अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, गब्भवक्कतियमणुस्साण चउव्वीस मुहुत्ता, वाणमतरजोतिससोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, सणकुमारे अट्ठारस रातिदियाइ चत्तालीस य मुहु०, माहिंदे चउवीस राति० वीस य मु०, बभलोए पचचत्तालीस राति०, लतए नउति राति०, महासुक्के

१ वधे छे। २ घटे छे। ३ काळ।

(३)* अवस्थित(ति)पत्रम्-जीवाना सर्वाद्धा

नारकी	उत्कृष्ट २४ मुहूर्त	जोतिषी	उत्कृष्ट ४८ मुहूर्त
रत्नप्रभा	,, ४८ ,,	सु(सौ)धर्म ईशान	,, ,, ,,
शर्कर(र्करा)प्रभा	,, १४ दिनरात्रि	सनत्कुमार	,, १८ दिन ४० मुहूर्त
वालुक(का)प्रभा	,, १ मास	महेंद्र	,, २४ दिन २० मुहूर्त
पंकप्रभा	,, २ ,,	ब्रह्मलोक	,, ४५ अहोरात्रि
धूम्रप्रभा	,, ४ ,,	लांतक	,, ९० रात्रिदिन
तमप्रभा	,, ८ ,,	महाशुक्र	,, १६० ,,
तमतमप्रभा	,, १२ ,,	सहस्रार	,, २०० रात्रि
भवनपति १०	,, ४८ मुहूर्त	आनत प्राणत	,, सख्याते मास
एकेंद्री ५	,, आवलिये असख्यात	आरण अच्युत	,, सख्याते वर्ष
विगलेंद्री ३	,, अंतर्मुहूर्त (?)	(ग्रैवे०) पहिली त्रिक	,, ,, सौ ,,
सम्मूर्छिम पचेंद्री तिर्यंच	,, २ ,,	मध्यम त्रिक	,, ,, हजार ,,
गर्भज पचेंद्री तिर्यंच	,, २४ मुहूर्त	उपर त्रिक	,, ,, लाख ,,
सम्मूर्छिम मनुष्य	,, ४८ ,,	विजयादि ४	,, पल्योपमनो असख्यातमो भाग
गर्भज मनुष्य	,, २४ ,,	सर्वार्थसिद्ध	,, पल्योपमनो सख्यातमो भाग
व्यंतर	,, ४८ ,,	सिद्ध	,, ६ मास

जघन्य सर्वत्र एक समय इति.

सट्ठि रातिंदियसत, सहस्सारे दो रातिंदियसयाइं, आणयपाणयाण सखेज्जा मासा, आरणच्चुयाण सखेज्जाइं वासाइं, एव गेवेज्जदेवाण विजयवेजयतजयतअपराजियाण असखिज्जाइं वाससहस्साइं, सव्वट्ठसिद्धे य पलिओवमस्स [अ]सखेज्जतिभागो, एव भाणियव्व, वड्ढति हायति जह० एक्क समय, उक्को० आवलियाए असखेज्जतिभाग, अवट्ठियाण ज भणिय। सिद्धा ण भते! केवतिय कालं वड्ढति?। गोयमा! जह० एक्क समय, उक्को० अट्ठ समया, केवतिय काल अवट्ठिया? गोयमा! जह० एक्क समय, उक्को० छम्मासा॥

जीवा ण भते! किं सोवचया, सावचया, सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया?। गोयमा! जीवा णो सोवचया, णो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया। एगिंदिया ततिय पए, सेसा जीवा चउहि वि पदेहि वि भाणियव्वा। सिद्धाण भते! पुच्छा, गोयमा! सिद्धा सोवचया,

१ जीवोनी सर्व काळ अवस्थिति छे।

(४) *(सोपचय आदि) भग० श० ५, उ० ८

	सोवचया	२ सावचया	सोवचयसावचया	निरुव०निरवचया
जीव	०	०	०	सर्वाद्धा
एकेंद्री ५ वर्जी नरक आदि वैमानिक पर्यंत १९ दंडक	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आपापणे विरहप्रमाण ज्ञातव्यम्
एकेंद्री ५	०	०	सर्वाद्धा	०
सिद्ध	८ समय	०	०	६ मास

ए उत्कृष्ट कालना यंत्र, जघन्य सर्वत्र १ समय ज्ञेयम्.

(५) († कृतादि युग्म) भग० श० १८, उ० ४

	जघन्य पद	मध्यम पद	उत्कृष्ट पद
पचेंद्री १६ दंडक	कृतयुग्म १	कृतयुग्मादि ४ युग्म	त्र्यो(ज्यो)ज
पृथ्वी आदि ४ विगलेंद्री ३	,,	,,	द्वापरयुग्म
वनस्पति १ सिद्धे च	०	,,	०
स्त्रीसमुच्चय तथा १५ दंडकं जूदी जूदी	कृतयुग्म १	,,	कृतयुग्म १

णो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया । जीवा ण भंते ! केवतिय कालं निरुवचयनिरवचया ? । गोयमा ! सव्वद्धं । नेरतिया णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया ? गोयमा ! जह० एक्कं समयं, उक्को० आवलियाए असंखेज्जइभागं । केवतियं कालं सावचया ? । एवं चेव । केवतियं कालं सोवचयसावचया ? एवं चेव । केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया ? । गोयमा ! जह० एक्कं समयं, उक्को० बारस मु०, एगिंदिया सव्वे सोवचयसावचया सव्वद्धं, सेसा सव्वे सोवचया वि सावचया वि सोवचयसावचया वि निरुवचयनिरवचया वि जह० एगं समयं, उक्को० आवलियाए असंखेज्जतिभागं अवट्ठिएहिं वक्कंतिकालो भाणियव्वो । सिद्धा णं भंते केवतियं कालं सोवचया ? गोयमा ! जह० एक्कं समयं, उक्को० अट्ठ समया, केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया ? जह० एक्कं, उ० छम्मासा" । (सू० २२२)

† "नेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा, तेयोगा, दावरजुम्मा, कलियोगा ? । गोयमा ! जहन्नपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहन्नुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा १ जाव सिय कलियोगा ४, एवं जाव थणियकुमारा । वणस्सइकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! जह० अपदा, उक्को० य अपदा, अजह० सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । बेइंदिया णं पुच्छा, गोयमा ! जह० कड०, उक्को० दावर०, अजह०

१ वृद्धि सहित । २ हानि सहित ।

(४) (*योग विषयक अल्पबहुत्व) भग० श० २५, उ० १

योग	सूक्ष्म एकेंद्री	बादर एकेंद्री	बेइंद्री	तेइंद्री	चौरिंद्री	असन्नी पचेंद्री	सन्नी पचेंद्री
जघन्य अपर्याप्ता योग	स्तोक १ (थोडा)	२ असंख्य गुणा	३ अस	४ अस	५ अस	६ अस	७ अस
जघन्य पर्याप्ता योग	८ अस	९ अस	१४ अस	१५ अस	१६ अस	१७ अस	१८ अस
उत्कृष्ट अपर्याप्ता योग	१० अस	११ अस	१९ अस	२० अस	२१ अस	२२ अस	२३ अस
उत्कृष्ट पर्याप्ता योग	१२ अस	१३ अस	२४ अस	२५ अस	२६ अस	२७ अस	२८ अस

सिय कड० कलियोगा, एव जाव चतुरिंदिया, सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया, पचिंदियतिरिक्ख जोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया, सिद्धा जहा वणस्सइकाइया। इत्थीओ ण भंते! किं कड० ? पुच्छा, गोयमा! जह० कडजुम्माओ, उक्को० सिय कडजुम्माओ अजह० सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ, एव असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारइत्थीओ, एव तिरिक्ख जोणियइत्थीओ, एव मणुसित्थीओ, एव जाव वाणमतरजोइसियवेमाणियदेवित्थीओ"। (सू० ६२४)

* "सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए १, बादरस्स अपज्ज० जह० जोए असखेज्ज गुणे २, बेंदियस्स अपज्ज० जह० जोए अस० ३, एव तेइंदियस्स ४, एव चउरिंदियस्स ५, असन्निस्स पचिंदियस्स अपज्ज० जह० जोए अस० ६, सन्निस्स पचि० अपज्ज० जह० जोए अस० ७, सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जह० जोए अस० ८, बादरस्स पज्ज० जह० जोए अस० ९, सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए अस० १०, बादरस्स अपज्ज० उक्को० जोए अस० ११, सुहुमस्स पज्ज० उक्को० जोए अस० १२, बादरस्स पज्ज० उक्को० जोए अस० १३, बेंदियस्स पज्ज० जह० जोए अस० १४, एव तेंदिय, एव जाव सन्निपचिंदियस्स पज्ज० जह० जोए अस० १८, बेंदियस्स अपज्ज० उक्को० जोए अस० १९, एव तेंदियस्स वि २०, एव चउरिंदियस्स वि २१, एव जाव सन्निपचि० अपज्ज० उक्को० जोए अस० २३, बेंदियस्स पज्ज० उक्को० जोए अस० २४, एव तेइंदियस्स वि पज्ज० उक्को० जोए अस० २५, चउरिंदियस्स पज्ज० उक्को० (जोए) अस० २६, असन्निपचिंदियपज्जत० उक्को० जोए अस० २७, एव सन्नि पचि० पज्ज० उक्को० जोए अस० २८"। (सू० ७१७)

† १४ मा पाना उपरना सातमा यन्त्र संबंधी सूत्र नीचे मुजब छे —

"सव्वत्थोवे कम्मगसरीरजहन्नजोए १, ओरालियमीसगस्स जहन्नजोए अस० २, वेउव्वियमीसगस्स जहन्नए अस० ३, ओरालियसरीरस्स जहन्नए जोए अस० ४, वेउव्वियसरीरस्स जहन्नए जोए अस० ५, कम्मगसरीरस्स उक्कोसए जोए अस० ६, आहारगमीसगस्स जह० जोए अस० ७, तस्स चेव उक्कोसए जोए अस० ८, ओरालियमीसगस्स ९, वेउव्वियमीसगस्स १०, एएसि ण उक्को० जोए दोण्ह वि तुल्ले अस०, असच्चामोसमणजोगस्स जह० जोए अस० ११, आहारसरीरस्स जह० जोए अस० १२, तिविहस्स मणजोगस्स १५, चउव्विहस्स वयजोगस्स १९, एएसि ण सत्तण्ह वि तुल्ले जह० जोए अस०, आहारगसरीरस्स उक्को० जोए अस० २०, ओरालियसरीरस्स वेउव्वियस्स चउव्विहस्स य मणजोगस्स चउव्विहस्स य वइजोगस्स एएसि ण दसण्ह वि तुल्ले उक्को० जोए अस० ३०"। (सू० ७१९)

(७) *पंदर योग परत्वे अल्पबहुत्व भग० श० २५, उ० १

योग १५	सत्य मन-योग १	असत्य मनयोग २	मिश्र मन योग ३	व्यव हार मन योग ४	सत्य वचन योग ५	असत्य वचन योग ६	मिश्र वचन योग ७	व्यव हार वचन ८	औदा-रिक ९	औदा रिक मिश्र १०	वैक्रिय ११	वैक्रिय मिश्र १२	आहा रक १३	आहारक मिश्र १४	कार्मण १५
जघन्य योग	१२ असंख्य गुणा	१२ तुल्य	१० तुल्य	१० असंख्य	१२ तुल्य	१२ तुल्य	१२ तुल्य	१२ तुल्य	४ असंख्य गुणा	२ असंख्य	५ असंख्य	३ असंख्य	११ असंख्य	७ असंख्य गुणा	१ स्तोक
उत्कृष्ट योग	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	१४ तुल्य	९ असंख्य	१४ तुल्य	९ तुल्य	१३ असंख्य	८ असंख्य गुणा	६ असंख्य गुणा

* पदरमा पाना उपरना आठमा यंत्र संबंधी सूत्र नीचे मुजब छे —

"सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तस्स जहन्निया ओगाहणा १, सुहुमवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जह० ओगा० असंखेज्जगुणा २, सुहुमतेऊअपज्जत्तस्स जह० ओगा० अस० ३, सुहुमआऊअपज्ज० जह० ओगा० अस० ४, सुहुमपुढविअपज्जत्त० जह० ओगा० अस० ५, बादरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जह० ओगा० अस० ६, बादरतेऊअपज्जत्तजहन्निया ओगा० अस० ७, बादरआउअपज्जत्त जहन्निया ओगा० अस० ८, बादरपुढवीकाइयअपज्जत्तजहन्निया ओगा० अस० ९, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स एएसि णं पज्जत्तगाणं एएसि णं अपज्जत्तगाणं जह० ओगा० दोण्ह वि तुल्ला अस० १०-११, सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जह० ओगा० अस० १२, तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगा० विसेसा १३, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्को० ओगा० वि० १४, सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तग० जह० ओगा० अस० १५, तस्स चेव अपज्जत्त० उक्को० ओगा० वि० १६, तस्स चेव पज्जत्त० उक्को० वि० १७, एवं सुहुमतेउकाइयस्स वि १८।१९।२०, एवं सुहुमआउकाइयस्स वि २१।२२।२३, एवं सुहुमपुढविकाइयस्स विसेसा २४।२५।२६, एवं बादरवाउकाइयस्स वि० २७।२८।२९, एवं बादरतेऊकाइयस्स वि० ३०।३१।३२, एवं बादरआउकाइयस्स वि० ३३।३४।३५, एवं बादरपुढविकाइयस्स वि० ३६।३७।३८, सव्वेसिं तिविहेणं गमेणं भाणियव्वं, बादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जह० ओगा० अस० ३९, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्को० ओगा० विसेसाहिया ४०, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्को० ओगा० विसेसाहिया ४१, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयस्स पज्जत्तगस्स जह० ओगा० अस० ४२, तस्स चेव अपज्जत्त० उक्को० ओगा० अस० ४३, तस्स चेव पज्जत्त उक्को० ओगा० अस० ४४"। (सू० ६५१)

(८) (*सूक्ष्म पृथ्वीकायादिकी अवगाहना भग० श० १९, उ० ३)

		अपर्याप्ता जघन्य	पर्याप्ता जघन्य	अपर्याप्ता उत्कृष्ट	पर्याप्ता उत्कृष्ट
१	सूक्ष्म निगोद	१ स्तोक	१२ अस	१३ वि	१४ वि
२	सूक्ष्म वायु	२ अस	१५ अस	१६ वि	१७ वि
३	सूक्ष्म तेउ	३ अस	१८ अस	१९ वि	२० वि
४	सूक्ष्म अप्	४ अस	२१ अस	२२ वि	२३ वि
५	सूक्ष्म पृथ्वी	५ अस	२४ अस	२५ वि	२६ वि
६	बादर वायु	६ अस	२७ अस	२८ वि	२९ वि
७	बादर तेउ	७ अस	३० अस	३१ वि	३२ वि
८	बादर अप्	८ अस	३३ अस	३४ वि	३५ वि
९	बादर पृथ्वी	९ अस	३६ अस	३७ वि	३८ वि
१०	बादर निगोद	१० अस	३९ अस	४० वि	४१ वि
११	प्रत्येक वनस्पति	११ तुल्य	४२ अस	४३ असख्य	४४ असख्य गुणा

(९)*

	काइया (कायिकी)	अहिगरणी (आधिकरणिकी)	पाउ(दो)सिया (प्राद्वेषिकी)	परिताप	प्राणातिपात
कारण	सारंभ	सारंभ	सारंभ	समारंभ	आरंभ
काइया सबध	०	नियमा	नियमा	भजना	भजना
अहिगरणिया	नियमा	०	,,	,,	,,
पाउ(दो)सिया	,,	नियमा	०	,,	,,
पारितापनिका	,,	,,	नियमा	०	,,
प्राणातिपात	,,	,,	,,	नियमा	०

* "जस्स ण भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति, जस्स

(१०) पन्नवणा पद २२ मे (*सू० २८४) क्रियायन्त्रम्

०	आरभिता	परिग्रह	मायाप्रत्यया	मिथ्यादर्शन प्रत्यया	अप्रत्याख्यान
कारण	प्रमाद	प्रत्याख्यान चौक	सज्वलन ४	अनत मिथ्यात्व	अप्रत्याख्यान ४
गुणस्थान कौनसेमें	६	५	१०	३	४
सवधारभ	०	भजना	नियमा	भजना	भजना
परिग्रह	नियमा	०	,,	,,	,,
मायाप्रत्यया	भजना	भजना	०	,,	,,
मिथ्यादर्शन०	नियमा	नियमा	नियमा	०	नियमा
अप्रत्याख्यान प्रत्यया	,,	,,	,,	भजना	०

अहिगरणिया किरिया कज्जति तस्स कातिया कज्जति ? । गो० ! जस्स ण जीवस्स कातिया किरिया कज्जति तस्स अहिगरणी किरिया नियमा कज्जति, जस्स अहि० किरिया क० तस्स वि काइया किरिया नियमा कज्जति, जस्स ण भंते ! जीवस्स काइया कि० तस्स पादोसिया कि०, जस्स पादोसिया कि० तस्स काइया किं क० ? । गो० ! एव चेव, जस्स ण भते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ जस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स कातिया किरिया कज्जइ ? । गो० ! जस्स ण जीवस्स काइया कि० क० तस्स पारितावणिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ, जस्स पुण पारियावणिया कि० क० तस्स काइया नियमा कज्जति, एव पाणाइवायकिरिया वि, एव आदिल्लाओ परोप्पर नियमा तिण्णि कज्जति, जस्स आइल्लाओ तिन्नि कज्जति तस्स उवरिल्लाओ दोन्नि सिय कज्जति सिय नो कज्जति, जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कज्जति तस्स आइल्लाओ नियमा तिण्णि कज्जति, जस्स ण भते जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणातिवायकिरिया क०, जस्स पाणाति० क० तस्स पारियावणिया कि० क० ? । गो० ! जस्स ण जीवस्स पारियावणिया कि० तस्स पाणातिवातकिरिया सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण पाणातिपातकिरिया क० तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कज्जति" । (प्रज्ञा० सू० २८२)

* "कति ण भते किरियाओ पण्णत्ताओ ? । गो० ! पच किरियाओ प० त०—आरभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादसणवत्तिया, आरभिया ण भते ! किरिया कस्स कज्जति ? गो० ! अण्णयरस्स वि पमत्तसजयस्स, परिग्गहिया ण भते ! किरिया कस्स कज्जइ ? । गो० ! अण्णयरस्स वि सजयासजयस्स, मायावत्तिया ण भते ! किरिया कस्स क० ? । गो० ! अण्णयरस्सावि अपमत्तसजयस्स, अपच्चक्खाणकिरिया ण भते ! कस्स क० ? । गो० ! अण्णयरस्स वि अपच्चक्खाणिस्स, मिच्छादसणवत्तिया ण भते ! किरिया कस्स क० ? । गो० ! अण्णयरस्सावि मिच्छादसणिस्स ।

जस्स ण भते ! जीवस्स आरभिया किया क० तस्स परिग्गहिया किं क० ? । जस्स परिग्गहिया कि० तस्स आरभिया कि० ? । गो० ! जस्स ण जीवस्स आरभिया कि० तस्स परि० सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण परिग्गहिया कि० तस्स आरभिया कि० णियमा क०, जस्स ण भते ! जीवस्स आरभिया कि० क० तस्स मायावत्तिया कि० क० पुच्छा, गो० ! जस्स ण जीवस्स आरभिया कि० क० तस्स माया० कि० नियमा क०, जस्स पुण माया० कि० क० तस्स आरभिया कि० सिय क० सिय नो क०, जस्स ण भते ! जीवस्स आरभिया कि० तस्स अपच्चक्खाणकिरिया पुच्छा, गो० ! जस्स जीवस्स

पाटनपुरनिवासी दोसी काळीदास साकळचद तरफथी तेमना पिताश्री
स्व दोसी साकळचद दलछाचदना स्मरणार्थे



प्रवर्तक मुनिवर्य श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराज

जन्म	दीक्षा	प्रवर्तकपद
स १९०७ कातक सुद ३	स १९३६ माह सुद ११	स १९५७ माह सुद १५
वडोदरा	अबाला	पाटण

(११) *भगवती शते १ उद्देशे २ कालयन्त्रम्

०	शून्य काल	अशून्य काल	मिश्र काल	सतिष्ठन काल
नारकी	३ अनत गुणा	१ सर्व स्तोक १२ मुहूर्त	२ अनत गुणा	२ असख्यात गुणा
तिर्यंच	०	१ सर्व स्तोक अत मुहूत त्रस आश्री	,,	४ अनत गुणा
मनुष्य	३ अनत गुणा	१ सर्व स्तोक १२ मुहूत	,,	१ सर्व स्तोक
देव	,,	सर्व स्तोक १२ मुहूर्त १	,,	३ असख्येय गुणा

(१२) अथ षट् लेश्या द्वार उत्तराध्ययन ३४ मे वा श्रीपन्नवणा पद १७ परथी ज्ञेय

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ल लेश्या ६
वर्ण द्रव्य लेश्या अपेक्षा २	काली घटा १ महिष शृग गुली २ शकटना खजन ३ नेत्रनी कीकी ४ इन सदृश वण कृष्ण	अशोक वृक्ष १ नील चासना पक्षं २ वैडूर्य मणि ३ शुक पक्ष ४ ऐसा वर्ण	अलसीना फूल १ कोकिलानी पक्ष २ परेवानी ग्रीवा ३ ऐसा वर्ण	हिंगुल १ धातु पाषाण वि-शेष रक्त २ उगता सूर्य तेजोलेश्या वर्णत	हरिताल १ हलद्री २ सण ३ असन ४ वृक्षना पुष्पवत् पीत	सख १ अक्रत्त २ मचकुद पुष्प दधि रुपाना हारवत् शुक्ल

आरभिया कि० तस्स अपच्च० सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण अपच्च० क० तस्स आरभिया कि० णियमा क०, एव मिच्छादसणवत्तियाए वि सम, एव पारिग्गहिया वि तिहिं उवरिल्लाहिं सम सचारे तव्वा, जस्स माया कि० तस्स उवरिल्लाओ दो वि सिय कज्जति सिय नो कज्जति, जस्स उवरिल्लाओ दो कज्जति तस्स माया० नियमा क० जस्स अप्प० कि० क० तस्स मिच्छा० कि० सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण मिच्छा० कि० तस्स अपच्च० कि० णियमा कज्जति"। (सू० २८४)

* "नेरइयससारसचिट्ठणकाले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?। गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त०—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥ तिरिक्ख जोणियससारपुच्छा, गो० ! दुविहे प० त०—असुन्न काले य मिस्सकाले य, मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाण ॥ एयस्स ण भते ! नेरइयससार सचिट्ठणकालस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीसकालस्स य कयरे कयरे हिंतो अप्पा वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ?। गो० ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ॥ तिरिक्ख० भते ! सव्व० असुन्न०, मिस्स० अणत०, मणुस्सदेवाण य जहा नेरइयाण ॥ एयस्स ण भते ! नेरइयस्स ससारसचिट्ठणकालस्स जाव देवससारसचिट्ठणजाव विसेसाहिए वा ?। गो० ! सव्व० मणुस्सससारसचिट्ठणकाले, नेरइयससार० असखेज्जगुणे, देवससार० अस०, तिरिक्खजोणिए अणत०" ॥ (सू० २३)

[1] पांख ।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ल लेश्या ६
रस द्रव्य लेश्या आश्री ३	कटुक उब १ नीम २ अकपत्र इसके रससे अनंत गुण कटुक रस	यथा निकृष्ट रस १ हस्ती पीपलना रस एहथी अनंत गुणाधिक	तरुण आम्ररस कचा कविठ्ठ फल रस इनथी अनंत गुणा कषायला रस है	पक्व आम्र रस १ पाका कोठ फल २ रस इनसे अनंत गुणाधिक	वर वारुणी मद १ पुष्पका मद २ मधु मद्य विशेष ३ सिरका इनसे अनंत गुणा	यथा खजूर रस १ द्राख रस २ खड रस ३ मिसरी रस इनसे अनंत गुणा
गंध द्रव्य लेश्या आश्री ४	मृतक गौ १ मृतक श्वान २ मृतक सर्प ३ इनसे दुर्गंध से अनंत गुणाधिक	ए →व म्	ए →व म्	पुष्प सुगंध वत् तथा सुगंध पीसता जैसी सुगंध इनसे अनंत गुणा	ए →व म्	ए →व म्
स्पर्श द्रव्य लेश्या आश्री ५	करवतनी धार १ गौ जिह्वा २ साग वनस्पतिना पत्र इनके स्पर्शसे अनंत कर्कश स्पर्श	ए →व म्	ए →व म्	यथा बूर वनस्पति १ म्रक्षण २ शिरीष कुसुम इनसे अनंतगुणा कोमल है	ए →व म्	ए →व म्
परिणाम समुच्चय ६	जघन्य १ मध्यम २ उत्कृष्ट ३ इनका ९ फेर २७ फेर ८१ फेर २४३ इस तरे असपने २ करणा नियमन करणाके इतने परिणाम है	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्
लक्षण विशिष्ट लेश्यानी अपेक्षा इह लक्षण है	२१ बोल[1] पांच आश्रवना सेवनहार ५ तीन गुप्तिये अगुप्ति ३ षट्कायना अविरति तीव्र आरंभी १	१५ बोल इर्ष्या-पर गुन असहन १ अभिनिवेशकी १ तप रहित १ कुशास्त्री १ मायावी १	१२ बोल वाका बोले १ वक्राचारी २ निवडमाया ३ असरल ४ अपने दोष	१३ बोल नीचा वर्ते १ अचपल २ अमाई ३ अकुतूहल ४ विनयवंत ५	१२ बोल पतले क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४	१८ बोल आर्त रौद्र वर्जे २ धर्म ध्यान ३ शुक्ल ध्यान ध्यावे ४

१ बोल।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ल लेश्या ६
पिण देवता आदिके साथ व्यभिचार नहीं निशिष्ट उत्कट शुद्ध अथवा अशुद्ध ७	सर्वकू अहितकारी १ साहसिक अनविचार्यें कार्यकारी १ जीव हिंसा करता शंके नही १ वा इसलोक परलोकीना कष्टनी शंका नही ते निद्धंस परिणामी कहिये १ अजितेंद्रिय १ सूग रहित १ एव २१ बोल	अहीकाता (?) समाचार विषये निलज्ज १ विषयका लंपट्य १ द्वेषी १ शठ १ नात्यादि मदवान् १ रस लोलुप १ सातागवेषी १ आरम्भीसें अवरति १ क्षुद्रिय १ अन विचारे कार्यना कारणहार ते साहसिक १	आच्छादक ५ कपटसे प्रवर्तें ६ मिथ्यादृष्टि ७ अनार्य ८ उत्प्राशक ९ आग लोक लक आदिमे फसे फसे बोले ९ दुष्ट वचन बोले १० चौर ११ मत्सरी पर सपद् असहन १२ द्रव्यके सहचर करके तिसके उरगते तद्रूप होना सो प्र(परि)णाम कहिये सर्वत्र	विनय करे ६ दंमतेंद्री ७ शास्त्र पढीने उप धान तप वान् ८ प्रिय धर्मी ९ दृढ धर्मी १० पापसे डरे ११ मोक्षा भिलाषी १२ शुभ योग वान् एव तेजो ना परिणाम अथात् लक्षण जान ऐसा अनगारस्य एतत्	प्रशात चित्त ५ दमिता त्मा ६ शुभ योगवान् ७ शास्त्र पठन करीने उपधान तपवान् ८ अल्प भाषी ९ उपशम वान् १० जितेंद्रिय ११ ए लक्षण पद्मले श्याना धणी अनागा रस्य एतत् सम्भ वति, नान्य स्येति	प्रशात चित्त ७ दान्त आत्मा ६ पाच समिति समिता ११ तीन गुप्ते गुप्ता १४ सराग १५ तथा वीत राग १६ उपशात वान् १७ जितेन्द्रिय १८ एनदपि अनगार स्येति लक्षणम्
स्थान प्रकर्ष अपकर्ष रूप अशुभना अशुभ शुभना शुभ ८	स्थान असख्य कितने [1] जितने असख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय तुल्य क्षेत्रत असख्य लोकने प्रदेश नभ प्रदेश तुल्य	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्	ए →व म्
स्थिति नारकीनी	जघन्य १० सागरो पम पल्योपमका	जघन्य ३ साग रोपम पल्योप	जघन्य १ सहस्त्रप			

१ इन्द्रियना उपर काबू राखनार। २ साधुनु आ। ३ साधुमां आ संभव छे, नहि के अन्यने विषे। ४ आ पण साधुनु लक्षण छे।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ल लेश्या ६
	असख्यातमा भाग अधिक; उत्कृष्ट ३३ सागरोपम	मना असख्यातमा भाग अधिक उत्कृष्ट १० सागरोपम पल्योपमना असख्यातमा भाग अधिक	उत्कृष्ट ३ सागरोपम पल्योपमना असख्यातमा भाग अधिक	०	०	०
तिर्यंच	जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त	—>एवम्	—>एवम्	—>एवम्	—>एवम्	—>एवम्
मनुष्य	"	"	"	"	"	छद्मस्थ एवम्, केवली जघन्य अतमुहूर्त; उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोटि
भवनपति व्यतर	ज० दश हजार वर्ष; उ० पल्योपमना असख्यातमे भाग	ज० कृष्णकी उत्कृष्टसे १ समय अधिक, उ० पल्योपमना असख्यातमे भाग	ज० नीलकी उत्कृष्टसे १ समय अधिक; उ० पल्योपमना असख्यातमे भाग	ज० दश हजार वर्ष; उ० १ सागरोपम झझेरी अने व्यतरकी सय ऊहाम्	०	०
जोतिषी	०	०	०	ज० पल्योपमना ८ भाग; उ० १ पल लक्ष वर्ष अधिक	०	०
वैमानिक ९	[1] ०	०	०	ज० १ पल्योपम; उ० २ सागरोपम झझेरी	ज० तेजोकी उत्कृष्टी से १ समय अधिक; उ० १० सागरोपम अतर्मुहूर्त अधिक	ज० १० सागरोपम १ समय अधिक; उ० ३३ सागरोपम

१ अधिक।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म लेश्या ५	शुक्ललेश्या ६
गति १०	दुर्गतिगामी	दुर्गतिगामी	दुर्गतिगामी	सुगतिगामी	सुगति गामी	सुगतिगामी
आयु ११	आयुने अंते है न करे तदा मृत्यु	अंतर्मुहूर्त शेष आयु थाकते नर भव जहां जाता तिस भव सदृश लेश्याका सरूप होवे तिस लेश्याके प्रथम समय अथवा चरम समय काल अंतर्मुहूर्त लेश्या बीती है अने अंतर्मुहूर्त ही है				
स्पर्श १२	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी
अवगाहना १३	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश
वर्गणा १४	अनंती वर्गणा	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्	एवम्
अल्पबहुत्व द्रव्यार्थ प्रदेश १५	३ असंख्य गुणी वर्गणा	२ असंख्य गुणी०	१ स्तोक	४ असंख्य गुणी	५ असंख्य गुणी	६ असंख्य गुणी
विशुद्ध १६	अविशुद्ध	अविशुद्ध	अविशुद्ध	विशुद्ध	विशुद्ध	विशुद्ध
प्रशस्त १७	अप्रशस्त	अप्रशस्त	अप्रशस्त	प्रशस्त	प्रशस्त	प्रशस्त
ज्ञान १८	२।२।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४।१
क्षेत्र १९	१ बहु	२ बहु	३ बहु	४ बहु	५ बहु	६ बहु
ऋद्धि २०	१ स्तोक	२ बहु	३ बहु	४ बहु	५ बहु	६ बहु
अल्पबहुत्व	७ विशेष	६ विशेष	५ अनंत गुण	३ संख्या	२ संख्या	१ स्तोक ६ अलेश्यी ४ अनंत

अथ स्थितिका खुलासा—समुच्चय कृष्ण लेश्याकी स्थितिमे ३३ सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक ते पूर्वापर भवनी अपेक्षा है. अने नारकीने ३३ सागरोपम पूरी कही ते नरक भवनी अपेक्षा छत्र है. इसी तरेह देवतानी लेश्यामे पद्म आदिकमे तिस भव अने पूर्वापर भवनी अपेक्षा प्रकारांतरनी विवक्षा है. एह समाधान उत्तराध्ययनकी अवचूरिसें जान लेना.

भाव थकी १६ बोलकी (का) अल्पबहुत्वम्

१ जीवके योगस्थान जघन्य आदि सर्वसे स्तोक. २ एकेक कर्मप्रकृतिके भेद असंख्य गुणे.

३ कर्म स्थिति स्थान जघन्य आदि असख्य गुणे. ४ पद् लेश्या स्थान स्थितिरूप असख्य गुणे. ५ अनुभागबधके अध्यवसाय असख्य गुणे ६ कर्म प्रदेश दलरूप असख्य गुणे. ७ रस छेद जीव राससे अनत गुणे. ८ मनःपर्यायज्ञानके पर्यव अनत गुणे. ९ विभगज्ञानके पर्यव अनत गुणे. १० अवधिज्ञानके पर्याय अनत गुणे. ११ श्रुतअज्ञानके पर्याय अनत गुणे १२ श्रुतज्ञानके पर्याय विशेष अधिक १३ मतिअज्ञानके पर्याय अनत गुणे. १४ मतिज्ञानके पर्याय विशेष अधिक. १५ द्रव्यकी अगुरुलघु पर्याय अनत गुणे. १६ केवलज्ञाननी पर्याय अनत गुणे कर्मग्रन्थात्.

(१३) (लेश्याका अल्पबहुत्व)

अल्पबहुत्व	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेश्या	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्ल लेश्या
जीव	७ वि	४ वि	४ अनत	३ असख्यात	२ सख्यात	१ स्तोक
नारकी	१ स्तोक	२ असख्यात	३ असख्यात	०	०	०
वनस्पतिकाय	४ वि	३ वि	२ अनत	१ स्तोक	०	०
पृथ्वीकाय १ अप् २	४ वि	३ वि	२ असख्यात	१ स्तोक	०	०
तेजस्काय वायुकाय विकलेंद्रिय ३	३ वि	२ वि	१ स्तोक	०	०	०
१ तिर्यंच पचेंद्रिय	६ वि	५ वि	४ असख्यात	३ सख्यात	२ सख्यात	१ स्तोक
२ समूर्च्छिम पचेंद्रिय तिर्यंच	३ वि	२ वि	१ स्तोक	०	०	०
३ गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच	६ वि	५ वि	४ सख्यात	३ सख्यात	२ सख्यात	१ स्तोक
४ तिर्यंच स्त्री	६ वि	५ वि	४ स	३ स	२ स	१ स्तोक
समूर्च्छिम तिर्यंच पचेंद्रिय	९ वि	८ वि	७ अस	०	०	०
५ गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिय	६ वि	५ वि	४ स	३ स	२ स	१ स्तोक

अल्पबहुत्व	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेश्या	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्ल लेश्या
समूर्छिम तिर्यंच पचेंद्रिय	९ वि	८ वि	७ अस	०	०	०
६ तिर्यंच स्त्री	६ वि	५ वि	४ स	३ स	२ स	१ स्तोक
गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिय	९ वि	८ वि	७ स	५ स	३ स	१ स्तोक
७ तिर्यंच स्त्री	१२ वि	११ वि	१० स	६ स	४ स	२ स
समूर्छिम तिर्यंच पचेंद्रिय	१५ वि	१४ वि	१३ अस	०	०	०
८ गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच	९ वि	८ वि	७ स	५ स	३ स	१ स्तोक
तिर्यंच स्त्री	१२ वि	११ वि	१० स	६ स	४ स	२ स
तिर्यंच पचेंद्रिय समुच्चय	१२ वि	११ वि	१० अस	५ स	३ स	१ स्तोक
९ तिर्यंच स्त्री	८ वि	८ वि	७ स	६ स	४ स	२ स
तिर्यंच	१२ वि	११ वि	१० अनत	५ स	३ स	१ स्तोक
१० तिर्यंच स्त्री	९ वि	८ वि	७ स	६ स	४ स	? अस
१ देवता	५ वि	४ वि	३ अस	६ स	२ अस	१ स्तोक
२ देवी	३ वि	२ वि	१ स्तो	४ स	०	०
देवी	८ वि	७ वि	६ स	१० स	०	०
३ देवता	५ वि	४ वि	३ अस	९ स	२ अस	१ स्तोक
४ भवनपति देव ५ व्यंतर देव	४ वि	३ वि	२ अस	१ स्तो	०	०
६ भवनपति देवी ७ व्यंतर देवी	४ वि	३ वि	२ अस	१ स्तो	०	०

अल्पबहुत्व	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेश्या	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्ल लेश्या
भवनपति देव व्यंतर देव	५ वि	४ वि	३ अस	१ स्तो	०	०
८ भवनपति देवी ९ व्यंतर देवी	८ वि	७ वि	६ स	२ स	०	०
१० जोतिषी देव	०	०	०	१ स्तो	०	०
१० जोतिषी देवी	०	०	०	२ स	०	०
११ वैमानिक देव	०	०	०	३ अस	२ अस	१ स्तोक
११ वैमानिक देवी	०	०	०	स४	०	०
१२ भवनपति	७ वि	६ वि	५ अस	४ अस	०	०
१२ व्यंतर	११ वि	१० वि	९ अस	८ अस	०	०
१२ जोतिषी	०	०	०	१२ स	०	०
१२ वैमानिक	०	०	०	३ अस	२ अस	१ स्तोक
१३ भवन० देवी	५ वि	८ वि	३ अस	२ अस	०	०
१३ व्यंतर देवी	९ वि	वि ८ वि	७ वि	६ अस	०	०
१३ जोतिषी देवी	०	०	०	१० स	०	०
१३ वैमानिक देवी	०	०	०	१ स्तो	०	०
१४ भवन० देव	९ वि	८ वि	७ अस	५ अस	०	०
१४ भवन०देवी	१२ वि	११ वि	१० स	६ स	०	०
१४ व्यंतर देव	१७ वि	१६ वि	१५ अस	१३ अस	०	०
१४ व्यंतर देवी	२० वि	१९ वि	१८ स	१४ स	०	०
१४ जोतिषी देव	०	०	०	२१ स	०	०
१४ जोतिषी देवी	०	०	०	२२ स	०	०
१४ वैमानिक देव	०	०	०	३ अस	२ अस	१ स्तोक
१४ वैमानिक देवी	०	०	०	४ स	०	०

मनुष्यमे ९ बोलकी अल्पबहुत्व तिर्यंचवत् जान लेनी, दशमे बोलकी अल्पबहुत्व मनुष्यदंडकमे नहि है. इस वास्ते ९ बोलकी तिर्यंचवत् अल्पबहुत्व ज्ञेयम्. एह यंत्र *श्रीप्रज्ञापनाजीके १७ मे पदथी अने दूजे उद्देशेथी पद लेश्याकी अल्पबहुत्व है

शान्तमूर्ति मुनिमहाराज श्रीमान् हंसविजयजी महाराज

जन्म

संवत् १९१४

आषाढ वदि

अमावास्या

वडौदा गुजरात



मुनिपद

संवत् १९३'

माह वदि ११

अम्बाला शहर,

पंजाब

पालणपुरनिवासी कान्तिलाल तरफथी तेमना पिताश्री

स्व झवेरी मोहनलाल वखतचंदना स्मरणार्थे

(१४) श्रीपन्नवणा २ पदात् स्थानयन्त्र क्षेत्र द्वारम्

जीवाके भेद	स्वस्थानेन-रहने करके	उपपातेन-उपजने करके	समुद्घात आश्री
पृथ्वी १ अप् २ तेज ३ वायु ४ वनस्पति ५ ए ५ सूक्ष्म पर्याप्ता ५ अपर्याप्ता ५ एव १० बोल	सर्व लोकमे	सर्व लोकमे	सर्व लोकमे
बादर पृथ्वी १ अप् २ वायु ३ वनस्पति ४ ए चारों का अपर्याप्ता	लोकके असंख्यातमे भागमे	सर्वोसिल्लोके-सर्व लोकमे	सर्वलोके असंख्यलोकके प्रदेशतुल्यत्वात्
बादर तेजस्काय अपर्याप्ता १	मनुष्यलोक	मनुष्यलोकके २ ऊंच कपाट तिर्यग् लोकका तट	सर्व लोकमे
बादर तेजस्काय पर्याप्ता १	"	लोकके असंख्य भाग स्तोकत्वात्	लोकके असंख्यातमे भाग
बादर वायुकाय पर्याप्ता १	लोकके घणे असंख्य भागमे	एवम्	एवम्
बादर वनस्पति पर्याप्ता १	लोकके असंख्यमे भाग	सर्व लोकमे बहुतमत्वात्	सर्व लोकमे
शेष सर्व जीव	"	एवम्	एवम्

(१५) *श्रीपन्नवणा अवगाहना २१मे पदात् स्पर्शनाद्वारम्

१ समग्र लोकमां असंख्य लोकना प्रदेशोनी बराबर होवाथी। २ अल्प होवाथी। ३ अत्यत अधिक होवाथी।

*"जीवस्स ण भंते मारणंतियसमुग्घाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा प०? गो०! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेण आयामेण जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जभागो, उक्कोसेण लोगंताओ लोगंते। एगिंदियस्स ण भंते! मारणंतिय० सरीरो० प०? गो०! एव चेव, जाव पुढवि० आउ० तेउ० वाउ० वणप्फइकाइयस्स। बेइंदियस्स ण भंते! मारणंतिय० प०? गो०! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेण आयामेण जह० अंगुलस्स असंखे०, उक्को० तिरियलोगाओ लोगंते, एव जाव चउरिंदियस्स। नेरइयस्स ण भंते! मार० जह० सातिरेग जोयणसहस्सं, उक्को० अधे जाव अहेसत्तमा पुढवी, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव पंडगवणे पुक्खरिणीतो। पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स ण भंते! गो०! जहा बेइंदियसरीरस्स। मणुस्सस्स ण भंते! गो०! समयखेत्ताओ लोगंतो। असुरकुमारस्स ण भंते!० जह० अंगुलस्स अस०, उक्को० अधे जाव तच्चाए पुढवीए हिट्ठिल्ले

मरणात समुद्घात तेजस अवगाहना	नारकी	भवन० व्यंतर जोतिषी सौधर्म ईशान	३-८ देवलोक	९-१२ देवलोक	९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर	स्थावर ५	विकलेंद्री ३ तिर्यंच पंचेंद्री	मनुष्य
जघन्य	१००० योजन साधिक पाताल कलशकी भींति आश्री	अंगुलके असंख्यातमे भाग स्व आभरण आदि अपेक्षा(से)	अंगुल असंख्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी मरी तिहां उपजे अन्य वीर्यमें	अंगुल असंख्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी तिहां योनिमें पहिला वीर्य है तिहा उपजे	विद्याधर श्रेणि	अंगुलके असंख्यातमे भाग	→एवम्	→एवम्
उत्कृष्ट	सातमी नरक	नीची नरक का चरम अंत	पाताल कलशके उपरले २ भागे	अधोग्राममें	अधोग्राममें	१४ रज्जु प्रमाण	७ रज्जु	७ रज्जु
तिरछा	स्वयंभूरमण समुद्र	स्वयंभूरमण समुद्रकी वे(द)दिकांत	स्वयंभूरमण समुद्र	मनुष्य क्षेत्र	मनुष्य क्षेत्र	१ रज्जु	१ रज्जु	अध रज्जु
ऊर्ध्व ऊंचा	पंडग वन वापीमें	इषत् प्राग्भार पृथ्वी	अच्युत देवलोक	अच्युत विमान बारमा देव०	अपना विमान	१४ रज्जु	७ रज्जु	७ रज्जु

चरमंते तिरियं जाव सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्ले वेइयंते, उड्ढं जाव इसीपब्भारा पुढवी, एवं जाव थणियकुमारतेयगसरीरस्स । वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणगा य एवं चेव । सणंकुमारदेवस्स णं भंते० ! जह० अंगु० अस०, उक्को० अधे जाव महापातालाणं दोच्चे तिभागे, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो, एवं जाव सहस्सारदेवस्स अच्चुओ कप्पो । आणयदेवस्स णं भंते० ! जह० अंगु० अस०, उक्को जाव अधोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो, एवं जाव आरणदेवस्स अच्चुअदेवस्स एवं चेव, णवरं उड्ढं जाव सयाइं विमाणाति । गेविज्जगदेवस्स णं भंते ! जह० विज्जाहरसेढीतो, उक्को० जाव अहोलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव सगाति विमाणाति, अणुत्तरोववाइयस्स वि एवं चेव ' । (प्रज्ञा० सू० २७५)

(१६) श्रीपन्नवणा पद ३६मेथी समुद्घातयन्त्रम्

७ समुद्घात	०	वेदनी	कषाय	मरणांतिक	वैक्रिय	तैजस	आहारक	केवल	असमवहता
स्वामी	०	४ गतिना	४ गतिना	४ गतिना	४ गतिना	३ नरक विना	१ मनुष्य	१ मनुष्य	४ गतिना जीव

७ समुद्घात	०	वेदनी	कषाय	मरणांतिक	वैक्रिय	तैजस	आहारक	केवल	असमवहता
काल	०	अंतमुहूर्त	अंत०	अंत०	अंत०	विना अंत०	अंत०	८ समय	०
अतीत काले	जघन्य	अनंती	अनंती	अनंती	अनंती	अनंती	१	१	०
	उत्कृष्ट	,,	,,	,,	,,	,,	४	१	
आगे करेगा, ते	जघन्य	करे वीन ही कीजो १	नही १ करे	→	ए	ए	म्	→	०
	उत्कृष्ट	अनंती करे	अनंत	अनंत	अनंत	अनंत	४	१	०
अल्पबहुत्व	०	७ विशेष	६ अस०	५ अनंत गुण	४ अस०	३ अस०	१ स्तोक	२ संख्येय गुणा	८ अस० गुणा
क्षेत्र	दिशा	६	६	३,४,५,६,	६	६	३	६	०
निष्कंभ बाहुल्य		शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	सर्व लोक	०
आयाम लांबपणे		,,	,,	१४ रज्जु				,,	०
विग्रह समय संख्या		३	३	३	३	३	०	०	०
क्रिया	०	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	३,४,५	०	०

(१७) केवल(लि)समुद्घातयंत्र

प्रथम आउजी(आवर्जी)करण करे—आत्माकू मोक्षके सन्मुख करे, पीछे समुद्घात करे, जिस समयमे आत्मप्रदेश सर्व लोकमे व्याप्त करे तिस समये अपने अष्ट रुचक प्रदेश लोकरुचक पर करे इति स्थानांगवृत्तौ ।

समय ८	१ समय	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	७ समय	८ समय
योग ३	औदारिक	औदारिक मिश्र	कार्मण	कार्मण	कार्मण	मिश्र	मिश्र	औदारिक
करण ८	दंड करे	कपाट करे	मथान करे	अंतर पूरे	अंतर संहरे	मथान संहरे	कपाट संहरे	दंड संहरे शरीरस्थ

समय ८	१ समय	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	७ समय	८ समय
ऊर्ध्वे अधो	लोकात	लोकात	लोकात	लोकात	लोकात	लोकात	लोकात	लोकात
पूर्व पश्चिम	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	,,	,,	,,	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण
उत्तर दक्षिण	,,	लोकात	,,	,,	,,	,,	,,	,,
जीव प्रदेश	सर्व शरीरमे	बाह्य स्तोक	अभ्यतरे स्तोक	लोका काश तुल्य	लोका काश तुल्य	अभ्यतर स्तोक	बाह्य स्तोक	सर्व शरीरमे

(१८) श्रीपन्नवणा पद ३६मे सात समुद्घात अल्पबहुत्वम्

द्वार	वेदनी १	कषाय २	मरणातिक ३	वैक्रिय ४	तैजस ५	आहारक ६	केवल ७
नरक	३ सखे	४ सखे	१ स्तोक	२ अस०	०	०	०
भवनपति	३ अस	,,	२ अस	५ सखे	१ स्तोक	०	०
पृथ्वी	३ विशेष	२ सखे	१ स्तोक	०	०	०	०
अप्	,,	,,	,,	०	०	०	०
अग्नि	,,	,,	,,	०	०	०	०
वायु	४ वि	३ स	२ अस	१ स्तोक	०	०	०
वनस्पति	३ वि	२ स	१ स्तोक	०	०	०	०
बेइद्री	२ अस	३ सखे	,,	०	०	०	०
तेंद्री	,,	,,	,,	०	०	०	०
चौरिंद्री	,,	,,	,,	०	०	०	०
तिर्यंच पचेंद्री	४ अस	५ स	३ अस	२ अस०	१ स्तोक	०	०
मनुष्य	६ अस	७ स	५ अस	४ स	३ स	१ स्तोक	२ स
व्यतर	३ अस	४ स	२ अस	५ स	१ स्तोक	०	०
जोतिषी	,,	,,	,,	,,	,,	०	०
वैमानिक	,,	,,	,,	,,	,,	०	०

(१९) पन्नवणा कषायपदे अल्पबहुत्वम्

क्रोध द्वार सख्या	मान	माया	लोभ	अकषाय
४ वि	३ स	२ स	१ स्तो	०
१ स्तो	२ स	३ स	४ वि	०
२ वि	१ स्तो	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०
				१ स्तो
१ स्तो	२ स	३ स	४ वि	०
,,	,,	,,	,,	०
,,	,,	,,	,,	०

आचारांगात् षोडश (१६) संज्ञास्वरूप

१ आहारसंज्ञा—आहार अभिलाषारूप तैजसशरीरनामकर्म असाताके उदय २ भयसंज्ञा—त्रासरूप मोहकर्मकी प्रकृतिके उदय. ३ मैथुनसंज्ञा—१ स्त्री २ पुरुष ३ नपुंसक इन तीनो वेदोंके उदय. ४ परिग्रहसंज्ञा—मूर्च्छारूप मोहनी(य)कर्मके उदय. ५ सुखसंज्ञा—सातावेदनी(य)के उदय करके ६ दुःखसंज्ञा—दुःखरूप असातावेदनी(य)के उदय ७ मोहसंज्ञा—मिथ्यादर्शनरूप मोहकर्मके उदय. ८ विचिकित्सासंज्ञा—चित्तविप्लुतिरूप मोहनी(य) अने ज्ञानावरणी(य)के उदय. ९ क्रोधसंज्ञा—अप्रतीति(अप्रीति ?)रूप मोहकर्मके उदय. १० मानसंज्ञा—गर्वरूप मोहकर्मके उदय. ११ मायासंज्ञा—वक्ररूपा मोहकर्मके उदय. १२ लोभ

१ आचारांगमांथी सोळ संज्ञाओनुं स्वरूप ।

संज्ञा—गृद्धिरूपा मोहकर्मके उदय. १३ शोकसंज्ञा—विप्रलाप वैमनस्यरूपा मोहकर्मके उदय. १४ लोकसंज्ञा—स्वच्छंदे घटित विकल्परूपा लोकरूढि—श्वान यक्ष है, विप्र देवता है, काका' पितामह(१') अर्थात् काक दादा पडिदादा है, मोरकी पांखकी पवनसे मोरणीके गर्भ होता है इत्यादि रूढि लोकसंज्ञा. ज्ञानावरणी(य)का क्षयोपशम मोहनी(य)के उदयसें है. १५ धर्म संज्ञा—क्षात्यादिसेवनरूपा मोहनी(य)के क्षयोपशमसे होय. १६ ओघसंज्ञा—अव्यक्त उपयोग-रूपा, वेलडी रूख पर चडे है. ज्ञानावरणी(य) क्षयोपशमसे है. उपरी १५ संज्ञा तो संज्ञी पचेंद्री, सम्यग्दृष्टि वा मिथ्यादृष्टिने है यथासंभव. ओघसंज्ञा एकेंद्रादि जीवाके जान लेनी. ए सर्व निर्युक्तौ.

(२०) अथ आहारादि संज्ञा ४ यंत्र स्थानांगस्थाने ४ उद्देशे ४ वा पन्नवणा संज्ञापद

४ संज्ञा नाम	१ आहारसंज्ञा	२ भयसंज्ञा	३ मैथुनसंज्ञा	४ परिग्रहसंज्ञा
नारकी	२ संख्येय गुणे	४ संख्येय गुणे	१ स्तोक सर्वभ्य	३ संख्येय गुणे
तिर्यग्	४ ,,	३ ,,	२ संख्येय गुणे	१ सर्वसें स्तोक
मनुष्य	२ ,,	१ स्तोक सर्वभ्य	४ ,,	३ संख्येय गुणे
देवता	१ स्तोक सर्वेभ्य	२ संख्येय गुणे	३ ,,	४ ,,
कारण ४।४	कोठेके रीते हुया	धीं(धे)यहीनात्	मांस रुधिरकी पुष्टाइसें	मूर्च्छा होनेते(से)
चार २	क्षुधा लगनेसें	भयके उदय	वेदके उदयते(से)	लोभके उदयते(सें)
,,	आहारके देखे सुनेसें	भयके वस्तुके देखनेसें	स्त्रीके देखे सुनेसें	उपगरणके देखे सुनेसें
,,	आहारकी चिंता करे(रने)सें	भयकी चिंतासे	कामभोगकी चिंतोना करे(रने)सें	उपगरणकी चिंता करनेसें

(२१) सांतर निरंतर द्वारम्

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता
अंतर जघन्य	१ समय	०	१ समय	१ समय
,, उत्कृष्ट	१२ मुहूर्त	०	१२ मुहूर्त	१२ मुहूर्त
आयसंख्या जघन्य	१ जीव एक समये उपजे	प्रतिसमय अनंते उपजे	१ जीव एक समय उपजे	१ जीव एक समय उपजे

१ श्राद्ध। २ निर्युक्तिने विषे। ३ बधाथी। ४ धीरज ओछी होवाथी।

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता
जीवसंख्या उत्कृष्ट	श्रेणिके असंख्यातमे भाग	अनंते उपजे	पल्यके असंख्यमे भाग	श्रेणिके असंख्य मे भाग
निरंतर प्रमाण जघन्य	२ समय निरंतर	सर्व अद्धा	२ समय निरंतर	२ समय निरंतर
,, ,, उत्कृष्ट	आवलिके असंख्यमे भाग	,,	आवलिके असंख्यमे भाग	आवलिके असंख्यातमे भाग
जीवसंख्या जघन्य	२ जीव दो समयामे उपजे	अनंते समयसे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे
,, उत्कृष्ट	श्रेणिके असंख्यमे भाग	सर्व अद्धा	पल्यके असंख्यमे भाग	श्रेणिके असंख्यमे भाग
सांतरोववज्जगा	२ असंख्य गुणे	०	२ असंख्य गुणे	२ असंख्य गुणे
निरंतरोववज्जगा	१ स्तोक	०	१ स्तोक	१ स्तोक

(२२) भाषाके पुद्गल ५ प्रकारे भेदाय ते यन्त्रम् पन्नवणा पद ११

भेद	खं(ख)ड भेद १	प्रतरभेद २	चूर्णि(र्ण)भेद ३	अनुतडिता भेद ४	उत्करिका भेद ५
अर्थ	लोहेके खंडवत् भाषाके खंड होय	अभ्रकके पुडवत् भाषा बोल्या पछे भेदाय	अन्नके आटेकी तरे(ह) भाषा बोल्या पछे भेदाय	सरोवरकी अभेडवत् भेद हो कर भेदाय	एरंडकी मटरकी मूंग उडदकी फली सूकेसे दाणा उछले
अल्पबहुत्व	५ अनंत गुणे	४ अनंत गुणे	३ अनंत गुणे	२ अनंत गुणे	१ स्तोक

भाषास्वरूपयन्त्र प्रज्ञापना पद ११

आदि—भाषाकी आदि जीवसें, २ उत्पत्ति—भाषाकी उत्पत्ति औदारिक १ वैक्रिय २ आहारि(र)क ३ शरीरसें. ३ भाषाका संस्थान—भाषाका संस्थान वज्रका आकार, जैसे वज्र आगे पीछे तो विस्तीर्ण होता है अने मध्य भागमे पतला होता है ऐसा संस्थान भाषाका कल्मात्[1] लोक व्यापे तद्वलोक सरीषा संस्थान है. ४ (स्पर्श)—भाषाके पुद्गल तीव्र प्रयत्नसे बोलनहारके लोकके पट्ट दिग् चरम अंतर्ग चार समयमे स्पर्शे. ५ द्रव्य—भाषा द्रव्यथी अनंतप्रदेशी स्कंध लेवे. ६ क्षेत्र—भाषा क्षेत्रथी असंख्य प्रदेश अवगाह्या स्कंध ग्रहण करे. ७ काल—भाषा कालथी यथायोग्य अन्यतर स्थिति सर्व प्रकारनी. ८ भाव—भाषा भावथी वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ एह ग्रहण करे. ९ दिशा—भाषाके पुद्गल पट्ट ६ दिशायी लेवे.

[1] शायी ?।

संज्ञा—गृद्धिरूपा मोहकर्मके उदय. १३ शोकसंज्ञा—विप्रलाप वैमनस्यरूपा मोहकर्मके उदय. १४ लोकसंज्ञा—स्वच्छंदे घटित विकल्परूपा लोकरूढि—श्वान यक्ष है, विप्र देवता है, काकाः पितामह(१) अर्थात् काक दादा पडिदादा है, मोरकी पांखकी पवनसे मोरणीके गर्भ होता है इत्यादि रूढि लोकसंज्ञा. ज्ञानावरणी(य)का क्षयोपशम मोहनी(य)के उदयसे है. १५ धर्मसंज्ञा—क्षांत्यादिसेवनरूपा मोहनी(य)के क्षयोपशमसे होय. १६ ओघसंज्ञा—अव्यक्त उपयोग रूपा, वेलडी रूख पर चडे है. ज्ञानावरणी(य) क्षयोपशमसे है. उपरी १५ संज्ञा तो संज्ञी पंचेंद्री, सम्यग्दृष्टि वा मिथ्यादृष्टिने है यथासंभव. ओघसंज्ञा एकेंद्रादि जीवांके जान लेनी. ए सर्व निर्युक्तौ.

(२०) अथ आहारादि संज्ञा ४ यंत्र स्थानांगस्थाने ४ उद्देशे ४ वा पन्नवणा संज्ञापद

४ संज्ञा नाम	१ आहारसंज्ञा	२ भयसंज्ञा	३ मैथुनसंज्ञा	४ परिग्रहसंज्ञा
नारकी	२ संख्येय गुणे	४ संख्येय गुणे	१ स्तोक सर्वभ्य	३ संख्येय गुणे
तिर्यग्	४ „	३ „	२ संख्येय गुणे	१ सर्वसें स्तोक
मनुष्य	२ „	१ स्तोक सर्वभ्य	४ „	३ संख्येय गुणे
देवता	१ स्तोक सर्वभ्य	२ संख्येय गुणे	३ „	४ „
कारण ४।३	कोठेके रीते हुया	धी(धै)यहीनात्	मांस रुधिरकी पुष्टाइसें	मूर्च्छा होनेते(सें)
चार २	क्षुधा लगनेसें	भयके उदय	वेदके उदयते(से)	लोभके उदयते(सें)
„	आहारके देखे सुनेसे	भयके वस्तुके देखनेसें	स्त्रीके देखे सुनेसें	उपगरणके देखे सुनेसें
„	आहारकी चिंता करे(रने)सें	भयकी चिंतासें	कामभोगकी चिंतोना करे(रने)सें	उपगरणकी चिंता करनेसें

(२१) सांतर निरंतर द्वारम्

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता
अंतर जघन्य	१ समय	०	१ समय	१ समय
„ उत्कृष्ट	१२ मुहूर्त	०	१२ मुहूर्त	१२ मुहूर्त
जीवसंख्या जघन्य	१ जीव एक समये उपजे	प्रतिसमय अनंते उपजे	१ जीव एक समय उपजे	१ जीव एक समय उपजे

१ गा॰। २ निर्युक्तिने विषे। ३ बधाथी। ४ धीरज थोडी होवाथी।

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता
जीवसख्या उत्कृष्ट	श्रेणिके असख्यातमे भाग	अनते उपजे	पल्यके असख्यमे भाग	श्रेणिके असख्यमे भाग
निरतर प्रमाण जघन्य	२ समय निरतर	सर्व अद्धा	२ समय निरतर	२ समय निरतर
,, ,, उत्कृष्ट	आवलिके असख्यमे भाग	,,	आवलिके अस ख्यमे भाग	आवलिके अस ख्यातमे भाग
जीवसख्या जघन्य	२ जीव दो समयामे उपजे	अनते समयसे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे
,, उत्कृष्ट	श्रेणिके असख्यमे भाग	सर्व अद्धा	पल्यके असख्यमे भाग	श्रेणिके असख्यमे भाग
सातरोववनगा	२ असख्य गुणे	०	२ असख्य गुणे	२ असख्य गुणे
निरतरोववनगा	१ स्तोक	०	१ स्तोक	१ स्तोक

(२२) भाषाके पुद्गल ५ प्रकारे भेदाय ते यन्त्रम् पन्नवणा पद ११

भेद	खं(ख)डा भेद १	प्रतरभेद २	चूर्णि(र्ण)भेद ३	अनुतडिता भेद ४	उत्करिका भेद ५
अर्थ	लोहेके खडवत् भाषाके खड होय	अभ्रकवे पुद्गलवत् भाषा बोल्या पछे भेदाय	अन्नके आटेकी तरे(ह) भाषा बोल्या पछे भेदाय	सरोवरकी अनेड-वत् श्रेड हो कर भेदाय	परिंडकी मटरकी मूग उडदकी फली सूकेसे दाणा उछले
अल्पबहुत्व	५ अनत गुणे	४ अनत गुणे	३ अनत गुणे	२ अनत गुणे	१ स्तोक

भाषास्वरूपयन्त्र प्रज्ञापना पद ११

आदि—भाषाकी आदि जीवस्यु २ उत्पत्ति—भाषाकी उत्पत्ति औदारिक १ वैक्रिय २ आहारि(र)क ३ शरीरसें ३ भाषाका सस्थान—भाषाका सस्थान वज्रका आकार. जैसे वज्र आगे पीछे तो विस्तीर्ण होता है अने मध्य भागमे पतला होता है ऐसा सस्थान भाषाका. कैसात्[1] लोकव्यापे तदलोक सरीषा सस्थान है. ४ (स्पर्श)—भाषाके पुद्गल तीव्र प्रयत्नसे बोलनहारके लोकके पट् दिग् चरम अतक चार समयमे स्पर्शे. ५ द्रव्य—भाषा द्रव्यथी अनतप्रदेशी स्कध लेवे. ६ क्षेत्र—भाषा क्षेत्रथी असख्य प्रदेश अवगाह्या स्कध ग्रहण करे. ७ काल—भाषा कालथी यथायोग्य अन्यतर स्थिति सर्व प्रकारनी. ८ भाव—भाषा भावथी वर्ण ५, गध २, रस ५, स्पर्श ८ एह ग्रहण करे. ९ दिशा—भाषाके पुद्गल पट् ६ दिशाथी लेवे.

१ क्यांथी ? ।

१० स्थिति—भाषाकी स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. ११ अंतर—भाषाका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल. १२ ग्रहण—भाषाके पुद्गल कायायोगसे ग्रहण करे. १३ व्युत्सर्ग—भाषाकी वर्गणाका वचनयोगसे तजे–छोडे. १४ निरंतर—भाषाके पुद्गल प्रथम समये लेवे, दूजे समय नवे ग्रहण करे अने पीछले छोडे. एवं प्रकारे तीजे ४।५।६ यावत् अंतर्मुहूर्त ताइ लेवे पीछेके छोडे, अंतसमये ग्रहण न करे, पीछले छोडे. इहां पहले समय तो लेवे ही अने चरम समयमे छोडे अने मध्यके असंख्य समयामे ले(वे) बी अने छोडे बी. ए दो वाते एकेक समयमे होवे

(२३) शरीर पांचका यंत्र श्रीप्रज्ञापना पद २१ मेथी

नाम १	०	औदारिक १	वैक्रिय २	आहारक ३	तैजस ४	कार्मण
स्वामी २	०	मनुष्य १ तिर्यंच २	४ गतिना	चौदपूर्वधर मनुष्य	४ गतिना	४ गतिना जीव
संस्थान ३		६ पट्	२ मूले सम० १, हुंड २ उत्तर नाना	समचतुरस्र	नाना संस्थान	नाना संस्थान
प्रमाण ४	जघन्य	अंगुलके असंख्यमे भाग	अंगुलके असंख्यमे भाग	देशोन १ हस्त	अंगुलके असंख्यमे भाग	अंगुलके असंख्यमे भाग
	उत्कृष्ट	१००० योजन	१,००,००० योजन	१ हस्त प्रमाण	१४ रज्जु प्रमाण	सर्व लोक प्रमाण
पुद्गल चयना ५		३।४।५।६ दिशासे	६ पट् दिशासे	६ पट् दिशासे	३।४।५।६ दिशासे	३।४।५।६ दिशासे
परस्पर पांच शरीरका संयोग द्वार ६	औदारिक	०	भजना है	भजना है	नियमा है	नियमा है
	वैक्रिय	भजना है	०	०	,,	,,
	आहारक	नियमा है	०	०	,,	,,
	तेजस कार्मण	भजना है	भजना है	भजना है	०	०
अल्प बहुत्व ७	द्रव्यार्थे	३ असंख्येय गुणा	२ असंख्येय गुणा	१ सर्वस्तोक	४ अनंत गुणा	४ अनंत गुणा
	प्रदेशार्थे	,,	,,	,,	,, ,,	५ ,,

१ बधाथी ।

नाम १	०	औदारिक १	वैक्रिय २	आहारक ३	तैजस ४	कार्मण ५
द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे उभय	द्रव्यार्थे	३ असं० गुणा	२ असं० गुणा	१ स्तोक	७ अनंत गुणा	७ अनंत गुणा
	प्रदेशार्थे	६ असंख्येय गुणा	५ ,,	४ अनंत गुणा	८ ,,	९ ,,
अवगाहनाकी अल्प-बहुत्वम् ८	जघन्य	१ स्तोक	३ ,,	४ असख्येय गुणा	२ विशेषाधिक	२ विशेषाधिक
	उत्कृष्ट	२ सख्येय गुणा	३ सख्येय गुणा	१ स्तोक	४ असख्येय	४ असख्येय गुणा
	जघन्य	१ स्तोक	३ असख्येय गुणा	४ असख्येय	२ विशेषाधिक	२ विशेषाधिक
	उत्कृष्ट	६ संख्येय गुणा	७ सख्येय गुणा	१ विशेषाधिक	८ असख्येय	८ असख्येय गुणा

योनियंत्र पन्नवणा पद ९ थी

१ संवृत योनि ते ढंकी हुई, देव, नरक, स्थावरनी. २ विवृत-उघाडी योनि, विकलेंद्रीनी. ३ संवृतविवृत-ढकी भी उघाडी भी, विकलेंद्री वा गर्भजवत्. ४ सचित्त योनि-जीवप्रदेश संयुक्त, स्थावरादिवत्नी. ५ अचित्त-जीव रहित योनि, देवता नारकीनी. ६ मिश्र योनि-सचित्त अचित्त रूप, गर्भजनी. ७ शीत योनि-शीत उत्पत्तिस्थान, नारक आदिनी. ८ उष्ण योनि-उष्ण उत्पत्ति स्थान; नरक, तेजस्काय आदिकनी. ९ शीतोष्ण-उभय उत्पत्तिस्थान, मनुष्य, देव, आदिकनी. १० शखावर्त योनि, स्त्रीरत्नकी, जीव जन्मे नहि. ११ कूर्मोन्नत योनि-कछुवत् ऊची, तीर्थंकर, चक्री, बलदेव (और) वासुदेवनी माता. १२ वंशीपत्रा योनि, पृथग्जननी माता, सामान्य स्त्रीनी.

(२४) ८४ लाख योनिसख्या

पृथ्वीकाय	७ लाख	द्विइंद्री	२ लाख
अप्काय	,, ,,	तेइंद्री	२ ,,
तेजस्काय	,, ,,	चौरिंद्री	२ ,,
वायुकाय	,, ,,	देवता	४ ,,
बादर निगोद	,, ,,	नारकी	४ ,,
सूक्ष्म निगोद	,, ,,	तिर्यंच पचेंद्री	४ ,,
प्रत्येक वनस्पति	१० ,,	मनुष्य	१४ ,,

१ काचबानी पेठे।

(२५) कुल १९७५०००००००००००० एक कोडाकोटी ९७५० लाख कोड कुल है.

पृथ्वी	१२ लाख कोटि	जलचर	१२॥ लाख कोटि
अप्	७ ,, ,,	स्थलचर	१० ,, ,,
तेउ	३ ,, ,,	खेचर	१२ ,, ,,
वायु	७ ,, ,,	उरग	१० ,, ,,
वनस्पति	२८ ,, ,,	भुजग	९ ,, ,,
बेंद्री	७ ,, ,,	मनुष्य	१२ ,, ,,
तेंद्री	८ ,, ,,	देवता	२६ ,, ,,
चौरिंद्री	,, ,,	नारकी	२५ ,, ,,

अथ संघयणस्वरूपम्

१ वज्रऋषभनाराच—संहनन–अस्थिसंचय, वज्र तो कीली १, ऋषभ–परिवेष्टन २, नाराच–उभय मर्कटबन्ध ३, दोनो हाड आपसमें मर्कटबंधस्थापना, ऋषभ उपरि वेष्टन-स्थापना. वज्र उपरि तीनो हाडकी भेदनेहारी कीली ते स्थापना काली रेखा वज्र कीली है

२ ऋषभनाराच—ऋषभनाराचमे उभय मर्कट बंध १, नाराच उपरि वेष्टन, कीली नही. स्थापनाऽस्य

३ नाराच—मर्कटबंध तो है, अने वेष्टन अने कीली एह दोनो नही स्थापना

४ अर्धनाराच—एक पासे कीली अने एक पासे मर्कटबंध ते अर्धनाराच स्थापना.

५ कीलिका—दोनो हाडकी वींधनेहारीनि केवल एक कीली, मर्कटबंध नही ते. कीलिकाकी स्थापना.

६ सेवार्त्त—दोनो हाडका छेहदाही स्पर्शे है, ते सेवार्त्त. छेदवृत्त छेवट्ट इति नामांतर. स्थापना.

अथ षट् संस्थानस्वरूप यंत्र स्थानांगात्

१ समचतुरस्र—सम कहीये शास्त्रोक्त रूप, चतुर् कहीये चार, अस्र कहीये शरीरना अवयव है जेहने विषे ते समचतुरस्र, सर्व लक्षण संयुत एक सो आठ अंगुल प्रमाण ऊंचा.

२ न्यग्रोधपरिमंडल—न्यग्रोध–वडवत् मंडल नाभि उपरे. परि कहीये प्रथम संस्थानके लक्षण है; एतावता वडवत् नीचे नाभि ते लक्षण हीन, वड उपरे सम तैसे नाभि उपर सुलक्षणा.

३ सादि—नाभिकी आदिमे एत(ट)ले नाभिसे हेठे लक्षणवान् अने नाभिके उपरि लक्षण रहित ते 'सादि' संस्थान कहीये.

१ एनी।

४ कुब्ज—हाथ, पग, मस्तक तो लक्षण सहित अने हृदय, पूठ, उदर, कोठा एह लक्षण हीन ते 'कुब्ज' संस्थान.

५ वामन—जिहां हृदय, उदर, पूठ ए सर्व लक्षण सहित अने शेष सर्व अवयव लक्षण हीन ते 'वामन', कुब्जसे विपरीत.

६ हुंड—जिहां सर्व अवयव लक्षण हीन ते 'हुंड' संस्थान कहीये.

(२६) १४ बोलकी उत्पाद (उत्पात) भगवती (श० १, उ० २, सू० २५)

	जघन्य	उत्कृष्ट
असंयत भव्य द्रव्यदेव चरणपरिणाम शून्य मिथ्यादृष्टि भव्य वा अभव्य द्रव्ये क्रियाना करणहार, निखिल समाचारी अनुष्ठान युक्त, द्रव्य लिंगधारी पिण समदृष्टीना अर्थ न करणा ते निखिल क्रिया केवलसे	भवनपतिमे उपजे	उपरले ग्रैवेय कमे २१मे देव
अविराधितसंयम प्रव्रज्याके कालसें आरभी अभग्नचारित्रपरिणाम प्रमत्त गुणस्थानमे भी चारित्रकी घात नही करी	प्रथम देवलोके	सर्वार्थसि द्धिमे २६
विराधित संयत उपरलेसे विपरीत अर्थ अने सुकुमालिका जो दूजे देवलोकें गई सो उत्तर गुण विराधि थी इस वास्ते अने इहां विशिष्टतर संयम विराधनाकी है	भवनपतिमे	प्रथम देव लोक
श्रावक आराधिक जिसने व्रत ग्रहण थूलसें लेकर अखंड व्रत पालक श्रावक	प्रथम देवलोके	१२ मे स्वर्गे
विराधक श्रावक उपरिले अर्थसे विपरीत अर्थ जानना	भवनपतिमे	जोतिषीमे
तापस पड्यो हूये पत्रादिके भोगनेहारे बालतपस्वी	,,	,,
असंज्ञी मनोलब्धि रहित अकाम निर्जरावान्	,,	व्यंतरमे
कंदर्पि व्यवहारमे तो चारित्रवंत भ्रमूह वदन मुख नेत्र प्रमुख अंग मटकावीने औराकू हसावे ते कंदर्पिक	,,	प्रथम देव लोके
चरगपरिव्राजक त्रिदंडी अथवा चरग-कछोटकाय, परिव्राजक-कपिल मुनिना संतानीया	,,	ब्रह्मलोके ५ स्वर्गे
किल्बिषिक व्यवहारे तो चारित्रवान् पिण ज्ञानादिके अवर्ण बोले, जमालिवत्	,,	छठे देवलोके
तिर्यंच गाय घोडा आदिकने पिण देशविरति जानना इति वृत्तौ	,,	८ मे देव लोके
आजीविकामति पाखंडिविशेष आजीविका निमित्त करणी करे, गोशालाना शिष्यानी परें	,,	१२ मे स्वर्गे
आभियोगिक मंत्र यंत्रे करी आगलेकू वश करे निशेपाथ वृत्तौ	,,	,,
स्वलिंगी दर्शनव्यापन्न लिंग तो यतिका है, पिण सम्यक्त्वसे भ्रष्ट है, निह्नव इत्यर्थ	,,	२१ मे देव लोक

१ "अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं १ अविराहियसंजमाणं २ विराहियसंजमाणं ३ अवि-

(२७) कालादेशेन सप्रदेशी अप्रदेशी

(कालकी अपेक्षासे सप्रदेशी अप्रदेशी)	आहारक	अनाहारी	भव्य अभव्य	नोभव्य नोअभव्य	संज्ञी	असंज्ञी	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी	सलेशी	कृष्णनील कापोत	तेजोलेश्या	पद्मशुक्ल	अलेशी	सम्यग्दृष्टि	मिथ्यादृष्टि	मिश्रदृष्टि	संयत	असंयत	देशवृत्ति	नोसंयत नोअसंयत नोश्रावक	सकषायी	क्रोधकषाय	मानमाया	लोभकषाय	अकषायी
जीयाण	सप्रदेअ	सअप्र	स	३	३	३	३	सप्र	सअप्र	३	२	२	३	३	६	२	२	३	२	३	सअप्रस	अभग	अभग	३
नारकाणां	३	६	३	०	३	६	०	३	३	०	०	०	३	३	६	०	३	०	०	३	३	६	६	०
देव-भवनपति १० व्यंतर जोतिषी वैमानिक	३	६	३	०	३	६	०	३	३	३	३	०	३	३	६	०	३	०	०	३	६	६	३	०
पृथ्वी अप् वनस्पति	सअप्रस	सअप्र	सअप्र	०	०	सअप्र	०	सअप्र	सअप्र	६	०	०	०	सअप्र	०	०	सअप्र	०	०	अभग	अभग	अभग	अभग	०
तेउ वायु	सअप्रस	सअप्र	सअप्र	०	०	सअप्र	०	,,	,,	०	०	०	०	,,	०	०	,,	०	०	,,	,,	,,	,,	०
विगलेंद्री ३	३	६	३	०	०	३	०	३	३	०	०	०	६	३	०	०	३	०	०	३	३	३	३	०
तिर्यंच पचेंद्री	३	६	० ३	०	३	३	०	३	३	३	३	०	३	३	६	०	३	३	०	३	३	३	३	०
मनुष्य	३	६	३	०	३	६	३	३	३	३	३	६	३	३	६	३	३	३	०	३	३	३	३	३
सिद्धानां	०	३	०	३	०	०	३	०	०	०	०	३	३	०	०	०	०	०	३	०	०	०	०	३

राहियसजमासजमाण ४ विराहियसजमासजमाण ५ असन्नीण ६ तावसाण ७ कन्दप्पियाण ८ चरग परिव्वायगाण ९ किब्बिसियाण १० तेरिच्छियाण ११ आजीवियाण १२ आभिओगियाण १३ सलिंगीण दंसणवावन्नगाण १४ एएसि ण देवलोगेसु उववज्जमाणाण कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते? गोयमा! अस्संजयभवियदव्वदेवाण जहन्नेण भवणवासीसु उक्कोसेण उवरिमगेविज्जएसु १, अविराहियसजमाण जहन्नेण सोहम्मे कप्पे उक्कोसेण सव्वट्ठसिद्धे विमाणे २, विराहियसजमाण जहन्नेण

भगवती श० ६, उ० ४, सू० २३९

ओधिज्ञानी	मतिश्रुत	अवधि	मनःपर्यय	केवलज्ञानी	ओघअज्ञानी	मतिश्रुतअज्ञानी	विभंगज्ञानी	सयोगी	मनवचनयोगी	काययोगी	अयोगी	साकारोपयुक्त	अनाकारोपयुक्त	सवेदी	स्त्रीपुरुषवेदी	नपुंसवेदी	अवेदी	सशरीरी तैजसकार्मण	औदारिक	वैक्रियशरीरी	आहारकशरीरी	अशरीरी	आहारादि ४ पर्याप्त	भाषामन २ पर्याप्त	आहारअपर्याप्ती	शरीरादि ३ अपर्याप्त	भाषामन अपर्याप्त
३	३	३	३	३	३	३	३	स	३	३	३	अभंग	अभग	३	३	३	३	स० अभ	३	३	६	३	अभग	३	अभग	अभग	३
३	३	३	०	०	३	३	३	३	३	३	०	३	३	३	०	३	०	३	०	३	०	०	३	३	६	६	६
३	३	३	०	०	३	३	३	३	३	३	०	३	३	३	३	०	०	३	०	३	०	०	३	३	६	६	६
०	०	०	०	०	अभग	अभग	०	अभग	०	अभग	०	अभग	अभग	अभग	०	अभग	०	अभग	अभग	०	०	०	अभग	०	अभग	अभंग	०
०	०	०	०	०	,,	,,	०	,,	०	,,	०	,,	,,	,,	०	,,	०	,,	,,	०	०	०	,,	०	,,	,,	०
६	६	०	०	०	३	३	०	३	० ३	३	०	३	३	३	०	३	०	३	३	०	०	०	३	३ ०	६	३	३ ०
३	३	३	०	०	३	३	३	३	३	३	०	३	३	३	३	३	०	३	३	३	०	०	३	३ ०	६	३	३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	६	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१	०	३	३	६	६	६
३	०	०	०	३	०	०	०	०	०	०	३	३	३	०	०	०	३	०	०	०	०	३	०	०	०	०	०

भवणवासीसु उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ३, अविराहियसंजमा० २ प जह० सोहम्मे कप्पे उक्कोसेण अच्चुए कप्पे ४, विराहियसंजमासं० जहन्नेण भवणवासीसु उक्कोसेण जोतिसिएसु ५, असन्नीण जहन्नेण भवणवासीसु उक्कोसेण वाणमंतरेसु ६, अवसेसा सव्वे जह० भवणवा०, उक्कोसग वोच्छामि— तावसाणं जोतिसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे, चरगपरिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे, किब्बिसियाणं लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं अच्चुए कप्पे, आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे, सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेवेज्जएसु ॥ १४ ॥" (सू. २५)

(२८) आहारी अणाहारिक

	आहारिक अणाहारी	भव्य अभव्य	नोभव्य नोअभव्य	सज्ञी	असंज्ञी	नोसज्ञी नोअसज्ञी	सलेशी कृष्ण नील कापोत	तेजोलेश्य	पद्मलेश्य शुक्ल	अलेशी	सम्यग्दृष्टी	मिथ्यादृष्टी	मिश्रदृष्टी	संयत	असंयत	श्रावक	नोसंयत नोअसंयत नोश्रावक	सकषायी	क्रोध	मान माया	लोभ कषाय	अकषायी	सज्ञानी	मति श्रुत ज्ञानी
जीवाना	अभंग	अभंग	अणाहारी	३	अभंग	अभंग	अभंग	३	३	अणाहारी	३	आहारी	अभंग	३	अभंग	आहारी	अणाहारी	अभंग	अभंग	अभंग	अभंग	अभंग	३	३
नारकाणा	३	३	०	३	६	०	३	०	०	०	३	,,	३	०	३	०	०	३	३	६	६	०	३	३
देव-भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक	३	३	०	३	६ ६ ० ०	०	३ ३ ० ०	३	३	०	३	,,	३	०	३	०	०	३	६	६	३	०	३	३
एकेंद्री पृथ्वी आदि ५	अभंग	अभंग	०	०	अभंग	०	अभंग	६	०	०	०	०	अभंग	०	अभंग	०	०	०	अभंग	अभंग	अभंग	०	०	०
विगलेंद्री	३	३	०	०	३	०	३	०	०	०	६	०	३	०	३	०	०	३	३	३	३	०	६	६
तिर्यंच पचेंद्री	३	३	०	३	३	०	३	३	३	०	३	आहारी	३	०	३	आहारी	०	३	३	३	३	०	३	३
मनुष्याणा	३	३	०	३	६	३	३	३	३	अणाहारी	३	,,	३	३	३	,,	०	३	३	३	३	३	३	३
सिद्धाना	अणाहारी	०	अणाहारी	०	०	अणाहारी	०	०	०	,,	अणाहारी	०	०	०	०	०	अणाहारी	०	०	०	०	अणाहारी	अणाहारी	०

श्रीपन्नवणा पद २८ मे उ. २

अवधिज्ञानी	मनपर्यवज्ञानी	केवलज्ञानी	अज्ञानी मति श्रुत अ २	विभंगज्ञानी	सयोगी	मन वचन योगी	काययोगी	अयोगी	साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त	सवेदी	स्त्रीवेद पुवेद	नपुंसकवेदी	अवेदी	सशरीरी	औदारिक शरीर	वैक्रिय आहारक शरीरी	तैजस कार्मण	अशरीरी	आहार १ शरीर २ आनप्राण ३ इन्द्रिय ४ भाषामन ५	आहार अपर्याप्ती	शरीर अपर्याप्ती	इन्द्रिय अपर्याप्ती	आनप्राण अपर्याप्ती	भाषामन अपर्याप्ती
३	आहारी	अभग	अभग	३	अभग	३	अभग	अणाहारी	अभग	अभग	३	अभग	अभग	अभग	३	आहारी	अभग	अणाहारी	३	अणाहारी	अभग	अभग	अभग	अभग
३	०	०	३	३	३	३	३	०	३	३	०	३	०	३	०	〃 ०	३	०	आहारक	〃	६	६	६	६
३	०	०	३	३	३	३	३	०	३	३	३	०	०	३	०	〃 ०	३	०	〃	〃	६	६	६	६
०	०	०	अभग	०	०	०	अभग	०	अभग	अभग	०	अभग	०	अभग	आहारी	०	अभग	०	〃	〃	अभग	अभग	अभग	अभग
०	०	०	३	०	३	० ३	३	०	३	३	०	३	०	३	〃	०	३	०	〃	〃	३	३	३	३
आहारी ०	०	०	३	आहारी	३	३	३	०	३	३	३	३	०	३	〃	आहार ०	३	०	〃	〃	३	३	३	३
३	आहारी	३	३	〃	३	३	३	अणाहारी	३	३	३	३	३	३	३	आहार	३	०	३	〃	६	६	६	६
०	०	अणाहारी	०	०	०	०	०	〃	अणाहारी	०	०	०	अणाहारी	०	०	०	०	अणाहारी	०	०	०	०	०	०

(२९) चरम अचरम यत्र भगवती श० १८, उ० १, सू० ६१६

	१ भाय	आहार २ सज्ञी ७ असज्ञी ८ सलेशी १० यावत् शुक्ल लेशी १६ मिथ्यादृष्टि १९ सिथदृष्टि २० सयत २१ असयत २२ सयतासयत-श्रावक २३ सकषायि २५ यावत् लोभकषायि २९ मति ज्ञानी ३२ यावत् मन पयवज्ञानी ३५ अज्ञानी ४० सयोगी ४१ यावत् कायायोगी ४४ सवेदी ४८ यावत् नपुसकवेदी ५१ सशरीरी ५३ यावत् कार्मणशरीरी ५८ पांच पर्याप्ती ६४ पाच अपर्याप्ती ६९ ५२	अणाहारी ३ सम्यग्दृष्टि १८ सज्ञानी ३१ साकारोपयुक्त ४६ अनाकारोपयुक्त ४७ ५	भवसिद्धिक ४ १	अभवसिद्धिक ५ १	नोभवसिद्धिक ६ नोअभवसिद्धिक ६ नोसयत नोअसयत नोसयतासयत २४ अशरीरी ५९ ३	नोसज्ञी (नोसज्ञी) नोअसज्ञी ९ अलेशी १७ केवलज्ञानी ३६ अयोगी ४५ ४	अकषायी ३० अवेदी ५२ २
जीवा नाम्	चरम	चरम अचरम	अचरम	चरम	अचरम	अचरम	अचरम	अचरम
२४ दडके	चरम अचरम	" "	चरम अचरम	चरम अचरम	"	०	चरम	चरम अचरम
सिद्धा नाम्	अचरम	०	अचरम	०	०	अचरम	अचरम	अचरम

(३०) पढम अपढम यत्रम् भगवती श १८, उ १, सू० ६१६

	भाय १	आहारक २ भव्य २४ अभव्य ५ सज्ञी ७ असज्ञी ८ सलेशी १० यावत् शुक्ललेशी १६ मिथ्यादृष्टि १९ असयत २२ सकषायी २४ यावत् लोभकषायी २९ अज्ञानी ३७ यावत् विभगज्ञानी ४० सयोगी ४१ यावत् कायायोगी ४४ सवेदी ४८ यावत् नपुसकवेदी ५१ सशरीरी ५३ औदारिक ५४ वैक्रिय ५५ तैजस आहारक ५६ ५७ कार्मण ५८ पाच पर्याप्ती ६४ पाच अपर्याप्ती ६९ ४६	अणाहारी ३ साकारोपयुक्त ४६ अनाकारोपयुक्त ४७ ३	सम्यग्दृष्टि १८ सज्ञानी २३ २	नोभवसिद्धिया (क) नोअभवसिद्धिक नोसयत नोअसयत नोसयतासयत २४ अशरीरी ५९ ३	नोसज्ञी नोअसज्ञी ९ अलेशी १७ केवलज्ञानी ३६ अयोगी ४५ ४	अकषायी ३० अवेदी ५२ २	मिश्रदृष्टि २० सयत २१ सयतासयत २३ मतिज्ञानी ३२ यावत् मनःपयवज्ञानी ३५ आहारक शरीर ५६ ८

१ आनु लक्षण भगवती (सू. ६१६)नी निम्नलिखित गाथामा नजरे पडे छे —

"जो जेण पत्तपुव्वो भावो सो तेण अपढमो होइ।
सेसेसु होइ पढमो अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥"

जीव	अपढम	अपढम	अपढम पढम	पढम अपढम	पढम	पढम	पढम अपढम	पढम अपढम
२४ दडके	,,	,,	,,	पढम अपढम	०	,,	,,	,,
सिद्धानाम्	पढम	०	पढम	पढम	पढम	,,	पढम	०

जिसकू एक समय उपज्या हूया है सो 'अप्रदेशी' जानना अने जिसकू द्वि आदि समय अनत पर्यंत हूये है सो 'सप्रदेशी' जानना. इन चारो यत्रोमे जिस दडकमे जो बोल है तिसकी अपेक्षा जानना अपनी विचारसें. अथ प्रथम अप्रथमका लक्षण—जिसने जो भाव पहिले पाम्या सो 'प्रथम,' जिसने द्वि आदि वार पाम्या सो 'अप्रथम'. अथ चरमअचरम लक्षण गाथा—

"जो ज पावहिति पुणो भाव सो तेण अचरिमे होइ (अचरिमो होंति?)।
अचतविओगो जस्स जेण भावेण सो चरिमो ॥"

"जीवाहारग १-२ भव ३ सण्णी ४ लेसा ५ दिट्ठि ६ य संजय ७ कमाए ८।
णाणे ९ जोगुनओगे १०-११ वेए १२ य सरीर १३ पज्जत्ती १४॥" ए मूल गाथा (पृ० ७३३)॥

(३१) भगवती श० २६, उ० १ (सू० ८२४)

		सम्यक्त्वे १ याद	मिश्रे २ याद	मिथ्यात्वे ३ याद	ओधिये ४ याद
जीव मनुष्य २ ४६		अलेशी १ सम्यग्दृष्टि २ समुच्चयज्ञानी ३ यावत् केवलज्ञानी ८ नोसज्ञोपयुक्त ९ अवेदी १० अकषायी ११ अयोगी १२	सम्यग् मिथ्यादृष्टि	कृष्णपक्षी १ मिथ्यादृष्टि २ अज्ञानी ३ मति श्रुत अज्ञानी ४-५ विभगज्ञानी ६	सलेशी प्रमुख ७ शुक्लपक्षी ८ सज्ञा ४।१२ सवेदी १३ स्त्रीयादि स्त्री पुरुष नपुसक १६ सकषायी प्रमुख पाच २१ उपयोग दो २३ सयोगी प्रमुख ४, एव सर्व बोल २७ हूये
पचेन्द्री तिर्यंच	३९	सम्यग्दृष्टि १ ज्ञानी २ मति ज्ञानादि ३, एव बोल ५	,,	कृष्णपक्षी आदि उपरला ६ बोल	सलेशी प्रमुख उपरला २७ बोल जानना
भवनपति व्यतर	३६	,,	,,	,,	ए २७ मादिथी पद्म १ शुक्ल २ लेश्या नपुसकवेद ३, ए ३ वरजीने शेष बोल २४
नरक	३४	,,	,,	,,	तेजो १ पद्म २ शुक्ल ३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २, ए ५ वरजी शेष बोल बावीस २२

	सम्यक्त्वे १ वाद		मिश्रे २ वाद	मिथ्यात्वे ३ वाद	औघिके ४ वाद
वैमानिक	३१	सम्यग्दृष्टि १ ज्ञानी २ मति ज्ञानादि ३, एव वोल ७	सम्यग् मिथ्यादृष्टि	कृष्णपक्षी आदि उपरला छ वोल	ए २७ माहिथी कृष्ण आदि ३ लेश्या नपुंसकवेद ४, ए ४ वरजी शेष २३
जोतिष	३३	”	”	”	ए २७ माहिथी कृष्ण आदि ३ लेश्या पद्म ४ शुक्ल लेश्या ५ नपुंसकवेद ६, ए ६ वरजी शेष २१
वाद	०	एक क्रियावादी लाभे १	अज्ञानवादी विनयवादी	अक्रिया १ अज्ञान २ विनय ३ वाद	क्रिया १ अक्रिया २ अज्ञान ३ विनयवादी ४
आयुबंध	मनुष्य तिर्यंच क्रियावादी आयु बांधे एक वैमानिकना नय मनुष्यमे अलेशी १ केवली २ अवेदी ३ अकषायी ४ अयोगी ५ एव पांच वोलमे आयु न बांधे, देव नारकी क्रिया वादी आयु बांधे मनुष्यना		आयु नही बांधे	मनुष्य तिर्यंच आयु चारों गतिका बांधे, देवता, नारकी मनुष्य तिर्यंचना आयु बांधे	क्रियावादी मनुष्य तिर्यंच कृष्ण आदि तीन ३ संक्लिष्ट लेश्यामे आयु न बांधे शेष वोलमे वर्तता आयु बांधे वैमानिकना शेष ३ समव सरण च्यारों गतिका देवता नारकी क्रियावादी मनुष्य-आयु बांधे; शेष समवसरण मनुष्य तिर्यंचना एकेंद्री विकलेंद्रीमे समवसरण २ अक्रिया १ अज्ञान ,२ विकलेंद्रीमे सज्ञानी मति श्रुतज्ञानी आयु न बांधे अनेरो एकेंद्रीमे तेजोलेश्यामे आयु न बांधे, शेष वोलमे आयु बांधे मनुष्य, तिर्यंचना; तेउ, वायु, तिर्यंचना आयु बांधे ॥ क्रियावादी १ सिध्यदृष्टी २ शुक्लपक्षी ३ ए निश्चय भव्य, शेषमे भजना। इति प्रथमोद्देशक अनंत रोव० १ अनंतो गाढा २ अनंतरो आहार ३ अनंतर पज्जत्तगा ४ एहमे आयु २४ दंडके न बांधे वोल जीनसे नही पावे अलेश्यादि १२ सो जान लेने और सर्व प्रथम उद्देशावत् अचरममे अलेशी १ केवली २ अयोगी नही और सर्व उद्देशा प्रथम वत् शेष द्वारगाथा—"जीवा १ य लेस्स २ पक्खिय ३ दिट्ठी ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७। वेय ८ कसाए ९ उवओग १० जोग ११ एकारस वि ठाणा ॥" (भग० सू० ८१०)

(३२) (गति वगैरेमें ज्ञान अज्ञान, भगवती श० ८, उ० २, सू० ३१९-३२१)

१	जीव ओघे	५ ज्ञान भजना	३ अज्ञान भजना
१५	नारकी भवन पति व्यतर जोतिषी वैमानिक	३ नियमा	[1] ३ भजना
२०	पृथ्वी आदि ५	०	२ नि
२३	विगलेंद्री ३	२ नि	२ नि
२४	तिर्यंच पचेंद्री	३ भ	३ भ
२५	मनुष्य	५ भ	३ भ
२६	सिद्ध	१ नि	०
	घाटे वहते पाच गतिना	ज्ञान	अज्ञान
१-२	नरक गति देवगति	३ नि	३ भ
३	तिर्यंच गति	२ नि	२ नि
४	मनुष्यगति	३ भ	२ नि
५	सिद्धगति	१ नि	०
	इन्द्रिय	ज्ञान	अज्ञान
१	सइंद्री	४ भ	३ भ
२	एकेंद्री	०	२ नि
५	बेंद्री, तेंद्री चौरेंद्री ३	२ नि	२ नि
६	पचेंद्री	४ भ	३ भ
७	अणिंद्री	१ नि	०
	काय	ज्ञान	अज्ञान
१	सकाय	५ भ	३ भ

२-६	पृथ्वी आदि ५ काय	०	२ नि
७	त्रसकाय	५ भ	३ भ
८	अकाय	१ नि	०
१	सूक्ष्म	०	२ नि
२	बादर	५ भ	३ भ
३	नोसूक्ष्मनो बादर	१ नि	०
१	जीव पयाप्ता	५ भ	३ भ
२	पर्याप्ता नारक	३ नि	३ नि
१५	भवनपति व्यतर जोतिषी वैमानिक पर्याप्ता	३ नि	३ नि
२०	पृथ्वी आदि ५ पर्याप्ता	०	२ नि
२३	विगलेंद्री पर्याप्ता	०	२ नि
२४	पचेंद्री तिर्यंच पयाप्ता	३ भ	३ भ
२५	मनुष्य पयाप्ता	५ भ	३ भ
१	अपर्याप्ता जीव	३ भ	३ भ
२	अपर्याप्त नरक	३ नि	३ भ
१३	भवनपति व्यतर अपर्याप्ता	३ नि	३ भ
१८	पृथ्वीकाय आदि ५ अपर्याप्ता	०	२ नि
२१	बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री अपर्याप्ता	२ नि	२ नि

1 नारक, भवनपति अने व्यंतरमां त्रण अज्ञाननी भजना।

२२	तिर्यंच पचेंद्री अपर्याप्ता	२ नि	२ नि
२३	मनुष्य अपर्याप्ता	३ भ	२ नि
२५	जोतिषी वैमानिक अपर्याप्ता	३ नि	३ नि
२६	नोपर्याप्त-नोअपर्याप्त	१ नि	०
१	नरक भवस्था	३ नि	३ भ
२	तिर्यंच भवस्था	३ भ	३ भ
३	मनुष्य भवस्था	५ भ	३ भ
४	देव भवस्था	३ नि	३ भ
५	अभवस्था	१ नि	०
१	भव्य	५ भ	३ भ
२	अभव्य	०	३ भ
३	नोभव्य नोअभव्य	१ नि	०
१	सन्नी	४ भ	३ भ
२	असन्नी	२ नि	२ नि
३	नोसन्नी-नोअसन्नी	१ नि	०
१	ज्ञानलब्धि	५ भ	०
२	तस्स अलब्धि	०	३ भ
४	मतिश्रुतक लब्धि	४ भ	०
६	तेयो अलब्धि	१ नि	३ भ
७	अवधि-लब्धि	४ भ	०
८	तस्स अलब्धि	४ भ	३ भ
९	मन पर्यव लब्धि	४ भ	०
१०	तस्स अलब्धि	४ भ	३ भ
११	केवल-लब्धि	१ नि	०

१२	तस्स अलब्धि	४ भ	३ भ
१३	अज्ञान लब्धि	०	३ भ
१४	तस्स अलब्धि	५ भ	०
१५	मति श्रुत अज्ञान लब्धि	०	३ भ
१७	तयो अलब्धिकौ	५ भ	०
१८	विभंग लब्धि	०	३ नि
१९ २०	तस्स अलब्धिया	५ भ	२ नि
१	दर्शन लब्धि	५ भ	३ भ
२	तस्स अलब्धि	०	०
३	सम्यग्दर्शन लब्धि	५ भ	०
४	तस्स अलब्धि	०	३ भ
५	मिथ्यादर्शन लब्धि	०	३ भ
६	तस्स अलब्धि	५ भ	३ भ
७	सम्यग् मिथ्या-दर्शन लब्धि	०	३ भ
८	तस्स अलब्धि	५ भ	३ भ
१	चारित्र लब्धि	५ भ	०
२	तस्स अलब्धि	४ भ	३ भ
३-६	सामायिक आदि ४ चारित्र लब्धि	४ भ	०
१०	ते अलब्धि	५ भ	३ भ
११	यथाख्यात लब्धि	५ भ	०
१२	तस्स अलब्धि	५ भ	३ भ
१	चरित्राचरित्र लब्धि	३ भ	०
२	तस्स अलब्धि	५ भ	३ भ

१ बेनी अर्थात् ज्ञानी। २ ते बेनी अर्थात् मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी। ३ अलब्धिक।

३-७	दान आदि ५ लब्धि	५ भ	३ भ
१०	तस्य अलब्धि	१ नि	०
११	बालवीर्य लब्धि	३ भ	३ भ
१२	तस्य अलब्धि	५ भ	०
१३	पंडितवीर्य लब्धि	५ भ	०
१४	तस्य अलब्धि	४ भ	३ भ
१५	बालपंडितवीर्य लब्धि	३ भ	०
१६	तस्य अलब्धि	५ भ	३ भ
१	इंद्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
२	तस्य अलब्धि	१ नि	०
३	श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
४	तस्य अलब्धि	१ नि २ भ	२ नि
५-६	चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
७-८	तस्य अलब्धि	१ नि २ भ	२ नि
९	जिह्वेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
१०	तस्य अलब्धि	१ नि	२ नि
११	स्पर्शनेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ
१२	तस्य अलब्धि	१ नि	०
१	साकार उपयोग	५ भ	३ भ
२-३	मति श्रुत साकार०	४ भ	०
४	अवधि साकार०	४ भ	०
५	मन पर्यव साकार०	४ भ	०
६	केवल साकार०	१ नि	०
७-८	मति अज्ञान श्रुत अज्ञान साकार०	०	३ भ

९	विभंग साकार	०	३ नि
१०	अनाकार उपयोग	५ भ	३ भ
११	चक्षुर्दर्शन अनाकार०	४ भ	३ भ
१२	अचक्षुर्दर्शन अनाकार०	४ भ	३ भ
१३	अवधिदर्शन अनाकार०	४ भ	३ भ
१४	केवलदर्शन अनाकार०	१ नि	०
१	सयोगी	५ भ	३ भ
२	मनयोगी	५ भ	३ भ
३	वचनयोगी	५ भ	३ भ
४	काययोगी	५ भ	३ भ
५	अयोगी	१ नि	०
१	सलेश्यी	५ भ	३ भ
६	कृष्ण आदि ५	४ भ	३ भ
७	शुक्ल लेश्या	५ भ	३ भ
८	अलेश्यी	१ नि	०
१	सकषायी	४ भ	३ भ
२-५	क्रोध आदि ४	४ भ	३ भ
६	अकषायी	५ भ	०
१	सवेदी	४ भ	३ भ
२-४	स्त्री पुं नपुंसक	४ भ	३ भ
५	अवेदी	५ भ	०
१	आहारिक	५ भ	३ भ
२	अनाहारी	४ भ	३ भ

(३३) (द्रव्यादि अपेक्षासे ज्ञानका विषय भग० श० ८, उ० २, सू० ३२२)

जाणे देखे	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
मति	ओदेशे सर्वद्रव्य	सर्व क्षेत्र	सर्व काळ	सर्व भाव
श्रुत	उपयोगे सर्व	सर्व क्षेत्र	सर्व काळ	सर्व भाव
अवधि	जघन्य-अनत रूपी द्रव्य अने उत्कृष्ट-सर्व रूपी द्रव्य	जघन्य-अगुलका असख्यातमा भाग। उत्कृष्ट-लोक सरीषा असख्य अलोकखड	जघन्य-आवलिकानो असंख्यातमो भाग। उत्कृष्ट-असख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी	जघन्य-अनता भाव। उत्कृष्ट-सर्व भावके अनतमे भाग जाणे देखे
मन पर्यव	अनतानत प्रदेशी स्कध, एव उत्कृष्ट पिण	समयक्षेत्र ऊचा नवसे, ९ योजन नीचा, अधोलोकना क्षु(क्षु)लक प्रतर	जघन्य-पल्योपमनो असख्यातमो भाग। एव उत्कृष्ट पिण	अनता भाव। सर्व भावने अनतमे भाग
केवल	सर्व द्रव्यम्	सर्व क्षेत्र	सर्व काळ	सर्व भाव
मति अज्ञान	परिग्रह द्रव्य	परिग्रह	परिग्रह	परिग्रह
श्रुत अज्ञान	,,	,,	,,	,,
विभग	,,	,,	,,	,,

स्थितिज्ञान—ज्ञानी द्विप्रकारे—(१) सादि-अपर्यवसित, (२) सादि सपर्यवसित. सादि-सपर्य० जघन्य-अतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-६६ सागर झाझेरा. मति श्रुत जघन्य—अतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-६६ सागर झाझेरा. अवधि जघन्य—१ समय, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझेरा. मनःपर्यव जघन्य—१ समय, उत्कृष्ट-देश ऊन पूर्व कोड. केवल सादि अपर्यवसित.

अज्ञानी त्रिधा—(१) अनादि-अपर्यवसित, (२) अनादि-सपर्यवसित, (३) सादि-सपर्यवसित जघन्य-अतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट-अर्धपुद्गल देश ऊन।

मति, श्रुत ऐव उपरवत् त्रिधा ज्ञातव्यानि विभगज्ञानी जघन्य-१ समय, उत्कृष्ट-३३ सागर देश ऊन पूर्व कोड अधिकम्

(३४) (अतरद्वार जीवाभिगम प्रति० ९, उ० २, सू० २६७)

०[1]	अतर जघन्य	अतर उत्कृष्ट
ज्ञानी	अतमुहूर्त	देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त
मति श्रुत ज्ञानी	,,	,,
अवधिज्ञानी	,,	,,
मन पर्यवज्ञानी	,,	,,[2]

१ ओघथी, सामान्यथी। २ ए प्रमाणे उपरनी पेठे त्रण प्रकारे जाणवी।

" " " ०	अतर जघन्य	अतर उत्कृष्ट
केवलज्ञानी	०	०
अज्ञानी	अतर्मुहूर्त	६६ सागर झाझेरा
मति श्रुत अज्ञानी	"	"
विभगज्ञानी	"	वनस्पति काळ अनता

(३५) (अल्पबहुत्वद्वार.प्रज्ञापना प० ३, सू० ६८)

ज्ञान अज्ञान	अल्पबहुत्व	८ की अल्पबहुत्व	पर्यव अल्पबहुत्व	८ का पर्यव अल्प बहुत्व
मति ज्ञान	३ वि	३ वि	४ अनत	७ वि
श्रुत ज्ञान	४ वि तु ३	४ वि तुल्य	३ "	५ वि
अवधि	२ अस	२ अस	२ "	३ अनत गुण
मन पर्यव	१ स्तोक	१ स्तोक	१ स्तोक	१ स्तोक
केवल	५ अनत	५ अनत	५ अनत गुण	८ अनत
मति अज्ञान	२ अनत	६-७ अनत	३ अनत गुण	६ अनत
श्रुत अज्ञान	तुल्य २ अनत	तुल्य ६	२ अनत	४ अनत
विभग ज्ञान	१ स्तोक	४ अस	१ स्तोक	२ अनत

द्वार गाथा—"जीव १ गति ५ इदी ७ काय ८ सुहम्म ३ पज्जत्त ३ भवत्थ ५ भव-सिद्धिय ३ सन्ना ३ लद्धी ७ उवओग १२ जोगिय ५।१। लेसा ८ कसाय ६ वेदे ५ य आहारे २ नाण गोयरे १७ काले १ अतर १० अप्पाबहुय ८ पज्जवा ८ चेव दाराइ ॥ २२ ॥"

ज्ञानस्वरूप नन्दी प्रज्ञापना आवश्यकनिर्युक्ति भगवती नन्दीवृत्तिसे लिख्यते—

मतिज्ञानके मुख्य भेद—१ अवग्रह, २ ईहा, ३ अवाय, ४ धारणा

अर्थ अवग्रह आदि चाराका—सामान्यपणे अर्थने ग्रहे ते अवग्रह. यथा कोइ मार्गमें जातां दूरसे कोइ ऊचीसी वस्तु देखी इम जाणे इह कुछ तो है ते 'अवग्रह' ज्ञेय । अवग्रहमें जे पदार्थ ग्रह्या है तिसका सद्भूत अर्थ विचारे जो इह कया वस्तु है स्थाणु–ठुठ है अथवा पुरुष है ऐसी विचारणा करे सो 'ईहा' जाननी. ईहा अनतर काल पदार्थनो निश्चय करे जो इह तो हाले चाले इस वास्ते पुरुष है, पिण स्थाणु नही ते 'अवाय.' धारणा ते अवाय अनतर कालें निर्णीत जे अर्थ तेह धरी राखे ते. यथा ओही पुरुष है जो मैं देखा था ते 'धारणा.' धारणाके भेद—१ अवि-च्युतिधारणा, २ वासनाधारणा, ३ स्मृतिधारणा. अर्थ तीनोंका—जो अर्थ धार्या है सो

१-२ ज्ञान अने अज्ञाननु जुदु जुदु । ३ जुओ जीवाभिगम सू० २६७ ।

उपयोगथी क्षणमात्र च्युति–भूले नही ते 'अविच्युतिधारणा' है. स्थिति अंतर्मुहूर्तनी. जे वस्तुनो उपयोग था तेह तो भ्रस हुया है पणि सस्कार रह गया है पुष्पवासनावत् तेहने 'वासनाधारणा' कहीये. स्थिति सख्यात असंख्यात कालनी. कालातरे कोइक वादृश अर्थ(ना) दर्शनथी सस्कारने प्रबोधेकरी ज्ञान जागृत हूया जे में एह पूर्वे दीठा था ऐसी जो प्रतीति ते 'स्मृतिधारणा' ज्ञेय।

स्थिति अवग्रह आदि ४ की—अवग्रह एक समय वस्तु देख्यां पछे विकल्प उपजे ही सा (?). ईहा अंतर्मुहूर्त विचाररूप होणें ते. अवाय अतर्मुहूर्त निश्चय करणे करके. धारणा वासना [श्री] सख्य असख्य काल आयु आश्री. अवग्रहके दो भेद है. दोनोका अर्थ—१ व्यंजनावग्रह. 'व्यजन' शब्दना तीन अर्थ है. 'व्यजन' शब्दनी व्युत्पत्ति करीने विचार लेना. श्रोत्रादिक इन्द्रिय अने शब्दादिक अर्थनो जे अव्यक्तपणे–अप्रगटपणे सबध तेहने 'व्यजन' कहीये. अथवा व्यजन शब्दादिक अर्थने पिण कहीये. अथवा व्यजन श्रोत्रादिक इन्द्रियनें पिण कहीये. एतलें एहवा शब्दार्थ नीपना–अप्रगट सबधपणे करी ग्रहीये ते 'व्यजनावग्रह' कहीये एह व्यजनावग्रह प्रथम समयथी लेई अतर्मुहूर्त प्रमाण काल जानना. २ अर्थावग्रह. प्रगटपणे अर्थग्रहण ते 'अर्थावग्रह' कहीये. ते एक समय प्रमाण

व्यजनावग्रह चार प्रकारे—१ श्रोत्र इन्द्रिय व्यजन अवग्रह, २ घ्राण इन्द्रिय व्यजन अवग्रह, ३ रसना इन्द्रिय व्यजन अवग्रह, स्पर्शन इन्द्रिय व्यजन अवग्रह.

चार इन्द्रिय प्राप्यकारी कही तेहनु व्यजनावग्रह होय. वस्तुने पामीने परस्परे अडकीने प्रकाश करे ते 'प्राप्यकारी' कहीये. अथवा विषय वस्तुथी अनुग्रह उपघात पामे ते 'प्राप्यकारी' कहीये. ते नयन वर्जित चार इन्द्रिया जाननी. नयन, मन ते अप्राप्यकारी है, श्रोत्रेन्द्रियव्यजनावग्रह—श्रोत्रेन्द्रिये अव्यक्तपणे शब्दना पुद्गल प्रथम समयादिकने विषे ग्राहीइ है ते 'श्रोत्रेन्द्रिय-व्यजनावग्रह' इसीतरे घ्राण, रसन, स्पर्शनके साथ अर्थ जोड लेना

अर्थावग्रह ६ भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रह, २ रसनेन्द्रियार्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह, ४ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह, ५ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह, ६ नोइन्द्रियार्थावग्रह. स्पर्शनइन्द्रिये करी प्रगटपणे स्पर्श सित पुद्गलने ग्रहीये ते 'स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह.' एव सर्वत्र जानना नोइन्द्रिय मन है

ईहा पद् भेदे—१ स्पर्शेन्द्रियेहा, २ रसनेन्द्रियेहा, ३ घ्राणेन्द्रियेहा, ४ चक्षुरिन्द्रियेहा, ५ श्रोत्रेन्द्रियेहा, ६ नोइन्द्रियेहा स्पर्शन इन्द्रिये करी गृहीत जे अर्थ तेहनु विचारणा ते 'स्पर्शन–इन्द्रिय–ईहा' एव सर्वत्र

अपाय ६ भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियावाय, २ रसनेन्द्रियावाय, ३ घ्राणेन्द्रियावाय, ४ चक्षुरिन्द्रियावाय, ५ श्रोत्रेन्द्रियावाय, ६ नोइन्द्रियावाय. स्पर्शन इन्द्रिये गृहीत वस्तु विचारी तिसका निश्चय करना ते 'स्पर्शनेन्द्रियावाय.' एव सर्वत्र ज्ञेय.

धारणा पद् भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियधारणा, २ रसनेन्द्रियधारणा. ३ घ्राणेन्द्रियधारणा, ४ चक्षुरिन्द्रियधारणा, ५ श्रोत्रेन्द्रियधारणा, ६ नोइन्द्रियधारणा. स्पर्शन इन्द्रिये जे वस्तु ग्रही विचारी निश्चय करी धरी राखनी ते 'स्पर्शनेन्द्रियधारणा', एव सर्वत्र.

ए छ चोक चौवीस अने चार व्यंजनावग्रह एवं २८ भेद श्रुतनिश्रित मतिज्ञानके है. अने अश्रुतनिश्रित मतिना भेद औत्पत्तिकी आदि ४ बुद्धि सो तिनका विस्तार नन्दीसे ज्ञेय. तथा श्रुतनिश्रित मतिज्ञानके ३३६ भेद हैं सो लिख्यते—१ बहुग्राही, २ अबहुग्राही, ३ बहुविधग्राही, ४ अबहुविधग्राही, ५ क्षिप्रग्राही, ६ अक्षिप्रग्राही, ७ अनिश्रित, ८ निश्रित, ९ असंदिग्ध, १० संदिग्ध, ११ ध्रुव, १२ अध्रुव. इनका अर्थ—कोइ एक क्षयोपशमना विचित्रपणाथी अवग्रह आदिकें करी एक वेला बजाया जो भेरी, शंख प्रमुख तेहना शब्द न्यारा न्यारा जाणे ते 'बहुग्राही' अने एक अव्यक्तपणे तुर्यनी ही ज ध्वनि जाणे ते 'अबहुग्राही' अने जे वली स्त्री प्रमुखनी बजाया मधुर आदि घणा पर्याये करी शंख प्रमुखनी ध्वनि जाणे ते 'बहुविधग्राही'. तेहथी एक विपर्यय जाणे ते 'अबहुविधग्राही'. जे शब्द आदि कह्या ते क्षिप्र—उतावला जाणे ते 'क्षिप्रग्राही.' अने एक वली विमासीने मोडा जाणे ते 'अक्षिप्रग्राही'. एक लिंगे जाणे ते 'निश्रित,' ध्वजा देखी देहरा जाणे. विपर्यय जाणे 'अनिश्रित' जे संशय विना जाणे ते 'असंदिग्ध.' संशय सहित जाणे ते 'संदिग्ध.' अने जे एक वारनो जाण्यो सदा जाणे पिण कालांतरे परना उपदेशनी वांछा न करे ते 'ध्रुव' कहीये. विपर्यय 'अध्रुव.' एह बारे भेदसु पहिले २८ भेदकु गुणीये तो ३३६ मतिज्ञानना भेद होय है.

१ ईहा, २ अपोहा, ३ विमर्शा, ४ मार्गणा, ५ गवेषणा, ६ सज्ञा, ७ स्मृति, ८ मति, ९ प्रज्ञा—मतिके एकार्थ(क) नाम. एह नव मतिके नाम है.

अथ मतिज्ञान नव द्वार करी निरूपण करीये है—

१ सत्० (सत्०) छता पद प्ररूपणा—मतिज्ञान किहा किहां लाभे? २ द्रव्यप्रमाण—एक कालसे कितने जीव मतिज्ञानवंत लाभे? ३ क्षेत्र—मतिज्ञानवंत कितने क्षेत्रमे है? ४ स्पर्शना—मतिज्ञानवान् कितना क्षेत्र स्पर्शे है? ५ काल—मतिज्ञान कितना काल रहै है? ६ अंतर—मतिरो अंतर. ७ भाग—मतिज्ञानी अन्यज्ञानीयोके कितमे(ने?) भाग? ८ भाव—मतिज्ञान षट् भावमे कौनसे भावे है? ९ अल्पबहुत—मतिज्ञान पूर्वप्रतिपन्नाप्रतिपद्यमान, इनमे घणे कौनसे अने स्तोक[1] कौनसे?

(३६) छतापद द्वार वीसे भेदे यंत्र

सत् पद प्ररूपणा २० द्वारे	मति है या नहीं?						
			पृथ्वी अप् तेज वायु वनस्पति	नास्ति		जहा तीनो योग एकठेमे ४	अस्ति
चारो गतिमे १	है		त्रसकायमे ३	अस्ति		स्त्री पुरुष नपुंसक वेदे ५	अस्ति
एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चौरेंद्रीमे भावे	नही		एकला काय योगे	नास्ति		अनंतानुबंधी चौकडीमे	नही
पचेंद्रीमे २	अस्ति		एकला वचने पाये	,,			

१ अल्प।

बारा कषायमे ९	अस्ति	केवलदर्शनमे १०	नास्ति	पर्याप्तामे	अस्ति
पहिली तीन भाव लेश्यामे	नास्ति	संयत ५ मे ११	अस्ति	लब्धि अपर्याप्तामे १६	नास्ति
उपरली तीन लेश्यामे ७	अस्ति	साकार अनाकार मे १२	"	सूक्ष्ममे	"
सम्यक्त्वमे	"	आहारी अनाहारी मे १३	"	बादरमे १७	अस्ति
मिथ्यात्व ५ मे ८	नास्ति	भाषालब्धिवानमे	"	संज्ञीमे	"
मति आदि ४ ज्ञानमे	अस्ति	जिसके भाषाकी लब्धि नही १४	नास्ति	असंज्ञीमे प्राये १८	नास्ति
केवलज्ञानमे ९	नास्ति	प्रत्येक शरीरीमे	अस्ति	भव्यमे	अस्ति
चक्षु आदि ३ दर्शनमे	अस्ति	साधारण शरीरीमे १५	नास्ति	अभव्यमे १९	नास्ति
				चरममे	अस्ति
				अचरममे २०	नास्ति

इति सत्पद द्वार १

२ द्रव्यप्रमाणद्वार—मतिज्ञानी सदा असंख्याता लाभे इति. ३ क्षेत्रद्वारे—मतिज्ञानी सारे एकठे करे तो लोकके असंख्यातमे भाग व्यापे. ४ स्पर्शनाद्वार—मतिज्ञानी लोकके असंख्यातमे भाग स्पर्शे, क्षेत्र जो एक प्रदेश ते स्पर्शना सात प्रदेशकी होती है. ५ कालद्वार—मतिज्ञानकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झझेरा. उपयोग आश्री मतिज्ञानी स्थिति अंतर्मुहूर्त. ६ अंतरद्वारे—मतिका अंतर, जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त. ७ भागद्वार—मतिज्ञानी सर्व ज्ञानी अनंतमे भाग अने सर्व अज्ञानीके अनंतमे भाग. ८ भावद्वार—मतिज्ञान क्षयोपशम भावे है. ९ अल्पबहुत्वद्वार—नवा मतिज्ञान पडि वजनेवाले स्तोक है अने पूर्वे पडि वज्या असंख्यात गुणे. इति मतिज्ञान. अलम्

अथ श्रुतज्ञानस्वरूप लिख्यते—१ अक्षर श्रुत, २ अनक्षर श्रुत, ३ सज्ञी श्रुत, ४ असज्ञी श्रुत, ५ सम्यक् श्रुत, ६ मिथ्या श्रुत, ७ अनादि श्रुत, ८ अपर्यवसित श्रुत, ९ सादि श्रुत, १० सपर्यवसित श्रुत, ११ गमिक श्रुत, १२ अगमिकश्रुत, १३ अंगप्रविष्ट श्रुत, १४ अनंगप्रविष्ट श्रुत.

अथ इन चौदका अर्थ लिख्यते—१ अक्षर श्रुत जीनसे कदापि न क्षरे ते 'अक्षर'. तेह अक्षर श्रुत तीन प्रकारका है. सज्ञाक्षर. जाणीये जिस करी ते 'सज्ञा' कहीये; तेहनु कारण जे अक्षर-पंक्ति तेहने 'संज्ञाक्षर' कहीये. ते ब्राह्मी लिपि आदि करी अष्टादश (१८) भेदे ए द्रव्यश्रुत कहीये एहथी भावश्रुत होता है. भावश्रुतका कारणने 'द्रव्यश्रुत' कहीये. २ व्यंजनाक्षर. 'व्यंजन' ते अकारादि अक्षरना उचारने कहीये. ते अर्थका व्यंजक है-बोधक है. एतले अकारादि अक्षरना उचारने 'व्यंजन' कहीए. ते व्यंजन अक्षरश्रुत अनेक प्रकारका है. एक मात्राये उचरीए ते 'ह्रस्व' कहीये. दो मात्राये उचरीये ते 'दीर्घ' कहीये. तीन मात्राए उचरीए ते 'प्लुत' कहीये.

इत्यादिक भेद जैनेन्द्र व्याकरणसे जानना. ए पणि द्रव्यश्रुत कहीये. २ लब्ध्यक्षर. अक्षर उचरवानी लब्धि अथवा अक्षरार्थ समजावनेकी लब्धि ते 'लब्ध्यक्षर' कहिये तथा लब्ध्यक्षरश्रुत छ प्रकारे है. स्पर्शनेन्द्रियलब्ध्यक्षर. स्पर्शन इन्द्रिये मृदु, कर्कश आदि स्पर्श पामीने अक्षर जाणे जे अर्क, तूल आदि ऊर्ण, वस्त्र आदिक शब्दार्थने विचारे ते 'स्पर्शनेन्द्रियलब्ध्यक्षर' श्रुत कहीये. एम पांचे इन्द्रियनी विषयका समझना. एव मनकी वस्तुके अक्षर समझने ते 'नोइन्द्रियलब्ध्यक्षर' श्रुत.

अथ दूजा भेद अनक्षर श्रुत—जिहा स्पष्टपणे अक्षर भासे नही तेहने 'अनक्षर श्रुत' कहीये. ते उच्छ्वास निःश्वास निष्ठीवन कास क्षुत सीटी आदिक अनेक प्रकारे जानना.

अथ सञ्ज्ञी श्रुत—जेहने सञ्ज्ञा हुइ तेहने 'सञ्ज्ञी' कहीये. तेहनो श्रुत ते 'सञ्ज्ञी श्रुत' कहीये. ते सञ्ज्ञी श्रुत तीन प्रकारना है. तेहना स्वरूप यन्त्रात्—

(३७) सञ्ज्ञीश्रुतस्वरूपयन्त्रम्

दीर्घ कालिकी उपदेशेन सञ्ज्ञी १	जो प्राणीने पूर्वापर अर्थनी दीर्घ विचारणा हुइ पूर्वे इम था, सम्प्रति इम है, आगे एवमस्तु-इम होवेगी ऐसा विचारे तेहने 'दीर्घकालिकी उपदेशेन—उपदेश करी सञ्ज्ञी' कहीए. ते गर्भज मनुष्य, तिर्यंच, देव, नारकी, मन पर्याप्तिना धारक जानना इति दीर्घकालिकी
हेतु उपदेशेन सञ्ज्ञी २	जे प्राणी स्वदेह पालनेके अर्थे इष्ट आहार आदिमें प्रवर्ते, अनिष्टथी निवर्ते इतनाही जाणे पिण और कछु पूर्वापर अर्थ न जाणे तेहने 'हेतूपदेशेन सञ्ज्ञी कहीये' ते समूर्छिम पचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंच, विकलेन्द्रिय प्राणी जानना
दृष्टिवाद उपदेशेन सञ्ज्ञी ३	दृष्टिवाद० जे प्राणीने सम्यग्दृष्टि हुइ वीतराग भाषित वचन उपरि रुचि हुइ ते 'दृष्टिवादोपदेशे करी सञ्ज्ञी' चौथे गुणस्थानसे प्रारभी सर्व जीव ज्ञेय

(३८) असञ्ज्ञीश्रुतस्वरूपयन्त्रम्

दीर्घ कालिकी उपदेशेन असञ्ज्ञी १	जे प्राणी पूर्वापर विचार न जाणे तिसकू 'दीर्घकालि(की) उपदेशे करी असञ्ज्ञी' कहीये ते समूर्छिम पचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंच, विकलेन्द्रिय, एकेन्द्रिय जानना
हेतु उपदेशेन असञ्ज्ञी २	जे प्राणी स्वदेह पालनेके अर्थे इष्ट वस्तु आहार आदिकके वास्ते प्रवर्ती न शके अने अनिष्ट थकी निवर्ती न शके ते स्थावर-नाम-कर्मके उदय करी तेहने 'हितो(हेतू)पदेशे करी असञ्ज्ञी' कहीये
दृष्टिवाद उपदेशेन असञ्ज्ञी ३	जे प्राणीने मिथ्यादृष्टि प्रबल हुइ वीतरागना वचन अनेकात-स्याद्वादरूप जाण्या नही ते प्रथम गुणस्थानवर्ती जीव जानना ते दृष्टिवाद उपदेशे करी असञ्ज्ञी

अथ पांचमा भेद सम्यक्श्रुतना कहीये है सम्यक्श्रुत जे श्रीजिनेन्द्र देवने वचन अनुसारे गौतम आदि गणधर रचित जे द्वादश अग ते 'सम्यक्श्रुत' कहीये. तथा चौदा पूर्वधारीनो रच्यो यावत् दशपूर्वधारीनो रच्यो ते पिण 'सम्यक्श्रुत' जानना. दश पूर्वमे किंचित् न्यून हुइ तेहनो भाष्यो सम्यक्श्रुत हुइ अने नही पिण हुइ, "अभिन्नदसपुव्वि जम्म समसुय तेण पर भयणा" इति वचनात्.

१ रु। २ ऊन। ३ अभिन्नदशपूर्वाणि यस्य सम्यक्श्रुत तत पर भजना।

अथ छट्ठा भेद–'मिथ्याश्रुत'. मिथ्यादृष्टिनो भाष्यो जे भारत आदि वेद ४ प्रमुख जानना. इहां वली एक विचार है. सम्यक्श्रुत जो मिथ्यादृष्टि पढे तो 'मिथ्याश्रुत' कहीए. ते कोइ नयभेद समजे नही, रुचि पिण न हुइ तिवारे अनेकांतरू एकांत परूपीने विघटा देवे, इस वास्ते 'मिथ्याश्रुत' कहीये. अने जो सम(म्यग्)दृष्टि मिथ्याश्रुत पढे तो ते 'सम्यक् श्रुत' कहीए. ते शास्त्र भणीने पूर्वापर विचारे तिवारे अणमिलता लागे वेदमे पूर्वे तो इम कह्या है जे– "न हिंसेत् (हिंस्यात्) सर्वभूतानि" पीछे फिर ऐसे कह्या है "यज्ञे पशून् हिंसेत्" ऐसा देखीने विचारे जो ए वचन तो परस्पर बाधित है तो धन्य श्रीवीतराग त्रिलोकपूजित जिननी वाणी अनेकांत–स्याद्वादरूप किहा ही बाधित नही एह छट्ठा भेद श्रुतना.

सादि श्रुत सातमा द्रव्ये, क्षेत्रे, काले, भावे करी चार प्रकारका है. द्रव्यथी एक पुरुष आश्री श्रुतनी आदि है जिहा सम्यक्त्व पाइ तहांसे आदि है. क्षेत्रथी पच भरत, पच ऐरवतनी अपेक्षा आदि है; प्रथम तीर्थंकरने उपदेशे प्रगट हूया. कालथी अवसर्पिणी कालना त्रीजा आराके अंते, उत्सर्पिणीमे त्रीजे आरेके धुरे उपजे इस अपेक्षा आदि है भावथी. अत्र भाव ते उपयोग कहीए. जद(ब) श्रुतमां उपयोग दीया तिहां आदि कहीये. इति सप्तम.

(३९)

	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
सपर्यवसित श्रुतयत्र ८	एक पुरुष आश्री सम्यक्त्व वमी वा केवल पाम्या तदा अंत श्रुतनो	पच भरत, पच ऐरवते जिनशासन विच्छेद आश्री अंत श्रुतनो	अवसर्पिणीमे पचमे आरेके अंते, उत्सर्पिणीमे चौथेमे अंत	उपयोग नही तदा अंतश्रुत ज्ञाननो
अनादि श्रुत ९	घणे पुरुष आश्री अनादि श्रुत जानना	विदेह आश्री अनादि सदाकाल तीर्थ	नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणी आश्री	क्षयोपशम भाव आश्री प्रवाह सदा अनादि
अनंत दशमा	सर्व पुरुष आश्री अंत नही श्रुतनो	सर्व क्षेत्र आश्री अंत नही	नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणी आश्री अंत नही	क्षयोपशम भाव आश्री अंत नही

गमिक श्रुत एक सदृश सूत्र है, पिण किंचित् विशेष पामीने वार वार उचरे ते 'गमिक श्रुत' कहीए ते बाहुल्येन[1] दृष्टिवाद जानना. अगमिक श्रुत बारमा. गमिकथी विपरीत ते 'अगमिक' ते आचारांग आदि जानना कालिक श्रुत इति. अगप्रविष्ट द्वादशांगी जानना. अनगप्रविष्टके दो भेद–आवश्यक अवश्य करीये ते 'आवश्यक' ते सामायिक आदि षड् अध्ययन. दूजा भेद आवश्यकातिरिक्त. ते आवश्यकथी भिन्नना दो भेद–कालिक मे दिवस निशानी प्रथम पश्चिम

१ मोटे भागे।

पोरसीमे पढीये ते 'कालिक'—उत्तराध्ययन आदि, नदीसे जानना. उत्कालिक—दशवैकालिक प्रमुख जानना. इन १४ भेदमे लौकिक लोकोत्तर भेद है सो समज लेना. एह चौदा भेद पुरा हूये.

अथ श्रुतज्ञान लेनेकी विधि लिख्यते—

(४०)

सुस्सूसइ १	पडिपुच्छइ २	सुणेइ ३	गिण्हइ ४	ईहए ५	अपोहइ ६	धारेइ ७	करेइ ८
शिष्य सिद्धांत लेनेदार होवे तो प्रथम एक चित्तपणे गुरुना मुहथी नीकल्या वचन सांभलने वांछे ए प्रथम गुण है	संदेह पडे विनय करी नमन होकर फेरकर पूछे ए दूजा गुण	तथा जे गुरु संदेहना अर्थ कहे ते अछीतरे सावधान होकर सुणे	पीछे जे संदे हनो अर्थ गुरे कह्या ते अर्थ रूडी परे ग्रहण कर रखे	ते अर्थ वली पूर्वापर विरोध टा लीने हृद यमे विचार णा करे	ते अर्थ विचारीने पछी निश्चय करे एह वात इम ही है	पीछे ते अर्थ हियेमे धारी राखे, विस्मृत न हुइ	पछे जे अनु ष्ठान जिस विधिसे कह्या है तिस विधि से करे ए आठमा गुण जानना

(४१) सात प्रकारे शास्त्र सुननेकी विधियंत्र

मूअं १	हुंकारं २	बाढकारं ३	पडिपुच्छ ४	विमंसा ५	पसंगपरायं ६	परीयण ठिय ७
प्रथम जद शिष्य गुरु कन्हे अर्थ सुणे तद विनय करी शरीर सको ची मौन करे	दूजी वार अर्थ सुणीने मस्तक नमाय कर हुकारा देवे	तीजी वार गाढा प्रगट बोले हे भगवन्! ए वात इम ज है, अन्यथा नही	चौथी वार संदेह ऊठे तो प्रश्न पूछे.	पांचमी वार ते अर्थ हियेमे विचारे	छठी वार ते अर्थके पार जाय	सातमी वारे गुरुनी परे शिष्य अर्थ कहे.

अथ शिष्य प्रते गुरु सिद्धांतना अर्थ किस रीतसे कहे ते वात कहीए है. गाथा—

"सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगो ॥"

सुत्त० पहिलां गुरु सूत्रना अक्षरार्थ मात्र अछीतरे प्रकाशे, तिहां विशेष कांइ न कहइ. किस वास्ते? पहिला विशेष कहवां शिष्यनी बुद्धि मूढ हो जावे, कुछ भी समजे नही. पीछे दूजी वार अर्थ जाण्या पीछे निर्युक्ति सहित सूत्र विशेष वखाणे. ते विशेष रूडी परे जाण्या पीछे वली तीजी वारे शिष्यने निरवशेष ते सूत्र माहिला विशेष अने सूत्रमे जो न कह्या गम्य शेष आदि सगला प्रकाशे. ए सिद्धांतना अनुयोग कहीए अर्थ कहेवानी विधि जाननी इति श्रुतज्ञानस्वरूप संक्षेपथी संपूर्ण.

---

१ सूत्रार्थः खलु प्रथमो द्वितीयो निर्युक्तिमिश्रको भणितः । तृतीयश्च निरवशेष एष विधिर्भवत्यनुयोगः ॥

अथ अवधिज्ञानस्वरूप कथ्यते—अवधिना भेद असंख्य, अनंत है. ते सर्वका स्वरूप नाही लिख्या जावे है; इस वास्ते चौदे भेदे अवधिज्ञाननउ निक्षेप कहीए स्थापना कहु हु (?) अने पदरवे द्वारे ऋद्धिप्राप्त कहीए लब्धिवत, तिस वास्ते कितनीक लब्धिना स्वरूप कहस्यु. अवधिना चौदे द्वारका नाम यन्त्रसे जानना—

१ अवधि—अवधिज्ञानना प्रथम द्वारे नाम आदिक भेद कथन करियेंगे. २ क्षेत्रपरिमाण—अवधिज्ञानका क्षेत्रपरिमाण कथना. ३ संस्थान—अवधिज्ञानका संस्थान-आकारविशेष कहना. ४ अनुगामी—अनुगामी एक अवधि लोचननी परे धणीके साथ जावे ते 'अनुगामी' अने जे धणीके साथ न जावे ते 'अननुगामी' तेहना स्वरूप. ५ अवस्थित—जैसा अवधि उपज्या है तितना ही रहै, वधे घटे नही ते 'अवस्थित'. ६ चल—वधे घटे परिणामविशेषे ते 'चल' अवधि कहीये. ७ तीव्र मंद—कितनाका अवधि चोखा ते 'तीव्र', डोहलारूप ते 'मंद' कहीये. ८ प्रतिपाति—अवधिनो उपजणो विणसनो ते 'प्रतिपाति'. ९ ज्ञान—ज्ञानद्वारे वखाणवो. १० दर्शन-दर्शनद्वारे वखाणवो. ११ विभंग-मिथ्यात्वीका अवधिज्ञान ते 'विभंग' १२ देश—अवधि देश थकी उपजे अने सर्व थकी उपजे. १३ क्षेत्र-क्षेत्र विषे संबद्ध असंबद्ध विचाले अंतर हुइ ते. १४ गति—गइइदिकाये मतिज्ञानवत् वीस द्वारे. १५ ऋद्धिप्राप्त-लब्धिका स्वरूप. एह सामान्य प्रकारे द्वारनामार्थकथनम्.

(४२) अथ प्रथम अवधिज्ञानना नामद्वारमे नामादि छ प्रकारे स्थापनासार्थकयन्त्र

नाम-अवधि १	स्थापना-अवधि २	द्रव्य अवधि ३	क्षेत्र अवधि ४	काल-अवधि ५	भव-अवधि ६	भाव अवधि ७
नाम-अवधि जीवका अथवा अजीवका 'अवधि' ऐसा नाम देवे ते 'नाम अवधि,' अथवा अवधि ऐसा जो नाम ते 'नाम अवधि' कहीए.	स्थापना-अवधि अवधिज्ञानीये जे द्रव्य अथवा क्षेत्र दीठा है तिसका जो आकार अथवा अवधिनो धणी जे पुरुष तेहनो जे आकार स्थापीये ते स्थापना अवधि कहीये	द्रव्य अवधि अवधिज्ञाननो धणी पुरुष जिस अवसरमे असावधान होय तथा उपयोग रहित 'अवधि' शब्द उचरे ते 'द्रव्य अवधि'	जिस क्षेत्रमे रहीने अवधिज्ञाने करी वस्तु देखे ते 'क्षेत्र-अवधि' कहीए	तथा काल अवधि जिस कालमे अवधि उपजे ते 'काल अवधि,' अथवा जिस कालमे अवधिका व्याख्यान करे प्रकाशे ते 'काल अवधि' कहीये	भव अवधि नारकीने भवे अथवा देवताने भवविषये जे अवधि ज्ञान उपजे ते 'भव-अवधि' ज्ञान कहिये	भाव अवधि क्षयोपशम आदि भावे जे अवधिज्ञान उपजे ते 'भाव-अवधि;' अथवा जे द्रव्यनापर्याय तेहने 'भाव' कहिये ते भाव आश्री जे अवधि ते 'भाव-अवधि' इति सप्तार्थ

अथ दूजा क्षेत्रपरिमाणद्वार कहे है—तीन समयका उपनो आहारक सूक्ष्म पनक फूलिननो जीव तेहनो शरीर जितना बडा होवे गहे (है?) तितना अवधिज्ञानी जघन्य क्षेत्र देखे. हिवे सूक्ष्म पनक जीव कह्या ते कैसा ते कत कहे है. सहस्र योजन प्रमाण शरीर जे मत्स्य हुइ ते मत्स्य मरीने पहिले समय आपणा शरीर नऊ कडाह सहरीने सहस्र योजन प्रमाण प्रतर कहीये. मांडा (मादा) रूप थइ अने बीजे समये ते शरीर नउ प्रतर सहरीने सहस्र योजन प्रमाण सूचीने आकारे हुये अने तीजे समये ते सूचीरूप शरीर संहरीने सूक्ष्म रूप थइने ते मत्स्यनो जीव आपणा शरीर बाहिर जे पनग हुये तिम माहे उपजे ते 'सूक्ष्म पनक' कहीए. जब तीन समयका उपना आहार करे तेहनो शरीर जितना वडा होवे तितना क्षेत्र अवधिज्ञानी जघन्य जाणे. इति जघन्य अवधिक्षेत्रम्.

अथ अवधिका उत्कृष्ट क्षेत्र कहीये है—श्रीअजितनाथने वारे पदरे कर्मभूमे उत्कृष्टा घणा मनुष्य हुइ अने अग्निनो आरभ मनुष्य ज करे तिस वास्ते बादर अग्निना जीव पिण घणा हुइ; ते बादर अने सूक्ष्म अग्निका जीवांकी श्रेणि माडीइ ते श्रेणि इतनी बडी नीपजे लोकमे व्यापी अलोकमे लोक सरीपा असख्याता खड व्यापे ते श्रेणि अवधिज्ञानीने शरीरे लगाइने चारो ओर फेरीये तिस श्रेणिने चारो ओर असख्य रज्जु परमाणु जितना क्षेत्र स्पर्श्या है तितना क्षेत्र उत्कृष्ट परम अवधिज्ञानी देखे. अलोकमे देखने योग्य वस्तु तो नहीं, पिण शक्ति इतनी है जो कर वस्तु होती तो देखता. इति उत्कृष्ट अवधिक्षेत्रम्.

अथ अवधिज्ञान आश्री क्षेत्रनी वृद्धिये कितना काल वधइ अने कालनी वृद्धिये कितना क्षेत्र वधे ते (४३) यत्रात्—

	क्षेत्रथी जाणे		ते कालथी कितना जाणे?
१	अगुलके असख्यातमे भाग	१	ते आवलिके असख्यमे भाग
२	„ सख्यातमे „	२	„ „ सख्यातमे भाग
३	एक अगुल प्रमाण क्षेत्र	३	एक आवलिका ऊणी
४	पृथक् अगुल क्षेत्र देखे	४	„ „ पूरी जाणे
५	एक हस्त „ „	५	अतर्मुहूर्तनी वात जाणे
६	„ कोश „ „	६	एक दिवस ऊणी किंचित्
७	„ योजन „ „	७	पृथक् दिवस ९ ताइ
८	२५ „ „ „	८	एक पक्ष किंचित् न्यून

	क्षेत्रथी जाणे		ते कालथी कितना जाणे ?
९	भरतक्षेत्र परिमाण देखे	९	अर्ध मास कालथी
१०	जंबूद्वीप देखे ते	१०	एक मास झाझेरा
११	अढाइ द्वीप परिमाण देखे	११	एक वर्ष कालथी
१२	रुचक द्वीप तेरमा	१२	पृथक् वर्ष
१३	सख्याते द्वीप देखे ते	१३	सख्याता कालकी वात
१४	सख्याते वा असख्य द्वीप	१४	कालथी असख्य काल

सख्याते योजन परिमाण द्वीप समुद्र असख्याते देखे, असख्य योजन परिमाण द्वीप सख्याते देखे.

हिवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एह चारोमे वृद्धि हुइ कौनसेकी वृद्धि हुइ अने कौनसे की न हुइ ते (४४) यंत्रम्—

काल वधे	क्षेत्र वधे	द्रव्य वधे	पर्याय वधे
द्रव्य ,,	क्षेत्र काल भजना	काल भजना	काल भजना
क्षेत्र ,,	द्रव्य वधे	क्षेत्र ,,	क्षेत्र ,,
भाव ,,	भाव ,,	पर्याय वधे	द्रव्य ,,

इस यंत्रका भावार्थ—काल आश्री जिवारे अवधिज्ञान वृद्धि हुइ तदा क्षेत्र, द्रव्य, पर्याय एह तीनो वधे अने क्षेत्रकी वृद्धि हुये कालकी भजना कहनी–वधे वी अने नही वी वधे. किस वास्ते ? क्षेत्र अतिसूक्ष्म है अने काल स्थूल–मोटा कह्या है तिस वास्ते जो घणा क्षेत्र वधे तो काल वधे अने जो थोडा क्षेत्र वधे तो काल कुछ भी नही वधे इति भाव[1]. वली क्षेत्रनी वृद्धि होय तो द्रव्य अने पर्याय निश्चय ही वधे. किस वास्ते ? क्षेत्रथी द्रव्य अतिसूक्ष्म है एक आकाशप्रदेश क्षेत्रमे अनंता द्रव्य समा रह्या है अने द्रव्यथी पर्याय अतिसूक्ष्म है. कैसात् ? एक द्रव्यमे अनंती पर्याय पीत रक्त आदि है तिस वास्ते क्षेत्र वधे द्रव्य, पर्याय दोनो वधे तथा द्रव्य अने पर्यायके वधे क्षेत्र कालके वधनेकी भजना. द्रव्य अने पर्याय सूक्ष्म है अने क्षेत्र काल मोटा है इस वास्ते वधे अने नही पिण वधे तथा द्रव्य वधे पर्याय निश्चय वधे अने पर्याय वधे द्रव्य वधे वी अने नही पिण वधे.

1 भावो।

पालणपुरनिवासी दोसी कालीदास माणेकचंद तरफथी तेमना मातुश्री
स्व बा.ई परसनबाईना स्मरणार्थे

- अवर्गणा १ द्वीतवर्गणा २
- ...लवर्गणा ३ नावर्गणा ४
- उदारीकअयोग्यवर्गणा ५
- उदारिकयोग्यवर्गणा ६
- उनयाऽयोग्यवर्गणा ७
- वैक्रिय योग्यवर्गणा ८
- उनयाऽयोग्यवर्गणा ९
- आहारकयोग्यवर्गणा १०
- उ स्वाऽयोग्यवर्गणा ११
- तेजसयोग्यवर्गणा १२
- ... अयोग्यवर्गणा १३
- भाषायोग्यवर्गणा १४
- उनयाऽयोग्यवर्गणा १५
- श्वासोश्वासयोग्यवर्गणा १६
- श्वासोश्वासअयोग्यवर्गणा १७
- मनयोग्यवर्गणा १८
- उनयाऽयोग्यवर्गणा १९
- कर्मयोग्यवर्गणा २०
- ध्रुववर्गणा २१
- योग्यध्रुववर्गणा २२
- अयोग्यध्रुववर्गणा २३
- अध्रुववर्गणा २४
- शून्यतरवर्गणा २५
- अशून्यतरवर्गणा २६
- ध्रुवानतरवर्गणा २७
- तनुवर्गणा २८ मिश्रस्कंध २९
- अचित्तमहास्कंध ३०॥

अथवर्गणास्वरूप इहलोक सर्व अलोक
गगनपुद्गलेकरीभरयाहै तेपुद्गल किसरहैं।
तिकहीयेहै पुद्गलकी न्यारीन्यारीवर्गणाहै
वर्गणाशब्दे सरीषार्द्रव्यनाथोकडाकहीए
तेवर्गणा द्रव्यक्षेत्रकालभावर्थी४ चारप्र
कारेहै तेकिम एकपरमाणुएकला इमजि
तनापरमाणुथाई तेहनीपहेलीवर्गणाजाननी
दोदोपरमाणुमिलरहेहै तेहनी दुजीवर्गणा
इमतीनतीननीतीजी एवं संख्यातानी इम संख्या
तापरमाणुथी असंख्यपरमाणुथी अनंतपर
माणुथीते इनी न्यारी२ वर्गणाजाननी इम द्रव्य
वर्गणा अनंतीहै इतिद्रव्यवर्गणा १ अथ
क्षेत्राश्री जेपरमाणुया अथवामोटा द्रव्य
वे आकाशप्रदेश रह्या तेसर्वनी एकवर्गणा
एमदोदोरहेलानी दुजीवर्गणा इमतालगी
लेनाजाल असंख्यप्रदेशव्यापेते इनीन्यारी२
वर्गणा क्षेत्राश्री असंख्याती हुइहै २ तथाका
लाश्रीते एकपरमाणु दोपरमाणु एवं तीनचा
रसंख्याते असंख्याते अनंतेपरमाणु एकवेमि
लरहेहै इनमे जितन्याकी एकसमयकी स्थि
तिहै तिनसर्वकी एकवर्गणा एकत्रदोसमय
रहेते इनी दुजीवर्गणा इमअसंख्यसमयस्थि
तिलग असंख्यातीवर्गणाजाननी तथाभा
वश्री तेहिजपरमाणुया कितनेककाला किते
नाधोला कितनानीला कितनापीला इमव
र्णगंधरसस्पर्शकरी जिपरमाणु न्यारा२ हुइ
तिसर्वनी न्यारी२ अनंतीवर्गणाजाननी ४ एवं ४ व
र्गणा तथा कितनाक पुद्गलस्कंधथी जापरमाणु
अनेबादरपरिणामहै ते उदारिकशरीरने अ
योग्यहै तिसवास्ते उदारिकअयोग्यवर्गणा ५
कहीये तिसथी अधिकाधिकपुद्गलस्कंध उदा
रकशरीरने परिणमाववायोग्यहै ते उदारीकयो
ग्यवर्गणा ६ तेहथी अधिकपुद्गलमयस्कंध
सूक्ष्मपरणामीहै ते उदारिकने योग्यनही अ
नेवैक्रियाश्री थोडापरमाणुहै ते बादरप
रिणामहै तिसवास्ते वैक्रियकेकाम ...
वेइसवास्ते उभयाऽयोग्यवर्गणा कहीये ...
कर्मयोग्यवर्गणातांइ तीनतीनवर्गणा ... नी
एवं अयोग्य ... योग्य ... अयोग्य
अर्थ उदारिकवत् एवं वर्गणा २० ...
... ध्रुववर्गणाना स्वरूप ...

ॐ

जैनाचार्य श्री १००८ श्रीविजयानंदसूरीश्वरजीकृत नवतत्त्वसंग्रहनी
स्वहस्ते लखेली प्रति उपरथी

हिवे पीछे कालथी क्षेत्र सूक्ष्म कह्या ते कितरमे भाग सूक्ष्म है ते वात कहीये है. प्रथम तो काल सूक्ष्म. एक चुटकी वजातां असख्य समय वीते. तेह थकी क्षेत्र असंख्यात गुणा सूक्ष्म. एक अंगुल मात्र क्षेत्रमे जितने आकाशप्रदेश है ते समय समय एकेक काढतां असंख्याती अवसर्पिणी वीते. क्षेत्रथी द्रव्य सूक्ष्म अनत गुणा. एकेक प्रदेशमे अनते द्रव्य है. ते द्रव्यथी पर्याय सूक्ष्म अनत गुणी एकेक द्रव्यमे अनती है.

अथ हिवे जदा पहिलां अवधिज्ञान उपजे तदा पहिला कौनसा द्रव्य देखे ते वात कहीये है—ते पुरुष आदिकने जद पहिला अवधिज्ञान उपजे ते पहिलां तैजस शरीर योग्य जे द्रव्य अने भाषा योग्य जे द्रव्य ते दोनोके विचाले जे अयोग्य द्रव्य है, ते द्रव्य कैसा है? कुछ भारी है, कुछ हलका है ते 'गुरुलघु' कहीये अने जे भारी पिण न हुइ अने हलका पिण न हुइ ते 'अगुरुलघु' कहीये. जघन्य अवधिज्ञानना धणी गुरुलघु, अगुरुलघु ए दोनोही देखे. एक कोइ तैजस शरीरके समीप है ते गुरुलघु है अने जे भाषाद्रव्यके समीप है ते अगुरुलघु है. पीछे जे जघन्य अवधि कह्या तिसके स्वरूपके वास्ते वर्गणाका स्वरूप लिख्यते—

(१) द्रव्यवर्गणा, (२) क्षेत्रवर्गणा, (३) कालवर्गणा, (४) भाववर्गणा, (५) औदारिक अयोग्य वर्गणा, (६) औदारिक योग्य वर्गणा, (७) उभय अयोग्य वर्गणा, (८) वैक्रिय योग्य वर्गणा, (९) उभय अयोग्य वर्गणा, (१०) आहारक योग्य वर्गणा, (११) उभय अयोग्य वर्गणा, (१२) तैजस योग्य वर्गणा, (१३) उभय अयोग्य वर्गणा, (१४) भाषा योग्य वर्गणा, (१५) उभय अयोग्य वर्गणा, (१६) आनप्राण योग्य वर्गणा, (१७) उभय अयोग्य वर्गणा, (१८) मन योग्य वर्गणा, (१९) उभय अयोग्य वर्गणा, (२०) कर्म योग्य वर्गणा, (२१) ध्रुव वर्गणा, (२२) योग्य ध्रुव वर्गणा, (२३) अयोग्य ध्रुववर्गणा, (२४) अध्रुववर्गणा, (२५) शून्यतरवर्गणा, (२६) अशून्यतरवर्गणा, (२७) ध्रुवानतरवर्गणा, (२८) तनुवर्गणा, (२९) मिश्र स्कंध, (३०) अचित्त महास्कंध.

अथ वर्गणा स्वरूप—इह लोक सर्व अलोक लग पुद्गले करी भर्या है ते पुद्गल किम किम है ते कहीये है. पुद्गलकी न्यारी न्यारी वर्गणा है. 'वर्गणा' शब्दे सरीषा सरीषा द्रव्यना थोकडा कहीए ते वर्गणा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी चार प्रकारे है. ते किम? एक परमाणु एकला इम जितना परमाणुया है तेहनी एक वर्गणा जाननी. दो दो परमाणु मिल रहे है तेहनी दूजी वर्गणा. इम तीन तीननी तीजी एव चार चारनी. इम सख्याते परमाणुये, असख्य परमाणुये, अनत परमाणुये तेहनी न्यारी न्यारी वर्गणा जाननी. इम द्रव्यवर्गणा अनती होय है. इति द्रव्यवर्गणा. अथ क्षेत्र आश्री जे परमाणुया अथवा मोटा द्रव्य एके आकाशप्रदेशे रह्या ते सर्वेनी एक वर्गणा. एम दो प्रदेशे रह्यानी दूजी वर्गणा. इम तां लगे लेना जां लग असख्य प्रदेश व्यापे. तेहनी न्यारी न्यारी वर्गणा क्षेत्र आश्री असख्याती हुइ है. तथा काल आश्री ते एक परमाणु, दो परमाणु एव तीन, चार, सख्याते, असख्याते, अनत परमाणु एकठे

मिले रहे है. इनमे जितन्याकी एक समयकी स्थिति है तिन सर्वेकी एक वर्गणा. एकत्र दो समय रहे तेहनी दूजी वर्गणा. इम असंख्य समयस्थिति लग असख्याती वर्गणा जान लेनी. तथा भाव आश्री तेहि ज परमाणुया कितनेक काला, कितना ही धवला, कितना नीला, कितना पीला इम वर्ण, गध, रस, स्पर्श करी जे परमाणु न्यारा न्यारा हुइ ते सर्वेनी न्यारी न्यारी अनती वर्गणा जाननी. एव ४ वर्गणा. तथा कितनाक पुद्गलस्कध थोडा परमाणु अने बादर परिणामे है ते औदारिक शरीरने अयोग्य है तिस वास्ते 'औदारिक अयोग्य वर्गणा' ५ कहीये. तिसथी अधिकतर पुद्गलस्कंध औदारिक शरीरने परिणमावा योग्य है ते 'औदारिक योग्य वर्गणा.' ६ तेहथी अधिक पुद्गलमय स्कध सूक्ष्म परिणामी है ते औदारिकने योग्य नही अने वैक्रिय आश्री थोडा परमाणु है अने बादर परिणाम है तिस वास्ते वैक्रियके काम नही आवे, इस वास्ते 'उभय अयोग्य वर्गणा' ७ कहीये. एव कर्म योग्य वर्गणा ताइ तीन तीन वर्गणा जाननीः—एक अयोग्य, दूजी योग्य, तीजी उभय अयोग्य. अर्थ औदारिकवत् एव वर्गणा २० होती है अथ २१ मी ध्रुववर्गणाना स्वरूप—कर्मवर्गणाथी अधिक पुद्गलमय एकोत्तर वृद्धिइ अनत परमाणुरूप ध्रुववर्गणा है. इह वर्गणा चउदा रज्ज्वात्मक लोकमे सदैव पामीये, इस वास्ते 'ध्रुव वर्गणा' २१ कहीये. पिण एह एकोत्तर वृद्धिये वधती अनती जाननी. पीछे औदारिकादि वर्गणा जगमे सदैव लाभे, तिस वास्ते तिनका नाम 'योग्य ध्रुववर्गणा' २२ कहीये. अने ए २१ मी ध्रुववर्गणा अतिसूक्ष्म परिणाम बहुद्रव्यमय भणी औदारिकादिने योग्य नही, तिस वास्ते इसकीही सज्ञा 'अयोग्य ध्रुववर्गणा' २३ है ते ध्रुववर्गणाथी अधिक पुद्गलमय वली एक अध्रुवर्गणा है. ते पुद्गलद्रव्य चउदे रज्ज्वात्मक लोकमे कदे[1] पामीये कदे नहि पामीये, इस वास्ते इसका 'अध्रुववर्गणा' २४ नाम. एह पिण एकोत्तर वृद्धि वाधती अनती जाननी. एह पिण औदारिकादिकने योग्य नही, सूक्ष्म अने बहुद्रव्यत्वात्[2] तिसथी अधिक पुद्गलमय 'शून्यतर वर्गणा' है. शून्यतर क्या कहीये? एक परमाणु, दो परमाणु, तीन परमाणु इम एकेक परमाणु करी वर्गणा वधे तां लगे जा लगे अनता परमाणु मिले पिण ए वर्गणा वधतां वीचमे एकोत्तर वृद्धिनी हाण पडे अने वली पांच सात परमाणु लगे एकोत्तर वृद्धि वधे अने वीचमे वली एकोत्तर वृद्धिनी हाण पडे इम एकोत्तर वृद्धि आश्री वीचमे शून्य पडे, इस वास्ते 'शून्यतर वर्गणा.' २५ एह पिण अनती जाननी तथा तिसथी अधिक पुद्गलमय अशून्यतर वर्गणा है. ते वर्गणामे एकोत्तर वृद्धि आश्री वीचमे शून्य न पडे, इस वास्ते 'अशून्यतर वर्गणा' २६ ऐसा नाम. एह पिण औदारिकादिने योग्य नही. तेहथी अधिक पुद्गलमय चार प्रकारे 'ध्रुवानतर वर्गणा' है. इस जगतमे सदैव लाभे, तिस वास्ते ध्रुव अने आरभ्या पीछे एकोत्तर वृद्धिका अतर न पडे, इस वास्ते अनतर दोनोः मिली 'ध्रुवानतर' नाम चार भेद मोटा एकोत्तर वृद्धिये अतर पडे पहिली एक फेर एकोत्तर वृद्धि अनत लग वधीने फेर मोटा अतर ए दूजी. एव चार जान लेनी २७ ध्रुवानतरथी अधिक पुद्गलमय एकोत्तर वृद्धिये वधती चार 'तनु

[1] क्वचित्। [2] घणां द्रव्यमय होवाथी।

वर्गणा' है. ते पिण ध्रुवानतर वर्गणावत् बीच बीच अंतर पडनेसे चार प्रकारे जाननी. ते औदारिक आदि पांच शरीरने योग्य तो नही पिण अगले पुद्गलके विछडनेसे अने नवे पुद्गलके मिलनेसे घटती वधती शरीरने योग्यता अभिमुख हुइ; तिस वास्ते ते 'तनु वर्गणा' २८ नाम. ध्रुवानतर वर्गणावत् चार भेद जानने. तेहथी अधिक पुद्गलमय एक मिश्र स्कंध है. एह स्कंध घणा सूक्ष्म है अने कुछक बादर परिणामे है. इन दोनो परिणामके वास्ते 'मिश्र स्कंध' नाम. तेहथी अधिक पुद्गलमय 'अचित्त महास्कंध' है ते घणा पुद्गल एकठा मिली ढिग रूप होता है ते 'अचित्त महास्कंध' विस्रसा परिणामे करी केवलिसमुद्घातनी परे चउदे रज्वात्मक लोक व्यापे अने चार समयमे पीछे फिर कर स्वस्थानमे आवे इम सर्व समय आठ जानने. एह स्कंध कदे हूये अने कदे नही भी होय. पुद्गल तो सर्व अचित्त ही है, तो इसका नाम 'अचित्त स्कंध' क्यु कहा इति प्रश्न. अथ उत्तरम्—केवली जद समुद्घात करे तदा जीवना प्रदेशे करी मिश्र जे कर्मना पुद्गल तिण करी सर्व लोक व्यापे ते 'सचित्त कर्म पुद्गल' कहीये. तिसके टालने वास्ते 'अचित्त' शब्द कीधा. इति सक्षेप करके वर्गणा स्वरूपम्.

इण औदारिक आदि द्रव्यमे कौनसा गुरुलघु है अने कौनसा अगुरुलघु है ए वात कहीये है. औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस ए चार द्रव्य अने तैजस द्रव्यके नजीक जे द्रव्य है (ते) सर्व द्रव्य 'गुरुलघु' है, बादर परिणाम करके, अने कार्मण, मनोद्रव्य, भाषाद्रव्य, आनप्राणद्रव्य अने भाषाद्रव्यके समीपका द्रव्य ते सर्व सूक्ष्म परिणाम करके 'अगुरुलघु' कहीये. जघन्य अवधिके विषयके ए गुरुलघु अने अगुरुलघु द्रव्य जाने देखे.

हिवे द्रव्यकी वृद्धि हूया क्षेत्र, काल कितना वधे ए वात कहीये है. (४५) यंत्रसे इसका स्वरूप—

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी
मनोद्रव्य देखते	लोकका सख्यातमा भाग	पल्योपमका सख्यातमा भाग
कर्मद्रव्य ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
ध्रुवानतर वर्गणा, शून्यतर वर्गणा आदि देखे	चौद रज्वात्मक लोक देखे	पल्योपम किंचित् न्यून देखे
तैजस, कार्मण शरीर तैजस योग्य भाषायोग्य वर्गणा देखे	असख्य द्वीप, समुद्र देखे	असख्य काल देखे

अथ परमावधि ज्ञानना धणी उत्कृष्टा कौनसा सूक्ष्म द्रव्य देखे ते वात कहीये है— क्षेत्रके एक प्रदेशे रह्या परमाणु द्व्यणुक आदिक द्रव्य परमावधिनो धणी देखे. अने कार्मण शरीर देखे. कार्मण शरीर असख्याते प्रदेश नियमा अवगाहवे है. उत्कृष्ट अवधिनो धणी जितना अगुरुलघु द्रव्य जगमे है ते सर्व देखे जो तैजस शरीर अवधिनो धणी देखे तो कालथी भव भव लगे देखे. ते भव भव असख्य काल प्रमाणके जानने.

हिवै परमावधिनो धणी कितना क्षेत्र जाणे अने कितना काल जाणे ए वात कहीये है.
(४६) यन्त्रम्—

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी
सूक्ष्म, बादर सर्व रूपी द्रव्य देखे	सर्व लोक अग्निके सर्व जीवाकी सूची प्रमाण अलोकमे देखे	असख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल देखे	एकेक द्रव्य प्रते सख्याता पर्याय देखे परमावधि

एह अवधि मनुष्य आश्री कह्या. हिवै तिर्यंच आश्री अवधिज्ञान कहीये है पचेन्द्रिय तिर्यंच अवधिज्ञाने करी औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस ए सर्व द्रव्य देखे अने इसके मापेका क्षेत्र, काल, भाव आपे विचारणा कर लेनी. एह मनुष्य तिर्यचने क्षयोपशमक अवधिज्ञान कह्या.

(४७) हिवै भवप्रत्यय नारकी देवताना अवधिमे प्रथम नारकीना अवधि क्षेत्र यन्त्र लिख्यते—

विषय	रत्नप्रभा	शर्कराप्रभा	वालुकाप्रभा	पकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमतमप्रभा
जघन्य	३॥ गाउ	३ गाउ	२॥ गाउ	२ गाउ	१॥ गाउ	१ गाउ	॥ गाउ
उत्कृष्ट	४ ,,	३॥ ,,	३ ,,	२॥ ,,	२ ,,	१॥ ,,	१ ,,

असुर–जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट असख्य द्वीप समुद्र. नव निकायव्यतर–जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट सख्याते द्वीप. जोतिषी–जघन्य सख्याते द्वीप, उत्कृष्ट सख्यतर द्वीप.

सौधर्म ईशान	३-४ स्वर्ग	५-६ स्वग	७ ८ स्वग	९-१२ स्वग	६ ग्रैवेयक	३ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
रत्नप्रभाका नीचला चरम अत	दूजीका नीचला चरम अत	त्रीजीका	चौथीका	पाचमीका चरम अत	छठीका	सातमीका चरम अत	किंचित् न्यून लोक सर्व

'सौधर्म' देवलोकथी नव ग्रैवेयक पर्यंत जघन्य अगुलके असख्यमे भाग देखे. पूर्व भव अवधि अपेक्षा सर्व विमानवासी ऊचा तो अपनी ध्वज लांई देखे अने तिरछा असख्य द्वीप, समुद्र देखे. असख्यातके असख्य भेद है.

(४८) हिवै आयु आश्री अवधिज्ञान कितना होवे है ते यन्त्रात् ज्ञेय.

अर्ध सागरथी ओछी आयुवाला	सख्याते योजन प्रमाण देखे उत्कृष्ट
पूरी अर्ध सागरनी आयु वाला देवता	असख्य ,, ,, ,,
अर्ध सागरसे उपरात जिसकी आयु है ते	,, ,, ,, ,,

(४९)

०	जघन्य अवधि	उत्कृष्ट अवधि	मध्यम अवधि	अभ्यतर	बाह्य	देश अवधि	सर्व अवधि
देव नरक	०	०	अस्ति	अस्ति	०	अस्ति	०
तिर्यंच	अस्ति	०	,,	०	अस्ति	,,	०
मनुष्य	,,	अस्ति	,,	अस्ति	,,	,,	अस्ति

(५०)

०	अनुगामी	अननुगामी	वर्धमान	हीयमान	प्रतिपाति	अप्रति पाति	अव स्थित	अनव स्थित
देव नरक	अस्ति	०	०	०	०	अस्ति	अस्ति	०
मनुष्य	,,	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	,,	,,	अस्ति
तिर्यंच	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

ए यत्र दोनो प्रसगात्. तथा उत्कृष्ट अवधिज्ञान दो प्रकारे है–एक प्रतिपाति, दूजा अप्रतिपाति जो उत्कृष्टा चौद रज्वात्मक लोक लगे व्यापे पिण अगाडी अलोकमे एक प्रदेश तक (भी) व्यापणेकी शक्ति नही तां लग अवधिज्ञान 'प्रतिपाति' कहीये; अने जे अवधि अलोकमे एके प्रदेशे व्यापे ते 'अप्रतिपाति' इति क्षेत्रप्रमाण द्वार द्वितीय

हिवै तीजा सस्थान द्वार—जघन्य अवधिज्ञानका सस्थान पाणीके विंदुवत् गोल है अने उत्कृष्ट अवधिज्ञान वर्तुल आकारे ज हुइ, पिण कुछक लावे आकारे हुइ. कस्मात्? शरीरके चारों ओर अग्निके जीवाकी सूची फेरणे करी उत्कृष्ट अवधिका क्षेत्र कह्या है. अने शरीरका कोठा तो वर्तुल नही किन्तु कुछक लांबा है, इस वास्ते उत्कृष्ट अवधिज्ञानका सस्थान वर्तुल अने कुछक लावा है. मध्यम अवधिज्ञानका सस्थान विचित्र प्रकारना है. ते यत्रसे जानना. किंचित् सस्थान ज्ञानका.

(५१) (नारक आदिका अवधिका सस्थान)

नारकीनो अवधि	भवनपति	मनुष्य तिर्यंच	व्यतर	जोतिपी	१२ देवलोक	९ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
त्रापाने आकारे जिस करके नदीना पाणी तरीये ते 'त्रापु' कहिये तद्वत् सस्थाने	धान्य भरणेका ठेका तेहने सस्थाने	नाना प्रकारना सस्थान असख्य भेदे	पडहा बीचमे तो मोटा अने दोनो पासे सम तेहने संस्थाने	झाल्र ते डौरूवजतर तेहने सस्थाने	मृदगने आकारे एक पासे चौडा, दूजे पासे साकडा	फूलनी चगेरी वत्	वालिकानो चोल जे बाल पने माथे उपर पिहरणनी परे शरीरे पहेरे तद्वत्

भवनपति व्यतरनो अवधिज्ञान ऊचा घणा अने और देवताके नीचा घणा तथा नारकी, जोतिषीने तिरछा घणा अने मनुष्य, तिर्यचने ऊचा बी हुई अने नीचा बी होवे अने थोडा बी होवे अने घणा बी होवे; तिस वास्ते विचित्र कह्या. इति सस्थानद्वार ३.

हिवै चौथा अनुगामीद्वार अवधिज्ञान दो प्रकारे है. एक अनुगामिक १ अननुगामी २. जिस पुरुषकू अवधिज्ञान उपना ते पुरुषके साथ ही अवधिज्ञान चाले, अलग न रहे; जिम हस्तगत दीवा जिहा जाय तिहा साथ ही आवे तिम अवधिज्ञान पुरुषके साथ ही आवे ते 'अनुगामिक', अने जे अवधि पुरुषको जौनसे क्षेत्रे उपना है ते अवधिज्ञान तिस ही ज क्षेत्रे रहै, पुरुष साथ अन्यत्र जगे न जाय जिम सांकले बांध्या दीवा जिहा है तिहां ही रहै तिम ते अवधिज्ञान जिस क्षेत्रे उपना तिहा ही प्रकाश करे, पुरुष चले साथ न चले अने तेही पुरुष जदि फिरकर तिस ही क्षेत्रमे आवे तदा अवधिज्ञान फेर होवे ते 'अननुगामिक' अवधिज्ञान कहीये. हिवे तेहना स्वरूप लिखीये है—

अनुगामी १ अननुगामी २ मिश्र ३ मिश्र कया कहीए ? जे अवधिज्ञान उपना एक पासेका तो तिहा ही रहै अने दूजे पासेका पुरुषके साथ चाले ते 'मिश्र' अवधिज्ञान कहीये. फिरकर तिस ही क्षेत्रमे आवे तो चारो ओर फेर देखने लगे है एह अवधि मनुष्य, तिर्यचने होता है ए अनुगामी द्वार ४. (५२) हिवे अवस्थित द्वार पांचमा कहीये है.—

स्थिति	क्षेत्र आश्री स्थिति १	उपयोग आश्री स्थिति २	गुण आश्री स्थिति ३	पर्याय आश्री स्थिति ४	लब्धि आश्री स्थिति ५
अवधि ज्ञानकी पाच प्रकारे	३३ सागरोपम अनुत्तर विमानके देवता आश्री	अतर्मुहूर्त उपरात एक द्रव्यमे उपयोग नही रहै है	आठ समयसे उपरात गुणमे उपयोग नही रहै है	पर्याय सात समय प्रमाण उपयोग रहै	लब्धि आश्री ६६ सागर साधिक

हिवै चल द्वार ६—जे अवधिज्ञान वधे बी अने घटे बी ते 'चल' अवधिज्ञान कहीये. ते छ प्रकारे वधे अने छ प्रकारे हान होय ते.

(५३) यत्रसे स्वरूप हान अने वृद्धिका जानना—

सख्या	अनत भाग १	असख्य भाग २	सख्यात भाग ३	सख्यात गुण ४	असख्य गुण ५	अनत गुण
अधिक	असत् १०० कल्पना ९९	१०० ९८	१०० ९०	१०० १०	१०० २	१०० १
हीन	असत् ९९ कल्पना १००	९८ १००	९० १००	१० १००	२ १००	१ १००

(५४) हिवें ए छ प्रकारमे अवधिज्ञाननी वृद्धि हान कितने प्रकारे है ते यत्रमे सरूप लिख्या—

सख्या	क्षेत्र आश्री हान वृद्धि	काल आश्री हान वृद्धि	द्रव्य आश्री हान वृद्धि	पर्याय आश्री हान वृद्धि
हान ६ प्रकारे, वृद्धि ६ प्रकारे	असख्य भाग हानि वृद्धि, असख्य गुण हानि वृद्धि, सख्यात भाग हा० वृ०, संख्यात गुण हा० वृ० ४	अस० भाग हा० वृ० अस० गुण हा० वृ० स० भाग हा० वृ० स० गुण हा० वृ० ४	अनत भाग हा० वृ० अनत गुणा हा० वृ० २ द्रव्य घणा वधे घटे असात् २	षट् प्रकारे हान वृद्धि छ प्रकारका सरूप यत्रसे जानना

इति छठा चल द्वार सपूर्णम् ।

हिवें ७ मा तीव्र मद द्वार कहीये है—किताएक अवधिज्ञान फाडारूप हुइ थोडासा दीसे अने वीचमे वली न दीसे, थोडेसे अतरमे फेर दीसे. स्थापना . इम फाडा रूप जानना. जिम जालीमे दीवेका तेज पडे छिद्रमे तो तेज है अने ओर जगे नही ते तेज फाडा फाडा रूप दीसे तिम जे अवधिज्ञाने करी किहा दीसे अने किहा नही दीसे, लगत मार प्रकाश न हुइ ते 'फाडारूप' अवधिज्ञान कहाता है ते अवधिज्ञानना फाडा कितना होवे ते वात कहीये है—

एक जीवने अवधिज्ञानका फाडा सख्याता अने असख्याता हुइ पिण ते जीव जदा एक फाडा देखे तदा सर्व ही फाडा देखे. जिस वास्ते जीवके उपयोग एक ज होय है. एक वार दो उपयोग न हुइ, तिस वास्ते सर्व फाडयांमे एक वार एकठा ही उपयोग जानना हिवें ते फाडा तीन प्रकारना है—कितनाक तो अनुगामिक १, कितनाक अननुगामिक २, कितनाक मिश्र ३ तीनाका अर्थ उपरवत्. तथा ते फाडा वली तीन प्रकारे है–एक प्रतिपाति है १, कितनेक अप्रतिपाति २, कितनेक मिश्र ३. हिवें जे अवधि उपजीने फाडारूप ते कितनाक काल रहीने विणसे ते फाडा 'प्रतिपाति' कहीये १; कितनाक न विणसे ते 'अप्रतिपाति' २, अने जे कितनेक फाडे प्रतिपाति अने अप्रतिपाति ते 'मिश्र' ३. ए अवधि मनुष्य, तिर्यचने हुइ पिण देव, नरकने नही. अनुगामी अप्रतिपाति फाडारूप अवधिज्ञान 'तीव्र' चोखे परिणामे करी उपजे ते फाडा 'तीव्र' कहीये है. अने अननुगामी प्रतिपाति फाडारूप अवधि मद परिणामे करी उपजे है, तिस वास्ते 'मद' कहीये है. इति तीव्र मद द्वार ७

अथ प्रतिपाति द्वार—अवधिज्ञानका एक समयमे उपजणा अने विणसना कहीए है. जे अवधि जीवके एके दिशे उपजे ते 'बाह्य' अवधिज्ञान कहीये अथवा जे जीवके सर्व फा(पा)से फाडारूप अवधि हुइ ते 'बाह्य' अवधिज्ञान कहीये. ते बाह्य अवधिका उपजणा अने विणसना अने दोनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आश्री एक समयमे हूइ ते किम द्रव्य आश्री ते बाह्य

अवधि एक समयेसें उपजणा बी विणसना बी अने दोनो बात पिण हुइ है. दावानलने दृष्टांते करी जिम दवानल एक पासे बूझे अने दूजे पासे बधे तिम कितनाक अवधिज्ञान एक पासे नवा उपजे अने दूजे पासे आगला अवधि विणसे, इस वास्ते एक समयमे कदे दो बात पिण होय है. तथा कितनाक अवधिज्ञान जीवके शरीरके थकी सर्व पासे प्रकाश करे ते शरीर विचाले फाडा कुछ बी नही होय ते 'अभ्यंतर' अवधि कहीये. जिम दीवानी कांति दीवाथी अलग नही है, चारो ओर प्रकाश करे तिम अवधि पिण ऐसा हूये ते 'अभ्यंतर' अवधिज्ञानको उत्पाद अने विनाश ए दो बाते एक समयमे न होवे, एके समयमे एक ज बात हूइ. जिम दीवा उपजे एक समय अने विणसनेका अन्य समय तिम अभ्यंतर अवधिके एक समय एक ही बात होय. हिवे अवधिज्ञाने करी जदा एक द्रव्य देखे तदा पर्याय कितना देखे ए बात कहीये है—जदा एक द्रव्य परमाणु प्रमुख अवधि करी देखे तदा द्रव्यना पर्याय सख्याता देखे अने असख्याता देखे, जघन्य तो चार पर्याय-रूप, रस, गध, स्पर्श ए चार देखे. एह आठमा उत्पाद प्रतिपातद्वार संपूर्णम्.

(५५) हिवे ज्ञान दर्शन विभग एह तीन द्वार कहे हैं, ते यन्त्रम्—

ज्ञान १	दर्शन २	विभग ३
जिस अवधिज्ञाने करी विशेष जाणे ते 'साकार ज्ञान' कहीए	सामान्य जाणे, पिण विशेष न जाणे से 'अनाकार दर्शन' कहीए	समदृष्टिका तो ज्ञान कहीए अने मिथ्यात्वीके ते 'विभगज्ञान' कहीए
स्वामी-समदृष्टि मिथ्यादृष्टि	समदृष्टि मिथ्यादृष्टि	मिथ्यादृष्टि

भवनपतिसें लेकर नव ग्रैवेयक पर्यंत ते सर्व देवताना अवधिज्ञान अने विभग ज्ञान क्षेत्र, काल आश्री दोनो सरीखा जानना. द्रव्य, पर्याय आश्री विशेष कुछ है. चोखे ज्ञान विना विशेष न जाणे ते समदृष्टिके चोखा है अने 'अनुत्तर' विमानवासी देवताने अवधि ज्ञान होय है पिण विभग नही. ते पांच 'अनुत्तर' विमानवासी देवताके जे अवधिज्ञान हुइ ते क्षेत्र, काल आश्री असख्य विषय करके असख्याता जानना, अने द्रव्य, पर्याय विषय आश्री ते ज्ञान अनंता कहीए ए ज्ञान, दर्शन, विभगरूप तीन द्वार वखाणेया. इति द्वारम् ९।१०।११.

अथ १२ मा 'देश' द्वार लिख्यते—नारकी, देवता अने तीर्थंकर[पति]नो ज्ञानथी अबाह्य हुइ एहने शरीरसु सबध प्रदीपनी परे सर्व दिशे प्रकाशक इनका अवधिज्ञान जानना. एतले नारकी, देवता, तीर्थंकर ए अवधि करी सर्व दिशे देखे, तथा शेष तिर्यंच, मनुष्य देशथी बी देखे अने सर्वथी बी देखे तथा नारकी, देव, तीर्थंकर एहने अवधिज्ञान निश्चय होय, ओरोंके भजना जाननी. ए बारमा देशद्वार

अथ क्षेत्रने मेले अवधिज्ञानका सख्यात असख्यातपणा कथ्यते—जे अवधि जीवना शरीरसु सबद्ध हुइ दीवानी कातिनी परे अलग न हुइ ते 'सबध अवधिज्ञान' कहीए, अने जे

१ कहेवाय छे।

अवधि शरीरथी अलग होय ते अवधि 'असनध' कहीए. ते असंबध अवधिका धणी दूरसे तो देखे पिण नेवजीकसे न देखे. ते जीव अने अवधिज्ञानका क्षेत्रके विचाले अतर पडे इति भावः.

हिवे जे सबद्ध अवधिज्ञान होय तेह नउ क्षेत्र आश्री सख्याता अने असख्याता योजन प्रमाण विषय है तिम जे असबद्ध अवधिज्ञान होवे तिसका क्षेत्र आश्री इम हीज विषय जाननी, परतु ते धणीके अने अवधिके क्षेत्रके विचाले अंतर पडे ते (५६) यंत्रसे—

असबद्ध अवधि ४	सख्यात योजन	सख्यात योजन	असख्य योजन	असख्य योजन
अतर ४	सख्यात योजन अतर	असख्य योजन अतर	सख्येय ,,	,, ,,

एह असंनध अवधिके ४ भग है अने जे सनद्ध अवधि हुइ ते किवनाक तो लोकसबधे लोकान्ते जाय लागे पिण अलोकमे नही गया अने जो अलोक सनंध हुइ तो अलोकमे लोक सरीखा खड असख्याता व्यापे. इति १३ मा क्षेत्रद्वार सपूर्णम्.

हिवै गतिद्वार १४ मा. ते गति आदिक वीस द्वारे यथासभवे मतिज्ञानवत् विचारणा इति. हिवै अवधि लब्धिसे अवधिज्ञान होय है. प्रसगात् शेष लब्धिका स्वरूप लिख्यते— १ आमोसहि—जिनके शरीरके स्पर्श सर्व रोग जाये. २ विप्पोसहि—विट्प्रस्रवण अर्थात् वडीनीति लैघुनीति ही औषधि है ३ खेलोसहि—श्लेष्म जिनका औषधि है. ४ जल्लोसहि—जिनकी मैयल ही औषधि है ५ सव्वोसहि—शरीरका अवयव सर्व औषधिरूप है. ६ सभिन्नसोउ—एक इन्द्रिये करी सर्व इन्द्रियानी विषये जाणे. ७ ओहि—सर्व रूपी द्रव्य जिस करी जाणे ते अवधि. ८ उज्जुमइ—अढाइ अगुल ऊणा मनुष्यक्षेत्रमे मनके भाव जाणे. ९ विउलमइ—सपूर्ण मनुष्यक्षेत्रमे मनके भाव जाणे. १० चारण—विद्यासे विद्याचारण, तपसे जघाचारण आकाशमे उडे. ११ आसीविस—शाप देणे की शक्ति ते 'आशीविष' लब्धि. १२ केवली—केवलज्ञान, केवललब्धि. १३ गणहर—गणधरपणा पामे ते गणधरलब्धि. १४ पुव्वधर—पूर्वाणां ज्ञान होना ते 'पूर्व' लब्धि. १५ अरिहत—त्रैलोक्यना पूजनीक ते 'तीर्थंकर' लब्धि. १६ चक्कवट्टी—चक्रवर्तिपणा पामे ते 'चक्रवर्ति' लब्धि. १७ बलदेव—बलदेवपणा पावणा ते 'बलदेव' लब्धि. १८ वासुदेव—वासुदेवपणा पावणा ते 'वासुदेव' लब्धि. १९ खीर-महु-सप्पिरासव—क्षीर-चक्रवर्तीना भोजन, महु-मिश्री दूध, सर्पि-घृत ऐसा मीठा वचन २० कोठबुद्धि—जैसे कोठेमे बीज विणसे नही तैसे सूत्रार्थ विणसे नही. २१ पयाणुसारी—एक पदके पठनेसे अनेक पद आवे. २२ बीयबुद्धि—एक पदके पढनेसे अनेक तरे के अर्थ जाणे. २३ तेयग—जिणे तपविशेषे करी तेजोलेश्या उपजे. २४ आहारग—चवदेपूर्वधर आहारक शरीर करे (जब) शका पडे. २५ सीयलेसाय—शीतलेश्या उपजे तपविशेषे करी. २६ वेयव्वदेह—घणे रूप करवानी शक्ति २७ अक्खीणमहाणसी—आहार जां लगे आप न जीमे तां लगे ओर जीमे तो खूटे नही. २८ पुलाय—चक्रवर्ती आदिकनी सैन्या चूर्ण करनेकी शक्ति.

१ पाद्येमी। २ झुरीष। ३ मूत्र। ४ मेल। ५ पूर्वोंनु।

अर्हत, चक्री, वासुदेव, बलदेव, संभिन्नश्रोत, चारण, पूर्वधर, गणधर, पुलाक, आहारक (९) दश लब्धियां भव्यस्त्रीने नही होती है. शेप १८ हुवै तथा ए अने केवली, ऋजुमति, विपुलमति एव तेरह लब्धियां अभव्य पुरुपने न हुवै, शेप पदर हुवै. तथा अभव्य स्त्रीयाने पिण १३ ए अने मधुक्षीरास्रव लब्धि एव चौद नही हुवै, शेप १४ हुवै. ए पदरे द्वारे कही अवधिज्ञान वखाण्या

मनःपर्यवज्ञानको दो भेद—ऋजुमति १ विपुलमति २. केवलज्ञानका एक भेद है. एह पांच ज्ञानका स्वरूप लेशमात्र लिख्या, विशेष नदीमे.

(५७) अथ 'उपमा' प्रमाण लिख्यते—असख्याताका मापे आठ.

<table>
<tr><td>१</td><td>पल्योपम
स्व
रू
प</td><td>कूवा योजन १ लांबा चौडा तिसकी परिधि ३ योजन साधिक इद योजन प्रमाणागुलसे है तिसकू वादर पृथ्वीके शरीर तुल्य रोमखडसे भरिये ठास कर जिसे (अग्निसे) जले नही, जलसे वहे नही, चक्रीसैन्याके उपर चलनेसे दवे नही; तिसमेसु सौ सौ वर्ष गये एकेक खड काढीये जब [1]रीता होवे सर्व कूवा तद एक पल्योपम कहीये</td></tr>
<tr><td>२</td><td>सा
ग
र</td><td>दस कोडाकोडी कूवे खाली होइ तद एक सागरोपम होय</td></tr>
<tr><td>३</td><td>सूची
अगुल</td><td>पल्योपमके छेद जितने होइ उतने ठिकाणे पल्योपमके समय लिखके आपसमे गुणाकार कीजे जो छेहदे आवे सो सूची अगुलके प्रदेशाकी गिणती तिसके छेद ६५५३६।१६ छेद</td></tr>
<tr><td>४</td><td>प्रतर
अगुल</td><td>पल्य | समय १६ | छेद ४ | १६ | १६ | १६ | १६ | सूची अगुल ६५५३६ प्रदेश
सूची अगुलका वर्ग सो प्रतर अगुल ४२९४९६७२९६, छेद ३२</td></tr>
<tr><td>५</td><td>घन
अगुल</td><td>प्रतर अगुल ४२९४९६७२९६ कू सूची अगुल ६५५३६ थी गुण्या घन अगुल होय २८१४७४९७६७१०६५६, तिसके छेद ४८</td></tr>
<tr><td>६</td><td>लोकाकाश
श्रेणि</td><td>पल्यके छेद जितने होइ तिनका असख्यमा भाग लीजे तितने ठिकाने पर घन अगुलके प्रदेश रखकर आपसमे गुणाकार कीजे जो छेहदे आवे सो लोकाकाशके श्रेणी एकके प्रदेश होइ ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६, छेद ९६
पल्य | छेद | असख्य भाग | घन अगुल | छेद | छेद | लोकाकाश-श्रेणि
सम१६ | ४ | २ | २८१४७९७६७१०६५६ | ४८ | ४८ | छेद ९६</td></tr>
<tr><td>७</td><td>लोक
प्रतर</td><td>लोकश्रेणिका वर्ग कीजे सो लोकप्रतर तिसके छेद १९२</td></tr>
<tr><td>८</td><td>लोक
घन</td><td>१९२ छेद प्रतरके है तिनकू श्रेणि छेद ९६ सु गुणाकार कर्या 'लोकका घन होय तिसके छेद २८८ अक सर्व असत् कल्पना जानने</td></tr>
</table>

[1] खाली।

अथ प्रकारांतरसु श्रेणि करनेकी आम्नाय—जघन्य प्रतर असंख्यातकूं दुगणा करे, उस पर पल्योपमकी वर्गशलाकाकूं भाग दीजे. जो हाथ आवे उसकूं घनांगुलकी वर्गशलाकामे मेल दीनें सो लोकाकाशकी श्रेणिकी वर्गशलाका हूई. इसकी असत् कल्पनाका (५८) यत्रसे स्वरूप जानना—

जघन्य प्रतर असंख्य	दूणा	पल्यकी वर्गशलाका	भाग देतें हाथ लगे	घनांगुल वर्गशलाका	मेला कीये	छट्ठा वर्ग
१	२	२	१	५	६	७९२२८१६५१४२६४३३७-५९३५४३९५०३३६

(५९) श्रीअनुयोगद्वार(सू० १४६)से संख्य असंख्य अनंत स्वरूप

संख्यात	०	जघन्य	मध्यम	उत्कृष्ट
अ	परित्त	,,	,,	,,
सं ख्या	युक्त	,,	,,	,,
त	असंख्य	,,	,,	,,
अ	परित्त	,,	,,	,,
नं	युक्त	,,	,,	,,
त	अनंत	,,	,,	,,

एकका वर्ग भी एक तथा घन भी एक गुणाकार एके से जिस राशिकूं कीजीये सो ज्यों की त्यों रहे तथा एककूं भाग जिस राशिकूं दीजीये सो भी ज्यों की त्यों रहे. तिस कारणसे एका गिणतीमे नहीं. दूयेसे गिणती. सो दूया 'जघन्य संख्याता' कहीये. इसथी आगे ३।४।५ यावत् उत्कृष्ट संख्यातेमेसु एक ऊणा होइ वहा ताइ सर्व 'मध्यम संख्याता' जानना. अथ उत्कृष्ट संख्याता लिखीये हे [1]विस्तरात्—

सरसो १; यवमे ८, अंगुलमे ६४, हाथमे १५३६, दंडमे ६१४४, कोशमे १२२८८००००, सूची-योजनमे ४९१५२०००, प्रतर-योजनमे २४१५९१९१०४००००००, घन-योजनमे ११८७४७२५५७९९८०८००००००००००.

विष्कंभ एक लाख योजन, गंभीरपणा १०००, परिधि ३१६२२७ योजन ऊपरी वेदका ८ योजन. शिखा २८७४८ योजनकी

१ अनवस्थित पाला. २ शलाका पाला. ३ प्रतिशलाका पाला. ४ महाशलाका पाला.

[1] विस्तारथी।

अथ पाला १ तिसके योजन योजन प्रमाण खड करणेकी आम्नाय लिख्यते—इहा पाला एक योजन, लक्ष विष्कम जबूद्वीप समान, जिसका भूमिमे अवगाढपणा १००० योजन तिस पालेकी तीन काड तीनमे प्रथम कांड १००० योजनके अवगाढपणेका, दूजा कांड ८ योजनको जाड-पणेका, तीजा काड २८७४८ योजनकी सिखा, तिसका मूलमे विष्कम तथा परिधि जबूद्वीप समान, उपरि जाके सिखा बधे तिहा सरसोका दाणा १ उसके उपरि दाणा दूजा नव हरे (रहे?).

(६०) इन तीन काडका घन खड यन्त्रम्—

१ सख्या	२ काड	विष्कभ	अवगाढ	घनयोजन प्रमाण खड
१	प्रथम कांड भूमिमे	एक लाख योजन मूल	१००० योजन	७२०५६९४१५० योजन १॥। कोस ६॥ हाथ १००० गुण्या कर्या ७२०५६९४१५०४३९ योजन १ कोस १६२५ धनुष घनयोजनके खड हूये
२	दूजा काड भूमिसे उपरि वेदका ताइ	,,	८ योजन	७९०५६९४१५० योजन १॥। कोस ६२॥ हाथ ८ गुणा कर्या ६३२४५५३२०३ योजन २ कोस १२५ धनुष इतने घनयोजन प्रमाण खड हूये
३	काड तीजा वेदका से उपरि सिखा ताइ	,,	२८७४८ योजन	२७७७७११६१६ योजन परिधिका छट्ठा घाटा तिसका वर्ग होइ इसकू सिखासू २८७४८ गुणा क्या घनयोजन प्रमाण खड ७९८५३६५३५३६७६८

अथ इन तीनो काडाके घन योजन मिलाइये तदा अक चनदे होय ८७८२२५९३-२४०४१० ए समस्त पालेके घनयोजन हूये. एक घनयोजनमे ११८७४७२५५७९९८०८-०००,०००, ००० सरसों तिस थकी गुणाकार कीजे तब अक अडतीस आवे. तितने १ पालेमे सरसु आनने अक अंग्रे—१०४२८६९११९४४५२१४५५२२८९७५८४१२८ ००००० ००००० अंक.

अनवस्थित पालेकू असत्कल्पनाथी कोइ उठावे दाणा १ द्वीपमे, दाणा १ समुद्रमे इस तरे जबूद्वीप आदिकमे प्रक्षेपे करी ठाली होवे तदा एक दाणा अनवस्थितका तो नही ओर दाणा १ शलाका पालामे प्रक्षेपिये अब जेहा ताइ दाणे द्वीप समुद्रामे गये है तिण सर्व ही द्वीप समुद्रा प्रमाण पाला कल्पीये तिणथी आगेके द्वीप समुद्रामे एकेक दाणा प्रक्षेपिये जदा रीता होय तदा १ दाणा शलाकामे फेर प्रक्षेपिये. ऐसेही अनवस्थित पालेके भरणे अने रिक्त करनेसे एकेक दाणे करी शलाका भरीये. अने जिहां छेहडला दाणा गया है तितने द्वीप समुद्रा प्रमाण अनवस्थित पाला भरीये, भरके उठाइये नही, किन्तु शलाका पाला उठाइये उठा करके ते अनवस्थित पल्याक ते क्षेत्रथी आगे एक एक दाणा अनुक्रमे द्वीप समुद्रने विषे प्रक्षेपीये जदा तिसका अत आवे तदा प्रतिशलाका पालेमे प्रथम प्रतिशलाका प्रक्षेपी पछै

१ ज्यां सुधी । २ खाली ।

वली अनवस्थित पाला उठाके जिस जगे शलाका पाला पूरा हूया था ते क्षेत्रथी आगे द्वीप समुद्रामे एकेक सरसों अनुक्रमे प्रक्षेपीये पछे वली शलाका पालामे एक दाणा प्रक्षेपीये. इसी तरे वली अनवस्थित पाला भरणे अने रीता करणेसे शलाका भरीये. तदा अनवस्थित अने शलाका ए दोनो भर्या हुता, पछे शलाका पाला उठाइने पूर्वोक्त प्रकारे आगले द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपीये. पछे वली एक दाणा प्रतिशलाका पालामे प्रक्षेपीये. एव अनवस्थित पालेके भरणे रीते करणेसे शलाका पाला भरीये अने शलाकाके भरणे रीते करणेसे प्रतिशलाका भरीये. जदा प्रतिशलाका १ शलाका २ अनवस्थित ३ एव तीनो पाले भरे होइ तदा प्रतिशलाका पाला उठाइने तिमज आगले द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपीये. जिहा पूरा होय तदा १ दाणा महाशलाका पालेमे प्रक्षेपीये. फेर शलाका पाला उठाइने तिमज आगे सचारीने प्रतिशलाका पल्यमे वली एक सरसव प्रक्षेपीये पछे अनवस्थित उठाइने तिम ज शलाका पालानी समाप्तिना क्षेत्र आगे द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपी तदा शलाका पल्यमे वली एक दाणा प्रक्षेपीये. एव अनवस्थित पाला उठावणे अने प्रक्षेपणे करी शलाका पल्य भरणा तथा शलाका पल्यने उपाडवे प्रक्षेपवे करी प्रतिशलाका पाला भरणा तथा प्रतिशलाका पालाने उपाडवे प्रक्षेपवे करी महाशलाका पल्य भरणा. इम करता जदा चारो ही पल्य भर्या हुइ और अनवस्थितादि चारो पालोके जितने दाणे द्वीप समुद्रांमे प्रक्षेप करे है वे भी सर्व जब चारो पालोमे मेलिए तदा उत्कृष्ट सख्या-तेसे एक सरसव अधिक होय है तिस एक सरसों सहित कीया 'जघन्य परित्त असख्याता' होय. इस जघन्य परित्त असख्यक अन्योन्य अभ्यास कीजे तिसमेसु दोय दोय निकासिये तहा ताइ 'मध्यम परित्त असख्याते' होय. तिसमे एक मेलीये तब 'उत्कृष्ट परित्त असख्याता' होय. तिसमे एक और मिले तब 'जघन्य युक्त असख्य' होय.

अन्योन्य अभ्यासकी आम्नाय—यथा ५ का अन्योन्य अभ्यास करणा है. प्रथम ५ कू विषे २ दीजे स्थापना–११११९. एकेकके उपरि वै ५।५ पांच पांच दीजे.

स्थापना— ५५५५५ / ११११९ अब उपरिकी पक्तिके अकाकू आपसमे गुणाकार कीजे.

स्थापना—	५	५	५	५	५
	१	१	१	१	१
	५	२५	१२५	६२५	३१२५

छेहा गुणाकार करते जे राशि आवे सो उत्पन्न राशि जाननी. इस तरे अन्योन्य अभ्यासकी रीति जाननी

जघन्य युक्त असख्य प्रमाण एक आवलिके समय है. तिसका अन्योन्य अभ्यास करे तो अने दोय निकासिये तो तहा ताइ 'मध्यम युक्त असख्याते' कहीये.

तिसमे एक मेले 'उत्कृष्ट युक्त असख्याते' होय. उत्कृष्ट युक्त असख्यातेमे एक मेलीये तब 'जघन्य असख्यात असख्याते' होय. इसका अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिणमेसु दोय निकासिये वहा ताइ 'मध्यम असख्यात असख्याते' होय उसमे एक मेले तब 'उत्कृष्ट असख्यात असख्याते' होते है. मत्यतरे च—

अनेरा आचार्य वली 'उत्कृष्ट असख्यात असख्यातानो स्वरूप इम कहे है यथा जघन्य असख्यात असख्यातानी राशिनो वर्ग करीये, पछे ते वर्गित राशिना वली वर्ग करीये, पछे वली वर्गराशिना वर्ग करीये. इम तीन वार करके तिसमे दस बोल असख्याताके मेलीये. ते कौनसे ? (१) लोकाकाशना प्रदेश, (२) धर्मास्तिकायना प्रदेश, (३) अधर्मास्तिकायना प्रदेश, (४) एक जीवना प्रदेश, (५) सूक्ष्म बादर अनतकाय वनस्पतिना औदारिक शरीर, (६) अनतकायना शरीर वर्जीने शेष पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, प्रत्येक वनस्पतिकाय अने त्रसकाय इन सबके शरीर, (७) स्थितिबधना कारणभूत अध्यवसाय ते पिण असख्याता, (८) अनुभागबधके अध्यवसाय, (९) योगच्छेद प्रतिभाग, (१०) उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप कालना समय. एव १० बोल पूर्वोक्त त्रिवर्गित राशिमे प्रक्षेपके फेर सर्व राशि तीन वार वर्ग करीये, जे राशि हूये तिसमेसु एक काढ्या 'उत्कृष्ट असख्यात असख्याता' होय

(६१) मध्यम असख्यात असख्यातमे जे पदार्थ है तिनका यत्रम्—

द्रव्यथी १	बादर पर्याप्त तेजस्कायसे लगाय के सर्व निगोदके शरीरपर्यंत ए सर्व मध्यम असख्यात असख्याते
क्षेत्रथी २	सूक्ष्म अपर्याप्त जीवके तीसरे समेकी अवगाहना जितने क्षेत्रमे होवे तहासे लगाय परम अवधिज्ञानका क्षेत्र ए मध्यम असख्यात असख्याते जानने इहा प्रदेश आश्री जानना
कालथी ३	सूक्ष्म उद्धार पल्योपमके समयथी लगाय ४ स्थावर वनस्पति विनाकी कायस्थितिके समय ए सर्व मध्यम असख्य असख्य जानने
भावथी ४	सूक्ष्म निगोदके जीवके योगस्थानसू लगाय के सज्ञी पर्याप्तके अनुभाग बधके अध्यवसायके स्थानक ए सर्व मध्यम असख्यात असख्याते इति नव बोल असख्याताके जानने

उत्कृष्ट असख्यात असख्यातमे एक मेलीये तब 'जघन्य परित्त अनता' होय तिसका पूर्ववत् अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिसमेसु दोय निकासिये वहा ताइ 'मध्यम अपरित्त अनता' होय. तिसमे एक मेलीये तब 'उत्कृष्ट परित्त अनता' होय उत्कृष्ट परित्त अनतेमे एक मेलीये तब 'जघन्य युक्त अनता' होय अभव्य जीव इतने है तिसका पूर्ववत् अन्योन्य अभ्यास कीजे तिसमेसु दोय निकासिये वहा ताइ 'मध्यम युक्त अनता' होय तिसमे एक मेलिये तब 'उत्कृष्ट युक्त अनता' होय तिसमे एक मेले 'जघन्य अनत अनत' होय इसथी आगे सर्व 'मध्यम अनत अनता' जानना उत्कृष्ट अनत अनता नही

अनेरा आचार्य वली इम बखाणे है—जघन्य अनत अनता पूर्वली परे तीन वार

१ मतांतर प्रमाणे तो। २ समयनी।

वर्ग करी पीछे ए छ बोल अनंता प्रक्षेपीये तद्यथा—(१) सर्व सिद्ध, (२) सर्व सूक्ष्म बादर निगोदना जीव, (३) सर्व वनस्पतिना जीव, (४) तीनो कालके समय, (५) सर्व पुद्गल, (६) सर्व लोकालोकाकाश प्रदेश एव बोल छ प्रक्षेपी सर्व राशिकूं त्रिवर्ग करीये जो राशि हुई वो पिण उत्कृष्ट अनंत अनंता न हुवे तिवारे पछी केवलज्ञान दर्शनना पर्याय प्रक्षेपीये इम कर्या उत्कृष्ट अनंत अनंता नीपजे. इस उपरांत और वस्तु नही एणी परे एकेक आचार्यना मतने विषे कह्या. अने श्रीसूत्रना अभिप्रायथी तो उत्कृष्ट अनंत अनंता नही. तत्त्व केवली जाणे. इति अनुयोगद्वार(सू. १४६)वृत्तिवाक्यप्रमाणात् अत्र लिखिता अस्माभिः ।

(६२) मध्यम अनंत अनंतेमे जो जो पदार्थ है तिनका यन्त्रम्

द्रव्यथी १	सम्यक्त्वसे प्रतिपातिसे लगायके सर्व जीव तथा दोप्रदेशी स्कंधसे लेकर सर्व पुद्गल मध्यम अनंत अनंते जानने
क्षेत्रथी २	आहारक शरीरके निकसे थके जितने स्कंध होय तिनकूं 'मुकेल्या' कहीये सो अनंत स्कंध है तिणोने जितना क्षेत्र स्पर्शा तिससुं लगायके सर्व आकाशके प्रदेश ए सर्व मध्यम अनंत अनंते जानने
कालथी ३	अध पुद्गलपरावर्तथी लगायके तीनो कालके समय ए सर्व मध्यम अनंत अनंते जानने
भावथी ४	सूक्ष्म अपर्याप्त निगोद जीवके जघन्य अज्ञानके पर्याय तिणसे लगायके केवलज्ञानके पर्याय ए सर्व मध्यम अनंत अनंते जानने

अथ जंबूद्वीपके उपरि सरसूं शिखा चढे तिसकी आम्नाय लिख्यते गोमट्ट(म्मट)सारात्[२]

दोहा—धान तीन है पुंजको, बादरनीका जोइ ।
नौ ९ दस १० ग्यारह ११ भाग, इह जो परिधिका होइ ॥ १ ॥
वेधक कहीये पुंजको, तासो करि गुणकार ।
परिधि छठे भाग कृति, धन फल कहाँ निहार ॥ २ ॥

(६३) स्वरूपयन्त्र

सूक्ष्म धान गेहु आदि	बादर धान चणा आदि	तीक्ष्ण धान सरसो आदि
वेध १	वेध १	वेध १
परिधि ९	परिधि १०	
२ ३ ए धन फल ४	२ ७ ए धनफल ९	३ १३ ए धनफल ३६

१ अनुयोगद्वारनी वृत्तिना वाक्यना आधारे अहीं अमे लख्यं छे । २ गोम्मटसार नामना दिगंबरीय ग्रंथमांथी ।

(६४) वर्गके छेदाका स्वरूप निरूपक यंत्रम्—

वर्ग	प्रथम	दूजा	तीजा
अंक	४	१६	२५६
छेद	२	४	८
स्थापना	स्थापना	स्थापना	स्थापना
०	२,१	८,४,२	१२८,६४,३२,१६,८

अथ लोकोत्तर गिणती लिख्यते—

चौपाई—लोकोत्तर गिणती सिद्धांत, जासौं संख्य असंख्य अनंत ।
ताके भेद दोइ मन मानि, छेद गिणतओ वरग प्रमानि ॥ १ ॥
छेद राशिका आधा आधा, जब लग अंतमें एक ही लाधा ।
राशिकु आपही सौं गुणाकार, 'वरग' कहे इह बुद्धिविचार ॥ २ ॥

दोहा—धारा तीन ही जानीये, वरगधार घनधार ।
होइ घनघनाधार इम, पंडित कहे विचार ॥ १ ॥

(६५) अथ इन तीनो धारका जो प्रयोजन है सो यंत्र गोमट्ट(म्मट)सारा

वर्गशलाका १	वर्गधारा ४	छेदशला २
२	१६	४
३	२५६	८
४	६५५३६	१६
५	४२९४९६७२९६	३२
६	१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६	६४
७	३९ अंक आवै	१२८
८	७८ ,, ,,	२५६
संख्याते	संख्याते वर्ग जाइये तब जघन्य परित्त असंख्याते आवै	संख्या
,,	संख्याते वर्ग जाइये तब जघन्य युक्त असंख्याते आवै	,,
असंख्याते	असंख्याते वर्ग जाइये तब जघन्य असंख्य असंख्याते आवै	असंख्या
,,	असंख्याते वर्ग जाइये तब सूक्ष्म अद्धापल्योपमके समय होय	,,
,,	असंख्य वर्ग जाइये तब सूची अंगुलके प्रदेश	,,
,,	१ विरीया वर्ग कीजे तब प्रतर अंगुलके प्रदेश	,,
,,	असंख्य वर्ग जाइये तब जघन्य परित्त अनंत होय	,,

१ बार ।

असंख्याते	असंख्य वर्ग जाइये तव जघन्य युक्त अनंत आवे	असंख्यात
"	अनंत वर्ग जाइये तव जघन्य अनंत अनंते आवे	अनंत
अनंत	अनंत वर्ग जाइये तब जीवास्तिकाय	"
"	अनंते वर्ग जाइये तव पुद्गलास्तिकाय	"
"	अनंते वर्ग जाइये तव अद्धा-काल	"
"	अनंते वर्ग जाइये तव सर्व आकाश श्रेणिके प्रदेश	"
"	१ विरिया वर्ग कीजे तव सर्व आकाश प्रतरके प्रदेश	"
"	अनंते वर्ग जाइये तव धर्मास्तिकायके पर्याय	"
"	अनंत वर्ग जाइये तव १ जीवके पर्याय	"
"	अनंते वर्ग जाइये तव जघन्य अज्ञानके पर्याय	"
"	अनंत वर्ग जाइये तव क्षायिक सम्यक्त्वके पर्याय	"
"	वर्ग अनंते जाइये तव केवलज्ञान(के) पर्याय	"

वर्गशलाका	घनधारा	छेदशलाका
१	८	३
२	६४	६
३	४०९६	१२
४	१६७७७२१६	२४
५	२८१४७४९७६७१०६५६	४८
६	७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ गर्भज मनुष्य	९६
७	५८ अंक	१९२
८	११६ अंक	३८४
असंख्य	असंख्य वर्ग जाइये तव घनांगुलके प्रदेश आवे	असंख्य
"	असंख्य वर्ग जाइये तव लोकाकाश श्रेणिके प्रदेश आवे	"
"	१ विरिया वर्ग कीजे तव लोकाकाश प्रतर प्रदेश आवे	"

वर्गशलाका	घनाघन धारा	छेदशलाका
१	५१२	९
२	२६२१४४	१८
३	६८७१९४७६१३६	३६
४	२२ अंक	७२
५	४१ "	१४४
६	८२ "	२८८
७	१६४ "	५७६

८	२२७	१०५२
असख्य	असख्य वर्ग जाइये तव लोकाकाश प्रदेश आवे	असख्य
"	" " " " तेउकायके सर्व जीव राशि	"
"	" " " " तेउकायकी कायस्थिति समय	"
"	१ विरिया वर्ग कीने तब परम अवधिज्ञानका क्षेत्र आवे	"
"	असख्य वग जाइये तब स्थितिबधके अध्यवसाय	"
"	" " " " अनुभागबधके "	"
"	" " " " निगोदके शरीर ओदारिक	"
"	" " " " निगोदकी कायस्थिति	"

दोहा—च्यारि ४ आठ ८ ओ पांचसे, बारह ५१२ आदि कहत ।
धारा तीनो जाणिये, आगे वर्ग अनत ॥ १ ॥

चौपइ—कृत धारामे वर्ग विचार, ताके घन लइये घनधार ।
घनाघन धारामे तस वृद, इम भाषे सबही जिनचद ॥ १ ॥
दोइ २ तीन ३ अरु नौ ९ है छेद, आदि तिहु धारा इम भेद ।
आगे दुगुण दुगुण सब ठाम, वरग कृति घन वृन्दो नाम ॥ २ ॥
दूने कृतिमे तिगुने घणा, नौ गुण छेद घनाघन तणा ।
इक इक धारा तीन प्रकार, गुण १ पुनि भाग २ अयति ३ निहार ॥ ३ ॥
छेद जोग है इम गुणकार, तम विजोग है भागाहार ।
निजसम थल थापीजे रास, अन्नो अन्नताको अभ्यास ॥ ४ ॥

दोहा—पहिले विरलन देय पुनि, तासौ है उत्पन्न ।
विरलन जाहि विषे(खे)रीये, देय उपरजो दिन्न ॥

चौपइ—विरलन राशि करो गुणाकार, देय छेद सौ बुद्धिविचार ।
जो आवे सो छेद प्रमाण, उत्पन्न राशि इह विद्यमान ॥ १ ॥

विरलन राशि स्थापना—४ । १ १ १ १, देय राशि स्थापना—४ ४ ४ ४ देय राशिके
१ १ १ १

छेद २ सें देय राशिकू गुण्या लब्ध ८ छेद, इतने उत्पन्न राशिके २५६ छेद होय.

दोहा—अर्ध अर्ध जो छेदको, कीजे सो इति रास ।
अपने छेद समान ही, वर्ग होय अभ्यास ॥ १ ॥

राशि १६, छेद ४, चौथे ठिकाणे उत्पन्न राशि १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६.

(६६) अथ इन्द्रियस्वरूपयन्त्रम् प्रज्ञापना १५ मे पदे

	निर्वर्तन इन्द्रिय	अभ्यन्तर इन्द्रिय १	५ इन्द्रियाका संस्थान कदंब पुष्प आदिका कहा है अंगुलके असंख्य भाग
द्रव्य इन्द्रिय	आकार	बाह्य इन्द्रिय २	८ इन्द्रिय कर्ण २, नेत्र २, नासिका २, जिह्वा १, स्पर्श १, इनका संस्थान नाना प्रकारे
	उपकरण	बाह्य इन्द्रिय १	खड्ग धारा समान स्वच्छतर पुद्गल समूह रूप जैसे खड्गधाराके सार पुद्गल काम करे है तैसे इन्द्रियाके सारता तिनके व्याघातसे अंधा, बहिरा आदि होता है
		अभ्यन्तर २	अभ्यन्तर उपकरण शक्तिरूप जानने
भाव इन्द्रिय	लब्धि १	श्रोत्रेन्द्रिय आदि विषय सर्व आत्माके प्रदेशामे तदावरणीय कर्मका क्षयोपशम	
	उपयोग २	स्व स्व विषयमे लब्धिरूप इन्द्रियाके अनुसारे आत्माका व्यापार ते 'उपयोग इन्द्रिय' कहीये इति नन्दीवृत्तौ	

(६७) श्रीप्रज्ञापना पद १५ से इन्द्रिययन्त्रम्

इन्द्रिय		जघन्य आदि	श्रोत्रेन्द्रिय	चक्षु	घ्राण	रसनेन्द्रिय	स्पर्शन
संस्थान		०	कदंब पुष्पका	मसूर चन्द्र	अतिमुक्त	क्षुर (खु) रप्प	नाना संस्थान
जाडपणा		०	अंगुल असंख्य भाग	→ ए	क	म्	→
विस्तार		०	,,	एवम्	एवम्	पृथक्त्व अंगुल	शरीरप्रमाण
स्कंध		०	अनंत प्रदेश	→ ए	व	म्	→
अवगाहन		असंख्य प्रदेश	→	ए	व	म्	→
अल्पबहुत्वम्	अवगाहना		२ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्य	४ असंख्य	५ संख्यसरूप दीखामे
	प्रदेश		७ संख्येय	६ अनंत	८ संख्येय	९ असंख्येय	१० संख्येय
	कर्कश गुरु		२ अनंत	१ स्तोक	३ अनंत	४ अनंत	५ अनंत
	मृदु लघु		९ अनंत गुणे	१० अनंत गुणे	८ अनंत गुणे	७ अनंत गुणे	६ अनंत गुणे
स्पृष्ट		०	स्पृष्ट	अस्पृष्ट	स्पृष्ट	स्पृष्ट	स्पृष्ट
प्रविष्ट		०	प्रविष्ट	अप्रविष्ट	प्रविष्ट	प्रविष्ट	प्रविष्ट
विषये	जघन्य		अंगुल असंख्य	→ ए	व	म्	→
	उत्कृष्ट		१२ योजन	लाख योजन झझेरी	नव योजन	नव योजन	नव योजन

१ नन्दीसूत्रनी वृत्तिमां ।

(६८) अथ इन्द्रियाकी उत्कृष्ट विषय

श्रोत्रेंद्रिय	१२ योजन	८०० धनुष्य				
चक्षु	लक्ष ,,	५९०८ ,,	२९५४ धनुष्य			
घ्राण	९ ,,	४०० ,,	२०० ,,	१०० धनुष्य		
रसना	९ ,,	५१२	२५६ ,,	१२८ ,,	६४ ध	
स्पर्शन	९ ,,	६४००	३२०० ,,	१६०० ,,	८०० ध	४०० ध
०	श्रोत्रेंद्रिय सज्ञी	पचेंद्रिय असज्ञी	चौरेंद्री	तीनेंद्री	बेइंद्री	एकेंद्री

(६९) अथ श्वासोच्छ्वासस्वरूपयंत्रम्

आणमति	ध्यानमे जो ऊचा सास (श्वास) लेवे सो 'आणमति' कहीये
पाणमति	ध्यानमे जो नीचा सास लेवे सो 'पाणमति' कहीये
उसास	ध्यान विना जो ऊचा सास लेवे सो 'उसास' (उच्छ्वास)
निसास	ध्यान विना जो नीचा सास लेवे सो 'नि श्वास' कहीये

(७०) (द्रव्यप्राणादि)

भावप्राण ४	द्रव्यप्राण १०	भावप्राण ४	द्रव्यप्राण १०
ज्ञानप्राण १	ज्ञानप्राणसे ५ इद्रिय प्राण उत्पत्ति ५	सुखप्राण ३	सुखप्राणसे श्वासोच्छ्वास प्राण १
वीर्यप्राण २	वीयप्राणसे मनवल, वचन, काया	जीवितव्यप्राण ४ सर्व ४ हुये	जीवितव्यप्राणसे आयु प्राण; एव १०

(७१) *आठ आत्मा भगवती श० १२, उ० १० (सू० ४६७)

	द्रव्यात्मा	कषायात्मा	योगात्मा	उपयोगात्मा	ज्ञानात्मा	दर्शनात्मा	चारित्रात्मा	वीर्यात्मा
द्रव्यात्मा १	०	नियमा	नि	नि	नि	नि	नि	नि
कषायात्मा २	भजना	०	भ	भ	भ	भ	भ	भ
योगात्मा ३	भ	नि	०	भ	भ	भ	भ	भ
उपयोगात्मा ४	नि	नि	नि	०	नि	नि	नि	नि
ज्ञानात्मा ५	भ	भ	भ	भ	०	भ	नि	भ
दर्शनात्मा ६	नि	नि	नि	नि	नि	०	नि	नि
चारित्रात्मा ७	भ	भ	भ	भ	भ	भ	०	भ
वीर्यात्मा ८	भ	नि	नि	भ	भ	भ	नि	०

*अल्पबहुत्व—"सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणतगुणाओ, कसायाओ अणत०,

'(७२) भगवती श० १२, उ० ९ (सू०'४६१–४६६), पच देव

पच देव नाम	गुण	आगति नर कथी	तिर्यंच गति	मनुष्य गति	देवगति	स्थिति	रूप विकुर्वे	काल करी कहा जावे	सतिष्ठन काय स्थिति	अतर	अल्प बहुत्व	अवगाहना
भव्य-द्रव्य देव १	तिर्यंच, मनुष्य, देवता होणे वाला	सातो नरकथी आवे	युगल वर्जी शेष सर्व आवे	युगल वर्जी शेष सर्व माहेथी आवे	सर्वार्थ सिद्धि वर्जी २५ देवलोकादि सर्व देव	ज० अतर्मुहूर्त, उ० तीन पल्योपम	ज० १,२,३ उ० असख्य	४ जातके देव तामे ऐक सिन्	ज० अतर्मुहूर्त, उ० तीन पल्योपम	ज० दस हजार वर्ष, अतर्मुहूर्त अधिक; उ० वनस्पति काल	४ असख्यात गुणा	ज० अगुलके असख्य भाग, उ० हजार योजनकी
नरदेव २	चक्रवर्ती	प्रथम नरकथी आवे	नही	०	सर्व देवतानो आव्यो	ज० सात सो वर्ष, उ० चार लक्ष पूर्वनी	ज० १।२।३, उ० असख्य	भोग न त्यागे तो नरकमे	ज० ७०० वर्ष; उ० ८४ लक्ष पूर्व	ज० १ सागर झझेरा; उ० देश ऊन अर्ध पुद्गल	१ सर्व स्तोक	ज० ७ धनुष्यकी, उ० ५०० धनुष्यकी
धर्म देव ३	साधु	पहिली पाच नरकथी आवे	तेज, वायु युगल वजा शेष आवे	युगल वर्जीने शेष सर्व आवे	वैमानिक प्रमुख सर्व ४ देवथी आवे	ज० अतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन पूर्व कोटि	,,	वैमानिकमे तथा मोक्षे	ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्व कोटि	ज० पृथक् पल्योपम; उ० देश ऊन अर्ध पुद्गल	३ सख्यात गुणा	ज० १ हाथ झझेरी, उ० ५०० धनुष्य
देवाधिदेव ४	तीर्थंकर	पहिली तीन नरकथी आवे	०	०	वैमानिकथी	ज० ७२ वर्ष, उ० ८४ लक्ष पूर्वनी	शक्ति तो है, परतु विकुर्वे नही	मुक्तिमे जावे	ज० ७२ वर्ष, उ० ८४ लक्ष पूर्व	०	२ सख्यात गुणा	ज० ७ हस्तकी उ० ५०० धनुष्यकी
भावदेव ५	चार प्रकारना देवता	०	एकेंद्री ५, विगलेंद्री ३ वर्जी शेष आवे	समूच्छिम मनुष्य वर्जी शेष सर्वथी आवे	०	ज० दस हजार वर्ष, उ० ३३ सागरोपम	ज० १,२, उ० असख्य	पृथ्वी अप् वनस्पति गर्भज तिर्यंच ३, मनुष्यमे	ज० दस हजार वर्ष, उ० ३३ सागरोपम	५०० धनुष्यकी ज० अतर्मुहूर्त; उ० वनस्पति काल	५ असख्यात गुणा	ज० १ हस्तकी उ० ७ हाथ, उत्तर वैक्रिय लाख योजन

जोगायाओ नि०, वीरियायाओ नि उवयोगदसियदसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ नि०"—भगवती सू० ४६७।

१ एकमां।

(७३) (पुद्गलपरावर्तन) भगवती श० १२, उ० ४ (सू० ४४८)

पुद्गलपरावर्तन ७	औदारिक १	वैक्रिय २	तैजस पुद्गल ३	कार्मण ४	मनपुद्गल ५	वचनपुद्गल ६	आनप्राण ७
स्तोक काल सर्वमे किस का?	३ अनंत	७ अनंत	२ अनंत	१ स्तोक	५ अनंत गुणा	६ अनंत	४ अनंत
थोडा पुद्गल कौनसा [क्स्य] अने बहुता कौनसा?	५ अनंत गुणा	१ स्तोक	६ अनंत गुणा	७ अनंत	३ अनंत	२ अनंत	४ अनंत

(७४) अथ पर्याप्तियंत्रम्

प्रारंभकालयंत्रम्							सर्व पर्याप्तिका	समाप्तिकालयंत्रम्						
प्रथम समय १	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय		समुच्चय काल	स्वामी	१ स्तोक	२ असंख्य	३ विशेष अधिक	४ विशेष	५ विशेष	६ विशेष
आहार	आहार	आहार	आहार	आहार	आहार		समय	सन्नी पंचेंद्रिय	आहार	शरीर	इंद्रिय	श्वासोच्छ्वास	भाषा	मन
	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर		अंतर्मुहूर्त	विकलेंद्रिय	,,	,,	,,	,,	,,	
		इंद्रिय	इंद्रिय	इंद्रिय	इन्द्रिय		,,	पंचेंद्रिय	,,	,,	,,	,,		
			सासो	सासो	सासो		,,	लब्धि अपर्या	,,	,,	,,			
				भाषा	भाषा		०	०	०	०				
					मन		०	०	०					

[1]निश्चयनयमतेन सर्व पर्याप्ति एक साथ प्रारंभे पिण व्यवहार नय मते एक समयांतर. आहार पर्याप्तिने एक समय लगे अने अन्य सर्वने अंतर्मुहूर्त कालम् पृथक् पृथक्

[1] निश्चय नयना अभिप्राय अनुसार।

(७५) (पर्याप्ति अपर्याप्ति यंत्र)

द्वार	भेद	पर्याप्ति यंत्र ६		अपर्याप्ति यंत्र ६	
०	०	प्रारंभ— सर्व पर्याप्ति साथ माडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे	प्रारंभ— सर्व एक साथ माडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे
एकेन्द्रिय	लब्धि अपर्याप्त	०	०	४ साथ माडे	३ पूरी करे
	पर्याप्ता	४ साथ माडे	४ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
बेइन्द्री, तेइन्द्री, चौरिंद्री, असन्नी पचेंद्री	लब्धि अपर्याप्त	०	०	५ साथ माडे	४ अनुक्रमे पूरी करे
	लब्धि पर्याप्त	५ साथ माडे	३।४।५ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच पचेंद्री	करण अपर्याप्त	६ साथ माडे	,, ,, ,,	०	०
	करण पर्याप्त	,, ,, ,,	६ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
नैरयिक १ देवता	करण अपर्याप्त	,, ,, ,,	५ अनुक्रमे पूरी करे	०	०
	करण पर्याप्त	,, ,, ,,	६ पूरी करे	०	०

(७६) पर्याप्तिके सर्व कालकी अल्पबहुत्व

आहार पर्याप्ति १	शरीर पर्याप्ति २	इन्द्रिय पर्याप्ति ३	श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति ४	भाषा पर्याप्ति ५	मन पर्याप्ति ६
१ स्तोक	२ असंख्य	३ विशेष अधिक	४ विशेष	०	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	०	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	४ वि काल करे	५ वि काल करे	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	०
,, ,,	,, ,,	,, ,,	४ वि	५ विशेष	६ किञ्चित् न्यून
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	६ विशेष अधिक
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	६ अधूरी से किञ्चित् न्यून
,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	६ तुल्यम्

(७७) श्रीप्रज्ञापना पद २८ मेथी पर्याप्ति स्वरूपयंत्रमिदम्

पर्याप्ति ६	आहार १	शरीर २	इन्द्रिय ३	श्वासोच्छ्वास ४	भाषा ५	मन ६
अपर्याप्ति	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त
आहारक अनाहारी	नियमात् अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी

(७८) आहारयन्त्र पन्नवणा पद २८

द्वार	भेद	स्वामी	संख्या
भेद तीन ३	सचित्त १	तिर्यंच १ मनुष्य २	१
	अचित्त २	देव १, नरक, २, तिर्यंच ३, मनुष्य ४	२
	मिश्र ३	तिर्यंच १, मनुष्य २	३
भेद तीन ३	ओज १	अपर्याप्त अवस्थामे १	४
	रोम २	रोम पर्याप्त २	५
	कवल ३	एंद्री, तेइंद्री, चौरेंद्री, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य	६
भेद दो २	आभोगनिर्वृत्तित	रोमआहारी कवल आहारी	७
	अनाभोगनिर्वृत्तित	ओज आहारी, रोम आहारी	८
भेद दो २	मनोज्ञ	देवता आदिक	९
	अमनोज्ञ	नरक आदिक	१०

अथ १४ गुणस्थान स्वरूप लिख्यते—(१) मिथ्यात्व गुणस्थान, (२) सास्वादन गु., (३) मिश्र गु., (४) अविरति सम्यग्दृष्टि गु , (५) देशविरति गु., (६) प्रमत्त संयत गु , (७) अप्रमत्त संयत गु , (८) निवर्त्य बादर (अपूर्वकरण?) गु., (९) अनिवर्त्त बादर (अनिवृत्ति?) गु , (१०) सूक्ष्म संपराय गु., (११) उपशांतमोह गु , (१२) क्षीणमोह गु., (१३) सयोगी केवली गु , (१४) अयोगी (केवली) गु. इति नाम.

अथ लक्षण—प्रथम गुणस्थानका लक्षण—कुदेव माने, कुदेवके लक्षण—यथा विषयी होवे, पुण्य प्रकृति भोग ले, राग द्वेष सहित होवे तेहने देव माने १. कुगुरु–चारित्र धर्म रहित जे अन्यलिंगी तथा स्वलिंगी गुणभ्रष्ट, परिग्रहना लोभी, अभिनिवेशकी(शी), पांचे महाव्रते

रहित तेहने गुरु माने. धर्म—यथार्थ आत्मपरिणति केवलिभाषित अनेकांत-स्याद्वादरूप जिम है तिम न माने, अपनी कल्पनासे सद्दहणा करे, पूर्व पुरुषांका मत भ्रष्ट करे, सूत्र अर्थ विपरीत कहे, नय प्रमाण न समजे, एकांत वस्तु प्ररूपे, कदाग्रह छोडे नही ते. मिथ्यात्वमोहनीयके उदये सत्पदार्थ मिथ्या भासे जैसे धत्तुरा पीये हूये पुरुषकू श्वेत वस्तु पीत भान होवे तथा जैसे ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचि नही होती है तैसे मिथ्यात्वके उदय करी सत् पदार्थ जूठा जाने है ते प्रथम गुणस्थानके लक्षण.

जैसे पुरुषने खीर खड खाके वम्या, पिण किंचित् पूर्वला स्वाद वेदे है तैसे उपशमसम्यक्त्व वमतां पूर्व सम्यक्त्वका स्वाद वेदे है. इति द्वितीय.

जैसे 'नालिकेर' द्वीपका मनुष्यका अनके उपरि राग नही, अने द्वेष भी नही तिनोने कदे अन्न देख्या नही इस वास्ते. ऐसे जैन धर्म उपरि राग भी नही द्वेष बी नही ते मिश्र गुणस्थानका लक्षण जानना. इति तृतीय.

अठारें दूषण रहित सो देव, पाच महाव्रतधारी शुद्ध प्ररूपक सो गुरु, धर्म केवलिंभाषित स्याद्वादरूप. चौकडी दूजीके उदये अविरति है इति चतुर्थ.

१२ (?) अनुव्रत पाले, ११ पडिमा आराधे, ७ कुव्यसन, २२ अभक्ष्य टाले, ३२ अनंतकाय वर्जे, उभय काले सामायिक, प्रतिक्रमणा करे, अष्टमी, चौदस, अमावास्या, पूर्णमासी, कल्याणक तिथि इनमे पोषध करे ओर तिथिमे नही अने इकवीस गुण धारक ए (पांचमाका) लक्षण

छठा—सतरे भेदे सयम पाळे, पाच महाव्रत पाले, ५ समिति, ३ गुप्ति पाले, चारित्रिया, सतोषी, परहित वास्ते सिद्धान्तका उपदेश देवे, व्यवहारमे कले (रह?) कर चौदा उपगरणधारी परतु प्रमादी है. एह लक्षण छठेकों.

सातमे—सज्वलन कषायना मदपणाथी नष्ट हुआ है प्रमाद जेहना, मौन सहित, मोहकूं उपशमावनेकू अथवा क्षय करनेकू प्रधान ध्यान साधनेका आरभ करे, मुख्य तो धर्मध्यान हुइ, नाममात्र रूपातीत शुक्ल ध्यान पिण होवे है, षडावश्यक कर्तव्यसे रहित, ध्यानारूढत्वात्.

अष्टमा—क्षपक श्रेणिके लक्षण—आसन अकंप, नासिकाने अग्रे नेत्रयुगल निवेशी कछुक उघाड्या है नेत्र ऐसा होके संकल्प विकल्परूप जे वायुराजा तेहथी अलग कीना है चित्त, ससार छेदनेका उत्साह कीधा है ऐसा योगीन्द्र शुक्ल ध्यान ध्यावा योग्य होता है पीछे पूरक ध्यान, कुंभक ध्यान, स्थिर ध्यान ए तीनो शुक्लके अतरग भेद है. इति अष्टम लक्षण.

नवमे गुणस्थानके नव भाग करके प्रकृति क्षय करे. इति नवमा.

दसमे सूक्ष्म लोभ सज्वलन रह्या और सर्व मोहका उपशम तथा क्षय कीया.

सर्वथा मोहके उपशम होणे करके उपशांतमोह गुणस्थान कहीये है. ११ मा.

सर्वथा मोहके क्षय होणे ते क्षीणमोह गुणस्थान कह्या. १२ मा.

---

१ ध्यानमां आरूढ होवाथी ।

च्यार घातीया कर्म क्षय किया, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, यथाख्यात चारित्र, अनंत वीर्य इन करके विराजमान, योग सहित इति सयोगी.

मन, वचन, काया योग रूधीने पाच ह्रस्व अक्षर प्रमाण काल पीछे मोक्ष.

(७९) आगे गुणस्थान पर नाना प्रकारके १६२ द्वार है तिनका स्वरूप यन्त्रसे—

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	जीव भेद १४	१४	७	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२	योग १५	१३	१३	१०	१३	११	१३	११	९	९	९	९	०	७	०
३	उपयोग १२	५	५	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	२	२

जीवभेदमे दूजे गुणस्थानमे बादर एकेंद्रीका भेद १ अपर्याप्त कह्या है सो इस कारण—ते एकेंद्रीमे सास्वादन सम्यक्त्व है अने सूत्रे न कही तिसका समाधान–एकेंद्रीमे सास्वादन कोइक कालमे होइ है, बहुलताइ करके नही होती, इस कारण ते सूत्रमे विवक्षा नही करी. अने कर्मग्रंथमे कोइ कालकी विवक्षा करके कह्या है. इस वास्ते विरोध नही. एह समाधान भगवतीकी वृत्तिमे कह्या है. दूजे गुणस्थानमे अपर्याप्तका भेद है ते करण अपर्याप्ता जानने, लब्धि अपर्याप्ता तो काल करे है. अने दूजे गुणस्थाने अपर्याप्ता काल नही करे तथा योगद्वारमे पांचमे छट्ठे गुणस्थानमे औदारिकमिश्र योग कर्मग्रंथे न मान्यो, किस कारण? ते तिहां वैक्रिय आहारककी प्रधानता करके तिनो ही का मिश्र मान्या, अन्यथा तो १२ तथा १४ योग जानने, परंतु गुणस्थानद्वार तो कर्मग्रथकी अपेक्षा है, तिस वास्ते कर्मग्रंथकी अपेक्षा ही ते सर्वत्र उदाहरण जानना. तथा उपयोगद्वारमे पहिले १, दूजे गुणस्थाने ५ उपयोग कहे है सो तीन अज्ञान, चक्षु, अचक्षु दोइ दर्शन, एव ५ उपयोग जानने दूजे गुणस्थानमे ज्ञान मलिन है, मिथ्यात्वके अभिमुख है अवश्य मिथ्यात्वमे जायगा, तिस कारण ते अज्ञान ही कह्या, अन्यथा तो तीन ज्ञान, तीन दर्शन जानने अवधिदर्शन अवधिज्ञान विना न विवक्ष्यौ. इस कारण ते ५ उपयोग कहे; अन्यथा तो प्रथम गुणस्थाने ३ अज्ञान, ३ दर्शन जानने तथा तीजे गुणस्थानमे ज्ञान अंशकी विवक्षा ते तीन ज्ञान, तीन दर्शन है, अने अज्ञान अंशकी विवक्षा करे तीन अज्ञान, तीन दर्शन जानने.

४	द्रव्य लेश्या ६	६	६	६	६	६	६	३	१	१	१	१	१	१	०
५	भाव लेश्या ६	६	६	६	६	३	३	३	१	१	१	१	१	१	०

भावलेश्या तीन–कृष्ण, नील, कापोत, एह तीन लेश्या वर्तता सम्यक्त्व न पडिवज्जे अने सम्यक्त्व आया पीछे तो तीनो भावलेश्या होइ है इति भगवतीवृत्तौ अने तीन अप्रशस्त भावलेश्यामे देशवृत्ती (विरति?) सर्ववृत्ती (विरति?) नही होइ.

१ पन

६	मूल हेतु ४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	१	१	०
७	उत्तर हेतु ५७	५५	५०	४३	४६	३९	२६	२४	२२	१६	१०	९	९	७	०
०	मिथ्यात्व ५	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	अविरत १२	१२	१२	१२	१२	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	कषाय २५	२५	२५	२१	२१	१७	१३	१३	१३	७	१	०	०	०	०
०	योग १५	१३	१३	१०	१३	११	१३	११	९	९	९	९	९	७	०
८	अल्प बहुत्व	अनत गुणा १४	अस १०	अस ११	अस १२	असं ९	स ८	सं ७	वि ३ ५	वि ३ ४	वि ३ ३	थोया १	स २	स ६	अनत गुणा १३
९	मूल भाव ५	३	३	३	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	२
१०	उत्तर भाव ५३	३४	३२	३३ ३२	३६ ३५	३४ ३५	३४ ३३	३० ३१	२७ २८	२८ २९ २७	२३ २२ २१	२१ २०	२० १९	१३	१२
०	उपशम २	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	०	०	०
०	क्षायिक ९	०	०	०	१	१	१	१	१	१२	१२	२	२	९	९
०	क्षयोपशम १८	१०	१०	११	१२ १३	१४ १३	१४ १५	१४ १५	१३ १४	१२ १३	१२ १३	१२ १३	१२ १३	०	०
	औदयिक १२	२१	२०	२० १९	१९	१७	१५	१२	१०	१०	४	३	३	३	२
०	परिणामी ३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१

मूल भाव ५, तद्यथा—(१) औपशमिक, (२) क्षायिक, (३) क्षायोपशमिक, (४) औदयिक, (५) पारिणामिक. उत्तर भेद ५७—औपशमिकके दो भेद–(१) उपशमसम्यक्त्व, (२)

उपशमचारित्र, एव दो; क्षायिक भाव ९ भेदे-(१) केवलज्ञान, (२) केवलदर्शन, (३) क्षायिक सम्यक्त्व, (४) क्षायिक चारित्र, (५) दानान्तराय, (६) लाभान्तराय, (७) भोगान्तराय, (८) उपभोगान्तराय, (९) वीर्यान्तराय एव ५ क्षय करी, एव ९, क्षयोपशमके १८ भेद— (१) मति, (२) श्रुत, (३) अवधि, (४) मनःपर्यव, (५–७) तीन अज्ञान, (८–१०) तीन दर्शन केवल विना, (११–१५) पांच अन्तरायका क्षयोपशम, (१६) देशविरति (१७) सर्वविरति, (१८) क्षयोपशमसम्यक्त्व, एव १८, औदयिकके २१ भेद—गति ४, कषाय ४, वेद ३, लेश्या ६, मिथ्यात्व १, एव १८, (१९) अज्ञान, (२०) अविरति, (२१) असिद्धपणउ, एव सर्व २१, परिणामिकके ३-(१) जीव, (२) भव्य, (३) अभव्य, एव ३, एव सर्व ५३. नवमे गुणस्थानमे उपशमचारित्र अने क्षायिकचारित्र जो कहे है सो तीसरी चौकडीके क्षय तथा उपशमकी अपेक्षा है, उपशम क्षपक श्रेणि आश्री, अन्यथा तो चारित्र क्षयोपशमभावे है. तेरमे १४ मे एक जीव परिणामिक भाव जानना.

११	समुद्घात ७	५	५	२	५	५	६	१।५	१	१	१	१	०	१	०

सातमे गुणस्थानमे ५ समुद्घात कही है ते पूर्व अपेक्षा करके जाननी. सातमे (१) वेदनीय, (२) कषाय, (३) वैक्रिय, (४) आहारक ए चार समुद्घात करता तो नही, पिण वैक्रिय, आहारक शरीर विना समुद्घातके होते नही. इस वास्ते ५, एक होवे तो मारणान्तिक समुद्घात जाणवी. इति अल विस्तरेण.

१२	ध्यान पाया १६	८	८	८	१२	१२	७	४	५	१ प्रथम	१	१	१	१ दूजा	२

छठे गुणस्थानमे ७ पाये कहे है सोइ आर्तध्यानका प्रथम पाया नही ते यथा सेवे भोगे है-जे कामभोग तिनका वियोग न वछै तत्त्व बहुश्रुतात् गम्यम् ।

१३	दडक २४	२४	२२	१६	१६	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१४	वेद स्त्री आदि	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०	०	०	०	०
१५	चारित्र ७	१	१	१	१	१	३	३	२	२	१	१	१	१	१
१६	योनि लक्ष ८४	८४	५६	२६	२६	१८	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
१७	कुल १९७५-००००,०००,०००	१९७-५०	११६॥-१८७	११६॥	११६॥	६५॥	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१८	आश्रव भेद ४२	४१	४१	४१	४०	५० ३९	३२ २७				७	१	१	१	०

छठे गुणस्थानमे पचीस भेद आश्रवके है, तद्यथा—(१) पारिग्रहिकी क्रिया, (२) मिथ्यादर्शनप्रत्यया, (३) अप्रत्याख्यानक्रिया, (४) सामतोपनिपातिकी क्रिया, (५) ईर्याप-

१ विस्तारथी सर्यु । २ तत्त्व बहुश्रुतथी जाणवुं । ३ असंयम, देशविरति अने सामायिक आदि ५ चारित्र ।

थिकी क्रिया, (६) प्राणातिपात, (७) मृषावाद, (८) अदत्तादान, (९) मैथुन, (१०) परिग्रह, एव दश नास्ति अने सत्तावीसमे पांच इन्द्रिय टली.

१९	संवर भेद ५७	०	०	०	१२	१२	५७	५७	५७	५७	४५	४५	४५	३०	३०

ए सर्व संवरना भेद संधिया विचारितव्य–सर्वगुणस्थान उपर विचार लेना.

२०	ध्रुवबंधी ४७	४७	४६	३९	३९	३५	३१	३१	३१ २०	२९ १८	१८	१४	०	०	०	०

ध्रुवबंधी प्रकृति ४७ लिख्यते—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, कषाय १६, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, अंतराय ५, एव ४७. जा लगे एहना बंध है ता लगे अवश्यमेव बंध होइ है, इस वास्ते इनका नाम 'ध्रुवबंधी' कहीये. दूजे गुणस्थानमे एक मिथ्यात्व टली. तीजे गुणस्थानमे अनंतानुबंधी ४, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानर्द्धि १ एव सात टली. त्रीजेवत् चोथे. पांचमे अप्रत्याख्यान ४ नही. छठे प्रत्याख्यानावरण चार नही. एव सातमे तथा आठमेके प्रथम भागमे तो सातमेवत्, दूजे भागमे निद्रा १, प्रचला १, ए, दो टली, त्रीजे भागमे तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, एव ९ टली. चोथे भागमे भय १, जुगुप्सा १, एवं २ टली, १८ का बंध. एव नवमे दसमे ४ टली. सज्वलनका चौक, पांच ज्ञान, चार दर्शन, पांच अंतराय, एव १४ का बंध; आगे नास्ति.

२१	अध्रुवबंधी ७३	७०	५५	३५	३८	३२	३२	२८	२७ ४	४ ३	३	१	१	१	०

अध्रुवबंधी प्रकृति ७३ है.—हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, वेद ३, आयु ४, गति ४, जाति ५, औदारिक १, वैक्रिय १, आहारक १ इन तीनोहीके अंगोपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, तीर्थंकर १, त्रसदशक १०, स्थावरदशक १०, गोत्र २, एव सर्व ७३. अर्थ–कारण तो मिथ्यात्व आदि बंधनेका है अने ए ७३ प्रकृतिका बंध होय भी अने नही भी होय, इस वास्ते इनका नाम 'अध्रुवबंधी' कहीये. प्रथम गुणस्थानमे तीन टले—आहारक १, आहारक अंगोपांग १, तीर्थंकर १; एव ३. दूजे गुणस्थाने १५ टली—नपुंसक वेद १, नरकत्रिक ३, जाति ४, पंचेन्द्रिय विना, छेहला संहनन १, छेहला संस्थान १, आतपनाम १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, एव १५ टली. तीजेमे २० टली—स्त्रीवेद १, आयु ३, तिर्यंच गति १, तिर्यंच

१ पोतानी मति प्रमाणे । २ श्रीजानी पेठे । ३ नहीं ।

आनुपूर्वी १, मध्यके ४ संहनन, मध्यके ४ संस्थान, उद्योत १, अशुभ चाल १, दुर्भग नाम १, दुःस्वर १, अनादेय १, नीच गोत्र १, एवं २० टली. चोथेमे तीन बधी—मनुष्य-आयु १, देव आयु १, जिन-नाम १. पांचमे ६ टली—मनुष्यत्रिक ३, औदारिक १, औदारिक-अंगोपांग १, प्रथम संहनन, एवं ६ टली. छठे पांचमे वत्. सातमे आहारक तदुपांग २ बधी, ६ टली—असातावेदनीय १, शोक १, अरति १, अस्थिर नाम १, अशुभ १, अयश १, एवं ६. आठमेके दो भाग. प्रथम भागमे एक देव-आयु टली दूजे भागमे चारका बंध—सातावेदनीय १, पुरुषवेद १, यशकीर्ति १, ऊंच गोत्र १, एवं ४ का बंध, शेष २३ टली. नवमेके प्रथम भागे ४, दूजे भागमे १ पुरुषवेद टला, तीनका बंध. दशमेऽपि एवं ३ का बंध. आगले तीन गुणस्थानमे एक सातावेदनीयका बंध. १४ मा अबंधक जानना.

२२	ध्रुव उदयी २७	२७	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	१२	०

ध्रुव उदयी प्रकृति २७ है, ते यथा—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ५, चक्षु आदि ४, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, अंतराय ५, एवं २७. एह प्रकृति जां लगे उदय है तां लगे अवश्य उदय है, अंतर न पडे, इस कारणसे इनका नाम 'ध्रुव उदयी' कहीये दूजेमे मिथ्यात्वमोहनीय टली. एवं यावत् १२ मे गुणस्थान ताइ २६ का उदय. तेरमे १४ टली—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, एवं १४. चौदमे ध्रुव उदयी कोइ प्रकृति नही है

२३	अध्रुव उदयी ९७	९०	८५	७४	७८	६१	५५	५०	४६	४०	३४	३३	३१ २९	३०	१२ ९

अध्रुव उदयी ९५ प्रकृति है, तद्यथा—निद्रा ५, वेदनीय २, मोहकी २७ मिथ्यात्व विना, आयु ४, गति ४, जाति ५, शरीर ३, अंगोपांग ३, संहनन ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, तीर्थंकर १, उपघात १, त्रसादि ८, स्थिर १, शुभ १, ए दो विना आठ, स्थावर ८, अस्थिर १, अशुभ १, ए दो विना गोत्र २; एवं सर्व ९५ कदेक उदय हूइ, कदेक उदय नही होय, इस वास्ते 'अध्रुव उदयी' कहीये पहिलेमे ५ नही—सम्यक्त्वमोह १, मिश्रमोह १, आहारक शरीर १, तदुपाग १, जिननाम १; एवं ५ नही. दूजेमे ५ नही—नरक-आनुपूर्वी १, आतप १, सूक्ष्म नाम १, साधारण १, अपर्याप्त १, एवं ५ नही. तीजेमें १२ टली—अनंतानुबंधी ४, तीन आनुपूर्वी, च्यार जात, स्थावर नाम १, एवं १२ टली, अने एक मिश्र मोहनीय बंधी चौथेमे चार आनुपूर्वी, सम्यक्त्वमोहनीय १, एवं ५ बधी, अने एक मिश्र मोहनीय टली. पांचमेमे १७ टली—

१ दशमामां पण आ प्रमाणे ।

अप्रत्याख्यान ४, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रिय शरीर १, तदुपांग १, 'दुर्भग' १, अनादेय १, अयश १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, मनुष्य आनुपूर्वी १, एव १७ नही. छठेमे आठ टली—प्रत्याख्यानावरण ४, तिर्यंच आयु १, तिर्यंच गति १, उद्द्योत १, नीच गोत्र १, एव ८ टली, अने दोय वधी—आहारक १, तदुपांग १. सातमे पांच टली—निद्रा ३, आहारक १, तदुपाग १, एव ५ टली. आठमे ४ टली—सम्यक्त्वमोहनीय १, छेहला तीन सहनन ३; एव ४ टली. नवमे ६ टली—हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, भय १, जुगुप्सा १; एव ६ टली. दशमे ६ टली—वेद ३, लोभ विना संज्वलनकी ३; एव ६ टली. ग्यारमे एक सज्वलनका लोभ टला. बारमे सहनन २ टले. अने द्विचरम स(म)य दोय निद्रा टली. तेरमे एक जिननाम वध्या. चौदमे १८ टली, १२ रही तिन बारांका नाम—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पचेंद्रिय जाति १, सुभग १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, मनुष्य आयु १, उंच गोत्र १; एव १२ है. छेहले समय एक वेदनीय १, उच्च गोत्र १; एव २ टली. तीर्थंकरकी अपेक्षा एह १२. तथा ९ का उदये.

२४	ध्रुव सत्ता १३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३० १२५	१३० ९२	१३० ९१	१३०	९०	७४	७४ ७

ध्रुव सत्ता १३० है, तद्यथा—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, सम्यक्त्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, ए दो विना २६ मोहकी, तिर्यंच गति १, जाति ५, वैक्रिय १, आहारक विना शरीर ३, औदारिक अंगोपांग १, पांच बधन-(१) औदारिक बधन, (२) तैजस बंधन, (३) कार्मण बधन, (४) औदारिक तैजस कार्मण बंधन, (५) तैजस कार्मण बंधन, एव ५, इम पांच ही सघातन, संहनन ६, सस्थान ६, वर्ण आदि २०, तिर्यंच आनुपूर्वी १, विहायोगति २, प्रत्येक ७ तीर्थंकर विना, त्रस आदि १०, स्थावर आदि १०, नीच गोत्र १, अंतराय ५, एव १३०.१३० बधना मध्ये पांच बधन टले है ते लिख्यते—वैक्रिय बधन १, आहारक बधन १, वैक्रिय तैजस कार्मण बधन १, आहारक तैजस कार्मण बधन १, औदारिक आहारक तैजस कार्मणबधन १, एव ५ बधने टले. एव सघातन ५. ध्रुव सत्ताका अर्थ—जां लगे ए प्रकृतिकी सत्ता कही है तां लगे सदाइ लाभे, इस वास्ते 'ध्रुव सत्ता' कहीये. सातमे गुणस्थान ताइ १३० की सत्ता. आठमे क्षपक उपशम श्रेणिकी अपेक्षा दो प्रकारकी सत्ता जाननी—१३० की सत्ता उपशम सम्यक्त्वकी अपेक्षा ग्यारमे ताइ जाननी; अने क्षपककी अपेक्षा आठमे पांच टली, तद्यथा—अनतानुबधी ४, मिथ्यात्वमोहनीय १, एव ५ टली. नवमे ३३ टली—निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानर्द्धि १, मोहकी १९ सज्वलनके माया, लोभ विना, तिर्यंच गति १, पचेन्द्रिय विना जाति ४, तिर्यंच आनुपूर्वी १, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १; एव ३३ टली. नवमेके नव भाग करके ३३ टालनी, यथा—प्रथम भागमे तो आठमे गुणस्थानवत्. दूजे भागमे १४ टली—तिर्यंचद्विक

२, जार्ति ४, थीणत्रिक ३, उद्योत १, आतप १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, एवं १४ टली; तीजे भागे ८ टली—दो चौकडी, चोथे भागे नपुंसकवेद १; पांचमे भागे स्त्रीवेद १, छठे भागे हास्य आदि ६; सातमे भागे पुरुषवेद १; आठमे भागे सज्वलन क्रोध १; नवमे भागे सज्वलन मान १; एव सर्व भागोमे ३३ टली. दशमे गुणस्थाने एक सज्वलननी माया टली. बारमे सज्वलन लोभ टला. तेरमे १६ टली—निद्रा १, प्रचला १, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, एव १६ टली. चौदमे ७४ की सत्ता तो तेरमेवत्. छेहले समय सातकी सत्ता—त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, सुभग १, पचेन्द्रिय १, साता वा असाता १, एव ७ रही. मुक्तौ गमने सर्व प्रकृतिका व्यवच्छेद मतव्य.

२५	अध्रुव सत्ता २८	२८	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८ ३३	२८ २१	२८ २१	२८	२१	२१	२१ ५

अध्रुव सत्ता २८ प्रकृति लिख्यते—सम्यक्त्वमोह १, मिश्रमोह १, आयु ४, तीन गति तिर्यंच विना, वैक्रिय शरीर १, तदुपाग १, आहारक शरीर १, तदुपांग १, बधन ५, सघातन ५, इनका स्वरूप ध्रुव सत्तामे लिख्या है, तिर्यंच विना तीन आनुपूर्वी, तीर्थंकर १, उच गोत्र १, एव २८. अध्रुव सत्ताका अर्थ—सदा सत्तामे न लाभे, इस वास्ते 'अध्रुव सत्ता'. दूजेमे एक तीर्थंकर नाम टला. एव तीजे. चौथेथी मांडी ११ मे ताइ २८ की सत्ता, तीर्थंकर नाम एक मिला. आठमे गुणस्थाने क्षपक श्रेणि अपेक्षा २३ की, सत्ता, ५ टली—सम्यक्त्व-मोहनीय १, मिश्रमोह १ मनुष्य विना आयु ३, एव ५. नवमे २ टली—नरकगति १, नरक आनुपूर्वी १, दशमे, बारमे, तेरमे, चौदमे २१ तो नवमेवत्, अने पाचवी सत्ता छेहले समय—मनुष्यत्रिक १, उच गोत्र १, तीर्थंकर १. एव ५ की सत्ता जाननी

२६	सर्वघाती २०	२०	१९	१२	१२	८	४	४	४ २	२	२	०	०	०	०

सर्वघाती २०—केवलज्ञानावरणीय १; केवलदर्शनावरणीय १, निद्रा ५, कषाय १२ सज्वलन विना, मिथ्यात्वमोहनीय १; एव सर्व २०. सर्वघातीका अर्थ—आत्माका सर्वथा गुण हणे है, इस वास्ते 'सर्वघातिक' नाम. दूजे मिथ्यात्वमोहनीय टले. तीजे, चोथे अनतानु-बंधी ४, निद्रा ३; एव ७ टली. पांचमे अप्रत्याख्यान ४ टली. छठे, सातमे तीजी चौकडी टली. आठमे सातमेवत्. आगे दो रही—केवलज्ञानावरणीय १, अने केवलदर्शनावरणीय १. एह द्वार बध अपेक्षा है.

२७	देशघाती २५	२५	२४	२३	२३	२३	२३	२१	२१	१७	१२	०	०	०	०

१ मोक्षे जतां तो बधी प्रकृतिनो उच्छेद मानवो ।

देशघाती २५—मति आदि ज्ञानावरणीय ४, तीन दर्शनावरणीय केवल विना, सज्वलन ४, हास्य आदि ६, वेद ३, अंतराय ५, एव २५. अर्थ—देश थकी आत्माना गुण हणे, नं तु सर्वथा. दूजे नपुंसकवेद टला तीजेसे लेइ छठे ताइ स्त्रीवेद टल्या सातमे अरति १, शोक १ टले. एव आठमे, नवमेमे हास्य १, रति १. भय १, जुगुप्सा १; एव ४ टली. दशमे सज्वलनका चौक ४, पुरुषवेद १, एव ५ टली. आगे बध नही.

२८	अघाती ७५	७२	५८	३९	४२	३६	३६	३७	३३	३	३	१	१	१	०

अघाती ७५ है—वेदनीय २, आयु ४, नामकी ६७, गोत्र २, एव ७५. अर्थ—ज्ञान, दर्शन, चारित्र इनकू न हणे; इस वास्ते 'अघाती' कहीये. पहिलेमे आहारकद्विक २, जिननाम १; एव तीन नही. दूजे १४ टली—छेवट्ठ (सेवार्त) सहनन १, हुडक सस्थान १, एकेन्द्रिय जाति १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, आतप १, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, एव १४. तीजेमे १९ टली—दुभग १, दु:स्वर १, अनादेय १, सहनन ४ मध्यके, सस्थान ४ मध्यके, अप्रशस्त विहायोगति १, तिर्यंच गति १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, आयु ३ नरक विना, उद्योत १, नीच गोत्र १, एव १९. चौथे ३ मिले—मनुष्य आयु १, देव आयु १, जिननाम १, एव ३. पाचमे ६ टली—प्रथम सहनन १, औदारिक १, तदुपाग १, मनुष्यगति १, मनुष्य-आयु १, मनुष्य आनुपूर्वी १, एव ६. एव पांचमेवत् छठे. सातमे ४ टली—असाता १, अस्थिर १, अशुभ १, अयश १, एव ४ टली. आहारक १, तदुपांग १, मिले. आठमे एक देव-आयु टली. नवमे ३० टली, अने ३ रही तेहना नाम—सातावेदनीय १, यश १, उच गोत्र १, एव दशमे, ११ मे, १२ मे, १३ मे एका साताबध.

२९	पुण्य भेद ४२	३९	३८	३४	३७	३१	३१	३३	३२	३	३	१	१	१	०

पुण्यप्रकृति ४२—सातावेदनीय १, नरक विना आयु ३, मनुष्य-देव-गति २, पचेन्द्रिय जाति १, शरीर ५, अगोपांग ३, प्रथम सहनन १, प्रथम सस्थान १, शुभ वर्ण आदि ४, मनुष्य देव-आनुपूर्वी २, शुभ चाल १, उपघात विना प्रत्येक ७, त्रस दशक १०, उच गोत्र, एव ४२. सुखदायक अने शुभ है, इस वास्ते 'पुण्यप्रकृति' कहीये. पहिलेमे ३ टली—आहारकद्विक २, तीर्थंकर नाम १; एव ३. दूजे एक आतापनाम टला. तीजे चार टली—तीन आयु ३, उद्योत १, एव ४. चोथे तीन मिली—मनुष्य देव आयु २, जिननाम १. पाचमे ६ टली—मनुष्यत्रिक ३, प्रथम सहनन १, औदारिक १, तदुपांग १, एव ६. एव छठे, सातमे आहारक १, तदुपाग १, एव दो मिली. आठमे एक देव-आयु टली. नवमे २९ टली;

१ नहिं के सर्वथी रीते। २ एकलो।

तीन रही—साता १, यश १, उच्च गोत्र १. एव दशमे. अ
चौदमे गुणस्थानमे बधका व्यवच्छेद है.

३०	पापप्रकृति ८२	८२	६७	५४	५४	४०	३६	३०

पापप्रकृति ८२—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९
आयु १, नरक-तिर्यंच-गति २, जाति एकेन्द्रिय आदि ४, स
आदि ४, नरक तिर्यंच आनुपूर्वी २, अशुभ चाल १, उपघा
नीच गोत्र १, अतराय ५; एव ८२. अर्थ—दु ख भोगवे अ
ते 'पाप.' दूजेमे १५ टली—मिथ्यात्व १, हुडक सस्थान १,
जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, नर
टली—अनतानुबधी ४, स्त्यानर्धित्रिक ३, दुभग १, दुःस्व
मध्यके, सस्थान ४ मध्यके, अशुभ चाल १, स्त्रीवेद १, नीच
आनुपूर्वी १; एव २३. एव चौथे पिण. पांचमे दूजी चौकडी
टली. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अशुभ १, असाता १, अ
६. आठमे २ टली—निद्रा १, प्रचला १. नवमे ५ टली—
९ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, सज्वलन
ग्यारमे १४ टली—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अतर

३१	परावर्तिनी ९१	८९	७४	४७	४२	३९	३५	३

परावर्तिनी ९१—निद्रा ५, वेदनीय २, कषाय १६,
१, वेद ३, आयु ४, गति ४, जाति ५, औदारिक, वैक्रिय,
सहनन ६, सस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगति २, आतप
१०, गोत्र २; एव ९१. अर्थ—'परावर्तिनी' ते कहीये जे अ
अपना बध, उदय दिखावे [ते परावर्तिनी] यत (पचस

"विणिवारिय जा गच्छइ बध उदय व अ
सा हु परियत्तमाणी अणिवार(रे)ति अप

पहिलेमे २ टली—आहारक द्विक २. दूजेमे १५ ट
न्द्रिय विना, छेवट्ठ सहनन १, हुडक सस्थान १, नपुसकवे
रण १, अपर्याप्त १, आतप १; एव १५ नही तीजेमे २७
त्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, देव-मनुष्य आयु २, स्त्रीवेद १, दुभ
सहनन ४ मध्यके, सस्थान ४ मध्यके, दुर्गमन १, नीच गोत्र
चोथेमे २ मिली—देव-आयु १, मनुष्य आयु १. पांचमे १

१ छाया—विनिवार्य या गच्छति बन्धमुदय वाऽन्यप्रकृते
सा खलु परावर्तमाना अनिवार्य ती अपराव

गे एक सातावेदनीयका बध.

२८	२३	१४	०	०	०	०

असाता १, मोहकी २६, नरक-
नन ५, सस्थान ५, अशुभ वर्ण
(आदि) स्थावर दशक १०,
पना आत्माना आनदरस शोषे
छेवट्ठ सहनन १, नपुसक वेद १,
कत्रिक ३, एव १५ तीजे २३
१, अनादेय १, सहनन ४
गोत्र १, तिर्यंच गति १, तिर्यंच-
४ टली छठे तीजी चौकडी ४
यश १, अरति १, शोक १; एव
र्णचतुष्क ४, उपघात १. दशमे
तुष्क ४, पुरुषवेद १, एव ९.
राय ५, एव १४ टली, बध नही.

	३१	८	३	१	१	१	०

हास्य १, रति १, शोक १, अरति
आहारक शरीर ३, अगोपांग ३,
१, उद्योत १, त्रस १०, स्थावर
री प्रकृतिनो बध, उदय निवारीने
ग्रहे बन्धस्वद्वारे गा. ४२)—

णपगईए ।
रियचा[ए] ॥"

—नरकत्रिक ३, जाति ४ पचे-
१, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधा-
ली—अनतानुबधी ४, स्त्यानर्धि
ग १, दुःस्वर १, अनादेय १,
१, उद्योत १, एव २७ टली.
टली—दूजी चौकडी ४, प्रथम

मना ॥

सहनन १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३; एव १०. छठे ४ टली—तीजी चौकडी ४. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अशुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १, एव ६ टली, आहारकद्विक २ मिले. आठमे एक देव आयु टली. नवमे २२ टली, ८ रही (ता)का नाम—सज्वलनचतुष्क ४, पुरुपवेद १, साता १, यश १, उच गोत्र १, एव ८ रही. दशमे ५ टली, ३ रही (ता)का नाम—साता १, यश १, उच गोत्र १; एवं ३ रही. ग्यारमे, बारमे, तेरमे एक सातावेदनीयका बंध मंतव्यम्—

३२	अपरावर्ति २९	२८	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	१४	१४	०	०	०	०

अपरावर्ति २९ लिख्यते—ज्ञानावरणीय ५, चक्षु आदि ४, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण आदि ४, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, अतराय ५; एव २९. जे परनो बंध, उदय निवार्या विना आपणा बंध, उदय दिखलावे ते 'अपरावर्तिनी' पहिलेमे एक तीर्थंकरनाम टल्या. दूजे तथा तीजे एक मिथ्यात्व टली. चौथेसे लेइ ८ मे ताई १ तीर्थंकरनाम मिल्या. नवमे तथा दशमे १४ टली, १४ रही—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अतराय ५; एव १४ रही. आगे बंध नही. इति एव बंध अधिकार. अथ उदय अधिकार जानना—

३३	क्षेत्रविपाकी ४	४	३	०	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

क्षेत्रविपाकी चार—आनुपूर्वी ४. जिस क्षेत्रमे जावे तिहां वाट वहता उदय होइ ते 'क्षेत्रविपाकी,' "पुव्वी उदय वके" इति वचनात् आनुपूर्वी वक्रगतिमे उदय होइ.

३४	भवविपाकी ४	४	४	४	४	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१

भवविपाकी आयु ४—जिस भवमे उदय होइ तिहां ही रस देवे, न तु भवांतरे इति.

३४	जीवविपाकी ७८	७५	७२	६४	६४	५५	४९	४६	४५	३९	३२	३२ ३०	३२ ३०	१७	११

जीवविपाकी ७८—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, मोहे २८, गति ४, जाति ५, विहायोगति २, उच्छ्वास १, तीर्थंकर १, त्रस आदि त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग आदि ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, दुर्भग आदि ४, गोत्र २, अंतराय ५, एवं ७८. जीवने रस देवे पिण शरीर आदि पुद्गलने रस न देवे, तस्मात् 'जीवविपाकी' नाम. पहिले ३ टली—सम्यक्त्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, जिननाम १. दूजे ३ टली—सूक्ष्मनाम १, अपर्याप्त १, मिथ्यात्वमोहनीय १; एव ३. तीजे ९ टली—अनंतानुबंधी ४, एकेंद्री १, बेइंद्री १, त्रेंद्री १, चौरिंद्री १, स्थावर १, एव ९ मिश्रमोहनीय मिली. चौथे एक मिश्रमोहनीय टली, सम्यक्त्वमोहनीय मिली-पांचमे ९ टली—दूजी चौकडी ४, गति २,

१ बानवो। २ गति के अन्य भवमां। ३ देवी।

दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एव ९. छठे ६ टली—तीजी चौकडी ४, तिर्यंच गति १, नीच गोत्र १, एव ६ टली सातमे ३ निद्रा टली. आठमे एक सम्यक्त्वमोहनीय टली. नवमे हास आदि ६ टली. दशमे ३ वेद, लोभ विना तीन सज्वलनकी, एव ६ टली, ११ मे सज्वलनका लोभ टला. बारमे ३२ तो ग्यारमेवत्. अतके द्विसमयेमे दो निद्रा टली. तेरमे १४ टली—ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, अतराय ५, एव १४, तीर्थंकरनाम मिलया. चौदमे ६ टली—एक तो वेदनीय साता वा असाता १, विहायोगति २, सुस्वर १, दु स्वर १, उच्छ्वास १, एव ६ टली; ११ रही—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पचेंद्रिय १, सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, उच गोत्र, एव ११.

३५	पुद्गलविपाकी ३६	३४	३२	३२	३२	३०	३०	३१	२६	२६	२६	२६	२४	२४	१०

पुद्गलविपाकी ३६—शरीर ५, अगोपांग ३, सहनन ६, सस्थान ६, वर्ण आदि ४, पराघात १, आतप १, उद्द्योत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, प्रत्येक १, साधारण १, स्थिर १, शुभ १, अस्थिर १, अशुभ १, एव ३६. पहिले २ टली—आहारकद्विक २ दूजे २ टली—आतप १, साधारण १ एव तीने, चौथे. पाचमे वैक्रियद्विक २. छठे १ टली—आहारक १, अने आहारकद्विक २ मिले. सातमे २ टली—आहारकद्विक २. आठमे ३ टली—अतके ३ सहनन एव ११ मे ताइ १२ मे २ टली—दूजा, तीजा सहनन. एव तेरमे बारमेवत्. (अर्थ)—पुद्गलने रस देवे पिण जीवने नही.

३६	ज्ञानावरणीयके बधस्थान	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०
३७	ज्ञानावरणीयके उदयस्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
३८	ज्ञानावरणीयक सत्तास्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०

ज्ञानावरणीय कर्मना बधस्थान १, पाच प्रकृतिना, एव उदयस्थान १, सत्तास्थान १ पांच रूप

३९	दर्शनावरणीयके बधस्थान ३	९	९	६	६	६	६	६	६ ४	४	४	०	०	०	०

नवनो बधस्थान प्रथम दूजे गुणस्थानमे १. छका बधस्थान श्रीजासे लेकर आठमे गुणस्थानके प्रथम भागमे होइ है छके बधमे ३ टली—निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानर्धि १, एव ३ टली. चारनो बधस्थान अपूर्वकरणके दूजे भागथी लेकर दशमे ताइ है. चारके बधस्थानमे २ प्रकृति टली—निद्रा १, प्रचला १ एव दर्शनावरणीयके बधस्थान ९।६।४.

४०	दर्शनउदयस्थान २	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	५ ४	० ०	० ०

चारका उदयस्थान होवे तो चक्षु आदि ४. जो पांचका उदयस्थान होवे तो तिहां निद्रा एक कोइ जिमका जिस गुणस्थानमे उदय है सो प्रक्षेपीये तो पांचका उदयस्थान.

४१	दर्शनसत्ता स्थान ३	९	९	९	९	९	९	९	९ ६	९ ६	९ ६	९ ६	६ ४	० ०	० ०

मिथ्यात्वसे लेकर उपशान्तमोह लगे नवकी सत्तानो एक स्थान. उपशमश्रेणि अपेक्षा अने क्षपकश्रेणि आश्री नवमे गुणस्थानके प्रथम भाग लगे नवनी सत्ता. नवमेके दूजे भागथी आरमी बारमेके छेहले दो समय लगे स्त्यानर्धि त्रिक क्षये ६ नी सत्तास्थान. बारमेके छेहले समय दो निद्रा क्षये ४ का सत्तास्थान ज्ञातव्यम्.

४२	वेदनीयके बंधस्थान १	साता वा असाता	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	साता	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	० ०

वेदनीयका बंधस्थान १—साता वा असाता. आपसमे विपर्य(र्यय) है. इस वास्ते बंधस्थान १ जानना

४३	वेदनीयका उदयस्थान १	साता वा असाता	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब	ए ब

वेदनीयका उदयस्थान १—साता वा असाता. दोनो(का) समकालमे उदय नही, इस वास्ते एक स्थान.

४४	वेदनीयके सत्तास्थान २	१ वा १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १

वेदनीयके सत्तास्थान २ साता वा असाता. जो साता क्षय कीनी होइ तो असाताकी सत्ता; असाता क्षय करी होइ तो साताकी सत्ता; इस वास्ते दो सत्तास्थान ज्ञेयम्.

४५	मोहके बंध स्थान १०	२२	२१	१७	१७	१३	९	९	९	५ ४ ३ २ १	०	०	०	०	०

मोहनीयके दश बधस्थान, तत्र २२ नो बध किम्? २८ माहेथी ६ काटे—सम्यक्त्व-मोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, वेद २, हासयुगल २ अथवा अरतियुगल २, इनमे (से) एक युगल लीजे; एव ६ टली. २१ के बधे मिथ्यात्व १ टली. १७ ने बधे प्रथम चौकडी ४ टली. १३ ने बधे दूजे चौकडी ४ टली. ९ ने बधस्थाने तीजी चौकडी ४ टली. ५ ने बधे ४ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, एव ४. नवमेके पहिले भागे ५ बाधे, दूजे भागमे पुरुषवेद टला, तीजे भागे संज्वलनक्रोध टला, चौथे भागे सज्वलनमान टला, पाचमे भागे माया टली.

४६	मोहके उदय स्थान ९	७ ८ ९ १०	७ ८ ९	७ ८ ९	६ ७ ८ १०	५ ६ ७ ८	४ ५ ६ ७	४ ५ ६ ७	४ ५ ६	२ १ १ १ १	१	०	०	०	०

उदयस्थानमे पश्चानुपूर्वी समजना. दसमे एक सज्वलन लोभनो उदय. एव एक स्थान. नवमे सज्वलना एक कोइ उदय, एवं १ जो चार जगे एकेकका अक लिख्या सो चार तरे(ह) उदय—क्रोध १ वा मान १ वा माया १ वा लोभ १. दोके उदयमे एक कोइ वेद घालीये तो २ अपूर्वकरणे हास १, रति १, घाले ४ का उदय. भय प्रक्षेपे ५ का उदय, जुगुप्सा प्रक्षेपे ६ का उदय, सातमे तथा छठे प्रत्याख्यानीया कोइ एक घाले सातका उदय, पांचमे अप्रत्याख्यानीया कोइ एक घाले ८ नो उदय, अविरति मिश्र गुणस्थाने अनतानुबधी एक कोइ घाले ९ नो उदय. मिथ्यात्वगुणस्थाने एक मिथ्यात्व घाले १० का उदय. एव उदय-स्थान नव.

अथ सुगमताके वास्ते फिर लिखीये है—मिथ्यात्वगुणस्थानमे चार उदयस्थान. प्रथम सातका उदय—मिथ्यात्व १, कोद अप्रत्याख्यान चारोंमे १, कोइ प्रत्याख्यान १, कोइ संज्वलन १. कोइ किस वास्ते? एक चौकडीना क्रोध आदि वेदाता सघलाइ क्रोध वेदे क्रोध, एव मान आदि वेदे मान, जातके सदृशपणे करी तीन वेद माहे एक कोइ वेद १, हास १, रति १ वा शोक १, अरति १ इनमे एक युगल लीजे; एव ७. आठके उदयमे भय वा जुगुप्सा, अथवा अनतानुबधी चारमे(से) एक इन तीनो माहेथी एक, सात पूर्वली, एव ८. नवके उदयमे अनतानुबधी १, भय १ लीजे, अथवा अनतानुबधी १ जुगुप्सा १ लीजे, अथवा भय १, जुगुप्सा १ लीजे; एवं ९. दशमे तीनो—अनतानुबधी १, भय १, जुगुप्सा १, ए तीनो सातमे घाले. दूजेमे सातका उदयमे चारों चौकडीका सजातीया एकेक, एव ४; हास १, रति १, शोक १, अरति १, इनमेसु एक जुगल २, एक कोइ वेद १, एव ७. आठमे भय १ वा जुगुप्सा १ घाले ८ भय १, जुगुप्सा १ दोनो घाले ९. एव मिश्रे जानना चौथे गुणस्थाने ६ नो उदय उपशमसम्यक्त्व वा क्षायिक सम्यक्त्वना घणीने है. अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, सज्वलन १, इनमेसु एकेक सजातीया ३, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल; एव ६. सातमे

भय १ वा जुगुप्सा १ वा सम्यक्त्वमोहनीय १ घाले ७. सम्यक्त्वमोह १, भय १ वा सम्यक्त्वमोह १, जुगुप्सा १ वा भय १, जुगुप्सा १ घाले ८, तीनो घाले ९. पांचमे गुणस्थाने प्रत्याख्यान १, सज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २, एवं ५. भय १ वा जुगुप्सा १ वा सम्यक्त्वमोह १ घाले ६; भय १, वा जुगुप्सा १ वा भय १ सम्यक्त्वमोह १ वा जुगुप्सा १ सम्यक्त्वमोह १ घाले ७; तीनो घाले ८. छठें गुणस्थानमे सज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २, एवं ४. क्षायिक तथा उपशमसम्यक्त्वना धणीने ४ का उदय; भय १, जुगुप्सा १ सम्यक्त्वमोहनीय पीछली तरें घालीये तो ५।६।७ का उदय होवे. छठे गुणस्थानवत् सातमा. आठमे नवमेंका पहिले लिखाही है.

४७	मोहके सत्ता स्थान १५	२८ २७ २६	२८	२८ २७ २४	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २१ १	२८।२४ २१।१३ १२।११ ५।४।३।२ १	२८ २४ २१ १	२८ २४ २१	०	०	०

मोहनीयके सत्तास्थान १५. सर्व सत्ता २८. सम्यक्त्वमोहनीय रहित २७, मिश्र रहित २६. ए छव्वीसनी सत्ता अभव्यने हुइ है. तथा २८ में चार अनतानुबधी क्षये २४ नी सत्ता, मिथ्यात्व क्षये २३ नी सत्ता, मिश्रमोह क्षये २२ नी सत्ता, सम्यकत्वमोहनीय क्षये २१ नी सत्ता, दूजी, तीजी चौकडी क्षये १३ नी सत्ता, नपुसकवेद क्षये १२ नी सत्ता, स्त्रीवेद क्षये ११ नी सत्ता, हास आदि ६ क्षये ५ नी सत्ता, पुरुषवेद क्षये ४ नी सत्ता, सज्वलनक्रोध क्षये ३, मान क्षये २, माया क्षये १, एव १५ सत्तास्थान गुणस्थान पर सुगम है.

४८	आयुना बध स्थान १	१	१	०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
४९	उदयस्थान १	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५०	सत्तास्थान १	१ धा २	१ धा २	प ध	प ध	प ध	प ध	प च	प ध	प ध	प ध	प च	१	१	१

जहां ताइ पर भवनो आयु बांध्या नहीं तहां ताइ जौनसें आयुका उदय है तिसही की एक सत्ता १, पर भवना आयु बांध्या पीछे दोकी सत्ता. नरकआयु बाध्या छै तो भी ग्यारमा गुणस्थान आ जावे है; इस वास्ते चार आयुमे एक कोइकी सत्ता है.

५१	नामकमके बध स्थान ८	२३।२५ २६।२८ २९।३०	२८ २९ ३०	२८ २९	२९ २८ ३०	२८ २९	२८ २९	२८ २९ ३० ३१	२८ २९ ३० ३१	१	१	०	०	०	०

नामकर्मके बधस्थान ८. तिर्यंच-गति योग्य सामान्ये पाच बंधस्थान ते कौनसे ? २३। २५।२६।२९।३०, ए पाच बधस्थान, प्रथम एकेन्द्रिय योग्य तीन बध स्थान २३।२५।२६. प्रथम तेवीस कहे छै—तिर्यंच गति १, तिर्यंच आनुपूर्वी १, एकेन्द्रिय जाति १, औदारिक १, तैजस १, कार्मण १, हुड संस्थान १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, स्थावर १, सूक्ष्म १ वा बादर १ एकतर, अपर्याप्त १, प्रत्येक साधारण १ एकतर १, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, निर्माण १, एव २३ एकेन्द्रिय अपर्याप्त माहे जाणे(ने) वाला मिथ्यात्वी हुइ ते बांधे. एहीमे पराघात १, उच्छ्वास १ सहित कीजे तो २५ होइ है. अपर्याप्ताकी जगे पर्याप्ता जानना. ए २५ का बध जे मिथ्यात्वी पर्याप्त एकेन्द्रियमे जाणे-हारा बांधे, पर इतना विशेष स्थिर १ वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ, यश वा अपयश, इनमेंसु तीन कोइ ले लेनी. अथ २६ का बध तेरा तो पहली तेवीसकी लेनी अने परघात १, उच्छ्वास १, आतप १ वा उद्योत १, बादर १, स्थावर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १ वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश वा यश १, निर्माण १, एव २६. जो मिथ्यात्वी एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त माहे जाणेवाला है ते बाधे हिवे बेइद्रीने बधस्थान तीन—२५।२९।३०. प्रथम २५—तिर्यंच गति १, तिर्यंच आनुपूर्वी १, बेइद्री जाति १, उदीरी (औदारिक ?) १, तैजस १, कार्मण १, हुड सस्थान १, सेवार्त सहनन १, औदारिक अगोपांग १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, त्रस १, बादर १, अपर्याप्त १, प्रत्येक १, अस्थिर १, अशुभ १ दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, निर्माण १, एव २५. जे मिथ्यात्वी अपर्याप्त बेइद्रीमे जाणेवाला है ते बाधे. २५ मे चार घाले २९ पराघात १, उच्छ्वास १, अशुभ चाल १, दुःस्वर १, एव ४ घाले २५ मे २९ होइ अने अपर्याप्तने ठामे पर्याप्त जानना अने स्थिर वा अस्थिर एक १, शुभ वा अशुभ एक १, यश वा अयश १, एव २९. जे मिथ्यात्वी बेइद्री पर्याप्ता माहे जाणेवाला है ते बाधे. तीसके बधमे एक उद्योतनाम घाले ३०. एह पण उपर-वत् बेइद्रीमे जाणेवाला बाधे एव तेइद्री, चौरिंद्री, नेवर जाति न्यारी न्यारी कहनी. हिवे तिर्यंच पचेंद्रीने तीन बधस्थान—२५।२९।३०. पचीसका बध बेइद्रीवत्, विशेष जातिका. २९ का बध—तिर्यंच गति १, तिर्यंच आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय जाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, छ सहननमे एक कोइ १, सस्थानमे छमे एक कोइ १, वर्ण आदि ४, अगुरु-लघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त, अप्रशस्त गतिमे एकतर १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग वा दुर्भग १, सुस्वर वा दुःस्वर १, आदेय अनादेय एकतर १, यश वा अयश १, निर्माण १; एव २९, जे मिथ्यात्वी पर्याप्त तिर्यंच पचेन्द्रियमे जाणेवाला बाधे अने जो २९ का सास्वादनमे बांधे तो हुड, छेवट्ठ वर्जीने पांचा माहे एक कोइ लेना. ३० के बधमे एक उद्योत नाम प्रक्षेपे ३०; जे मिथ्यात्वी तिर्यंच पचेन्द्रिय पर्याप्तमे जाणेवाला बाधे. हिवै मनुष्यने तीन बधस्थान—२५।२९।

१ बेमांथी एक। २ विशेष।

३०. प्रथम पचीसने बंध बेद्रीने कह्या तीम जानना. मिथ्यात्वी मनुष्य अपर्याप्तमें जाणेवाला बांधे, नरर मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय जाति १. एकहनी(?) २९ का बंध तीन प्रकारे है—एक तो मिथ्यात्वगुणस्थान आश्री, दूजा सास्वादन आश्री, तीजा मिश्र अविरति आश्री. मिथ्यात्व, सास्वादनमे २९ का बंध वेद्रीवत् जानना. मिश्र अविरतिका २९ बंध लिखीये है—मनुष्य गति १, मनुष्य आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय जाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र सस्थान १, वज्रऋषभनाराच संहनन १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त विहायोगति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १ यश वा अयश १, निर्माण १, एव २९. ए २९ मनुष्यगति योग्य तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे ३०. ए ४ मनुष्य पर्याप्ताने है. हिवे देवगति प्रयोग चार बंधस्थान—२८।२९।३०।३१. देवगति १, देव आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम सस्थान १, वर्ण आदि चार ४, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, शुभ चाल १, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, पर्याप्त १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यश वा अयश १, निर्माण १, एव २८. एह २८ नो बंध पहिलेसे छठे ताइ है. देवगतिके जाणेवाले आश्री तथा कोइ एक भग अपेक्षा ७ मे, ८ मे गुणस्थाने है. एक तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे २९ का बंध देवगति योग्य चौथेसे आठमे ताइ ७।८ मे भग अपेक्षा तीर्थंकर रहित कीजे. आहारकद्विक २ मिले ३०. ते यथा—देव गति १, देव-आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय १, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम सस्थान १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, शुभ चाल १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यश १, निर्माण १, एव ३०. सातमे, आठमे देवगति योग्य बांधे. तीर्थंकर नाम प्रक्षेपे ३१. सातमे, आठमे देवगति योग्य एक बांधे तो यशकीर्ति नवमे, दशमे तथा आठमे कोइ भागमे. इति नामकर्मस(ण.) बन्धस्थानानि अष्टौ समाप्तानि.

५२	नामकर्मेके उदयस्थान १२	२१।२४ २५।२६ २७।२८ २९ ३० ३१	२१।२४ २'।२६ २९।३० ३१	२९ ३० ३१	२१।२५ २६।२७ २८।२९ ३०।३१	२५।२७ २८।२९ ३०।३१	२५ २७ २८ २९ ३०	२९ ३०	३०	३०	३०	३०	३०	२० २६ २८ ३०	२१ २७ २९ ३१	८ ९

नामकर्मके उदयस्थान १२ ते यथा—२०।२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ८।९; एव १२. प्रथम एकेन्द्रियने उदयस्थान पांच—ते कौनसे? २१।२४।२५।२६।२७. प्रथम २१ उदय कहीये है नामकर्मकी ध्रुवोदयी १२—तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १,

१ आ प्रमाणे नामकर्मना आठ बंधस्थानो समाप्त थयां

अस्थिर १, स्थिर १, शुभ १, अशुभ १, वर्ण आदि ४, निर्माण १, एवं १२; तिर्यंच गति १, तिर्यंच आनुपूर्वी १, स्थावर १, एकेन्द्रिय जाति १, सूक्ष्म १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, यश वा अयश १, एव ९ बारा उपरली एव २१ प्रकृति. एकेन्द्रिय विग्रहगतिमे होय तदा २१ का उदय होइ. हिवै शरीर कीधे २४ का उदय होइ ते किम? औदारिक शरीर १, हुड सस्थान १, उपघात १, प्रत्येक या साधारण १, ए चार प्रक्षेपे, तिर्यगानुपूर्वी १ काढे २४ का उदय एकेंद्रिये शरीरपर्याप्ति पूरी कीधा पीछै. २४ मे पराघात प्रक्षेपे २५ का उदय. बादर वायुकाय वैक्रिय करता शरीरपर्याप्ति पूरी हुइ. एही २५ का उदय औदारिकने ठामे वैक्रिय घालीये. पचवीसमे उच्छ्वास घाले २६ होइ अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी हुइ जो कर उच्छ्वासनो उदय नही हुइ तो उच्छ्वास काढीने आतप तथा उद्योत एक लीजे, एव २६. जौनसी छव्वीसमे उच्छ्वास है तिन छव्वीसमे आतप तथा उद्योत एक प्रक्षेपे २७. अथ बेइंद्रीने उदयस्थान ६, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०।३१. प्रथम २१ का उदय, बारां तो ध्रुवोदयी १२ नामकर्मकी अने तिर्यंच गति १, तिर्यंच आनुपूर्वी १, बेइंद्री जाति १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, यश वा अयश १, एव सर्व २१ बेइंद्री वक्रगति करे तद २१ का उदय. अथ शरीर कीधे २६ का उदय—औदारिक शरीर १, तदुपाग १, हुड सस्थान १, सेवार्त सहनन १, उपघात १, प्रत्येक १. एव ६ प्रक्षेपे २१ मे अने तिर्यगानुपूर्वी १ काढे २६ रही. इन २६ मे अशुभ चाल १, पराघात १ ए २ घाले २८. इनमे उच्छ्वास १ घाले २९ [जो कर उच्छ्वासनो उदय न हूया हो तो उद्योत घाले २९ तथा शरीरपर्याप्ति हूइ है] तथा उच्छ्वासवाली २९ मे दु स्वर तथा सुस्वर घाले ३० श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूरी हुइ अने स्वरनो उदय नही हूया तो उद्योत घाले ३० होइ २९ मे सुस्वर १, उद्योत १, अथवा दु स्वर १, उद्योत १ घाले ३१ होय. एव तेंद्रीने ६ स्थान, एव चौरिंद्रीने, नवर जाति आपापणी लेनी. अथ पचेन्द्रिय तिर्यंचने उदयस्थान ६, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०।३१; एव ६. बारां तो ध्रुवोदयी १२ पीछेकी अने तिर्यंच-गति १, तिर्यगानुपूर्वी १, पचेन्द्रिय १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, सुभग वा दुर्भग १, आदेय वा अनादेय १, यश वा अयश १, बारां पीछली; एव २१. तिर्यंच विग्रहगतिमे होइ तद २१ (का) उदय. शरीर कर्या २१ माहेथी आनुपूर्वी १ काढी औदारिकद्विक २, षट् सस्थानमेसु एक कोइ सस्थान १, छ सहननमे एक कोइ सहनन १. उपघात १, प्रत्येक १, ए ६ घाले २६ होइ. हिवै शरीर पर्याप्त हूओ तदा पराघात १, प्रशस्त १, अप्रशस्त १ ए दोनोमे एक १ घाले २८ होइ. हिवै २८ मे उच्छ्वास घाले २९ अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी हूइ अने उच्छ्वासनो उदय न हूया होइ तो उद्योत १ घाले २९. अने २९ मे स्वर घाले ३०, उद्योत घाले ३१. हिवै तिर्यंच पंचेंद्रिय वैक्रिय करतां उदयस्थान ५, ते यथा—२५।२७।२८।२९।३०. प्रथम २५ का

वर्णन–तिर्यंचने २१ कही है ते माहेथी एक आनुपूर्वी काढे २० रही अने वैक्रियद्विक २, प्रथम सस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे २५. हिवै शरीरपर्याप्ति पूरी हूये प्रशस्त गति १, पराघात १ ए २ प्रक्षेपे २७. उच्छ्वास १ घाले २८. अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी है अने उच्छ्वासनो उदय नही हूया तो उद्योत घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हूये उच्छ्वास सहित २८, सुस्वर घाले २९, अथवा उच्छ्वासनी पर्याप्ति (पूरी) हुइ अने स्वरनो उदय न हूया तो उद्योत १ घाले २९, सुस्वर घाले पिण २९, उद्योत घाले ३० होय है. अथ सामान्ये मनुष्यने उदयस्थान ५, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०. हिवै २१।२६।२८ तीनो तिर्यंच पचेन्द्रियवत्, नवरं मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १ ए २ कहनी. हिवै २९ का उदय उद्योत सहित होवे. उच्छ्वास १, सुस्वर तथा दुःस्वर ए २ अठावीसमे घाले ३०. तथा २९ होइ इहा उद्योत वैक्रिय तथा आहारककी अपेक्षा है, अन्यथा तो नही हिवै मनुष्य वैक्रिय करे तदा उदयस्थान ५ है, ते यथा—२५।२७।२८।२९।३०. प्रथम २५ कहु—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियद्विक २, प्रथम सस्थान १, उपघात १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, सुभग वा दुर्भग १, आदेय तथा (वा ?) अनादेय १, यश वा अयश १, एव १३, अने बारा ध्रुवोदयी, एव २५. देशव्रती(विरति) अने सयतने वैक्रिय करता सर्व प्रकृति प्रशस्त जाननी. शरीरपर्याप्ति थये पराघात १, प्रशस्त चाल १, ए २ घाले २७, उच्छ्वास १ घाले २८ अथवा सयत उत्तर वैक्रिय करतां शरीरपर्याप्ति कीधा जो उच्छ्वासनो उदय नही हूया तो उद्योत १ घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी कीधे उच्छ्वास १, सुस्वर १ ए २ सत्तावीसमे घाले २९. सयतने जो स्वरनो उदय नही तो उद्योत घाले २९. सुस्वर सहित २९, उद्योत १ घाले ३०. हिवै आहारकशरीर करतां साधुने उदयस्थान ५, ते यथा—२५।२७।२८।२९।३०. प्रथम २५ नो कहु. पां(पी)छे मनुष्यगते २१ कही ते माहेथी आनुपूर्वी १ काढी पाच घाले—आहारकद्विक २, प्रथम सस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे २५, पिण इहा दुर्भग, अनादेय, अयश नही, प्रशस्त तीनो जानने. शरीरपर्याप्ति कीधां पराघात १, प्रशस्त खगति १, ए २ घाले २७, उच्छ्वास घाले २८; अथवा उच्छ्वासना उदय नही तो उद्योत १ घाले २८ भाषापर्याप्ति हुया उच्छ्वास सहित २८, सुस्वर सहित २९, अथवा उच्छ्वासपर्याप्ति हुइ है अने स्वरनो उदय नही तो उद्योत घाले २९. स्वर सहित जो २९ तो उद्योत घाले ३०. हिवै केवलीने १० उदयस्थान, ते यथा—२०।२१।२६।२७।२८।२९।३०।३१।९।८ प्रथम २० का कहु—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय जाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, एव ८, अने बारां १२ ध्रुवोदयी, एव २०. इह उदय अतीर्थकर केवली समुद्घात करता त्रीजे, चौथे, पांचमे समय केवल कार्मण काययोगे वर्ततां एह उदयस्थान होता है. तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे २१. तथा वीसमे औदारिकद्विक २, छ सस्थानेमे एक कोइक सस्थान १, प्रथम सहनन १, उपघात १, प्रत्येक १, एव ६ प्रक्षेपे २६. अतीर्थकर केवली दूजे, छठे, सातमे समय औदारिक मिश्र योगे वर्ततां हुइ तद २६ का उदय हुइ,

सो तीर्थंकरनाम सहित २७, तीर्थंकर केवली औदारिक मिश्र योगे वर्तता ए भंग होइ तथा २६ मे पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त वा अप्रशस्त खगति १, सुखर तथा (वा) दुःस्वर १, ए चार प्रक्षेपे ३० होइ है. अतीर्थंकर केवली सयोगी पहिले आठमे समये औदारिक काययोगे वर्तता उदय जानना. ३० मे तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे ३१. ए सयोगी केवली तीर्थंकर औदारिक योगे वर्तता हूइ. सयोगी केवली वचनयोग रूधे तदा ३० का उदय. उच्छ्वास रूधे तद २९ का उदय. हिवै सामान्य केवलीने पाछे ३० का उदय कह्या है तेमेसु वचनयोग रूधे २९, उच्छ्वास रूधे २८. हिवै ९ का उदय कहीये है—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, एव ९. चौदमेके छेहले समय तीर्थंकरने ए उदयस्थान, सामान्य केवलीने तीर्थंकरनाम रहित ८ का उदय. हिवै देवताने उदयस्थान ६, ते ए—२१।२५।२७।२८।२९।३०. देव गति १, देव-आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग तथा दुर्भग १, आदेय तथा अनादेय १, यश वा अयश १, ए नव अने बारां ध्रुवोदयी, एव २१ ए विग्रहगतिमे २१ का उदय.

अथ अपर्याप्तपणे शरीर करता वैक्रियद्विक २, उपघात १, प्रत्येक १, समचतुरस्र सस्थान १, ए ५ प्रक्षेपे, देव आनुपूर्वी काढे २५ का उदय. शरीरपर्याप्ति पूरी हुयां पराघात १, प्रशस्त गति १, ए २ घाले २७. इन २७ मे उच्छ्वास घाले २८. जो कर उच्छ्वासनो उदय नही तो उद्द्योत घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हुया स्वर घाले २९. जोकर स्वरनो उद्द्योत नही हूया तो उद्द्योत घाले २९. देवताने दुःस्वरनो उदय नहीं है उत्तर वैक्रिय करतां देवताके उद्द्योत लाभे, २८ मे स्वर सहित २९, उद्द्योत घाले ३०. हिवै नारकीने उदयस्थान ५, ते यथा—२१।२५।२७।२८।२९ नरक-गति १, नरक-आनुपूर्वी १, पचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ९, अने बारां ध्रुवोदयी, एव २१ अपर्याप्तपणे शरीरपर्या(प्ति) करतां वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १, हुड सस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे, नरक आनुपूर्वी १ काढे २५. पराघात १, अप्रशस्त खगति १ घाले २७, उच्छ्वास घाले २८ भाषापर्याप्ति पूरी हुया दुःस्वर घाले २९. गुणस्थान पर एकेन्द्रिय आदि देइ विचार लेना एह उदय अधिकार गहन है सो भूल चूक सप्ततिकासे शुद्ध कर लेना मेरी समजमे जितना आया है सोइ तितना ही लिख्या है. शुद्ध अशुद्ध शोध लेना.

५३	नामकर्मके सत्तास्थान १२	९३।८९ ८८।८६ ८०।७८	९२ ८८	९२ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ८९ ८० ७६	९२ ८८ ७९ ७५	९३ ९२ ८९ ८८	९३ ९२ ८९ ८८	८० ७९ ७६ ७५	८० ७९ ७६ ७५ ९।८

नामकर्मके सत्तास्थान १२, ते ए—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५। ९।८; एव १२. सर्व सत्ता तो ९३. तीर्थंकर टले ९२. तथा ९३ माहेथी आहारक शरीर १

आहारक अंगोपाग १, आहारक संघातन १, आहारक बंधन १, ए ४ रहित कीधा ८९ की सत्ता. तीर्थंकर टले ८८. नरक गति १, नरक आनुपूर्वी १, ए २ टले ८६. देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अगोपांग १, वैक्रिय सघातन १, वैक्रिय बधन १, एव ६ टले ८०. नरकगति योग्य ८० मे ६ घालीये ८६ कीजे—नरक गति १, नरक आनुपूर्वी, वैक्रिय चतुष्क ४, एव ८६ नी सत्ता, अथवा ८० मे ६ घाले—देव गति १, देव-आनुपूर्वी १, वैक्रिय ४, एव ६ घाले ८६ देवगति योग्य जाननी तथा ८० मे मनुष्य गति १, मनुष्य आनुपूर्वी १, ए २ टले ७८ नी सत्ता. ए पूर्वोक्त सात ठाम ससारी जीवने न हुइ. पिण [क्षपक श्रेणे नही] क्षपक श्रेणे ए सत्ता जाणवी. ९३ माहेथी १३ रहित कीजे, ते—नरकद्विक २, तिर्यचद्विक २, एकेन्द्रिय आदि चार जाति ४, स्थावर १, आतप १, उद्योत १, सूक्ष्म १, साधारण १, एव १३ टली ८० ए सत्ता क्षपक श्रेणे. तीर्यंकर टाले ७९. ८९ मे तेरा एही टले ७६ की सत्ता. क्षपके ८८ माहेथी तेरें टले ७५ की सत्ता क्षपकने. हिवै नवनी सत्ता—मनुष्यगति १, पचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, एवं ९. अयोगी गुणस्थानके छेहले समय तीर्थंकरने ए सत्ता, सामान्य केवलीने तीर्थंकरनाम विना ८ नी सत्ता. गुणस्थान उपर सुगम है.

५४	गोत्रका बध स्थान १	उ घा नी	उ घा नी	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	०	०	०	०
५५	गो० उदयस्थान १	,,	→	प	घ	मू	,,	,,	,,	,,	,,	उं	उ	उ	उ
	गो० सत्तास्थान २	उ १ नी १	—	—	—	→	प	घ	मू	—	—	—	—	→	११ २१
५७	अतरायका बध-स्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०
५८	अ० उदयस्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
५९	अ० सत्तास्थान १	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
६०	ज्ञानावरणीय भंग २	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१प	१ दू	१ दू	०	०

ज्ञानावरणीयके भग २. बध ५ का उदय ५, सत्ता पाच, १ बध नही, उदय ५, सत्ता ५; एव २ भग

६१	दर्शनावरणीयके भग ११	१ २ पव २	१ २	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४ ५ ६	५ ६ ७	५ ६ ७	८ ९	१० ११	० ० ० ०	० ० ० ०

अकसख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	०
बंध	९	९	६	६	४	४	४	०	०	०	०	०
उदय	४	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४	०
सत्ता	९	९	९	९	९	९	६	६	९	६	४	०

एह उपरले यत्रमे दर्शनावरणीयके ११ भग है, सोइ विचार लेना सुगम है.

६२	वेदनीयके भग गुणस्थान उपर ८	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	५ ६ ७।८

अक	भगरचना अक	१	२	३	४	५	६	७	८
०	बंध	असाता	असाता	साता	साता	०	०	०	०
०	उदय	,,	साता	असाता	,,	असाता	साता	असाता	साता
०	सत्ता	असाता साता	⟶	ए	व	म्	⟶	,,	,,

एह वेदनीयका यत्र अयोगीके द्विचरम समये पांचमा ६ भंग चरम समये साता क्षय ७ मा असाता क्षय ८ मा.

देवताना यत्र ५

अंक	१	२	३	४	५
बंध	०	म	ति	०	०
उदय	दे	दे	दे	दे	दे
सत्ता	दे	दे म	दे ति	दे म	दे ति

तिर्यंच-यत्र ९

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	दे	म	ति	न	०	०	०	०
ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति
ति	ति दे	ति म	ति ति	ति न	ति दे	ति म	ति ति	ति न

मनुष्य-यत्र ९

६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	दे	म	ति	न	०	०	०	०
म	म	म	म	म	म	म	म	म
म	म दे	म म	म ति	म न	म दे	म म	म ति	म न

नरक-यत्र ५

२४	२५	२६	२७	२८
०	म	ति	०	०
न	न	न	न	न
न	न म	न ति	न म	न ति

६३	आयुके भग २८	२८	१।२ ३।४ ५।६ ७।८ ९।११ १२।१३ १४।१५ १६।१७ १८।२० २१।२२ २३।२४ २५।२६ २७।२८ एव २६, दो नही १०।१९	२ ३ ७ ८ ९ १० १६ १७ १८ १९ २५ २६ प व १२ न ही, शे प २६ है	३ ८ ९ १० १७ १८ २५ २६ प व ८ न ही, शे प २० है	७ ११ १२ १३ १४ १५ १६ २० २१ २२ २३ प व १२ है	६ ७ ११ १२ १३ १४ प व ६ है	६ ७ ११ १२ १३ १४ प व ६ भ ग है	६ ११ प २	६ ११ प २	६ ११ प २	६ १ प २	६ प छ १	६ प क	६ प व है

गोत्रके सात भग हैं—सो पहिला तेजस्काय वायुकायमे, दूजा मिथ्यात्व साखादनमे, तीजा मिथ्यात्व सास्वादनमे, चौथा १मे, २मे, ३मे, ४मे, ५मे, पाचमा भंग एकसे दस तक गुणस्थानोमे, छठा उपशमथी अयोगी द्विचरम समय, ७ मा अयोगीके अत समयमे कहो. अथ सुगमताके वास्ते यत्र लिख्यते—

भंकसख्या	१	२	३	४	५	६	७
बध	नीच	नीच	नीच	उच	उच	०	०
उदय	„	„	उच	„	„	उच	उच
सत्ता	„	नीच उच	नीच उच	नीच उच	नीच उच	नीच उच	„

६४	गोत्रके भग	१ २,३ ४,५	२,३ ४,५	४ ५	४ ५	४ ५	५	५	५	५	५	६	६	६	६ ७
६५	अतराभग	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	अत १	अतका १	०	०
६६	एक जीव रज्जु स्पर्श	१४ रज्जु	१२ रज्जु	८ रज्जु	८ रज्ज	६ रज्जु	७ रज्जु देश ऊन	→	प	घ	म्		→	१४	७ रज्जु देश ऊन

दूजे गुणस्थानवाला बारा रज्जु स्पर्शे तिसकी युक्ति लिख्यते—'खयभूरमण' समुद्रके पश्चिमका मत्स्य सास्वादनवाला मरीने सातमी नरककी पृथ्वीमे अथवा घनोदधिमे समश्रेणि जाइने पीछे तिरछा पूर्वकू जावे साढे तीन रज्जु, पीछे कूणेमे जावे अढाइ रज्जु, एव १२ रज्जु होइ घनोदधिमे या पृथ्वीमे उपजे. तथा चोक्त पञ्चसङ्ग्रहे (द्वितीये बन्धकद्वारे गा० ३२)—गाथा—

"छट्ठाए (छट्ठीण?) नेरइउ(ओ) सासणभावेण एइ तिरिमणु[लो]ए।
लोगतनिक्खुडेसु जवते (तिन्ते) सासणगुणट्ठा(त्था) ॥"[1]

1 छाया—षष्ठ्या नैरयिकः सास्वादनभावेन एति तिर्यग्मनुष्ये(षु)।
लोकान्तनिष्कूटेषु यान्त्यन्ये सास्वादनगुणस्था ॥

इस गाथासे जैसें १२ रज्जु स्पर्शे तैसें विचार लेना. मैने पंचसंग्रहका अर्थ नही देखा, अपनी विचारसे लिखा है विचारसे लिखना यथायोग्य होय अने नही भी होइ, इस वास्ते पंडितें शुद्ध विचारके जेसें होय तैसें लिख देना, मेरे लिखनेका कुछ प्रयोजन नही समजना, अर्थमे जैसा लिखा होइ सो लिख देना

त्रीजे चोथे गुणस्थानवाला ८ रज्जु स्पर्शे तिसकी युक्ति (पंचसङ्ग्रहका द्वितीय बन्धक द्वारकी) इस (३१ मी) गाथासें समज लेनाः—

गाथा—"[१]सहसारंतियदेवा णारयणेहेण जंति तइयभुवं ।
निज्जंति अच्चुयं जा अच्चुयदेवेण इयरसुरा ॥"

बारमे देवलोकका देवता मिश्रवाला वा चौथे गुणस्थानवाला नारकीके नेह कही चौथी नरककी पृथ्वी लगे जावे. तीन रज्जु तो नीचेके हूये अने ५ रज्जु बारमा देवलोक है, एवं ८ रज्जु त्रीजी नरक तो सारी अने चौथीके नरकावास ताइ एवं ३ रज्जु, आगे पंचसंग्रहके अर्थ मुजब लिख देना. मेरी समजमें आया तैसे लिख्या है. श्रावक बारमे देवलोकके कूणेमे उपजे, त्रसनाडीके अभ्यंतर तिस आश्री ६ रज्जु सर्वत्र पंचसंग्रहसे शंका दूर कर लेनी.

६७	सन्नी असन्नी द्वार	स अस	स अस	स	स	स	स	सं	स	स	स	स	स	०	०
६८	शाश्वते गुणस्थान	शा	अशा	अशा	शा	शा	शा	शा	अशा	अशा	अशा	अशा	अशा	शा	अशा

सातमा गुणस्थान जैन मतके शास्त्रमे किहा ही अशाश्वत नही कहा. अने जो कोइ कहै है सो इ भूल है, उक्त पञ्चसंग्रहे (द्वितीये बन्धकद्वारे गा० ६)—

"[२]मिच्छा अविरयदेसा पमत्त अपमत्तया सजोगी य ।
सव्वद्ध" इति वचनात् अशाश्वता नही है इति अलं विस्तरेण

६९	जघन्य स्थिति द्वार	अंत मुहूर्त	१ समय	अंत मुहूर्त	अंत मुहूर्त	अंत मुहूर्त	१ समय	→	प	च	म	→	अंत मुहूर्त	अंत मुहूर्त	अंत मुहूर्त
७०	उत्कृष्ट स्थिति द्वार	अणा अप १ अणा। स २ सा सा देश ऊन अध पुद्गल	६ आवलिका	"	३३ सागर झझेरी एक	देश ऊन पूर्व कोड	अंत मुहूर्त	→	प	च	म		→	देश ऊन पूर्व कोड	"

१ सहस्रारान्तिकदेवा नारकस्नेहेन यान्ति तृतीयभुवम् ।
नीयन्तेऽच्युतं यावद् अच्युतदेवेनेतरसुराः ॥
२ मिथ्याविरतदेशाः प्रमत्ताप्रमत्तकौ सयोगी च । सर्वाद्धम्

इहां छठे गुणस्थानकी उत्कृष्ट स्थिति अंतर्मुहूर्तकी कही है. सो प्रमत्त गुणस्थान अतर्मुहूर्त ही रहै है. अने जे श्रीभगवतीजीमे प्रमत्त सयतिके कालकी पूछा करी है तिहां गुणस्थान आश्री नही है. तिहां तो प्रमत्तका सर्व काल एकठा कर्या देश ऊन कोड पूर्व कहा है. पणि छठे गुणस्थानकी स्थिति नही कही. छठे गुणस्थानककी स्थिति अतर्मुहूर्तकी कही है. उक्तं पचसग्रहे (गा० ७८)—

गाथा—"[1]समया अंतमहु(मुहू) पमत्त अ(म)पमत्तय मयति मुणी ।
देसूणा पुव्वकोडीओ (देसूणपुव्वकोडिं) अण्णोण चिट्ठेहिं (चिट्ठति) भयंता ॥"

अर्थ—समयसे लेइ अतर्मुहूर्त ताइ प्रमत्त अप्रमत्तपणा भजे-सेवे मुनि देश ऊन पूर्व कोड आपसमे दोनो ही गुणस्थानमे रहै, [2]एतावता छठे सातमे दोनोहीमे देश ऊन पूर्व कोड रहै, परतु एकले छठे अथवा एकले सातमे देश ऊन पूर्व कोड नही रहै इति [3]गाथार्थ.. शका होय तो भगवतीजीकी टीकामे कहा है सो देख लेना. अने मूल पाठमे देश ऊन पूर्व कोडकी कही है सो प्रमत्तका सर्व काल लेकर कही है. परतु छठे गुण आश्री स्थिति भगवतीजीमे नही कही तथा सातमे गुणस्थानकी स्थिति जघन्य एक समयकी कही है. अने श्रीभगवतीजीमे सर्व अप्रमत्तके काल आश्री जघन्य तो अतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोडकी तिसका न्याय चूर्णिकारे ऐसा कहा है—सातमे गुणस्थानसे लेइ कर उपशातमोह लगे सर्व गुणस्थान अप्रमत्त कहीये. तिन सर्वका काल जघन्य एकठा करीये ते जघन्य अप्रमत्तका काल लाभे. इस अपेक्षा जघन्य स्थिति है, पिण सातमेकी अपेक्षा नही तथा टीकाकारने मते अप्रमत्त गुणस्थानवाला अतर्मुहूर्त पहिला काल न करे, इस वास्ते अतर्मुहूर्तकी स्थिति है. आगे तत्त्व [4]केवली विदति, सूत्राशय गभीर है.

७१	प्रमाण द्वार	अनते	पल्योपमके असख्य भागे	प	च	म्	सख्यात	——	—→	प	च	म्	——	——	—→
७२	लोकस्य (द)दान द्वार	सर्वे लोक	लोकके असख्यातमे भाग	—	—	—→	प	च	म्	—	—	—	—→	सर्व लोक	दूजे पद.

1 समयादन्तर्मुहूर्तं प्रमत्ततामप्रमत्ततां भजन्ति मुनय ।
देशोनपूर्वकोटिमन्योन्य तिष्ठन्ति भजमाना ॥

2 एटला पूरतु । 3 गाथानो अर्थ । 4 सर्वज्ञ जाणे छे ।

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
७३	मार्गणा द्वार गुणस्थानका आवे	२।३।४ ५।६	४।५ ६	१।४ ५।६	१।३ ५।६ ७।८ ९।१०।११	१ ४ ६	७	१।४ ५।६ ८	७ ९	१० ८	११ ९	१०	१०	१२	१३
७४	गुणस्थानमे जावे	३।४। ५।७	१	१ ४	१।२ ३।५ ७	१।२ ३।४ ७	१।२ ३।४ ५।७	४ ६ ८	७ ९ ४	८ १० ४	९ ११।१२ ४	१० ४	१३	१४	मोक्षमे

पहिले गुणस्थानकी गत(ति) मार्गणामे ३।४।५।७, एह गति तो सादि मिथ्यात्वी आश्री है; अने जिस जीवने पहिलाही मिथ्यात्व गुण० छोड्या है तिसकी गत ४।५।७ मे होइ, औरमे नही.

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
७५	परिषद्द द्वार २२	०	०	०	०	०	२२	२२	२२	२२	१४	१४	१४	११	११
७६	आत्मद्वार ८	६ ज्ञान चारित्र विना	६ ज्ञान चारित्र विना	७ चारित्र विना	७	७	८	८	८	८	८	७	७	७	६

दूजे तथा त्रीजे गुणस्थानमे ज्ञान अज्ञानकी चर्चा उपयोग द्वारसे समज लेनी.

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
७७	आहारी १	आहारी है	१ है	—	—	—	→	प	घ	मृ	—	—	—	→	० नही
७८	अनाहारी १	१ है	,,	१ नही	१ है	१ नही	—	→	प	घ	मृ	—	→	१ है	१ है
७९	शरीरद्वार ५	४	४	३	४	४	५	५	३	३	३	३	३	३	३
८०	नियठाद्वार २६	०	०	०	०	०	४	३	१	१	१	१ नि	१ नि	१ स्ना	१ स्ना

सातमे गुणस्थान अलब्धोपजीनी है, एतले लब्धि न फोरवे, [1]अप्रमत्तत्वात्

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
८१	संयतद्वार ५	०	०	०	०	०	३	३	२	२	१	१	१	१	१
८२	सम्यक्त्व द्वार ५	०	सास्वादन	०	४	४	४	४	२	२	२	२	१	१	१
८३	वेदद्वार ३	३	३	३	३	३	३	३	३	३ तथा नही	उपशी	उपशम	क्षय	क्षय	क्षय
८४	संज्ञाद्वार ४	४	४	४	४	४	४ तथा नो संज्ञा	नो	नो	नो	नो	नो	नो	नो	नो

१ अप्रमत्तपणु होवाथी।

८५	गति ४ मे जावे	४	३ नरक विना	०	मनुष्य देव	देव	—	→	ए	वम्	—	→	०	०	मोक्ष
८६	भग सन्नि पातके ६	१ मिश्र छठो	१ एवम्	१ एवम्	तीन भग	→	ए	वम्	→	३	३	४	२	१	१
८७	मापक अमापक २	२	२	१ भा	२	१	१	१	१	१	२	१	१	२	१ अमापक
८८	पढम अपढम	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	पढम	पवम्	पघम्
८९	चरम अचरम	२	२	२	२	२	२	२	२	२	?	२	चरम	चरम	चरम
९०	मव्य अमव्य	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
९१	आयुवध करे	४	३	०	२	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
९२	परिणामकी हान वृद्धि ६ स्थान	६ स्थान	——	→	ए	व	म्	——	→	तुल्य	ए	व	म्	→	०

वधी वधति वधिस्सति १, वधी वधति न बंधिस्सति २, वधी न वधति बंधिस्सति ३, बंधी न वधति न वधिस्सति ४,[1] ए चार भग सर्व कर्म आश्री सर्व गुणस्थानमे विचार लेना.

९३	५ कर्म आश्री भग चारमे	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	३	४	४	४
९४	वेदनीय आश्री	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	४
९५	मोह आश्री भग	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	१ २	३ ४	३	४	४	४
९६	आयु आश्री भग	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	३ ४	१ २ ३ ४	१ ३ ४	१ ३ ४	१ ३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	३ ४	४	४	४
९७	स्वलिंग, अन्य लिंग, गृहि लिंग, ३ द्रव्ये	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

[1] जुओ भगवती (श० ८, उ० ८, सू० ३४३)।

९८	संघयण ६	६	६	६	६	६	६	६	३	३	३	३	१	१	१
९९	संस्थान ६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
१००	ईरियावहिया भग ८	३,७ ८	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	३ ७	१ ५	२	२	४
१०१	सराग वीत राग २	सराग	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स उ प रा	वी	वी	वी
१०२	दृष्टिद्वार ३	मि	स	मि श्रि	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
१०३	पर्याप्त अपर्याप्त २	२	२	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०४	प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी २	अप्र	अप्र	अ प्र	अ प्र	प्र अ प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र
१०५	सूक्ष्म बादर २	२	बादर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०६	त्रस स्थावर २	त्र० स्था०	त्र० स्था०	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र
१०७	गति कौन सीमे ?	४	४	४	४	म ति	म	म	म	म	म	म	म	म	म
१०८	परत अपरत ससारी	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

प्रथम गुणस्थानमे परत ससार हो जावे है, मेघकुमारके हाथीके भववत् ज्ञेय.

१०९	गुणस्थानमे कालकरे	काल करे	करे	करे नही	क	क	क	क	क	क	क	क	न	न	क
११०	परभव साथ जाये	जाये	जाये	न	जाये	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
१११	इन्द्रियद्वार ५	१।२।३।४।५	१।२।३ ४।५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०
११२	गति जाये देवलोक	२१	१२	०	१२	१२	२१	२६	०	०	०	०	०	०	०

११३	अवगाहना द्वार	जघन्य अगुलके असख्यातमे भाग, उत्कृष्ट-हजार योजन झझेरी	ए	व	म्	एवम्	ज-१ हाथ झझेरी, उ ५०० धनुष्य	एवम्	ज-२ हाथ उ-५०० धनुष्य	—	→	एव	म्	—	→
११४	द्रव्यप्रमाण सख्याद्वार	अनते	असख्याते	एवम्	एवम्	एवम्	पृथक् हजार कोड								
११५	काल स्थिति छता	सर्वाद्धा	ज-१ समय, उ पल्यके असख्यातमे भाग	एवम्	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	ज-१ समय, उ-अत मुंहूर्त	एवम्	एवम्	एवम्	७। ८ समय	सर्वाद्धा	अतमुंहूर्त ७समय
११६	निरतर गुणस्थानमे आवे	पल्योपमके असख्यातमे भाग ताइ	एवम्	एवम्	आवलिकाके असख्यातमे भाग ताइ	एवम्	८ समय	—	—	→	ए	वम्	—	—	→
११७	एक जीव आश्री अतरा	ज-अतर्मुहूर्त, उ-६६ सागर झझेरा	ज-अतमुहूर्त, उ अध पुद्गल देश उन	—	—	→	ए	व	म्	—	—	—	→	०	०
११८	घणा जीव आश्री अतर	नही	ज-१ समय, उ-पल्यका असख्य भाग	एवम्	नही	नही	नही	नही	उपशमश्रेणि पृथक्त्व वर्ष क्षपके ६ मास	एवम्	एवम्	पृथक्त्व वर्ष	६ मास	नही	६ मास
११९	उतरे चडे	चडे	उतरे	२	२	२	२	२	२	२	२	उतरे	घडे	चडे	घडे

१२०	चडत पडत गति	दूहर गति	पाणी नीची २	हलका उल्लधिका	४	३ हलका विना	३ दूहर विना	प	य	मू	४	पाणी नी उल्ल	इलका	इलका	०
१२१	सिद्ध जीव केते गुण स्थान स्पर्शे ?	नियमा	भजना	भ	नि	भ	नि	नि	नि	नि	नि	भ	नि	नि	नि
१२२	सस्पर्शे गुणस्थान सामान्येन	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१३	१४
१२३	नियमा सस्पर्शे	१	३	३	२	३	४	३	५	६	७	८	८	९	१०
१२४	भजना स्पर्शे	१०	८	८	९	८	७	८	६	५	४	३	४	४	४
१२५	भव केते करे ?	अनते	अनते	अनते	असंख्याते	असख्याते	७ ८	७ ८	३	३	३	२	१	१	१
१२६	विरहद्वार	नही	ज-१ समय, उ-अतर्मुहूर्त	पधम्	नही	नही	नही	नही	ज-१ समय, उ पृथक्त्व वर्ष वा ६ मास	पयम्	पयम्	ज-१ समय, उ-पृथक्त्व वर्ष	ज १ स उ ६ मास	नही	ज-१ समय उ-६ मास
१२७	वीर्य ३	बालवीर्य	बाल	बाल	बाल	बाल पंडित	प	प	प	प	प	प	प	पं	०
१२८	समोहिया असमोहिया २	२	२	असमो	२	२	२	१	१	१	१	१	१	२	१
१२९	विग्रहगति ऋजुगति २	२	२	०	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०	ऋजु
१३०	तीर्थमे अतीर्थमे	अतीर्थ	पधम्	पधम्	२	ती	२	२	२	२	२	ती	२	२	२
१३१	लिंग स्त्री आदि तीन	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
१३२	प्राण १०	४।६।७।८।९।१०	८।६।७।८।९।१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५	१

१३३	आहार दिग् ६ ना	३।४।५।६	३।४।५।६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०
१३४	ओज रोम कवल आहार ३	३	३	२	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
१३५	सचित्त अचित्त मिश्र आहार ३	३	३	३	३	३	३	३	१ अचित्त	१ घम्	१ घम्	१	१	१	०
१३६	समवसरण ४	३	३	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१३७	जघन्य स्थिति बांधे ८ कर्मकी	आयु जघन्य	०	०	०	०	०	०	०	मोहजघ	५ कर्म	वेदनीय	वेदनीय	वेदनीय	०
१३८	मध्यम बंध आठ कर्म	८	८	७	८	८	८	७	७	६	०	०	०	०	०
१३९	उत्कृष्ट बंध ८ कर्म आश्री	८	०	०	०	०	०	आयु	०	०	०	०	०	०	०
१४०	मूल कर्मका बंध	७ ८	७ ८	७	७ ८	७ ८	७ ८	७ ८	७	७	६	१	१	१	०
१४१	मूल उदय	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	४	४
१४२	मूल उदीरणा	७ ८	७ ८	८	७ ८	७ ८	७ ८	६	६	६	६ ५	५	५ २	२	०
१४३	मूल सत्ता	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	४	४

त्रीजे गुणस्थानमे ८ कर्मकी उदीरणा इस वास्ते कही है, उदीरणा ८ कर्मकी तब ताइ होइ है जब ताइ एक आवलिका प्रमाण उदय काल प्रकृतिका रहा होइ अने जिवारे आवलिके माहे प्रवेश करे तिवारे उदीरणा नही होय अने तीजा गुणस्थान आवलि प्रमाण आयु शेष रहेसे पहेलेही आवे है, आवलि प्रमाण आयु शेष रहे तीजा गुणस्थान ही आवे है, इस वास्ते ८ की उदीरणा सत्य. ऐसे ही दशमे गुणस्थानमे मोहकी उदीरणा टली आवलिमे प्रवेश करे. ऐसेही १२ मे ५ की तथा २ वेदनीय उपर इह संज्ञा न जाननी. इति अलं विस्तरेण.

१४४	उत्तर प्रकृतिका १२० बंध	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९ ५८	५८ ५६ २६	२२ १८	१७	१	१	१	०

पहिलेमे तीन टली—आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एव ३. दूजेमे १६ टली—मिथ्यात्व १, हुड सस्थान १, नपुसकवेद १, सेवार्त सहनन १, एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १. विकल ३, नरकत्रिक ३; एव १६. त्रीजे २७ टली—अनतानुबधी ४, स्त्यानर्धित्रिक ३, दुर्भग १, दु:स्वर १, अनादेय १, सस्थान चार मध्यके, सहनन चार मध्यके, दुर्गमन १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १, मनुष्य-आयु १, देव आयु १, एव २७. चौथेमे तीन मिली—तीर्थंकर १, मनुष्य देव-आयु २; एव ३. पांचमे १० टली—अप्रत्याख्यान ४, प्रथम सहनन १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३, एव १०. छठे ४ टली—प्रत्याख्यान ४. सातमे ६ टली—अथिर १, अशुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १, एव ६ दो मिली—आहारकद्विक २ अने जो आयु १ टले तो ५८. आठमेके प्रथम भागमे एव ५८, दूजे भागमे निद्रा २ दो टले ५६, तीजे भागमे ३० टली—तीर्थंकर १, निर्माण १, सद्गमन १, पचेन्द्रिय १, तैजस १, कार्मण १, आहारकद्विक २, समचतुरस्र १, वैक्रियद्विक २, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, एव ३०. नवमेके प्रथम भागमे ४ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, एव ४; नवमेके दूजे भागमे पुरुषवेद १, सज्वलनत्रिक ३; एव ४. दसमे एक सज्वलननो लोभ टल्यो. ग्यारमेमे १६ टली—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अतराय ५, यश १, उच गोत्र १; एव १६. आगे १ साता बाधे १४ मे नही.

१४५	उत्तर प्रकृतिना उदय १२२	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७६	७२	६६	६०	५९	५७ ५५	४२	१२

पहिले ५ टली—आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, मिश्र मोहनीय १, सम्यक्त्व मोहनीय १; एव ५ टली. दूजे ६ टली—मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, एव ५, नरक-आनुपूर्वी १, एव ६ टली तीजेमे १२ टली—अनतानुबधी ४, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, स्थावर १, आनुपूर्वी ३, एव १२. अने चौथे मिश्र मोह १ टली अने ५ मिली—आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्व मोह १, पांचमे १७ टली—अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, मनुष्य आनुपूर्वी १, तिर्यगानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव १७ छठे ८ टली—प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच आयु १, तिर्यंच गति १, उद्योत १, नीच गोत्र १; एव ८ टली अने आहारकद्विक मिले. सातमे ५ टली—स्त्यानर्द्धित्रिक ३, आहा-

रकद्विक २; एव ५ आठमे ४ टली–सम्यक्त्वमोहनीय १, अंतके सहनन ३, एव ४. नवमे ६ टली–हास १, रति १, शोक १, अरति १, भय १, जुगुप्सा १, एव ६ दसमे ६ टली–वेद ३, सज्वलनना क्रोध १, मान १, माया १, एव ६. ग्यारमे सज्वलना लोभ टल्या. बारमे २ सहनन टले, द्विचरम समय निद्रा १, प्रचला १ टली. तेरमे १४ टली–ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अतराय ५, एव १४ टली, तीर्थंकरनाम मिला १. चौदमे ३० टली–असाता वा साता १, वज्रऋषभनाराच १, निर्माण १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, सुस्वर १, दुःस्वर १, प्रशस्त खगति १, अप्रशस्त खगति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, सस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रत्येक १, एव ३०. चौदमे १२ रही तिनका नाम—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पचेंद्री १, सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, मनुष्य आयु १, उच गोत्र, ए १४

१४६	उत्तर प्रकृतिका उदीरणा १२२	११७	१११	१००	१०४	९७	८१	७३	६९	६३	५७	५६	५४ / ५२	३९	०

पहिलेसे छठे ताइ उदयवत् उदीरणा. सातमेसे तेरमे ताइ तीन टली–वेदनीय २, मनुष्य-आयु १, और सर्व उदयवत् उदीरणा जाननी. चौदमे उदीरणा नास्ति इत्यलम् ।

१४७	उत्तर प्रकृति सत्ता १४८														
१४८	आकर्ष गुणस्थान कितनी बेरीया आवे [1]	ज १, उ पृथक् सय; घणे भवे ज २, उ असख्य	ज उ १ घणे भवे आश्री ज २, उ ५ वार	ज १, उ पृथक् सय; घणे भव ज २, उ असख्य	प ध म्	प ध म्	ज १ उ सख्याती वार	प च म्	ज १ उ ४, घणे ज २ उ ९	पच	म्	ज १, उ ४; घणे ज २, उ ५ वार	प क वा र	प क वा र	प क वा र
१४९	कर्मनिर्जरा	०	असख्य गुणी	——	—	→	प	च	म्	—	—	—	—	—	→
१५०	हीयमान वर्धमान २ अवस्थित	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३		व ध	वर्धे अव स्थि	व र्ध मा न
१५१	स्थानक	असख्य लोक प्रमाण	——	→	प	च	म्	—	→	अंतर्मुहूर्त सम प्रमाण	प य म्	१	१	१	१

१ नथी। २ आ कोष्टक तेमज तेना स्पष्टीकरण माटे मूल प्रतिमां जग्या रखायेली छे, परंतु तेनो उपयोग ग्रंथकारे कर्यो नथी।

१५२	श्रेणि उपशम क्षपक	०	०	०	०	०	०	०	२	२	२	१ उपशम
१५३	कल्प ५	०	०	०	०	०	५	५	४	४	४	४
१५४	चयवे दडवे जावे	२४	२१	०	१६	१	१	१	१	१	१	१

१५५	पर्याप्ति ६	४ ६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
१५६	अनुव्रत १२	०	०	०	०	१२	०	०	०	०	०	०
१५७	महाव्रत ५	०	०	०	०	०	५	५	५	५	५	५
१५८	सम्यक्त्व सामायिक १, श्रुतसामायिक २, देशव्रतीसामायिक ३ सर्वव्रतीसामायिक ४	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	१ १ २	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३	१ १ १ ३
१५९	मोहना बंध भंग २१	२२ ने बंधे भंग ६	२१ ने बंधे भंग ४	१७ ने बंधे भंग २	१७ ने बंधे भंग २	१३ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	५ ने १, ४ ने १, ३ ने १, २ ने १, १ ने १	०	०

बावीसको बंधस्थाने पीछे लिख्या है । अथ भंगस्वरूप—हास्य रति शोक २ ए दो भंग पुरुषवेद साथ, एवं २ स्त्रीवेद साथ, एवं २ भंग नपुंसकवेद २२ ने बंधे भंग ६ इकीसेके बंधे भंग ४—अरति शोक पुरुषवेद १, हास्य रति बंधे २; एवं पुरुषवेद काढीने स्त्रीवेदसु दो भंग करणा, एवं ४. नपुंसकवेदका नहीं. १७ ने बंधे भंग २–हास्य रति पुरुषवेद १, अरति शोक पुरुषवेद २, एवं नहीं. तेराके बंधमे एही दो भंग जानने छठे गुणस्थानमे ९ के बंधमे एही दो भंग बंधमे, आगे पिण एही दो भंग अने नवमेमे ५ ने बंधे एक भंग १,४ ने बंधे बंधे भंग १, २ ने बंधे भंग १, अने १ ने बंधे भंग १. यद्यपि सातमे आठमे गुण १ शोकका बंध नहीं है तथापि भंगनी अपेक्षा सप्ततिकामे बंध कह्या है इति

१६०	मोहके उदय-भंग ९९५	२४ ७२ ७२ २४		२४ ७२ ७२	२४ ७२ ७२ २४	२४ ४८ २४	१२ ४	१	०

उदयभग रचना प्रथमे गुणस्थानमे २२ ने बधे सात आदि ७।८।९।१० उदयस्थान ४, इनका स्वरूप पीछे उदयस्थानमे लिख्या है सो जान लेना. इहा सातने उदयमे भंग २४ ते किम? हास रति पुरुषवेद १ अरति शोक पुरुषवेद २; एव दो २; ए ही दो स्त्रीवेदसुं २, ए ही दो नपुसकवेदसु, २, एव ६ हुये; ए ही ६ क्रोधसु, एव ६ मानसु; एवं ६ मायासे, एव ६ लोभसे, एव सर्व २४ हुये. हिवे आठने उदय तीन चौवीसी ३ ते किम? अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, मिथ्यात्व १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, हास १, रति १; अथवा एहने ठामे अरति शोक इणमे भय घाले एतले आठने उदय एक चौवीसी; इम भय काढी जुगुप्सा घाले आठमे दूजी चौवीसी, जुगुप्सा काढी अनतानुबधीयासु तीजी चौवीसी, एव ८ ने उदय ७२ भंग. हिवे नवने उदय तीन चौवीसी ते किम? सातमे भय जुगुप्सा घाले ९. ए नवने उदय भय जुगुप्सा सघाते पीछे कह्या ते छ विकल्प क्रोध, मान, माया, लोभसे एक चौवीसी १; अथवा जुगुप्सा काढे भय, अनतानुबधीसुं नवने उदय दूजी चौवीसी २, अथवा भय काढी जुगुप्सा, अनतानुबधीयासुं तीजी चउवीसी ३; एव भग ७२. हिवै सातमे भय, जुगुप्सा, अनतानुबधी १ घाले १० ने उदय एक चौवीसी. पुरुषवेद आदिकसु. हिवै २१ ने बधे सात आदि ७।८।९ लगे तीन उदयना ठाम. सातनो उदय अनतानुबधी १, अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, ए चार(?) ए कोइ एक कोइ वेद १, हास रति १, अरति शोक ए दोनोमे एक कोइ; एव ७. एही पाछला छ विकल्प क्रोध १, मान १, माया १ लोभसु एक चउवीसी १, सातमे भय घाले आठनो उदय, भय सघाते एक चौवीसी १; भय काढी जुगुप्सासु एक चौवीसी, एवं भग ४८. सातमे भय, जुगुप्सा समकाले घाले नवनो उदय नवने उदय एक चौवीसी. ए सास्वादन गुणस्थानमे जाणवा. प्रथम सत्तराने बधे मिश्र गुणस्थानमे तीन उदयना ठाम; तिहां चौवीसी चार ते किम? अप्रत्याख्यान १, प्रत्यख्यान १, सज्वलन १, एक कोइ वेद १, कोइ एक जुगल मिश्र; एव ७ नो उदय. ध्रुव पाछला ६ विकल्प, क्रोध १, मान १, माया १, लोभसु छ गुणा एतले एक चौवीसी. सातमे भय घाले एतले आठने उदय पीछली परे एक चौवीसी १; भय काढी जुगुप्सासे आठने उदय दूजी चौवीसी २; सात मध्ये भय, जुगुप्सा समकाले घाले नवने उदय पाछली तरे एक चौवीसी १; एव मिश्र गुणस्थाने ४ चउवीसी. हवै अविरतिने ६।७।८।९ ए चार उदयठाम उपशम अथवा क्षायिक सम्यक्त्वना वर्णने ए ६ ना उदय हुये अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, सज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २; एव ६ ने उदय एक चउवीसी. ए छ माहे भय घाले सातने उदय एक चउवीसी १, भय काढी जुगुप्मासे सातने उदय दूजी चउवीसी २; जुगुप्सा काढी वेदक सम्यक्त्वसु सातने उदय त्रीजी चौवीसी ३, अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, सज्वलन १, वेद १, युगल ६; ए छ माहे भय, जुगुप्सा घाले एतले आठने उदय एक चौवीसी १; जुगुप्सा काढी भय, वेदक, सम्यक्त्वसु आठने उदय दूजी चउवीसी २; भय काढी जुगुप्सा वेदकसुं आठने उदय तीजी चौवीसी ३. अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, सज्वलन १, वेद १, युगल २,

भय १, जुगुप्सा १ वेदक १; एव ९ ने उदय एक चौवीसी. तेराने वधे पांच आदि देइ आठ लगे. चार उदयना ठाम हुइ ५।६।७।८ प्रथम ५ ते किम? प्रत्याख्या १, संज्वलन १, वेद १, एक कोइ युगल, ए पांचने उदय पाछली परे एक चौवीसी १, ए पांच माहे भय घाले ६ ने उदय एक चौवीसी १, भय काढी जुगुप्सा घाले ६ ने उदय पाछली वरे एक चौवीसी १, ए दूजी चौवीसी २, जुगुप्सा काढी वेदकसु त्रीजी चौवीसी ३. प्रत्या० १, सज्व० १, एक [1]केहु वेद १, एक कोइ युगल २, भय १, जुगुप्सा, एव ७ ने उदय एक चौवीसी, अथवा जुगुप्सा काढी भयने वेदकसु सातने उदय दूजी चौवीसी, भय काढी जुगुप्साने वेदकसु सातने उदय तीजी चौवीसी ३, प्रत्या० १, सज्व० १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २, भय १, जुगुप्सा १, वेदक १, एव आठने उदय पूर्ववत् एक चौवीसी १. नवने वधे प्रमत्त १, अप्रमत्त १, अपूर्वकरण १ ए चार गुणस्थानमे नवने वधे चार आदि ४।५।६।७ ए उदयस्थान. प्रथम चारका किम? सज्वलन एक कोइ १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २, ए चार प्रकृतिना उदय क्षायिक वा उपशम सम्यक्त्वना धर्णीने प्रमत्त आदि चार गुणस्थानना धर्णीने हुइ. एव नवने वधे चारने उदय पूर्ववत् एक चौवीसी; ए चार माहे भय घाले; एवं पाचने उदय पूर्ववत् एक चउवीसी; भय काढी जुगुप्सा घाले पांचने उदय दूजी चौवीसी, जुगुप्सा काढी वेदकसु पांचने उदय त्रीजी चौवीसी ३, सज्व० १, वेद एक केहु १, युगल एक केहु २, एह चारमे भय, जुगुप्सा घाले छने उदय एक चौवीसी १, अथवा जुगुप्सा काढी भय १ वेदकसु दूजी चौवीसी २; भय काढी जुगुप्सा वेदकसु छने उदय तीजी चौवीसी ३. सज्व० १, एक केहु वेद १, एक युगल २, भय १, जुगुप्सा १, वेदक १, एव सातने उदय एक चौवीसी पाचने वधे दो उदयना स्थान ते किम? सज्वलन १, एक कोइ वेद १, ए दोने उदय त्रिण वेद ३, क्रोध १, मान १, माया १, लोभ १ से चार गुणा कीजे तो बारां भग होइ हिवे पाचने वधे सपूर्ण चारसु वध १, तीननो वध, दोनो वध, एकनो वध. ए बारोमे एकेक प्रकृतिन(उ) उदय ते किम? पाचना वधमेसू पुरुषवेद विच्छेद कीधे चार रहे; ते चारने वंधकाले एक कोइ सज्वलननो उदय इहां चार भांगा उपजे ते किम? कोइ क्रोधने उदय श्रेणि पडिवज्जे, एव मान १, माया १, लोभ १. इहां कोइ एक आचार्यने मते इम कह्यो ६ बांधवाने काले एक कोइ वेदनी इच्छा करे तेह भणी तेहने मते बांधवाने पहिले समये चार त्रिक बारां भग उपजे; तेह भणी तेहने मते २४ भग हुइ ते किम? बारा भगा पांचना वधना, बारा एहना मतना, एव २४. चौवीसी सर्व ४१. सज्वलना क्रोध छेदे तीनका वध, क्रोध टाली एक कोइनो उदय जो सज्वलना क्रोधनउ उदय तु सज्वलना क्रोधनो वध हुइ. "जो वधइ सो वेध(द?)इ" इति वचनात्. सज्वलना मान छेदे दोनो उदय; मान टाली एक कोइनो उदय. माया छेदे लोभनो वध, लोभनो उदय संज्वलना क्रोध थकी ४ भग, मानसे ३, मायासे २ भग, लोभसे एक भग, एव भग ११. पिछली ४१ चौवीसी अने एह ग्यारा, सर्व एकत्र कीया ९९५ भग मोहोदयके है

[1] १ कोइ। २ यो बध्नाति स वेदयति।

१६१	नाम कर्मके बंध भंग १३९४५ भंग	४ ५ १६ ९ ९२४० ४६३२ सर्वे १३९२६	८ ६४०० ३२०० ९६०८ सर्वे संख्या	८ ८ सर्वे संख्या १६	८ १६ ८ सर्वे संख्या ३२	८ ८ सर्वे सं ख्या १६	ए व म्	ए व म्	१ १ १ १ सर्वे ४	१ १ १ १ १ सर्वे ५	१	० ० ० ० ०	० ० ० ० ०	० ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ०
१६२	नाम कर्मके उदय भंग (७७९१)	७७०४ ७७६८ ७७६८ ७६०२ ७७७३ ७७७३ सर्वे ४६३८८	३४६८ ४०९७ ४०९७ ११६५८ सर्वे	३४५६ ९ सर्वे ३४६५	२१(?) ७५४८ ७६६१ ७६६१ सर्वे २२९०६	४४३ १४८ सर्वे ५९१	१५८ १५८ सर्वे ३१६	१४८ १४८ १४८ १४८ सर्वे ५९२	७२ ७२ ७२ ७२ ७२ सर्वे ३६०	७२	७२	७२	२४	१ १ ६ १ १२ १३ १५ १ सर्वे ६०(?)	१ १ सर्वे २

इन दोनो यंत्रका विस्तार बहुत है, इस वास्ते भांगा लिख्या नही, जोकर भांगे विचारणे अरु सीखनेकी इच्छा होइ तो सप्ततिसूत्र(गा० २६,२९)नी वृत्ति अवलोकनीयं इति अलम्.

इति नवतत्त्वसंग्रहे आत्मारामसकलता(ना?)यां प्रथमजीवप्रभेद संपूर्णम्.



अथ अजीवतत्त्वसंग्रह लिख्यते

(८०) भगवती

अजीव द्रव्य	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी	गुणथी
धर्मास्तिकाय १	एक	लोकप्रमाण	अनादि अनंत	वर्ण नही, गंध, रस, स्पर्श नही, अरूपी	चलनसहाय
अधर्मास्तिकाय २	,,	,,	,, ,,	वर्ण आदि पांचो नही, अरूपी	स्थितिसहाय
आकाशास्तिकाय ३	,,	लोकालोकप्र माण	,, ,,	वर्ण आदि ५ नही, अरूपी है	अवगाहसहाय

अजीव द्रव्य	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावथी	गुणथी
काल ४	अनता	मनुष्यलोक प्रमाण	,, ,,	वर्ण आदि ५ नही	वतन(ना) गुण कालस्य
पुद्गलास्तिकाय ५	अनत	लोकप्रमाण	,, ,,	वर्ण, गध, रस, स्पर्श है	ग्रहणलक्षण

(८१) अनुयोगद्वार(सू० ७४,८०-८९)से पुद्गलयत्रम्

	आनुपूर्वी १	अनानुपूर्वी २	अवक्तव्य ३
सत्पदप्ररूपणा	नियमात् अस्ति	अस्ति	अस्ति
द्रव्यपरिमाण	अनते	अनते	अनते
क्षेत्र	सख्य भाग १, असख्य भाग २ घणे, सख्ये घणे, असख्ये सर्व लोक	असख्यमे भाग लोकके	असख्यमे
स्पर्शना	क्षेत्रवत् पाच बोल जानने, पर स्पर्शना वहुती	असख्यमे भाग	असख्यमे भाग
काल	एक द्रव्य आश्री असख्य काल, नाना आश्री सर्वाद्धा	→ एवम्	→
अतर	एक द्रव्य आश्री अनत काल; नाना आश्री सर्वाद्धा	एक० असख्य, नाना सर्वाद्धा	एक अनत काल; नाना सर्वाद्धा
भाग	शेष द्रव्यके घणे असख्य भाग अधिक	शेष द्रव्य० असख्य भाग हीन घणे	→
भाव	सादि पारिणामिक भावे है	→ एवम्	→
अल्पबहुत्व द्रव्यार्थे	४ असख्येय गुण	२ विशेष अधिक	१ स्तोक
,, प्रदेशार्थे	५ अनत गुणे	अप्रदेश स्तोक २	विशेष अधिक ३
सरूप	त्रिप्रदेशी ४।५।६।७।८।९ यावत् अनत	परमाणु	द्विप्रदेशी

जिस स्कधमे आदि, अत पाइये, मध्य पाइये सो 'स्कध आनुपूर्वी' कहीये १. जिस स्कधमे तीन बोलमेसु कोइ बी न पाइये सो 'अनानुपूर्वी' कहीये. जिस स्कधमे आदि, अत पाइये पिण मध्य न पाइये सो 'अवक्तव्य' कहीये

अथ अग्रे लोकसरूप व्यवहार नयके मतसे लिखिये है; निश्चयमे तो अनियत प्रमाण है.

(८२) लोकके प्रतर और प्रदेश

४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४							अ	ना	दि	अ	न	त	ऐ	य							४
४																					४
४																					४
२	अ	ना	दि	रा	प	र्य	व	सि	त	२	२		गा	दि	अ	प	र्य	व	सि	त	२
२										२	२										२
१				ट					४			४					ध्र				१
१				ह					४			४					म				१
३				क्षे			४	०					०	८			क्षे				३
३				त्र			४							८			म				३
२				अ		२									१०		म				२
२						२									१०						२
२						२									१०						२
३							४	०					०	८							३
१			ट						४			४						ध्र			१
१			ह			ह			४			४			म			म			१
२			अ			क्षे				२	२				क्षे			क्षे			२
२			क्षे			ट				२	२				म			ध्र			२
१			त्र			ह			४			४			म			म			१
१			अ			क्षे			४			४			म्र			म			१
४						ह		२					६		ध्र						४
४				ट				२					६								४
३				ह			४							८			म				३
३				अ			४							८			क्षे				३
२				क्षे		२									१०		ध्र				२
२				ह		२									१०		म				२
२						२									१०		म				२
२						२									१०						२
१					४											१२					१
१					४											१२					१
४				०													१४				४
४				२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१४				४
४																					[illegible]
४																					[illegible]
४																					[illegible]
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०	४	४	४	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सातमी नरकके आकाशके तले अर्थात् नीचे दोय प्रतर आपसमें सदृश अने सात राज (रज्जु) के लंबे चौडे है तिसके ऊपर एक प्रदेश हीन दोय प्रतर है तिनके ऊपर एक प्रदेश हीन चार प्रतर सरीखे है तिनके ऊपर एक प्रदेश हीन दोय प्रतर सरीखे है, तिन के ऊपर एक प्रदेश हीन दो प्रतर है ऐसे ही १ प्रदेश हीन फेर दोय प्रतर है एक प्रदेश हीन फेर दोय प्रतर है एवं सर्व १४ प्रतर चढेगे बारा प्रदेशकी हान होए, इसी तरे चवदे प्रतर चढे फेर बारा प्रदेश घटे ऐसी सात रज्जु ताइ चवदे प्रतर चढे बारे घटालेने अने ऊर्ध्व लोकमें सात प्रदेश चढ चारकी हान जाननी चारकी आदिमे वृद्धि उपर हान जाणवी अने जे दूजी तरफ दो आदि करके अंक लिखे है सो प्रतरके प्रदेसोकी संख्याके कृतयुग्म अन द्वापरयुग्म शेष इति अलम्

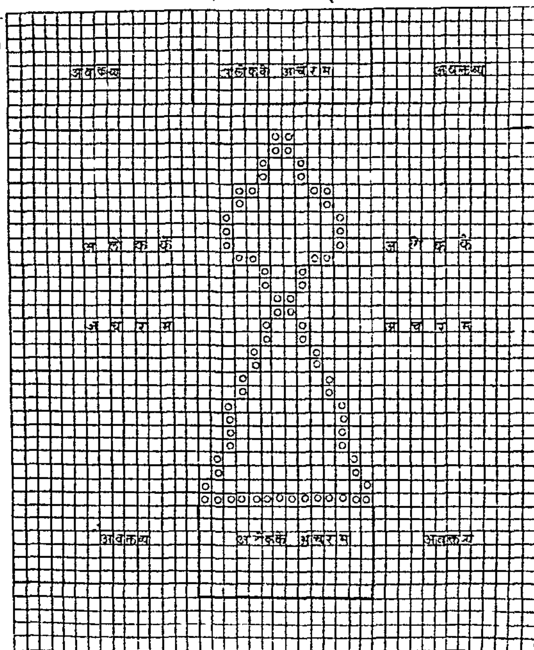
(८३)

लोकश्रेणि			अलोकश्रेणि		
	०	ऊंचा	तिरछी	तिरछी	ऊंची
संख्य असंख्य अनंत	द्रव्यार्थ	असंख्य	असंख्य	अनंत	अनंत
संख्य असंख्य अनंत	प्रदेशार्थ			'	"
युग्म ४	द्रव्यार्थ	संख्य, असंख्य	कृतयुग्म	कृतयुग्म	कृतयुग्म
'	प्रदेशार्थ	कृतयुग्म	४	४।३।२।१	४।३।२।१
चतुर्भंगी	प्रमाण अपेक्षा	४ २ सादि सांत	सादि सांत	अण अप अण स ३ सा अप ३	अण अप अण स स अप स सप ४

(८७) श्रीभगवती दशमे शते प्रथम उद्देशके दस दिग् स्वरूपयन्त्रम्

०	इन्द्रा पूर्व दिग्	अग्नि कूण	यमा दक्षिण	नैऋत्य कूण	वरुणा पश्चिम	वायव्य कूण	सोमा उत्तर	ईशान कूण	तमा अधो	विमला ऊर्ध्व दिग्
उद्भव उत्पत्ति	रुचकसे	⟶			ए	व	म्	⟶		
संस्थान	जूया	मुक्तावल	जूया	मुक्ता०	जूया	मुक्ता०	जूया	मुक्ता०	गोस्तन	गोस्तन
लोक देश	एक दशमे	बहु	१	बहु	१	बहु	१	बहु	१	१
आयाम लंबी	३॥ रज्जु २॥ " ॥	⟶	"	व	म	३ रज्जु २॥ " ॥ "	३॥ रज्जु २॥ " ॥ "	३॥ रज्जु २॥ " ॥ "	७ झझेरी	प्रदेश ऊन सात राज
द्रव्यार्थे	सर्व स्तोक १	१	१	१	१	१	१	१	१	१
प्रदेशार्थे	असंख्य गुणा ५	असंख्य ४	असंख्य ५	असंख्य ४	असंख्य '	असंख्य ४	असंख्य	असंख्य ४	विशेष ३	असंख्य २

(८४) लोकका स्वरूप



अथ लोकस्वरूप विचार हस्व २ भूमि १४ विशेष करे १२ रहे एव १४ प्रदेशक चढ बारा प्रदेशकी हान होय है उदाहरण यथा–आदिमे चौदा प्रदेश है अन अंतमे २ प्रदेश है सो चौदाका नाम 'भूमि' है अने दोका नाम 'मुख' है सो हस्व २ चवद माहिथी काढ

१२ रहे इसका नाम 'विश्लेष' है इस कारण ते चवदें प्रदेशके घटे ते बारा घटे अन ऊर्ध्व लोकम मुख २, भूमि १०, विश्लेष ८ रहे एव ७ प्रदेश घटे ४ की वृद्धि अने ऊपर हाणा एव सर्वत्र ज्ञेयम् ष्याइ कहे है जो एकक्ष प्रदेश लोक घट्या है, सो अशुद्ध है किस वास्ते? अलोककी ऊर्ची श्रेणिम तीन युग्म कहे है श्री भगवतीजीमे- कृतयुग्म, द्वापरयुग्म, त्रौज, एवं ३ अने जो प्रदेश प्रदेशकी हान वृद्ध माने चारो ही युग्म हो जावे है, इस वास्ते द्वे द्वे चार द्वे द्वेके चढनेसे एकेक प्रदेशकी हान होती है एव सर्वत्र ज्ञेयम्

अथ श्रीपन्नवणाजीमे १० मे पदे १२ बोलकी अल्पबहुत्व लिख्यते–सर्वसे थोडा लोकका एकेक अचरम खड १, लोकके चरम खड असख्य गुणे, तेभ्य' अलोकके चरम खड विशेषाधिक ३, तेभ्य लोकालोकके चरमाचरम खड विशेषाधिक ४, तेभ्य लोकके चरम प्रदेश असख्यात गुणे ५, तेभ्य अलोकक चरम प्रदेश विशेषाधिक ६, तेभ्य लोकके अचरम प्रदेश असख्य गुणे ७, तेभ्य अलोकके अचरम प्रदेश अनत गुणे ८, तेभ्यः लोक अलोकके चरमाचरम प्रदेश विशेषाधिक ९, तेभ्य सर्व द्रव्य विशेषाधिक १०, ते किम? जीव, पुद्गल, काल अनते अनते हैं, इस वास्ते,तेभ्य सर्व प्रदेश अनंत गुणे १७ (?), अवक्तव्य प्रदेश मिले लोक स्वरूपम जो पीले रग करे है चार खड तिस थकी सर्व पर्याय अनत गुणी? प्रति प्रदेश अनती हैं, एव १२ इह स्वरूप १०।११ मे बालका कवली जाणे पिणबुद्धि समजमे आया तैसे लिख्या है, आग जो बहुश्रुत कहे सो सत्य; सूत्राशय अति गभीर है



अथ चरमाचरम स्वरूप लिख्यते---गोल अने पीला तो लोकका अचरम खड है अन जे लाल रग के आठ खड है तिनकू लोकके 'निखुड' कहीये है तिनकू ही लोकके 'चरम खड' कहीये है तिनके ऊपर बारा खड नीले 'अलोकक चरम खड' कहीये है तिन बाग खडस परे जो अलाक है सो सर्व अलोकका एक अचरम खड है इन चारारु प्रदेशाकू 'चरम तथा अचरम' कहीये है एतावता चरम खंडाक सर्व 'चरम प्रदेशनू अचरम खडके 'अचरम प्रदेश' जानने असत कल्पना करके आठ अने बारा खड लोकालोकके कहे है परमार्थथी असख्य निखुड जानने अने ए जो निखुड है सो (स?), म

---

१ तथी।

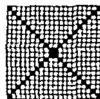
श्रेणि सर्व नहीं है तिनका यथा स्वरूपकी स्थापना—

ऐसा स्वरुप है ए वात श्रीअनुयोगद्वारे है भने सम वी है इति अलम्

हिवे पुद्गलके छव्वीस भग्याकी स्थापना पन्नवणाजाको (श्रीमलयगिरिसूरिकृत) टीकासे है ते यथा-परमाणु-पुद्गल १ भग पावे तीजा अवक्तव्य, इद(य) च-स्थापना □ दोप्रदेशीमे भग २ पावे चरम एक, अवक्तव्य एक, इद च स्थापना □□ □□ त्रिप्रदेशीमे भग ४ पावे १।३।९।११ स्थापना □□ □ □□□ □□ चारप्रदेशीमे भग सात १।३।९ १०।११।१२।२३। ए स्थापना पाचप्रदेशीमे ११ भग स्थापना १।३।७।९।१०।११।१२।१३।२३।२४।२५ छ प्रदेशीमे १५ भग लाभे ते १।३।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।२३।२४। २५।२६ एव १५ इद च स्थापना सात प्रदेशी स्कधमे १७ भग पावे इद च स्थापना आठ प्रदेशीमे १८ इद च स्थापना एव नवथी अनतप्रदेशी पर्यंत ज्ञेयम्

(८५) श्रीप्रज्ञापना दशमे पदात् यत्र (८६) श्रीभगवतीके षोडशमे शते ८ मे उद्देशे

०	द्रव्यार्थे ज्ञेय		प्रदेशार्थे		०	द्रव्यार्थे	प्रदेशार्थे
०	अचरम	चरमाणि	अचरम प्रदेश	चरम प्रदेश	चार दिशा चरमात	असंख्येय गुणे २	सख्येय गुणे ५
लोक	सर्व स्तोक १	असख्य गुणे २	असख्य गुणे ७	असखय गुणे '	अधो चरमात	सर्व स्तोक १	संख्येय गुणे ४
अलोक	सर्व स्तोक १	विशेषा धिक ३	अनत गुणे ८	विशेषा धिक ६	ऊर्ध्व ,,	,, ,, ,,	असंख्येय गुणे ३
तदुभय	विशेषाधिक ४		विशेषाधिक ९		०	०	०



जैसे क्षुल्लक मतरका स्वरूप है तैसी स्थापना, जैसा एह मतर है ऐसा ही इसके ऊपर दूजा मतर है इन दोनोंका नाम 'क्षुल्लक मतर' है इनके मध्यके आठ प्रदेशकी 'रुचक' सज्ञा है इनसे १० दिशा.

(८८) श्रीभगवत्या १० मे शते प्रथम उद्देशे, ११ मे शते दसमे उद्देशे, षोडशमे शते ८ मे उद्देशे

जीव अजीव द्रव्यम	देश प्रदेश	चार दिग्	चार विदिग्	ऊर्ध्व दिग्	अधो दिग्	अधो लोक	तिर्यग् लोक	ऊर्ध्व लोक	लोकना १ प्रदेशमे	दिग् चरमान्त ४	ऊर्ध्व लोकचरमान्त	अधोलोकचरमान्त	बीस बोल-दिशा १०, लोक ३, प्रदेश १, चरमात ६ एम सर्व २०
जीव	०	अनत	०	०	०	अनत	अनत	अनत	०	०	०	०	७ बोलमे अनते १३ बोलमे शून्य
एकेन्द्रिय	देश	३।३	——	——→		ए	व	म्	——	——	——	——→	२० बोलमे घणे एके न्द्रियाके घणे देश ३३
,,	प्रदेश	,,	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	२० बोलमे भग ३।३
बेद्री, तेइन्द्री, चौरिंद्री, पचेंद्री	देश	,,	११ १३ ३३	११ १३ ३३	११ १३ ३३	,,	,,	,,	११ ०० ३३	११ १३ ३३	११ ०० ३३	११ ०० ३३	७ बोलमे ३३, १० बोलमे ११।१३।३३, बोल ३ मे ११।१३
बे०, ते० चौ०, प०	प्रदेश	,,	०० १३ ३३	०० १३ ३३	०० १३ ३३	,,	,,	,,	०० १३ ३३	०० १३ ३३	०० १३ ३३	०० १३ ३३	७ बोलमे ३३, बोल ११ मे १३।३३
अनिन्द्रिय	देश	,,	११ १० ३३	११ १३ ३३	११ १३ ३३	,,	,,	,,	११ ०० ०३	०० १३ ३३	३३	११ ०० १३	८ मे ३३ बोल ६ मे ११।१३।३३, ४ मे १३।३३, दोमे ११।१३
,,	प्रदेश	,,	०० १३ ३३	०० १३ ३३	०० १३ ३३	,,	,,	,,	११ १३ ३३	०० १३ ०३	,,	०० १३ ३३	८ मे ३३ बोल, ११ मे १३।३३ १ मे ११।१३।३३
अजीव	रूपी	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	२० मे चार
,,	अरूपी	७	७	७	६ काल विना	७	७	६	६ ७	६	६	६	१३ बोलमे ७, सात बोलमे ६

जिहां ११ लिख्या है तिहां प्रथम एकाको एक जीव पीछला एका देशके कोठेमे एक देश अने प्रदेशके कोठेमे एक प्रदेश तीनका अक है जहां तिहां बहुवचन जानना इति अरूम्

(१०) भगवती शते १२मे,उद्देशक १०मे पुद्गलभग

१	सद्भाव						१
२	असद्भाव						२
३	स						३
४	"	अस					१२
५	"	स					१३
६	अस	"					२३
७	"	"	अस				१२०
८	स	अस	स				११२
९	"	स	"				१३२
१०	"	"	"				११३
११	"	अस	"				२३३
१२	अस	स	अस				२२३
१३	स	अस	स				१२३
१४	"	"	"	अस			११२२
१५	"	स	"	स			११३३
१६	अस	"	अस	"			२२३३
१७	स	"	"	"			१२३३
१८	"	अस	स	अस			१२२३
१९	"	"	"	स			११२३
२०	"	"	"	अस	स		१२२३३
२१	"	स	अस	स	"		११२३३
२२	"	अस	स	अस	"		११२२३
२३	"	"	"	स	अस	स	११२२३३

(११) भगवती शते ८ उद्देशे १०मे पुद्गलके भग ८

१	द्रव्य		○
२	द्रव्यदेश		
३	दव्वाइ		○ ○
४	दव्वदेसा		
५	दव्व य दव्वदेसे		○
६	दव्व च देसा		○
७	दव्वाइ च दव्वदेसे य		○ ○
८	दव्वाइ अ दव्वदेसा य		○ ○
भगवती ५मे शते उद्देशे ७मे भग ९			
१	देसेण	देस पुमत्र	
२	"	देस	
३	"	सव्व	
४	देसेहि	देस	
५	"	देसे	
६	"	सव्व	
७	सव्वेण	देस	
८	"	देसे	
९	"	सव्व	

(१९) भगवती शतक ५मे उद्देशे ७ स्पर्शनायन्त्रम्

			१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	परमाणु पुद्गल	परमाणु स्पर्शी	०	०	०	०	०	०	०	०	"
२	" "	द्विप्रदेशी स्कध	०	०	०	०	०	०	७	०	"
३	" "	तिप्र स्पर्शी	०	०	०	०	०	०	"	८	"
४	द्विप्रदेशी स्कध	पर स्पर्शी	०	०	३	०	०	०	०	०	"
५	" "	द्विप्रदे "	१	०	"	०	०	०	७	०	"
६	" "	तिप्रदे "	"	२	"	०	०	०	"	८	"
७	तिप्रदेशी "	पर "	०	०	"	०	०	६	०	०	"
८	"	द्विप्र "	१	०	"	४	०	"	७	०	"
९	" "	तिप्रदेशीकू	"	२	"	"	५	"	"	८	"

द्रव्य दश कारके ८ भांगे है सो परमाणुम २ पावें – ११२, द्विप्रदेशीय भग ५ पावें–१–५ त्रिप्रदेशीमें ५ भग पावें-१–७, चार प्रदेशीमें भग ८ पावें–१–८, एव पांचसे लकर अनत–

प्रदेशीपर्यंत एही ८ भग है

(९२) श्रीभगवतीके (श २५, उ ३) मे ५ सस्थानस्वरूप तथा देशप्रस्थापना

संस्थान	सूची		प्रतर		घन		जुम्म	
प्रदेश	ओज प्रदेश ३।३।७	युग्म २।४।६	ओज १।३।५	युग्म २।४।६	ओज १।३।५	युग्म २।४।६	जुम्म	० ० ०
परिमंडल	० ०	० ०	० ०	२० प्रदेश	० ०	४ प्रदेश	४ कृतयुग्म	० ० ०
वृत्त	० ०	० ०	५	१२ "	७	३२	१।३।४	० ० ०
त्र्यस	० ०	० ०	३	६ "	३५	४	२।३।४	० ० ०
चतुरस्र	० ०	० ०	९	४ "	२७	८	१।३।४	० ० ०
आयतन	३	२	१५	६ "	४५	१२	१।२।३।४	० ० ० ०

ऋजुगति में एक समय पर भव आवी लागे, अनाहारिक नास्ति. एक वक्रमें दो समय लागे, प्रथम समय अनाहारिक, दूजे समये आहार लेवे. द्विवक्रमें तीन समय लागे; प्रथम दो समय अनाहारी, तीजे समये आहार लेवे. तीन वक्रमें चार समय लागे, प्रथम तीन समय अनाहारी, चौथे समय आहार लेवे. चार वक्राम पांच समय लागे, प्रथम चार समय अनाहारी, पांच मे समये आहार लेवे. श्रीभगवतीजी (सू) मे तो तीन समय अनाहारिक कह्या है तो चार समय कैसे हूवे तिसका उत्तर—श्रीभगवतीजीमे बहुलताइकी विवक्षा करके तीन समय कहे है. अल्पताकी विवक्षा नही करी, कदे कदे इक चार समय अनाहारिक होता है. कोइ कहे जो पांच समयकी गति न मानीये तो क्या काम अटके है तिसका उत्तर—प्रथम तो पूर्वाचार्योने पांच समयकी गति मानी है, श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण आदि देइ सर्व वृत्तिकारोंने मानी है, इस वास्ते सत्य है. तथा सातमी नारकीके स्थावरनाडीके कूणेवाला जीव मरीने 'ब्रह्मदेव' लोककी स्थावर नाडीके कूणे मे उपजणहार पाच समयकी विग्रह विना उपज नही सकता, एह विचार सूक्ष्म बुद्धिसे विचार लेना. इस विना काम अटके है. इसकी साख भगवतीकी वृत्तिमे तथा पन्नवणाकी वृत्तिमे या (बृहत्)संघयणी (गा. ३२५–३२६)मे है.

(८९) श्रीभगवती शते १३मे चतुर्थ उद्देशके प्रदेशाकी परस्परस्पर्शनार्थयन्त्रम्

०	धर्मास्तिकायके	अधर्मास्तिकायके	आकाशास्ति कायके	जीवके	पुद्गलके	कालके
धर्मास्तिकायका एक प्रदेश	३।४।५।६ प्रदेश स्पर्शे	४।५।६।७	७	अनंते	अनंते	अनंते
अधर्मास्तिकायका ,, ,,	४।५।६।७	३।४।५।६	,,	,,	,,	,,
आकाशास्तिकायका ,, ,,	१।२।३।४।५।६।७	१।२।३।४।५।६।७	६	,,	,,	,,
जीवका ,, ,,	४।५।६।७	४।५।६।७	७	,,	,,	,,
परमाणु पुद्गल	४।५।६।७	४।५।६।७	,,	,,	,,	,,

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	पुद्गलपद क्षेयम्
४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	जघन्य पद
७	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	उत्कृष्ट ,,

चूर्णिकारे अवगाहे करी एक अवगाही प्रदेशना दोय गिन्या है अने टीकाकारे दोय परमाणु करी व्याख्यान कर्या है. इति सूत्रमे पुद्गलकी स्पर्शनामे. परमाणु जघन्य ४ प्रदेश धर्म अधर्मके स्पर्शे, जिनका खुलासा पीछे लिख्या ही है। अने दोय प्रदेशी आदिक स्कन्धनी जघन्य

१ [illegible]

स्पर्शनामे दो दो प्रदेश वधा लेने अने उत्कृष्टी स्पर्शनामे पांच पांच प्रदेशानी सर्वत्र वृद्धि जान लेनी. इति अल विस्तरेण.

(९४) भगवती श० २५, उ० ४ (सू० ७४०) परमाणु द्विप्रदेशादि १३ बोलाकी

अरपबहुत्वयन्त्रम्

द्रव्य यत्रम् १	परमाणु १	द्विप्र देशी २	त्रिप्र देशी ३	४प्रदे शी ४ स्कध	५प्रदे-शी ५ स्कध	६प्रदे-शी ६ स्कध	७ प्र देशी ७	८प्रदे-शी ८	९ प्र देशी ९	१० प्र देशी १०	सख्यात प्रदेशी ११	अ सख्यात-प्रदेशी १२	अनत प्रदे-शी १३
द्रव्यार्थे	११ वि	१० वि	९ वि	८ वि	७ वि	६ वि	५ वि	४ वि	३ वि	२ अनत गुणा	१२ सख्यात गुणा	१३ असख्य गुणा	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	२ अनत गुणा	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	० वि	१० वि	११ वि	१२ वि	१३ असख्य गुणा	१ स्तोक

क्षेत्र यत्रम् २	एक प्रदे शाव गाढा १	२ प्र गा ३२	३ प्र गा ४३	४प्रदेशा वगाढा ४	५प्रदे-शाव-गाढा ५	६ प्र गा ६	७ प्र गा ७	८ प्र गा ८	९ प्र गा ९	१० प्र गा १०	सख्यात प्र गा ११	असख्य प्रदेशाव गाढा १२
द्रव्यार्थे	१० वि	९ वि	८ वि	७ वि	६ वि	५ वि	४ वि	३ वि	२ वि	१ सबसे स्तोक	११ सख्येय गुणा	१२ असख्येय गुणा
प्रदेशार्थे	१ स्तो	२ वि	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० वि	११ सख्यात	१२ असख्यात

एक समय स्थितिक आदि १२ बोलका यत्रना क्षेत्रवत् निर्विशेष ॥ भावयत्र एक गुण काला आदि यावत् अनत गुण १३ बोल वर्णना ५, गध २, रस ५, शीत स्पर्श १, उष्ण स्पर्श २, स्निग्ध ३, रु(रू)क्ष ४, एव १६ बोलमेसे एकेक बोलना तेरां तेरा बोल करके द्रव्य-यत्रवत् जान लेना. (९५)

कर्कश १ मृदु २ गुरु ३ लघु ४	एक गुण कक्श आदि	द्विगु ण २	त्रिगु ण ३	४ गु ण ४	५ गु ण ५	६ गु ण ६	७ गु ण ७	८ गु ण ८	९ गु ण ९	१० गु ण १०	सख्येय गुण ११	असख्य गुण १२	अनत १३
द्रव्यार्थे	१ स्तोक	२ वि	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० स	११ अस	१२ अस	१३ बहु
प्रदेशार्थे	१ स्तोक	२ वि	३ वि	४ वि	५ वि	६ वि	७ वि	९ वि	१० वि	११ बहु	१२ बहु	१३ बहु	१३ बहु

(१६) भगवती शतक २५, उ. ४ सू. ७४१

द्रव्य	परमाणु १	सख्यातप्रदेशी २	असख्यातप्रदेशी ३	अनन्तप्रदेशी ४
द्रव्यार्थे	२ अनंत गुणा	३ सख्यात गुण	४ असख्येय गुन	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	,, ,, ,,	,, सख्येय ,,	,, असख्येय ,	,, ,,
द्रव्यार्थे	३ ,,	४ सख्यात ,,	६ असख्यात	,, ,,
प्रदेशार्थे	०	५ ,, ,,	७ ,,	अनत २

क्षेत्रत	एकप्रदेशावगाढा १	सख्यातप्रदेशावगाढा २	असख्यप्रदेशावगाढा ३
द्रव्यार्थे	१ स्तोक	२ सख्येय गुणा	३ असख्येय गुणा
प्रदेशार्थे	,, ,,	,, ,, ,,	– – –
द्रव्यार्थे	,, ,,	,, ,, ,,	४ – –
प्रदेशार्थे	०	३ ,, ,,	५ ,, ,,

क्षेत्रयंत्रवत् कालयत्र कालयत्रमे एक समय स्थिति आदि कहनी.

भाव एक गुण करडा आदि ४	१ गुण	सख्येय गुण	असख्येय गुण	अनत गुण
द्रव्यार्थे	,, स्तोक	२ सख्येय	३ असख्येय	४ अनत
प्रदेशार्थे	,, ,,	,, असख्येय	,, ,,	,, ,,
द्रव्यार्थे	,, ,,	,, [अ]सख्येय	४ ,,	६ ,,
प्रदेशार्थे	०	३ ,,	५ ,,	७ ,,

सोले बोलना यत्र परमाणु आदिवत् जान लेना द्रव्यवत्.

(१७) परमाणु आदि अनतप्रदेशी स्कंध चल अचल स्थिति भगवती (श० २५, उ० ४, सू ७४४)

	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
चल (सेज) एकवचन	१ समय	आवलिके असख्यातमे भाग
अचल (निरेज) ,,	,, ,,	असख्याता काल

चल बहुवचने अचल बहुवचने सर्वाद्धा.

(९८) अंतरयन्त्र भग० सू ७४४

		परमाणु-पुद्गल जघन्य	उत्कृष्ट	द्विप्रदेशा आदि-अनंत प्रदेशा पर्यंत जघन्य	उत्कृष्ट
चल एकवचने	स्वस्थाने	१ समय	असंख्य काल	१ समय	असंख्यात काल
	परस्थाने	,, ,,	,, ,,	,, ,,	अनंत ,,
अचल एकवचने	स्वस्थान	,, ,,	आवलि असंख्य भाग	,, ,,	आवलि असंख्य भाग
	परस्थान	,, ,,	असंख्य काल	,, ,,	अनंत काल
बहुवचने	चल	नास्ति अंतर	नत्थि	नत्थि	नत्थि
	अचल	,, ,,	नास्ति अंतर सर्वत्र		
अंतर समुच्चये	१ समय	असंख्य काल	असंख्य काल	१ समय	उत्कृष्ट असंख्य काल

(९९) कालमान स्थितिमान यन्त्रम् भग० श २५, उ ४ (सू. ७४४)

		परमाणु जघन्य	उत्कृष्ट	द्विप्रदेशादि-अनंत प्रदेशी पर्यंत जघन्य	उत्कृष्ट
एकवचने	देशैज	०	०	१ समय	आवलिके असंख्यमे भाग
	सर्वैज	१ समय	आवलिके असंख्यमे भाग	,, ,,	,, ,, ,,
	निरेज	,, ,,	असंख्य काल	,, ,,	असंख्य काल
बहुवचने	देशैज	०	सर्वाद्धा		सर्वाद्धा

(१००) अंतर मानका यन्त्र (भग० सू ७४४)

		परमाणु जघन्य	उत्कृष्ट	द्विप्रदेशादि अनंत प्रदेशी (पर्यन्त) जघन्य	उत्कृष्ट
देशैज	स्वस्थाने	०	०	१ समय	असंख्य काल
	परस्थाने	०	०	,, ,,	अनंत ,,
सर्वैज	स्वस्थाने	१ समय	असंख्य काल	,, ,,	असंख्य ,,
	परस्थाने	,, ,,	,, ,,	,, ,,	अनंत ,,
			सर्वाद्धा		सर्वाद्धा

१ परमाणुपुद्गलो जेमज द्विप्रदेशादि स्कंधो सर्व भेदे सदा काल कंपे तेमज सदा काल निष्कंप रहे ।

(१०१) भगवती (श. २५, उ ४, सू. ७४४, पृ ८८९)

	०	परमाणु १	संख्यात प्रदेश २	असंख्य प्रदेश ३	अनंत प्रदेश ४
द्रव्यार्थे	देशैजा	०	७ असंख्य	८ असंख्य	३ अनंत
	सर्वेजा	६ असंख्य	५ ,,	४ अनंत (१ असं)	१ स्तोक
	निरेजा	९ ,,	१० ,,	११ असंख्य	२ अनंत गुणा
प्रदेशार्थे	देशैज	०	६ ,,	७ ,,	३ ,,
	सर्वेज	०	५ ,,	४ ,,	१ स्तोक
	निरेज	०	८ ,,	९ ,,	२ अनंत
द्रव्यार्थप्रदेशार्थे	देशैज	०	१२ ,,	१४ ,,	५ ,,
	सर्वेज	११ असंख्य	९ ,,	७ अनंत	१ स्तोक
	निरेज	१६ ,,	१७ संख्यात	१९ असंख्य	३ अनंत
	देशैज	०	१३ ,,	१५ ,,	६ ,,
	सर्वेज	०	१० ,,	८ ,,	२ ,,
	निरेज	०	१८ ,,	२० ,,	४ ,,

(१०२) परमाणुपुद्गल सैज निरेज (अल्पबहुत्व) भग० श २५, उ ४ (सू ७४४)

अल्पबहुत्व	परमाणु यावत् असंख्य प्रदेशी स्कंध	अनंतप्रदेशी स्कंध
चला	१ स्तोक	१ स्तोक (१)
अचला	२ असंख्य गुण	२ अनंत गुणा (१)

(१०३) अल्पबहुत्व

	अल्पबहुत्व	परमाणु	संख्यातप्रदेशी	असंख्यातप्रदेशी	[illegible]
द्रव्यार्थे	सैजा	३ अनंत गुण	४ असंख्य गुणा	५ असंख्यात	२ अनंत गुण
	निरेजा	६ असंख्य	७ संख्य ,,	८ ,,	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	सैजा	अप्रदेश०	३ असंख्य ,,	४ ,,	२ अनंत गुणा
	निरेजा		५ ,,	६ ,,	१ स्तोक
द्रव्यार्थे	सैजा	५ अनंत	६ ,,	८ ,,	३ अनंत
	निरेजा	१० असंख्य	११ ,,	१३ ,,	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	सैजा	०	७ ,,	९ ,,	[illegible] अनंत
	निरेजा	०	१२ ,,	१४ ,,	२ ,,

१ आ संबंधी ग्रंथमां विचारणीय अभाव छे।

(१०४)

परमाणु संख्येय प्रदेश असंख्येय प्रदेश अनंत प्रदेशी से(सि)या चल निरेया अचल अल्पबहुत्व.

परिणाम	जीव	मूर्त्त	सप्रदेश	एक	अक्षेत्री	किरिया	नित्य	कारण	कर्ता	सर्वगत
२ भेद	१	१	५	३	४ (५?)	२	४	५	१	१
जीव, पुद्गल परि णामी	जीव १ एक जीव १	मूर्त्तवत पुद्गल १	धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, पुद्गल	धर्म, अधर्म, आकाश	धर्म, अधर्म, पुद्गल, जीव, काल	जीव १, पुद्गल २, ए क्रिया वत	धर्म, अधर्म, काल, आकाश ए ४ नित्य	धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल	एक जीव कर्ता	आकाश १
४ अपरि णाम	अजीव ५	अमूर्त ५	अप्र देशी १	अनेक ३	क्षेत्री १	अकि रिया ४	अनित्य २	अकारण १	अकर्ता ५	असर्व गत ५
धर्म, अधर्म, आकाश, काल ए; ४ अपरि- णामी	धर्म, अधर्म, आका श, काल, पुद्गल	धर्म, अधर्म, आकाश, काल, जीव ए ५	काल द्रव्य १	पुद्गल १, काल २, जीव ३, ए अनेक	एक आकाश- द्रव्य	धर्म, अधर्म, आकाश, काल ए ४	जीव १, पुद्गल पर्याय २; विभाव अपेक्षया	जीव एक अकारण	धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल	धर्म, अधर्म, जीव, काल, पुद्गल

"परिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एग ५ खित्त ६ किरिया ७ य।
निच ८ कारण ९ कत्ता १०, सव्वगय ११ इयर हि यपएसा ॥ १ ॥
दुन्नि २ य एग १ एग १, पंच ५ ति ३ पंच ५ ति ३ पंच ५ दुन्नि २ चउरो ४ य।
पंच ५ य एग १ एग १, दस १० एय उत्तरगुण २ च ४ ॥ २ ॥
पण ५ पण ५ इग १ य तिन्नि ३ य, एग १ चउरो ४ दुन्नि २ एक १ पण ५ पणग ५।
परिणामेयरभेया, बोद्धव्वा सुद्धबुद्धिहिं ॥ ३ ॥"

(१०५) भगवती (श २५, उ ४)

युग्म	धर्म	अधर्म	आकाश	जीव	पुद्गल	काल
द्रव्यार्थे	१	१	१	४	४।३ २।१	४
प्रदेशार्थे	४	४	४	,,	४	०
प्रदेशावगाढ	,,	,,	,,	,,	,,	०
समयस्थिति	,,	,,	,,	,,	,,	०

१ परिणामजीवमूर्ताः सप्रदेशा एकक्षेत्रक्रियाश्च। नित्य कारण कर्ता, सर्वगत इतरे हि चाप्रदेशा ॥ १ ॥
द्वे च एकं एक पञ्च त्रि पञ्च त्रि पञ्च द्वे चत्वारि च। पञ्च च एक एक दश एते उत्तरगुणाश्च ॥ २ ॥
पञ्च पञ्च एक त्रीणि च एक चत्वारि द्वे एक पञ्च पञ्च च। परिणामेतरभेदा बोद्धव्या शुद्धबुद्धिभि ॥ ३ ॥

युग्म		धर्म	अधर्म	आकाश	जीव	पुद्गल	काल
अल्प बहुत्व	द्रव्यार्थे	१	१	१	३ अनंत गुण	५ अनंत गुण	७ अनंत गुण
	प्रदेशार्थे	२ असंख्य	२ असंख्य	८ अनंत	४ असंख्य	६ असंख्य	०

(१०६)

१	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय ३	द्रव्यार्थ	स्तोक
२	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय २	पएस (प्रदेश)	असंख्य
३	जीवास्तिकाय १	द्रव्यार्थ	अनंत
४	,, ,,	पएस	असंख्य
५	पुद्गलास्तिकाय ,,	द्रव्यार्थ	अनंत
६	,, ,,	पएस	असंख्य
७	काल	द्रव्यार्थ	अनंत
८	आकाशास्तिकाय १	प्रदेश	,,

अथ कालकी अल्पबहुत्व ६२ बोल

(१) सर्वसें स्तोक समयनो काल, (२) आवलिनो काल असंख्य गुण, (३) जघन्य अंतर्मुहूर्त १ समय अधिक, (४) जघन्य आयुबंधकाल संख्येय गुण, (५) उत्कृष्ट आयुबंधकाल संख्येय गुण, (६) जघन्य अपर्याप्त एकेन्द्रिय न संख्येय, (७) उत्कृष्ट अपर्याप्त एकेन्द्रियनो विशेष, (८) पर्याप्त एकेन्द्रियनो जघन्य काल विशेष, (९) पर्याप्त निगोद उत्कृष्ट विशेष अधिक, (१०) उत्कृष्ट त्रसकायविरह स०, (११) जघन्य अपर्याप्त बेइंद्रीनो विशेष०, (१२) उत्कृष्ट अपर्याप्त बेइंद्रीनो विशेष०, (१३) जघन्य पर्याप्त बेइंद्रीनो विशेष०, (१४) जघन्य तेइंद्री अपर्याप्त काल विशेष०, (१५) उत्कृष्ट अपर्याप्त तेइंद्रीनो विशेष०, (१६) जघन्य पर्याप्त तेइंद्रीनो विशेष०, (१७) उत्कृष्ट पर्याप्त चौरिंद्रीनो विशेष०, (१८) उत्कृष्ट अपर्याप्त चौरिंद्री विशेष०, (१९) जघन्य पर्याप्त चौरिंद्री विशेष०, (२०) जघन्य अपर्याप्त पचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पचेंद्रीनो विशेष०, (२२) जघन्य पर्याप्त पचेंद्रीनो विशेष०, (२३) उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त काल संख्येय, (२४) मुहूर्तनो काल समय १ अधिक विशेष, (२५) अहोरात्रनो काल संख्येय गुण, (२६) उत्कृष्ट तेउकायनी स्थिति स०, (२७) पक्षनो काल संख्येय गुण, (२८) मासनो काल संख्येय गुण, (२९) तेइंद्रीनी उत्कृष्ट स्थिति विशेष०, (३०) ऋतुनो काल विशेष०, (३१) आयन वा चौरिंद्री उत्कृष्ट स्थिति सं०, (३२) वर्षनो काल संख्येय गुण, (३३) युगनो काल संख्येय

गुण, (३४) बेइंद्री उत्कृष्ट स्थिति सख्येय, (३५) वायुकाय उत्कृष्ट स्थिति सख्येय, (३६) अप्काय उत्कृष्ट स्थिति सख्येय, (३७) वनस्पति उत्कृष्ट या देव, नरक जघन्य वि०, (३८) पृथ्वीकाय उत्कृष्ट स्थिति सख्येय, (३९) उद्धार पल्यनो असख्य भाग सख्येय, (४०) उद्धार पल्यनो काल असख्य गुण, (४१) उद्धार सागरनो काल सख्येय, (४२) जघन्य अद्धा पल्यका असख्य भाग असख्येय, (४३) उत्कृष्ट अद्धा पल्यका असख्य भाग असख्य, (४४) अद्धा पल्यनो काल असख्य गुण, (४५) उत्कृष्ट मनुष्यनी कायस्थिति सख्येय, (४६) अद्धा-सागरनो काल सख्येय, (४७) उत्कृष्ट देव नारक स्थिति सख्येय, (४८) अवसर्पिणी उत्स-र्पिणी काल स०, (४९) क्षेत्र पल्यनो काल असख्य गुण, (५०) क्षेत्रसागरनो काल संख्येय गुण, (५१) तेउनी उत्कृष्ट कायस्थिति असंख्य, (५२) वायुनी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५३) अप्नी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५४) पृथ्वीनी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५५) कार्मण पुद्गलपरावर्तन अनत गुण, (५६) तैजस पुद्गल परावर्तन अनत गुण, (५७) औदारिक पुद्गल परावर्तन अनत, (५८) श्वासोच्छ्वास पुद्गल परावर्तन अनत, (५९) वैक्रिय पुद्गलपराव-र्तन अनत गुण, (६०) वनस्पतिनी उत्कृष्ट कायस्थिति असख्य, (६१) अतीत अद्धा अनत गुण, (६२) अनागत अद्धा विशेष अधिक.

(१०७) द्रव्य ६, गुण चार २ एकेकना निल्य है

धर्म	अरूपी १	अचेतन २	अक्रिया ३	गतिसहाय ४
अधर्म	,, ,,	,, ,,	,, ,,	स्थितिस्वभाव ,,
आकाश	,, ,,	,, ,,	,, ,,	अवगाहदान ,,
काल	,, ,,	,, ,,	,, ,,	वर्तमान व जीर्ण ,,
पुद्गल	रूपी ,,	,, ,,	सक्रिय ,,	पूरण गलन ,,
जीव	अनत ज्ञान ,,	अनत दर्शन ,,	अनत चारित्र ,,	अनत वीर्य ,,

(१०८) पर्याय षट् द्रव्यना चार चार

धर्म १	स्कध निल्य	देश अनित्य	प्रदेश अनित्य	अगुरुलघु
अधर्म २	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,,
आकाश ३	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,,
काल ४	अतीत	अनागत	वर्तमान	,,
पुद्गल	वर्ण	गन्ध	रस	स्पर्श
जीव	शुद्ध	लघु	अगुरुलघु	अव्याबाध

पुद्गलका वर्ण आदि, धर्म अगुरुलघु पर्याय.

(१०९) पुद्गलयन्त्र भगवती (श० २०, उ ४)

	वर्ण	गन्ध	रस	स्पर्श	संस्थान	भग
१ परमाणु	५	२	५	४	१	२००
२ प्रदेश	१५	३	१५	९	२	
३ „	४५	५	४१	२५	३	
४ „	९०	६	९०	३६	४	
५ „	१४१	„	१४१	„	५	
६ „	१८६	„	१८६	६	„	
७ „	२१६	„	२१६	„	„	
८ „	२३१	„	२३१	„	„	
९ „	२३६	„	२३६	„	„	
१० „	२३७	„	२३७	„	„	
२० „	„	„	„	„	६	

(११०) भगवती शते ८ उद्देशे १ मे पुद्गलयन्त्र

पुद्गल	प्रयोगपरिणत	मीसा (मिश्र)	विस्रसा
अल्पबहुत्व	१ स्तोक	२ अनत गुणा	३ अनत गुणा

जीवे ग्रह्या 'प्रयोग,' सा जीनने तज्या परिणामांतरे परिणम्या नही ते 'मीसा,' स्वभावे परिणम्या अग्रवत् ते 'विस्रसा,' एवम् ३.

नरक ७, भवनपति १०, व्यतर ८, ज्योतिषी ५, देवलोक २६, सूक्ष्म ५, स्थावर बादर ५, बेइंद्री १, तेइंद्री १, चौरिंद्री १, असन्नी पचेंद्री ५, सन्नी पचेंद्री तिर्यंच ५, असन्नी मनुष्य १, सन्नी मनुष्य १, एन सर्व ८१, ए प्रथम दडक इनकू अपर्याप्तसे गुण्या ८१, पर्याप्त अपर्याप्त १६१, शरीरसे गुण्या ४९१, जीवेंद्रीसे गुण्या ७१३, शरीरेंद्रीसे गुण्या २१७५ १६१ कू पांच वर्ण, पांच गध, पांच रस, आठ स्पर्श, पांच सस्थानसे गुण्या ४०२५, ४९१. कू इन पचीससे गुण्या ११६३१ (१२२७५?), ७१३ कू इन वर्ण आदि २५ से गुण्या १७८२५, २१७५ कू इन २५ से गुण्या ५१५२३ (५४३७५?).

इति आतमरामसकलता(ना?)यां अजीवतत्त्व द्वितीय सपूर्ण ॥



अर्हं नमः ॥ अथ 'पुण्य' तत्त्व लिख्यते—

नव प्रकारे बांधे पुण्य, ४२ प्रकारे भोगवे. सातावेदनीय १, देव २, मनुष्य ३ तिर्यंचना आयु ४, देवगति ५, मनुष्यगति ६, पचेन्द्रिय ७, औदारीक ८, वैक्रिय ९, आहारक १०, तैजस ११, कार्मण शरीर १२, तीन अंगोपांग १५, वज्रऋषभनाराच सहनन १६, समचतुरस्र सस्थान १७, शुभ वर्ण १८, गध १९, रस २०, स्पर्श २१, देव-आनुपूर्वी २२, मनुष्य-आनुपूर्वी २३, प्रशस्त खगति २४, पराघात २५, उच्छ्वास २६, आतप २७, उद्द्योत २८, अगुरुलघु २९, तीर्थंकर ३०, निर्माण ३१, त्रस ३२, बादर ३३, पर्याप्त ३४, प्रत्येक ३५, स्थिर ३६, शुभ ३७, सौभाग्य (सुभग) ३८, सुस्वर ३९, आदेय ४०, यशकीर्ति ४१, उच्च गोत्र ४२, ए प्रकारे पुण्य भोगवे.

अथ उत्कृष्ट पुण्य प्रकृतिवान् तीर्थंकर महाराजका समवसरणस्वरूप लिख्यते—

"[1]मुणि वेमाणिया देवि साहुणि ठंति अग्गिकोणंमि ।
जोइसिय भवण वितर देवीओ हुति नेरईए ॥ १ ॥
भवणवणजोइदेवा वायव्वे कप्पवासिणो अमरा ।
नरनारीओ ईसाणे पुव्वाइसु पविसिउ ठंति ॥ २ ॥

द्वादश परिषत् नाम—

"उसभस्स तिन्नि गाऊ बत्तीस धनुणि वद्धमाणस्स ।
सेसजिणाण असोगो देहाउ दुवालसगुणो य ॥ १ ॥
किंकिल्लि कुसुमवुट्ठी दिव्वझुणि चामरासणाइं ।
भामडल य छत्त भेरी जिणिंद (?जयति) जिणपाडिहेराइं ॥ २ ॥
दप्पण भद्दासण वद्धमाण वरकलस मच्छ सिरिवच्छा ।
सत्थिय नंदावत्तो विविहा अट्ठ मगल्ला ॥ ३ ॥

समवसरण अढाइ कोस धरतीसे ऊचा जानना अवरे । मध्यमे मणीपीठको [के] उपरिं आसन चार है. तीन चारो ही सिंहासनाके उपरि अशोक वृक्ष छाया करता है. पूर्वके सिंहासन उपर तीर्थंकर त्रैलोक्यपूज्य परम देव विराजमान होय है. अने अन्य सिंहासन तीन उपरि भगवान् सरीपे(खे) तीन रूप व्यतर देवता बनाय कर स्थापन करते हैं. सो भगवान्की अतिशय करी भगवान् सदृश दिखलाइ देते हे. ऐसा मालूम होवे है जानो एह भगवान् ही

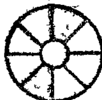
---

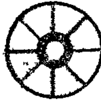
1 मुनयो वैमानिका देव्य साध्व्यस्तिष्ठन्ति अग्निकोणे । ज्योतिष्कभवन(पति)व्यन्तरदेव्या भवन्ति नैऋते ॥
भवनवनज्योतिर्देवा वायव्ये कल्पवासिनोऽमरा । नरनार्य ईशाने पूर्वादिषु प्रविश्य तिष्ठन्ति ॥
ऋषभस्य त्रीणि गव्यूतानि द्वात्रिंशद् धनूंषि वर्धमानस्य । शेषजिनानामशोको देहाद् द्वादशगुण श्च ॥
कङ्केल्लि कुसुमवृष्टिर्दिव्यध्वनिश्चामरासनानि । भामण्डल च छत्र भेरी जिनेन्द्र। जिनप्रातिहार्याणि ॥
दर्पणो भद्रासनं वर्धमान वरकलश मत्स्य श्रीवत्स । स्वस्तिको नन्द्यावर्तो विविधानि खलु मङ्गलानि ॥

१









अनुसंधान माटे जुओ पृ ६७

२

प्रथमगढ रत्नमय मणीमय कोसीसा १
दूजागढ सुवर्णमय रत्नमय कोसीसा २
तिजागढ रूपामय सुवर्णमय कोसीसा ३

मणी पीठका विस्तीर्ण धनु ५००

आठवान भी एकेक द्वारके पास दो दो है

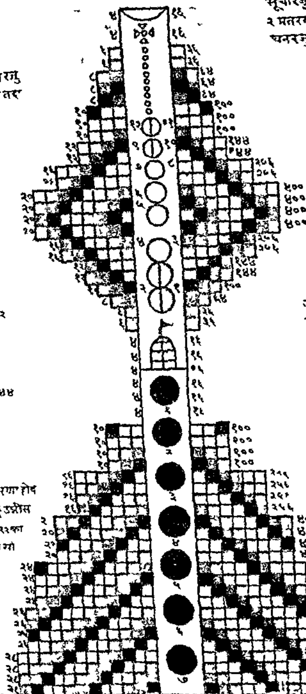
अनुसधान माटे
जुओ पृ १३६

उर्ध्वलोके खंडुक ९४०८
सूचीरज्जु २२४२
प्रतररज्जु ४८१
घनरज्जु ९४१

जब व्यवहारनयकरी पूर्ण सप्तरज्जु
प्रमाण घनीकृत लोक मानिये तब
ए प्रमाण होता है

३६ लोके खंडुक ४०६४
सूचीरज्जु १०१६
२ प्रतररज्जु २५४
घनरज्जु ६३॥

आना अनुसधा
पाछे जुओ पृ ६८



उभयलोके खंडुक २१९५२
सूचीरज्जु ५४८८
प्रतररज्जु १३७२
घनरज्जु ३४३
अधोलोके खंडुक १२५४४
सूचीरज्जु ३१३६
प्रतररज्जु ७९८
घनरज्जु १९६
ए व्यवहार नयमतेन
घन जो गाल गारमुकरणा होय
है ए इसा घनरज्जुपाकू उगणीस
१९ ए प्राकरके बावीस २२ का
भाग लेना जो हाथ आवे सो
सौकाघनरज्जु जानने

उभयलोके खंडुक ३१२९६
सूचीरज्जु ३८२४
प्रतररज्जु ९५६
घनरज्जु २३९
अधोलोके खंडुक ३१२३
सूचीरज्जु २८०८
प्रतररज्जु ८०२
घनरज्जु २७५॥

उपदेश देते है. हे नाथ! मेरी एह प्रार्थना है जो सचमुच आपका समवसरण देखूं भक्ति संयुक्त पदपंकज स्पर्शू मंस्तकेन.

(१११) (चक्री आदि संबंधी माहिती)

चक्री-नाम	पिता नाम	माता नाम	कुमार काल	मंडलिक काल	विजयेसा	पट्ट षड राज्य	दीक्षा काल	पूर्व जन्म नाम	पूर्व जन्म नगरी	आगति आया	गति गया	आयु	अवगाह	नगरी नाम
१ भरत	ऋषभदेव	सुमंगला	पूर्व ७७ लाख	वर्ष १०००	६० हजार वर्ष	पूर्व ६ लाख	पूर्व १ लाख	पीठी	पुंडरीकिणी	सर्वार्थसिद्ध	मोक्ष	पूर्व ८४ लक्ष	५०० धनु	विनीता
२ सगर	सुमति राना	यशोवती	पूर्व ५०० सहस्र	वर्ष ५० हजार	३० हजार वर्ष	वर्ष ७० लाख	पूर्व १ लाख	विजय राजा	पृथ्वीपुर	विजय विमान	"	पूर्व ७२ लक्ष	४५० धनु	अयोध्या
३ मघवा	समुद्रविजय	सुंभद्रा	वर्ष २२ लाख ५० हजार	वर्ष ५ हजार	१० हजार वर्ष	वर्ष ३ लाख ९० हजार	३ लाख	शि[3]शिभ राट्	पुंडरीकिणी	ग्रैवेयक	देवलोक ३	वर्ष ५ लाख	४२ धनु	श्रावस्ती
४ सनत्कुमार	अश्वसेन राट्	सहदेवी	वर्ष ५० हजार	"	१ हजार वर्ष	वर्ष ९० हजार	वर्ष १० हजार	मेघ राजा	महापुरी	महेन्द्र ४	"	वर्ष ३ लाख	४१ धनु	हस्तिनापुर
५ शांतिनाथ	विश्वसेन राट्	अचिरा	वर्ष २५ हजार	वर्ष २५ हजार	वर्ष ८००	वर्ष २४२००	वर्ष २५ हजार	मेघरथ राजा	पुंडरीकिणी	सर्वार्थसिद्ध	मोक्ष	वर्ष १ लाख	४० धनु	गजपुर
६ कुंथुनाथ	सूरसेन राट्	श्री राणी	२३७५० वर्ष	वर्ष २३७५०	वर्ष ६००	वर्ष २३१५०	वर्ष २३१५०	सिंह[6]रथ राजा	सुसीमा	"	"	वर्ष ९५ सहस्र	३५ धनु	"
७ अरनाथ	सुदर्शन	देवी राणी	वर्ष २१ हजार	वर्ष २१ हजार	वर्ष ५००	वर्ष २०६००	वर्ष २१ हजार	धनपति राट्	क्षेम[8]पुरी	अपराजित	"	वर्ष ८४ सहस्र	३० धनु	"
८ सुभूम	कार्तिवीर्य	तारा राणी	वर्ष ५ हजार	वर्ष ५ हजार	"	वर्ष ४९५००	दीक्षा नहीं	केनाभ राजा	धनपुरी	जयंत विमान	७ मी नरक	वर्ष ६० सहस्र	२८ धनु	"
९ महापद्म	पद्मोत्तर राजा	ज(ज्वा)ला देवी	वर्ष ५००	वर्ष ५००	वर्ष ३००	वर्ष १८७००	वर्ष १० हजार	[11]चितहु राजा	[12]वीतशोका	ब्रह्मदेव	मोक्ष	वर्ष ३० सहस्र	२० धनु	वाराणसी

१ मस्तक वडे ।

२–१२ आ हेमज बीजां पण केटलाक नामो त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रथी जुदां पडे छे ते विचारणीय छे।

१० हरि-षेण	महाहरि	मोरा राणी	वर्ष ३२५	वर्ष ३२५	वर्ष १५०	वर्ष ३२५०	वर्ष ३५०	महेन्द्र राट्र	विजयपुर	महेन्द्र ४	”	वर्ष १० सहस्र	१५ धनु	कपिलपुर
११ जय	विजय राजा	विप्रा राणी	वर्ष ३०००	वर्ष ३०००	वर्ष १००	वर्ष १९००	वर्ष ३००	अमित राट्र	राजपुर	ब्रह्मलोक	”	वर्ष ३ सहस्र	१२ धनु	राजगृह
१२ ब्रह्मदत्त	ब्रह्मभूत राजा	चूलणी	वर्ष २८	वर्ष ५६	वर्ष १६	वर्ष ६००	दीक्षा नही	सभूतजी	काशी	महाशुक्र	७ मी नरक	वर्ष ७००	७ धनु	कपिलपुर

९ वासुदेव	त्रिपृष्ठ	द्विपृष्ठ	स्वयभू	पुरुषोत्तम	पुरुष सिंह	पुरुषपुडरीक	दत्त	नारायण लक्ष्मण	कृष्ण
पूर्व भव नाम	विश्वभूति	पर्वत	धनदत्त	समुद्र दत्त	सैयाल	मित्र	ललित मित्र	पुनर्वसु	गगदत्त
पूर्व भव आचार्य	सभूति	सुभद्र	सुदर्शन	शीतल	श्रेयास	कृष्ण	गगदत्त	सागर समित	द्रुमसेन
निदान नगर	मथुरा	प्रोतवृक्ष (?)	श्रावस्ती	पोतनपुर	राजगृह	काकदी	कौशाबी	मिथिला	हस्तिनापुर
पिता नाम	प्रजापति	ब्रह्मा	सौम्य	रुद्र	शिव	महाशिर	अग्नि शिख	दशरथ	वसुदेव
माता नाम	मृगावती	उमा	पृथ्वी	सीता	अमृता	लक्ष्मी	शेष मति	कैकेयी सुमित्रा	देवकी
अवगाहना-धनु	८०	७०	६०	५०	४५	२९	२६	१६	१०
गति-नरक	सातमी	छठी	छठी	छठी	पाचमी	छठी	छठी	चौथी	त्रीजी
आयु-वर्ष	८४ लक्ष	७२ लक्ष	६० लक्ष	३० लक्ष	१० लक्ष	६५ सहस्र	५६ हजार	१२ सहस्र	१ सहस्र

९ प्रतिवासुदेव	अश्व ग्रीव	[मे]तारक	मेरक	मधुकैसव (टम)	निसुभ	बल	प्रह्लाद	रावण	जरासिंध

९ बलदेव	अचल	विजय	भद्र	सुप्रभ	सुदर्शन	अ॰			राम बलभद्र
पूर्व भव नाम	विश्वनंदी	स(सु)बधु	सागर दत्त	ललित					

माता नाम	भद्रा	सुभद्रा	सुप्रमा	सुदर्शना	विजया	वैजयती	जयंती	अपरा जिता	रोहिणी
गति	मोक्ष	———	———→	ए	ध	म्	———	———→	ब्रह्मलोक
आयु	८५ लक्ष वर्ष	७५ लक्ष वर्ष	६५ लक्ष वर्ष		१७ लक्ष वर्ष	८५ हजार वर्ष	६० हजार वर्ष	१५ हजार वर्ष	१२ सो वर्ष
तीर्थंकरके वारे	श्रेयास	वासु पूज्य	विमल नाथ	अनत नाथ	धर्मनाथ	१८।१९ के अतरे	१८।१९ वे अतरे	२०।२१ ने अतरे	नेमि-नाथ
वर्ण	सुवर्ण	———	———	———→	ए	ध	म्	———	———→

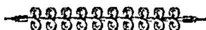
इति नवतत्त्वसग्रहे पुण्यतत्त्व तृतीया(य) सपूर्णम्.



अथ 'पाप'तत्त्व लिख्यते—प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, पैशुन्य १४, परापवाद १५, रतिअरति १६, मायामृषा १७, मिथ्यादर्शनशल्य १८ इनसे पापका बंध होइ

८२ प्रकारे पाप भोगवे—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १, मोहनीय २६, नरक-आयु १, नरक तिर्यंच गति २, जाति ४, सहनन ५, सस्थान ५, अशुभ वर्ण आदि ४, नरक तिर्यंच-आनुपूर्वी २, अशुभ विहायोगति १, उपघात १, स्थावरदशक १०, नीच गोत्र १, अतराय ५, एव सर्व ८२ प्रकारे भोगवे.

इति नवतत्त्वसग्रहे पापतत्त्व चतुर्थ सम्पूर्णम्.



अथ 'आश्रव'तत्त्व लिख्यते—

२५ क्रियाओ—(१) काइया—कायाव्यापार करी नीपनी ते 'कायिकी'. (२) अहिगरणीया—जिस करी जीव नरक आदिकनो अधिकारी होय ते 'अधिकरण', ते भूडा अनुष्ठान अथवा खड्ग आदि तिहा उपनी ते 'अधिकारणिकी'. (३) पाउसिया—मत्सरभावे नीपनी ते 'प्राद्वेपिकी'. (४) परियावणिया—आपकू अथवा परकू परितापना करता 'पारितापनिकी. (५) पाणाइवातिया—अपणा अथवा परना प्राण हरता 'प्राणातिपात' क्रिया. (६) आरभिया—जीवने वा जीवना कलेवरने तथा पीठीमय जीवना आकारने अथवा वस्त्र आदिकने आरंभतां-मर्दतां 'आरभिकी'. ७ परिग्गहिया—जीवका अने अजीवका परिग्रह

करता 'पारिग्रहिकी'. ८ मायावत्तिया—माया तेह ज प्रत्यय-कारण है कर्मबंधनो ते 'मायाप्रत्ययिकी'. ९ मिच्छादसणवत्तिया—हीन प्रमाणसे वा अधिक माने ते 'मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी'. १० अपच्चक्खाण—जीवना अथवा अजीव मद्य आदिनो प्रत्याख्यान नही ते. (११) दिट्ठिया—देखने जाना अथवा देखना तेहथी जे पाप ते 'दृष्टिजा'. (१२) पुट्ठिया—पूछने करी अथवा स्पर्शवे करी जे कर्म ते 'स्पृष्टिजा'. (१३) पाडुच्चिया—बाह्य वस्तु आश्री उपजे ते 'प्रातीत्यकी'. (१४) सामंतोवणिया-समन्तात्-चौ फेरे उपनिपात-लोकोका मिलना तिहां जे उपनी ते 'सामंतोपनिपातिकी'. साढ आदि रथ आदि लोक देखीने प्रशसे तिम तिम धणी हर्षे ते धणीने 'सामंतोपनिपातिकी' क्रिया लागे. (१५) सहत्थिया—आपणे हस्तसे उपनी ते 'स्वाहस्तिकी'. (१६) निसत्थिया—नाखणे से सेडलादिसे नीपनी ते 'नैसृष्टिकी'. (१७) आणवणिया—पापनो आदेश देवो ते 'आज्ञापनिकी' अथवा वस्तु मगावणी. (१८) वियारणिया—जीवने वेदारतां वा दलालने जीव आदि वेचवानां अथवा पुरुषने विप्रतारवा 'वैदारिणी', 'वैचारणिकी', 'वैतारणिकी' ए ३ पर्याय. (१९) अणाभोगवत्तिया—अज्ञानना कारण थकी उपनी ते 'अनाभोगप्रत्ययिकी'. (२०) अणवकखवत्तिया—अपणे शरीर आदिने ते निमित्त है जिसका ते 'अनवकांक्षाप्रत्ययिकी'. एतावता कुकर्म करता हुया परभवसे डरे नही. (२१) पेज्जवत्तिया—रागसे उपनी माया लोभरूप ('प्रेमप्रत्ययिकी'). (२२) दोसवत्तिया—द्वेषथी उपनी क्रोध, मानरूप ('द्वेषप्रत्ययिकी'). (२३) पओगकिरिया—काया आदिकना व्यापारथी नीपनी ते 'प्रयोग'क्रिया. (२४) समुदाणकिरिया—अष्ट कर्मनो ग्रहवो ते 'समुदान'क्रिया (२५) ईरियावहिया—योग निमित्त है जेहनो ते ('ईर्यापथिकी'), कायाना योग थकी बंध पडे.

हेतु सत्तावन कर्मग्रन्थात्—मिथ्यात्व ५, अव्रत १२, कषाय २५, योग १५, एवं सर्व ५७ हेतु. इनका गुणस्थान उपर स्वरूप गुणस्थानद्वारसे जान लेना. और विशेष आश्रव त्रिभंगीसे जानना.

श्रीस्थानांग (१० मे) स्थाने दस भेदे असंवर—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असंवर, (२) चक्षुरिन्द्रिय असंवर, (३) घ्राणेन्द्रिय असंवर, (४) रसनेन्द्रिय असंवर, (५) स्पर्शनेन्द्रिय-असंवर, (६) मन असंवर, (७) वचन-असंवर, (८) काय-असंवर, (९) भंडोपगरण असंवर, (१०) सूची कुसग्ग असंवर, एवं ए दस आश्रवके भेद है. तथा आश्रवके ४२ भेद—इन्द्रिय ५, कषाय ४, अव्रत ५, योग ३, क्रिया २५; एवं ४२. इति आश्रवतत्त्व पचमं सम्पूर्णम्.

अथ 'संवर' तत्त्व स्वरूप लिख्यते—

पांच चरित्र, षट् निर्ग्रन्थ. प्रथम षट्निर्ग्रंथस्वरूप—(१) पुलाक, (२) बकुश, (३) प्रतिसेवना(कुशील), (४) कषायकुशील, (५) निर्ग्रंथ अने (६) स्नातक. पुलाकके ५ भेद—

१ कर्मबन्धनी। २ भाण्डोपकरण।

ज्ञानपुलाक (अर्थात्) ज्ञानका विराधक १, एव दर्शनपुलाक २, एव चारित्रपुलाक ३, विना कारण अन्य लिंग करे ते लिंगपुलाक ४, मन करी अकल्पनिक सेवे ते यथा सूक्ष्मपुलाक ५. लब्धिपुलाकका स्वरूप वृत्तिसे जानना. बकुशके ५ भेद—साधुके करणे योग्य नही शरीर, उपकरणकी विभूषा ते करे जानके ते आभोगबकुश १, अनजाने दोष अनाभोगबकुश २, छाने दोष लगावे ते संवृतबकुश ३, प्रगट दोष लगावे ते असंवृतबकुश ४, आख, मुख मांजे ते यथासूक्ष्मबकुश. ५. प्रतिसेवना कुशीलके ५ भेद—सेवना सम्यक् आराधना, तिसका प्रतिपक्ष प्रतिसेवना, ज्ञानता ज्ञान आदि आराधे नही. ज्ञान नही आराधे ते ज्ञानप्रतिसेवना १; एव दर्शन २, चारित्र ३, लिंग ४, जो तपस्या करे वांछा सहित ते यथासूक्ष्मप्रतिसेवना ५. कषायकुशीलके ५ भेद—जो ज्ञान, दर्शन, लिंग, कषाय क्रोध आदि करी प्रयु(यु)जे सो ज्ञान १, दर्शन २, लिंग ३ कुशील; कषायके परिणाम चारित्रमे प्रवर्तावे ते चारित्रकुशील ४, मन करी क्रोध आदि सेवे ते यथासूक्ष्मकषायकुशील ५. उपशांतमोह तथा क्षीणमोहके अंतर्मुहूर्त कालके प्रथम समय वर्त्तमान ते प्रथम समय निर्ग्रन्थ १, शेष समयमे अप्रथम समय निर्ग्रन्थ २, एव निर्ग्रन्थ कालके चरम समयमे वर्तमान ते चरम समय निर्ग्रन्थ ३, शेष समयमे अचरम समय निर्ग्रन्थ ४, सामान्य प्रकारे सर्व काल यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थ ५ इति परिभाषाकी सज्ञा. स्नातकके ५ भेद—अच्छवी अत्थरी, अव्यथक इति. अन्ये आचार्या छविन्चांमडी योगनिरोधकाले नही इति अच्छवि, एक आचार्य ऐसे कहे है. क्षपी सखेद व्यापार ते जिनके नही ते अक्षपी, एक आचार्य ऐसे कहे है—घातिकर्म चार क्षपाय है फेर क्षपावणे नही इस वास्ते 'अक्षपी' कहीये १, अशबल अतिचारपकाभावात्. शुद्ध चारित्र २, विगतघातिकर्म अकर्मांश ३, शुद्धज्ञानदर्शनधर केवलधारी ४, अर्हन् जिन केवली ए चौथा भेदमे है. इति वृत्तौ. कर्म न चावे ते 'अपरिश्रावी' ५, योगनिरोधकाले. अथ अग्रे ३६ द्वार यत्रसे जानने—

गाथा भगवती (श. २५, उ. ६)मे सर्वद्वारसग्रह—

"पण्णवण १ वेय २ रागे ३, कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७ ॥
तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १०, खित्त (खेत्ते) ११ काल १२ गई १३ सजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥
जोगु १६ वओग १७ कसाए १८, लेसा १९ परिणाम २० बध २१ वेए २२ य।
कम्मोदीरण २३ उवसप(जहण्ण) २४ सण्णा २५ य आहारे २६ ॥ २ ॥
भव २७ आगरिसे २८ कालतरे २९–३० य समुग्घाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा ३३ य।
भावे ३४ परिमाणे ३५ खलु (चिय) अप्पाबहुय नियंठाण ३६ ॥ ३ ॥"

---

१ अतिचाररूप कादवना अभावथी।

२ प्रज्ञापनवेदरागा कल्पचारित्रप्रतिषेवणाज्ञानानि। तीर्थलिङ्गशरीराणि क्षेत्रकालगतिसंयमनिकर्षाः ॥ १ ॥
योगोपयोगकषाया लेश्यापरिणामबन्धवेदाश्च। कर्मोदीरणोपसम्पद्धानसंज्ञाश्चाहार ॥ २ ॥
भव आकर्ष कालान्तरे च समुद्घातक्षेत्रस्पर्शनाश्च। भाव परिणाम खलु अल्पबहुत्व निर्ग्रन्थानाम् ॥ ३ ॥

(११२) अथ ३६ द्वार यन्त्रमे वर्णन करीये है—

१ प्रज्ञापन	१ पुलाक	२ बकुश	३ प्रतिसेवना	४ कषाय-कुशील	निर्ग्रंथ	स्नातक
२ वेद	पुरुष, नपुंसक, कृत्रिम पिण जन्मनपुंसक नही इति वृत्तौ	स्त्री, पुरुष, नपुंसक कृत्रिम	बकुशवत्	बकुशवत् अथवा क्षीणवेद उपशांतवेदे भवेत्[1]	उपशांतवेद, क्षीणवेद	क्षीण वेद
३ राग	सरागी	सरागी	सरागी	सरागी	उपशांत क्षीण	क्षीण राग
४ कल्प	स्थित, अस्थित, स्थविर	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर	बकुशवत् ४	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर, कल्पातीत	स्थित, अस्थित, कल्पातीत	निर्ग्रंथ वत्
५ चारित्र	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	सामायिक, छेदोपस्थापनीय	आद्य चार	यथाख्यात	यथा ख्यात
६ प्रतिसेवना	मूल गुण, उत्तर गुण	उत्तर गुण	पुलाकवत्	अप्रतिसेवि	अप्रतिसेवी	अप्रति सेवी
७ ज्ञान प्रवचन	२ वा ३ प्रवचन, ज० ८, उ० नवमे पूर्वकी ३ वस्तु	२ वा ३ प्रवचन, ज० ८, उ० १० पूर्व	बकुशवत्	२ वा ३ वा ४ प्रवचन; ज० ८, उ० १४ पूर्व	कषायकुशील वत्	केवल सूत्र व्यति रिक्त
८ तीर्थ	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे अतीर्थमे वा	कषायकुशील वत्	कषाय कुशील वत्
९ लिंग	द्रव्ये ३ भावे स्वलिंग	→	प	व	म्	→
१० शरीर	३ औ, तै, का	४ औ, वै, तै, का	४ औ, वै, तै, का	पांच	३ औ, तै, का	३ औ, तै, का
११ क्षेत्र	जन्म कर्मभूमि संहरण नही	जन्म कर्म० संहरण अकर्म०	→	व	त	म्

[1] क्षीणवेदमां अथवा उपशांतवेदमां होय।

१२ फाल		अवसर्पिणीमे जन्म आश्री ३।४ आरे छता भाव आश्री ३।४।५ आरे उत्सर्पिणीमें जन्म आश्री २।३।४ आरे, छता भाव आश्री ३।४ आरे	जन्म अवसर्पिणी ३।४।५ आरे, छता ३।४ आरे, उत्सर्पिणी जन्म आश्री ३।४।२, छता ३।४, सहरण सर्व	बकुशवत्	बकुशवत्	जन्म आश्री पुलाकवत् सहरण आश्री सपेत्र	निर्ग्रन्थ वत्
१३ गति, पदवी—इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंशत्, लोषपाल, अहमिन्द्र		ज० सौधर्म, उ० ८ मा देवलोक; पदवी ४ मेसु एक; स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० १८ सागरोपम	ज० सौधर्म, उ० १२ मे देवलोक, पदवी ४ मेसु एक; स्थिति ज० पृथक् पल्योपम, उ० २२ सागरोपम	बकुशवत्	ज० सौधर्म, उ० पाच अनुत्तर; पदवी पाच मेसु एक; ज० पृथक्पल्योपम, उ० ३३ सागरोपम	पाच अनुत्तरमे; पदवी एक अहमिन्द्र; स्थिति ज० उ० ३३ सागरोपम	मोक्ष गति
१४ सयमस्थान अल्पबहुत्व		असख्याते, ३ असख्य गुणे	असख्याते, ४ असख्य गुणे	असख्याते, ५ असख्य गुणे	असंख्याते, ६ असख्य गुणे	एक, स्तोफ	एक, तुल्य
१५ चारित्र	पु	६ स्थान	अनत गुण हीन	अनत गुण हीन	६ स्थान	अनत गुण हीन	अनंत गुण हीन
पर्यायना	ब	अनत गुण अधिक	६ स्थान	६ स्थान	"	" " "	" " "
सन्निकर्ष	प्र	अनत गुण अधिक	" "	" "	" "	" " "	" " "
	क	६ स्थान	" "	" "	" "	" " "	" " "
	नि	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	तुल्य	तुल्य
	स्ना	अनत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	अनत गुण अधिक	"	"
जघन्य		१ स्तोक	३ अनत गुण	३ तुल्य	१ तुल्य	०	०
उत्कृष्ट		२ अनत गुण	४ "	५ अनत गुण	६ अनत गुण	७ क्षात	७ तुल्य

२५ संज्ञा	नोसंज्ञोपयुक्त	संज्ञोपयुक्त १, नोसंज्ञोपयुक्त २	एवम्	एवम्	नोसंज्ञोपयुक्त	नोसंज्ञोपयुक्त
२६ आहार	आहारक	आहारी	आहारी	आहारी	आहारी	आहारी अनाहारी
२७ भव	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ३	१ तेही ज०
२८ आकर्ष-एक भव आश्री	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० २	१
घणे भव आश्री	ज० २, उ० ७	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० ५	०
२९ स्थिति-एक जीव आश्री	ज० उ० अंतर्मुहूर्त	ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्व कोटि	एवम्	एवम्	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन पूर्व कोटि
नाना जीव आश्री	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	सर्वाद्धा	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	सर्वाद्धा
३० अंतर-एक जीव आश्री	ज० अंतर्मुहूर्त उ० वनस्पति काल	——→	एवम्	——→	——→	नास्ति अंतरम्
घणा जीव आश्री	ज० १ समय, उ० संख्यात वर्ष	नास्ति अन्तरम्	नास्ति अन्तरम्	नास्ति अन्तरम्	ज० १ समय, उ० ६ समय	" "

३१ समुद्घात	वे १, क २, मर ३	वे १, क २, म ३, वै ४, ते ५	वे १, क २, म ३, वै ४, ते ५	६ केवल नहीं	०	१ केवल
३२ क्षेत्र	लोकके असंख्यमें भाग	——→	एवम्	——→	——→	असंख्यमें घणे, असंख्य सर्व लोक
३३ स्पर्शन	"	"	"	"	"	"
३४ भाव	क्षयोपशम	ए	व	म्	औपशमिक वा क्षायिक	क्षायिक

३५ परिणाम	प्रतिपद्यमान [1]सिय अत्थि, [2]सिय नत्थि, जेदि अत्थि ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न स्याद् अस्ति स्याद् नास्ति यद्यस्ति ज० १, २, ३, उ० पृथक् सहस्र	प्रतिपद्यमान होवे, नहीं वी होवे, जोकर होवे तो ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न जघन्य, उत्कृष्ट पृथक् शतकोटि	प बु श व त्	प्रतिपद्यमान होवे वी, नहीं वी होवे, जो होवे तो ज० १, २, ३, उ० पृथक् सहस्र, पूर्व प्रतिपन्न जघन्य, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोटि	प्रतिपद्यमान होवे वी, नहीं वी होवे, जो होवे तो ज० १, २, ३, उ० १६२ तिनमें १०८ क्षपक [4] ५४ उपशम, पूर्व प्रतिपन्न होवे वी, नहीं वी होवे, होवे तो ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत	प्रतिपद्यमान स्याद् अस्ति, स्याद् नास्ति, यद्यस्ति तदा ज० १, २, ३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न ज० उ० पृथक् कोटि
३६ अल्प बहुत्व	२ संख्येय गुणा	४ संख्येय गुणा	५ संख्येय गुणा	६ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्येय गुणा

(११३) अथ श्रीभगवती (श० २५, उ ७) थी संयत ५ यन्त्रम्

१	प्रज्ञापना	सामायिक १	छेदोपस्थापनीय २	परिहार विशुद्धि ३	सूक्ष्म संपराय ४	यथाख्यात ५
२	वेद	३ वेद, अवेदी वा	सामायिकवत्	पुरुषवेद १, कृत नपुंसक वेद २	उपशांतवेद, क्षीणवेद	उपशांतवेद, क्षीणवेद
३	राग	सरागी ——→ प		प	म्	उपशांतराग, क्षीणराग
४	कल्प	स्थितकल्प १, अस्थित २, जिनकल्प ३, स्थविर ४, कल्पातीत ५	स्थितकल्प १, जिनकल्प २, स्थविरकल्प ३	स्थितकल्प १, जिनकल्प २, स्थविरकल्प ३	स्थितकल्प १, अस्थितकल्प २, कल्पातीत ३	स्थितकल्प १, अस्थितकल्प २, कल्पातीत ३
५	पुलाकादि षट्	आद्य ४	आद्य ४	कषायकुशील १	कषायकुशील १	निर्ग्रन्थ १, स्नातक २
६	प्रतिसेवना	मूलगुण १, उत्तरगुण २, सेवे प(ड)डे, अप्रतिसेवी ३	सामायिकवत्	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी

१ कथंचित् होय। २ कथंचित् न होय। ३ जो होय। ४,५,६ अनुक्रमे १,२,३ प्रमाणे।

७	ज्ञान	२।३।४ प्रवचन ज० ८ प्रवचन, उ० १४ पूर्व पठन करे	सामायिकवत्	२।२।३।४ ज्ञान प्रवचन, ज० ९ पूर्व, उ० १० मठेरा	२।३।४ ज्ञान, प्रवचन ज० ८, उ० १४ पूर्व	२।३।४।१ ज्ञान, प्रवचन, ज० ८, उ० १४ पूर्व श्रुतातीत
८	तीर्थ	तीर्थ अतीर्थे था	तीर्थ	तीर्थे	तीर्थे अतीर्थे	तीर्थे अतीर्थे
९	लिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्वलिंग	सामायिकवत्	द्रव्ये भावे १ स्वलिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्वलिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्वलिंग
१०	शरीर	५	५	३ औ तै, का	३ औ, तै, का	३ औ, तै, का
११	क्षेत्र	जन्म आश्री कर्मभूमि, संहरण आश्री सर्वत्र	जन्म० कर्म०, संह० सर्वत्र	कर्मभूमि	जन्म० कर्म०, संह० सर्वत्र	जन्म० कर्म०, संह० सर्वत्र
१२	काल	बकुशवत् अव सर्पिणी उत्स पिणी भावनीय	पडि बकुशवत्, नवर जन्म महाविदेह नहीं	पुलाकवत्	निग्रन्थवत्	निर्ग्रन्थवत् सर्व जानना
१३	गति	विराधक चार जातके देव तामे; आराधक ज० सौधर्म, उ० सर्वार्थ सिद्ध	सामायिकवत्	ज० सौधर्म, उ० ८ मा देव लोक	ज० उ० पंच[1] अनुत्तरेषु उत्पद्यते	अनुत्तर[2] विमाने वा सिद्धगती
१४	स्थिति, पदवी पामे	स्थिति ज० २ पल्योपम, उ० ३३ सागरोपम पदवी पाचमेस् अन्यतर १	सामायिकवत्	ज० २ पल्यो पम, उ० १८ सागरोपम; पदवी ४ मे अनतर एकाय	ज०, उ० ३३ सागरोपम पदवी एक— अहमिन्द्रकी पामे	ज०, उ० ३ सागरोपम, पदवी एक— अहमिन्द्र
१५	संयमस्थिति अल्पबहुत्व	असंख्याते ४ असंख्यगुणे	असंख्याते ४ तुल्य	असंख्याते ३ असंख्यगुणे	असंख्याते, अंतर्मुहूर्तके समय तुल्य २ असंख्यगुण	एकय १ स्तोक

१ पांच अनुत्तरोमा उत्पन्न थाय छे। २ 'अनुत्तर' विमानमां अथवा सिद्ध गतिमां।

	चारित्रपर्यवना सन्निकर्ष	०	सामायिक	छेदोपस्थापनीय	परिहारविशुद्धि	सूक्ष्मसंपराय	यथाख्यात
		सा०	६	६	६	अनंतगुणहीन	अनंतगुणहीन
		छे०	,,	,,	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
		प०	,,	,,	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
		सू०	अनंत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनंत गुण हीन अनंत गुण अधिक	अनंत गुण हीन
		य०	अनंत गुण अधिक	→ ए	व	म्	तुल्य
	चारित्र पर्यवनू जघन्य उत्कृष्ट अल्पबहुत्व		१ स्तोक	१ तुल्य	२ अनंत गुण	५ अनंत गुण	०
			४ अनंत गुण	४ ,,	३ ,, ,,	६ ,, ,,	७ अनंत गुण
१६	योग		मन आदि ३	→ ए	व	म्	मन आदि ३, अयोगी था
१७	उपयोग		साकार १, अनाकार २	→	ए	व	म्
१८	कषाय		४।३।२।१ संज्वलन	प्रथम्	४ संज्वलन	१ लोभ संज्वलन	उपशांतक्षीण था
१९	लेश्या		६ द्रव्ये	६ द्रव्ये	३ प्रशस्त	१ शुक्ल	१ परम शुक्ल
२०	परिणाम		वर्धमान, हीयमान, अवस्थित	वर्ध०, हीय०, अव०	वर्ध०, हीय०, अव०	वर्ध०, हीय०	वर्ध०, अव०
	परिणाम स्थिति		वर्ध० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त; हीय० ज० १ समय उ० अंतर्मुहूर्त; अ० ज० १ समय, उ० ७ समय	सामायिकवत्	सामायिकवत्	वर्ध० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त; हीय० ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	वर्ध० ज० उ० अंतर्मुहूर्त; अव० ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्वकोटि
२१	बंध		७,८	७,८	७,८	६ मोह, आयु नहीं	१ साता, अबंधक था

२२	वेदना(नीय) कर्म	८ वेदे	→ प	प	मू	७ या ४ वेदे
२३	उदीरणा	८,७,६, आयु, वेदनीय वर्जी	८,७,६	८,७,६,	६, ५; आयु, वेदनीय, मोह वर्जी	५ या २ अनुदीरक वा
२४	उपसंपत्ति त्याग	सामायिक छोडी छेदो० १, सू० २, असयम ३, सयमासं यम ४ आदरे	छेदो० छोडी सा० १, प० २ सू० ३, असयम ४, असंयमास यम ५ आदरे	परि० छोडी छे० १, असंयम २, प २ आदरे	सूक्ष्म० छोडी सा० १, छे० २, यथा० ३, असयम ४, प ४ आदरे	यथा० छोडी सू० १, अस यम २ आदरे
२५	संज्ञा	४ संज्ञा, नो संज्ञोपयुक्त वा	सामायिकवत्	सामायिकवत्	नोसंज्ञोपयुक्त	नोसंज्ञोपयुक्त
२६	आहार	आहारी	→ आहारी	आहारी	आहारी	आहारी, अना हारी वा
२७	भव केते करे ?	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ३
२८	आकर्ष एक भव आश्री;	ज० १, उ० पृथक् शत	ज० १, उ० १२०	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ४	ज० १, उ० २
	आकर्ष नाना भव आश्री	ज० २, उ० ७२००	ज० २, उ० नवसेंसे उप रात, हजारथी हेठे	ज० २, उ० ७ वेला	ज० २ उ० ९,	ज० २, उ० ५
२९	स्थिति एक जीव आश्री	ज० १ समय, उ० नव वर्ष ऊन पूर्व कोड	सामायिकवत्	ज० १ समय, उ० २९ वर्ष ऊन पूर्व कोड	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्व कोटि
	स्थिति घणा आश्री	सर्वाद्धा	ज० २५० वर्ष, उ० ५० लाख कोडि सागरोपम	ज० देश ऊन २०० वर्ष, उ० देश ऊन दो पूर्वकोटि	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त	सर्वाद्धा
३०	अंतर एक जीव आश्री	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० अनंत काल, अर्ध पुद्गल दे	→	प	प	मू

	अतर घणा जीव आश्री	नास्त्यन्तरम्	ज० ६३ सहस्र वर्ष, उ० १८ कोटाकोटि सागरोपम	ज० ८४ सहस्र वर्ष, उ १८ कोटाकोटि सागरोपम	ज० १ समय, उ० ६ मास	नास्ति अ तरम्
३१	समुद्घात	६ केवल वर्जी	६	धुरली ३	०	केवल १
३२	क्षेत्र	लोकने अस ख्यमे भाग	—> ए	व	म्	असख्यमे घणे, अस० सर्व लोक
३३	स्पर्शना	" " "	—> ए	व	म्	" "
३४	भाव	क्षयोपशम	—> ए	व	म्	उपशम, क्षय
३५	परिमाण	प्रतिपद्यमान होवे, नही बी होवे, जे, होने (तो) ज० १।२।३, उ० पृथक् सहस्र, पूर्वप्रतिपन्न पृथक् सहस्र कोड	प्रतिपद्यमान होवे, नही बी होवे; जो होवे (तो) ज० १।२।३, उ० पृथक् शत, पूर्वप्रतिपन्न होवे, न बी होवे, (जो होवे तो) ज० उ० पृथक् शत कोटि	पुलाकवत्	निर्ग्रन्थवत्	प्रतिपद्यमान होवे, नही बी होवे; जो होवे (तो) ज० १।२।३, उ० १६२, पूर्वप्रति पन्न पृथक् कोटि
३६	अल्पबहुत्व	५ सख्येय गुणा	४ सख्येय	२ सख्येय गुणा	१ स्तोक	३ सख्येय गुणा

(११४) भगवती (श ७, उ २, सू २७३) अल्पबहुत्व

१ यत्र	मूल गुण पच्चक्खाणी	उत्तरगुण पच्चक्खाणी	अपच्चक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असख्येय	३ अनत
तिर्यच पचेन्द्रिय	" "	" "	३ असख्य
मनुष्य	" "	" "	" "

२ यत्र	सर्वमूल	देशमूल	अपच्चक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असख्य	३ अनत गुण
तिर्यंच पचेन्द्रिय	०	१ स्तोक	,, असख्य
मनुष्य	१ स्तोक	२ सख्येय	,, ,,

३ यत्र	सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाणी	देश उत्तरगुण पच्चक्खाणी	अपच्चक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असख्य	३ अनत
तिर्यंच पचेन्द्रिय	,, ,,	,, ,,	,, ,,
मनुष्य	,, ,,	,, सख्य	,, असख्य

(११५) स्थानागस्थाने दशमे दशविध यतिधर्म

	नामपाठ	अर्थ		नामपाठ	अर्थ
१	खती	क्रोधनिग्रह	६	सच्चे	सत्यवादी
२	मुत्ती	निर्लोभता	७	सजमे	१७ सयमवान्
३	अज्जवे	सरल सभाव	८	तवे	द्वादशभेदी तपवान्
४	मद्दवे	मार्दव, अहकार रहित कोमल (सभाव)	९	चियाए	प्रतीतकारी घरका वस्त्र पात्र अन्य आदिलेवै(से?) साधूकू दान देवे
५	लाघवे	द्रव्ये भावे हलका	१०	बभचेरवासे	ब्रह्मचर्यके साथ सोवे

दश बोलमे 'वास' शब्द इस वास्ते कह्या है जैसे गृहस्थ अगनाके सग शयन करे है ऐसे शीलकू सग लेके रात्रौ वास करे इति वृत्तौ.

(११६) भगवती (श ८, उ ८) परीषह २२ यत्रकम्

	अष्ट कर्मके बधकसे परीषह २२	षड्विध बधकमे एक बध छद्मस्थमे	एकविध बधक वीतराग केवलीमे ११	कौनसे कर्मके उदय कौनसा परीषह?
१	क्षुधा	अस्ति १	अस्ति १	वेदनीयके उदय
२	तृट्	,, २	,, २	,, ,,
३	शीत	,, ३	,, ३	,, ,,
४	उष्ण	,, ४	,, ४	,, ,,
५	दशमशक	,, ५	,, ५	,, ,,
६	अचेल	०	०	चारित्रमोहके उदय

७	अरति	०	०	,, ,,
८	स्त्री	०	०	,, ,,
९	चर्य्या	अस्ति ६	अस्ति ६	वेदनीयके ,,
१०	नैषेधिकी	०	०	चारित्रमोहके ,,
११	शय्या	अस्ति ७	अस्ति ७	वेदनीयके ,,
१२	आक्रोश	०	०	चारित्रमोहके ,,
१३	वध	अस्ति ८	अस्ति ८	वेदनीयके ,,
१४	याचना	०	०	चारित्रमोहके ,,
१५	अलाभ	अस्ति ९	०	अंतरायके ,,
१६	रोग	,, १०	अस्ति ९	वेदनीयके ,,
१७	तृणस्पर्श	,, ११	,, १०	,, ,,
१८	मल	,, १२	,, ११	,, ,,
१९	सत्कारपुरस्कार	०	०	चारित्रमोहके ,,
२०	प्रज्ञा	अस्ति १३	०	ज्ञानावरणके ,,
२१	अज्ञान	,, १४	०	,, ,,
२२	दर्शन	०	०	दर्शनमोहके ,,
सत्ता २२			१४	११
वेदे एक साथे २०;		बावीसमे चर्य्या, निसिहिया एकतर; शीत, उष्ण एकतर	शीत होय तो उष्ण नही, उष्ण होय तो शीत नही; चर्य्या, शय्या एकतर; एव १९	शीत, उष्णमेसु एक; चर्या, शय्यामेसु एक तर; एव ९ वेदे एव अयोगी पिण

कोइ कहै जोकर कोइ पुरुष शीत कालमे अग्नि तापे है सो तिसके एक पासे तो उष्ण परीषह है अने एक पासे शीत लगे है, तो युगपद् दोनो परीषह क्यु न कहै ? तिसका उत्तर— एह दोनो परीषहकी विवक्षा शीत काल अने उष्ण कालकी अपेक्षा है, कुछ अग्निकी ताप अपेक्षा नही इति वृत्तौ, और परीषहकी चर्चा भगवतीजीकी टीकामे (पृ. ३८९) मे सरूप कथन किया है सोइ तिहांसे लिख्यते—

"[1]ज समय चरिया० नो त समय निसिहिया०" (भग० श. ८, उ. ८ सू. ३४३) इत्यादि. तिहां 'चर्या'परीषह तो ग्राम आदिकमे विहार अने 'नैषेधिकी' परीषह ग्राममे मासकल्प आदि रहणा अने 'शय्या' परीषह उपाश्रयमे जाकर बैसणा. इस अर्थ करकेइ इस कारण विहार अने अवस्थान अर्थात् तिसुने करके परस्पर विरोध है. इस वास्ते एक कालमे

[1] यद् समये चर्या० न तत्समये नैषेधिकी० ।

नही सभवे है. अथ प्रश्न—नैषेधिकी अने शय्या एह दोनो चर्याके साथ विरोधी है तो दोनोका एककालमे सभव हुया. यदि एककालमे सभव हुया तदि एककालमे १९ परीषह वेदे इह सिद्ध हुया. अथ उत्तर-इम नही है. किस वास्ते? ग्राम आदि जानेकू प्रवृत्ते है तिस कालमे जाता हूया भोजनविश्रामके अर्थे औत्सुक्य परिणाम सहित थोडे काल वास्ते शय्यामे वर्त्ते है। तिस कालमे 'शय्या' परिषहका 'चर्या' अने 'नैषेधिकी' दोनोकी साथ सबध है. इस वास्ते २० ही परिषह एककालमे वेदे है. यो ऐसे कहा तो षड्विध बधक आश्री कहा है. जिस समये चर्या है तिस समय शय्या नही. इहा कैसे सभव हूया? उत्तर—षड्विध बंधकके 'मोह' कर्म उदयमे बहुत नही है इस वास्ते शय्याकालमे औत्सुक्य परिणामका अभाव है इस वास्ते. शय्याकालमे शय्या ही है, परतु बादर रागके उदय औत्सुक्य करके विहारके परिणाम नही. इस वास्ते परस्पर विरोधी होने करके दोनो युगपत् एककालमे नही. इति अल चर्चेण (चर्चया).

उत्तराध्ययनके २४ मे अध्ययनात् पाच समिति, तीन गुप्ति स्वरूप—

प्रथम ईर्यासमिति-आलबने १, काल २, मार्ग ३, यत्ना ४ ए चार प्रकारे. शुद्ध ईर्या शोधे तिहा आलबन-ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३ इन तीनोकू अवलबीने ईर्या शोधे १. काल थकी दिवसमे ईर्या शोधे २. मार्ग थकी उत्पथ वर्जे ३. यत्नाके चार भेद है—द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, भाव ४. द्रव्य थकी तो चक्षुसे देख कर चाले १. क्षेत्र थकी चार हाथ प्रमाण धरती देखीने चाले २. काल थकी जितना काल चलनेका तहां लग यत्न करी चाले ३. भाव थकी उपयोग सहित. उपयोग सहित किस तरे होवे? पाच इंद्रियकी विषयथी रहित पाच प्रकारकी वाचना आदि स्वाध्याय रहित शरीरकू ईर्यारूप करे. ईर्यामे उद्यम एह उपयोग थकी ईर्या शोधे इति ईर्यासमिति.

भाषासमिति क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, हास्य ५, भय ६, मुखारि (मौखर्य) ७, विकथा ८ ए आठ स्थानक वर्जीने बोले. असावद्य मर्यादा सहित भाषा बोले. उचित काले बोले. तथा दश भेदे सत्य, बारां भेदे व्यवहार, एव २२ भेदे भाषा बोले. ते बावीस भेद लिख्यते—

(१) जणवए सचे—'जनपद'सत्य. जौनसे देशमे जो भाषा बोले सो तिहां सत्य. जैसे 'कोकन' देशमे पाणीकू पिछ, कोइ देशमे बडे पुरुषकू बेटा कहै वा बेटेकू काका, पिताकू भाइ, सासूकू आइ. सो सत्यम् (२) सम्मव(य)—'समत'सत्य. जैसे पकसे उपना मींडक, सेवाल अने कमल, तो हि पिण कमलने 'पकज' कहीये पिण मींडक, सेवालने 'पकज' शब्द नही. (३) ठवणा—'स्थापना'सत्य. जिसकी मूर्त्ति स्थापी है सो मूर्तिकू देव कहना जूठ नही. (४) नाम—'नाम'सत्य. 'कुलवर्धन' नाम है, चाह कुलका क्षय करे तो पिण कुलवर्धन कहना जूठ नही. (५) रूवे—गुणकरी भ्रष्ट है तो पिण साधुके वेषवालेकू 'साधु' कहीये. (६) पडुच—'अपेक्षा'सत्य. जैसे मध्यमाकी अपेक्षा अनामिकी कनिष्ठ अंगुली है. (७) ववहार—'व्यवहार'सत्य. जैसे

पर्यंत चलता है, रस्ता चलता है. (८) भाव—'भाव'सत्य. जैसे तोतेमे पांच वर्ण है तो पिण तोता हर्या है. (९) जोग—'योग'सत्य. जैसे दंडके संयोगसे दंडी कहीये; छत्रसे छत्री. (१०) उवमासच्चे–'उपमा'सत्य. चंद्रवत् वदन, समुद्रवत् तडाग. असत्य यंत्रम्—

कोहनिस्सिया—क्रोधके उदय बोले. माननिस्सिया—मानके उदय बोले. मायानिस्सिया—मायाके उदय बोले. लोहनिस्सिया—लोभनिश्रित बोले. पेज्जनिस्सिया—रागके उदय बोले. दोसनिस्सिया—द्वेषके उदय बोले. हासनिस्सिया–हास्यके उदय बोले. भयनिस्सिया—भयके उदय बोले. अक्खायनिस्सिया—विकथा करी. उवघायनिस्सिया—हिंसाकारी वचन. (११७)

मिश्र भाषा पा	अर्थ	मिश्र भाषा पा	अर्थ
१ उप्पन्नमिति(स्सि?)या	इस गाममे दस बालक जन्मे है	६ जीवाजीवमिस्सिया	जीव, अजीव दोनोकी मिश्र भाषा बोले
२ विगयमिस्सिया	इस गाममे आज दस जणे मरे है	७ अनंतमिस्सिया	मूली आदिक कंदोमे अनंते जीव है सो 'प्रत्येक' जीव कहै
३ उप्पन्नविगयमिस्सिया	इस गाममे दस जन्मे है, दस(की) मृत्यु होइ है	८ परत(त्त)मिस्सिया	प्रत्येककुं अनंतकाया कहै
४ जीवमिस्सिया	एक घा(त्र) सर्व जीव है	९ अद्धामिस्सिया	ऊठ रे दिन चढ्या पहरके तडकेसे कहै
५ अजीवमिस्सिया	अन्नकी रास देखके कहै ए तो अजीव है	१० अद्धद्धामिस्सिया	घणे कालका जूठ; घडी एक रात गये (रहे) दिन ऊगा कहै

व्यवहार भाषाके बारा भेद

(१) आमंतणि—हे भगवन्. (२) आणवणि—इह काम कर तथा यह वस्तु लाव. (३) जायणि—यह हमें देउगे. (४) पुच्छणि–ग्राम आदिनो मार्ग पूछणा. (५) पन्नवणि–धर्म ऐसे होता है. (६) पच्चक्खाणी—यह काम हम नही करेंगे. (७) इच्छाणुलोम—अहासुह देवाणुप्रिय. (८) अणभिग्गहिया—अगलेका कह्या ठीकतरे समजे न. (९) अभिग्गहिया–मुझे ठीक है. (१०) संसयकारण—खबर नही क्यों कर है. (११) वोगडा–प्रगट अर्थ कहै. (१२) अवोगडा–अप्रगट अर्थ.

इह ४२ भेद भाषाके हैं. सत्य १०, व्यवहार १२, एव २२ भेद बोले. इति भाषासमिति सपूर्ण.

एषणासमितिका स्वरूप विस्तार सहित पिंडनिर्युक्ति तथा पिंडविशुद्धिसे जाणना इति.

अथ 'आदानभंडनिक्षेप'समिति लिख्यते—उपधि दो भेदे है—(१) औधिक, (२) औपग्राहिक. 'औधिक' ते साधु, साध्वी सदाइ राखे अने 'औपग्राहिक' ते जे कदाचित् कार्य उपने ग्रहे ते. प्रथम औधिक कहीये है—

"उवही उवग्गहे सगहे य तह पग्गहुग्गहे चेव ।
भडग उवगरणे वि य करणे वि य हुंति एगट्ठा ॥ १ ॥ (ओ० ६६६)
पत्त १ पत्ताबधो २ पायट्ठवण ३ च पायकेसरिया ४ ।
पडलाइ ५ रयत्ताण ६ (च) गुच्छओ ७ पायनिजो(ज्जो)गो ॥ २ ॥ (ओ० ६६८)
तिन्नेव य पच्छागा १० रयहरण ११ चेव होइ मुहप(पो)त्ती १२ ।
एसो दुवालस(स)विहो उवही जिणकप्पियाण तु ॥ ३ ॥ (ओ० ६६९)
एते(ए) चेव दुवालस्स(म) मत्तग १ अइरेग चोलपट्टो य ।
एसो चउद्दसविहो उवही पुण थेरकप्पमि ॥ ४ ॥ (ओ० ६७०)
पत्त १ पत्ताबधो २ पायट्ठवण ३ च पायकेसरिया ४ ।
पडलाइ ५ रयत्ताण ६ (च) गुच्छओ ७ पायनिजो(ज्जो)गो ॥ ५ ॥ (ओ० ६७४)
तिन्नेव य पच्छागा १० रयहरण ११ चेव होइ मुहपत्ती १२ ।
तत्तो (य) मत्तउ खलु १३ चउदसमो कमढओ(गो) चेव १४ ॥ ६ ॥ (ओ० ६७५)
उग्गहणतग १५ पट्टो(ट्टो) १६ उड्ढोरू (अद्धोरुअ) १७ चलणिया १८ य बोद्धव्वा ।
अब्भितर १९ बाहरि(हिर ?) २० नियंसणी य तह कचुए २१ चेव ॥७॥ (ओ० ६७६)
उग(क)च्छिय २२ वेगच्छिय २३ सघाडी २४ चेव खधकरणी २५ य ।
ओहोवहिंमि एऐ अज्जाण पन्नवीस तु ॥ ८ ॥ (ओ० ६७७)
उक्कोसगो जिणाण चउवि(व्विहा) मज्झिमो वि एमेव ।
जहन्नो चउविहो खलु एत्तो थेराण वुच्छामि ॥ ९ ॥

१ उपधिरुपग्रह सङ्ग्रहश्च तथा प्रतिग्रहश्चैव । भाण्डकमुपकरणमपि च करणेऽपि च भवन्ति एकार्थाः ॥ १ ॥
पात्र पात्रबन्ध पात्रस्थापन च पात्रकेसरिका । पटलानि रजस्त्राण (च) गुच्छक पात्रनिर्योग ॥ २ ॥
त्रय एव च प्रच्छादका रजोहरण चैव भवति मुखपत्ति (°वस्त्रिका) । एष द्वादशविध उपधिर्जिनकल्पिकानां तु ॥३॥
एते चैव द्वादश मात्रकमतिरिक्त चोलपट्टश्च । एष चतुर्दशविध उपधि पुन स्थविरकल्पे ॥ ४ ॥
२ ततो मात्रकश्चतुर्दशम कमढग चैव ॥ ६ ॥
अवग्रहानन्तक पट्टोऽर्धोरुक चलनिका च बोद्धव्या । आभ्यन्तरा बाहिरा निवसनी च तथा कञ्चुकश्चैव ॥ ७ ॥
औपकच्छिक वैकक्षिक सङ्घाटी चैव स्कन्धकरणी च । ओघोपधौ एते आर्याणां पञ्चविंशतिस्तु ॥ ८ ॥
उत्कृष्टो जिनानां चतुर्विधो मध्यमोऽपि एवमेव । जघन्यश्चतुर्विध खलु इत स्थविराणां वक्ष्ये ॥ ९ ॥

उक्कोसो थेराण चउवि(वि)हो छवि(वि)हो उ मज्झिमओ ।
जहन्नो चउवि(व्वि)हो खलु एत्तो अज्जाण साहेमि ॥ १० ॥
उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमओ होइ तेरसविहो उ ।
जहन्नो चउवि(व्वि)हो खलु तेण परमुवग्गह जाणे(ण) ॥ ११ ॥ (ओ० ६७८)
एग पाय जिणकप्पियाण थेराण मचओ बीओ ।
एय गणणपमाण पमाणमाण अओ वुच्छ ॥ १२ ॥ (ओ० ६७९)
तिन्नि विहत्थी चउरगुलं च भाणस्स मज्झिमपमाण ।
इत्तो हीण जहन्न अइरेगयरं तु उक्कोस ॥ १३ ॥ (ओ० ६८०)
पत्ताबंधपमाण भाणपमाणेण होइ नायव्व ।
जह गठिमि कयमि कोणा चउरगुला हुति ॥ १४ ॥ (ओ० ६९३)
पत्तट्ठवण तह गुच्छओ य पायपडिलेहणी(णि)या य ।
तिण्ह पि य प्पमाण विहत्थि चउरगुल चेव ॥ १५ ॥ (ओ० ६९४)
जेहिं सविया न दीसइ अतरिओ तारिसा भवे पडला ।
तिन्नि व पच व सत्त व कदलीगब्भोवमा मसिणा ॥ १६ ॥ (ओ० ६९७)
अड्ढाइज्जा हत्था दीहा छत्तीस अगुले रुदा ।
बीय च (बितिय) पडिग्गहाओ ससरीराओ य निप्फन्न ॥ १७ ॥ (ओ० ७०१)
माण तु रयत्ताणे भाणपमाणेण होइ निप्फन्न ।
पायाहिण करत मज्झे चउरगुल कमइ ॥ १८ ॥ (ओ० ७०३)
कप्पा आयपमाणा अड्ढाइज्जा य वित्थडा हत्था ।
दो चेव सुत्तिया उ उन्निय तइओ मुणेयव्वो ॥ १९ ॥ (ओ० ७०५)
बत्तीसगुलदीह चउवीसगुलाइ दडो से ।
अट्ठगुला दसाओ एगतर हीणमहिय वा ॥ २० ॥ (ओ० ७०८)

---

१ उत्कृष्ट स्थविराणो चतुर्विध षड्विधस्तु मध्यमक । जघन्यश्चतुर्विध खलु इत आर्याणां कथयामि (?) ॥ १० ॥
उत्कृष्टोऽष्टविधो मध्यमको भवति त्रयोदशविधस्तु । जघन्यश्चतुर्विध खलु तेन परमुपग्रह जानीयात् ॥ ११ ॥
एक पात्र जिनकल्पिकानां स्थविराणा मात्रक द्वितीयम् । एतद् गणनाप्रमाण प्रमाणमानमतो वक्ष्ये ॥ १२ ॥
त्रयो वितस्तयश्चतुरङ्गुल च भाजनस्य मध्यमप्रमाणम् । अतो हीन जघन्यमतिरिक्ततरं तूत्कृष्टम् ॥ १३ ॥
पात्रबन्धप्रमाण भाजनप्रमाणेन भवति ज्ञातव्यम् । यथा ग्रन्थौ कृते कोणाश्चतुरङ्गुला भवन्ति ॥ १४ ॥
पात्रस्थापन तथा गुच्छकश्च पादप्रतिलेखनिका च । त्रयाणामपि च प्रमाण वितस्तिश्चतुरङ्गुल चैव ॥ १५ ॥
यै सविता न दृश्यतेऽन्तरितस्तादृशानि भवन्ति पटलानि । त्रीणि पञ्च वा सप्त वा कदलीगर्भोपमानि मसृणानि ॥१६॥
अर्धतृतीयहस्तदीर्घाणि षट्त्रिंशदङ्गुलानि रुन्द्राणि । द्वितीय च पतद्ग्रहात् स्वशरीराच्च निष्पन्नम् ॥ १७ ॥
मान तु रजस्त्राणे भाजनप्रमाणेन भवति निष्पन्नम् । प्रादक्षिण्य कुर्वन् मध्ये चतुरङ्गुलानि क्रामति ॥ १८ ॥
कल्पा आत्मप्रमाणा अर्धतृतीयाश्च विस्तृता हस्तान् । द्वौ चैव सौत्रिकौ तु और्णिकस्तृतीयो ज्ञातव्य ॥ १९ ॥
द्वात्रिंशदङ्गुलदीर्घ चतुर्विंशतिरङ्गुलानि दण्डकस्य । अष्टाङ्गुला दशा एकतरं हीनमधिक वा ॥ २० ॥

उंणियं उट्टियं या वि कनल पायपुच्छण ।
तिपरीयट्टमणिस्सट्ठ रयहरण धारए इक्क ॥ २१ ॥ (ओ० ७०९)
चउरगुल विहत्थी एव मुहणतगस्स उ पमाण ।
बीय मुहप्पमाण गणणपमाणेण इक्कि ॥ २२ ॥ (ओ० ७११)
जो मागहओ पत्थो सविसेसयर तु मत्तगपमाणं ।
दोसु वि दव्वग्गहण वासावासासु अहिगारो ॥ २३ ॥ (ओ० ७१३)
सूओदणस्स भरिय दुगाउमद्धाणमागओ साहू ।
भुजइ एगट्ठाणे एय किर मत्तयपमाण ॥ २४ ॥ (ओ० ७१४)
दुगुणो चउगुणो वा हत्थो चउरस चोलपट्टो य ।
थेरजुवाणाणट्ठा सण्हे थूलंमि य विभासा ॥ २५ ॥ (ओ० ७२१)
सथारुत्तरपट्टो अड्ढाइज्जा य आयया हत्था ।
दोह्न पि य वित्थारो हत्थो चउरगुल चेव ॥ २६ ॥ (ओ० ७२३)
रयहरणपट्टमित्ता अदसागा किंचि वा समइरेगा ।
इक्कगुणा उ निसिज्जा हत्थपमाणा सपच्छागा ॥ २७ ॥ (ओ० ७२५)
वासोवग्गहिओ पुण दुगुणो अगही उ वासकप्पाई ।
आयासजमहेउ इक्कगुणो सेसओ होइ ॥ २८ ॥ (ओ० ७२६)
ज पुण सपमाणाओ ईसिं हीणाहिय व लभिज्जा ।
उभय पि अहाकडय न सधणा तस्स छेओ वा ॥ २९ ॥" (ओ० ७२७)

इति औघिकोपधिः सपूर्णः । अथ औपग्राहिक उपगरणमाह—औपग्राहिक उपधिके तीन भेद—(१)जघन्य, (२) मध्यम, (३) उत्कृष्ट. तत्र प्रथम जघन्यमाह—

²पीठ १ निसिज्जा २ दडग ३ पमज्जण ४ घट्ट ५ डगल ६ पिप्पलग ७ सूइ ८ नह-

---

१ और्णिक औष्ट्रिक वाऽपि कम्बल पादप्रोञ्छनम् । त्रि परिवर्तमनिसृष्ट रजोहरण धारयेदेकम् ॥ २१ ॥
चतुरङ्गुल वितस्तिरेव मुखानन्तकस्य तु प्रमाणम् । द्वितीय मुखप्रमाण गणनप्रमाणेनैकैकम् ॥ २२ ॥
यो मागधक प्रस्थ सविशेषतरं तु मात्रकप्रमाणम् । द्वयोरपि द्रव्यग्रहण वर्षावर्षयोरधिकार ॥ २३ ॥
सूपौदनेन भृत द्विगव्यूताध्वन आगत साधु । भुङ्क्ते यदेक स्थानमेतत् किल मात्रकस्य प्रमाणम् ॥ २४ ॥
द्विगुणश्चतुर्गुणो वा हस्तश्चतुरस्रश्चोलपट्टश्च । स्थविरयूनामर्थाय श्लक्ष्णे स्थूले च विभाषा ॥ २५ ॥
संस्तारकोत्तरपट्टौ अर्द्धतृतीयौ च आयतौ हस्तौ । द्वयोरपि च विस्तारो हस्तश्चतुरङ्गुल चैव ॥ २६ ॥
रजोहरणपट्टमात्रा अदशाका किंचित् समतिरेका वा । एकगुणा तु निषद्या हस्तप्रमाणा सप्रच्छादा ॥ २७ ॥
वर्षौपग्रहिक पुनर्द्विगुणोऽवधिस्तु वर्षाकल्पादि । आत्मसंयमहेतुरेकगुण शेषको भवति ॥ २८ ॥
यत् पुन स्वप्रमाणादीषद्धीनमधिक वा लभ्येत । उभयमपि यथाकृत न सन्धना तस्य छेदो वा ॥ २९ ॥

२ पीठक निषद्या दण्डक प्रमार्जनी घट्टको डगलं पिप्पलक सूची नखहरणी दन्तकर्णशोधनकद्वया ।

रणी ९ दंत १० कन्न ११ सोघणी इति जघन्यम् ॥

"¹चासता(च)णाइ उ मज्झिमगो वासता(च)ण पंच इमे ।
वाले १ सुत्ते २ सूई ३ कुडसीसग ४ छत्त ए ५ चेव ॥ २ (?) ॥
तहियं दुन्निय ओहो पह(हिं)मि वाले य सुत्तिए चेव ।
सेस तिय वासताणायणंगं तह चिलमिलीण इम ॥ ३ ॥
वालमई सुत्तमई वागमई तह य दडकडगमई ।
सथार दुगमप्पु सिरिपियदडगपो(प्पु?)णग ॥ ४ ॥
दड विदड लट्ठी विलट्ठी तह नालिया य पच ।
अवलेहणिमत्तटिग पासवणुचारखेले य ॥ ५ ॥
चिंचणिया सुर पेपी उरतलिगा अहवा विचमतिविहिमिमं ।
कत्ती तलिगा वहु झाझाथ पट्टदुग चेव होइ मिम ॥ ६ ॥
सथारुपट्टो अहवा सन्नाहपट्ट पहुत्थी ।
मज्झो अज्झाण पुण अइरित्तो वारगो होइ ॥ ७ ॥
²लट्ठी आयपमाणा विलट्ठि चउरगुलेण परिहीणा ।
दडो बाहुपमाणो विदडओ कक्खमित्तो य ॥ ८ ॥ (ओ० ७३०)
सिरसोवरिं चउरगुल दीहा उ नालिया होई ।
अवलेहणि मटॉयुर तस्स अला[व]भमि चिंचिणिया ॥ ९ ॥"

इति मज्झिम । उत्कृष्टमाह—

"³अेक्खा संथारो वा दुविहो एकगिओ तदियरो वा ।
बीय पयपुत्थपणग फलग तह होई उक्कोमा ॥ १० ॥"

---

१ आ गाथाओ अत्यत अशुद्ध छे वळी तेनु मूळ स्थळ पण जाणवामां नथी एवी परिस्थितिमां एनी छाया आपव वे एक प्रकारनु साहस गणाय एटले ए दिशामां प्रयास करातो नथी तेने माटे जगा कोरी रखाय छे

२ यष्टिरात्मप्रमाणा वियष्टिश्चतुरङ्गुलेन परिहीना । दण्डो बाहुप्रमाणो विदण्डक कक्षामात्रश्च ॥ ८ ॥
शीर्षोपरि चत्वारि अङ्गुलानि दीर्घा तु नालिका भवति । तस्य ॥ ९ ॥

३ अथवा संस्तारको वा द्विविध एका तरस्तदितरो वा । द्वितीयं ** पुस्तकपञ्चक फलक तथा भवत्युत्कृष्टा ॥ १० ॥

तथा—"दंडए लट्ठिया चेव चम्मए चम्मकोसए ।
चम्मच्छेयणए पट्टी चिलिमिली धारए गुरु ॥ १ ॥ (ओ० ७२८)
ज चन्न एवमाई तवसंजमसाहग जइजणस्स ।
ओहाइरेगगहियं उग्गहियं त वियाणाहि ॥ २ ॥ (ओ० ७२९)
ज जस्स उ उवयारो उवगरण (जुञ्जइ उवगरणे) तसि होई उवगरण ।
अइरेग अहिगरण अजतो अजय परिहरतो ॥ ३ ॥ (ओ० ७४१)
न केवलमइरित्त अहिगरण पइमिय पि जो अजओ ।
परिजुजइ उवगरण अहिगरण तस्स वि होई ॥ ४ ॥"

इति, अथ उपगरणधारणकारणानि—

"छेकायरक्खणट्ठा पायग्गहण जिणेहिं पन्नत्त ।
जे य गुणा समोए हवति ते पायगहणे त्ति(वि) ॥ १ ॥ (ओ० ६९१)
अतरतबालवुड्ढासेहाएसा गुरु असहुवग्गे ।
साहारणुग्गहालद्धिकारणा पायगहण तु ॥ २ ॥ (ओ० ६९२)
रयमाइरक्खणट्ठा पत्तगठवण वि उ उवइस्सति ।
होइ पमज्जणहेउ गुच्छओ भाणवत्थाण ॥ ३ ॥ (ओ० ६९५)
पायपमज्जणहेउ केसरिया पाएँ पाएँ इक्किका ।
गुच्छग पत्तट्ठवण इक्कि गणणमाणेण ॥ ४ ॥ (ओ० ६९६)
पुप्फफलोदयरयरेणुसउणपरिहारपायरक्खट्ठा ।
लिंगस्स य सवरणे वेओदयरक्खणे पडला ॥ ५ ॥ (ओ० ७०२)
मूसगरयउक्केरे वासे(सा) सिन्हा रए य रक्खट्ठा ।
हुति गुणा रयताणे पाए पाए य इक्केक्क ॥ ६ ॥ (ओ० ७०४)
तणगहणानलसेवानिवारणा धम्मसुक्कझाणट्ठा ।
दिट्ठ कप्पग्गहण गिलाणमरणट्ठया चेव ॥ ७ ॥ (ओ० ७०६)

---

१ दण्डको यष्टिका चैव चर्मकश्चर्मकोशक । चर्मच्छेदनक पट्ट चिलमिली (यवनिका) धारयेद् गुरु ॥ १ ॥
यच्चान्यदेवमादि तपःसंयमसाधक यतिजनस्य । औघातिरेक गृहीतमौपग्रहिक विजानीहि ॥ २ ॥
यद्युपयुज्यते उपकरणे तदेव भवति उपकरणम् । अतिरेकमधिकरण अयतोऽयत परिहरन् ॥ ३ ॥
न केवलमतिरिक्तमधिकरणं परिमितमपि योऽयत । परियुनक्ति उपकरण अधिकरणं तस्यापि भवति ॥ ४ ॥

२ षट्कायरक्षणार्थं पात्रग्रहण जिनै प्रज्ञप्तम् । ये च गुणा सम्भोगे भवन्ति ते पात्रग्रहणे इति ॥ १ ॥
अतो ग्लानबालवृद्धशिक्षकादेशा गुरु असहिष्णुवर्ग । साधारणावग्रहात् अलब्धिकारणात् पात्रग्रहण तु ॥ २ ॥
रजआदिरक्षणार्थं पात्रकस्थापनमपि तूपदिशन्ति । भवति प्रमार्जनहेतुर्गुच्छको भाजनवस्त्राणाम् ॥ ३ ॥
पात्रप्रमार्जनहेतु केसरिका पात्रे पात्रे एकैका । गुच्छक पात्रस्थापन एकैक गणनाप्रमाणेन ॥ ४ ॥
पुष्पफलोदकरजोरेणुशकुनपरिहारपात्ररक्षणार्थम् । लिङ्गस्य च संवरणे वेदोदयरक्षणे पटलानि ॥ ५ ॥
मूषकरजउत्करे वर्षावश्यायरजोरक्षणार्थं च । भवन्ति गुणा रजस्त्राणे पात्रे पात्रे चैवैकम् ॥ ६ ॥
तृणग्रहणानलसेवानिवारणार्थं धर्मशुक्लध्यानार्थम् । दृष्टं कल्पग्रहण ग्लानमरणार्थं चैव ॥ ७ ॥

आयाणे निक्खेवे ठाण निसीयण तुयट्ट संकोए ।
पुव्वं पमज्जणट्ठा लिंगट्ठा चेव रयहरणं ॥ ८ ॥ (ओ० ७१०)
संपाइमरयरेणुपमज्जणट्ठा वयंति मुहपत्तिं ।
नासं मुहं च बंधइ तीए वसहिं पमज्जंतो ॥ ९ ॥ (ओ० ७१२)
संपाइमतसपाणा धूलिसरक्खे अ परिगलंतंमि ।
पुढविदगअगणिमारुयउद्धसणखिंसणाडहरे ॥ १० ॥ (ओ० ७१५)
आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुल्लहे सहसदाणे ।
संसत्तए भत्तपाणे मत्तगपरिभोगणुन्नाउ ॥ ११ ॥ (ओ० ७१६)
संसत्तभत्तपाणेसु वा वि देसेसु मत्तए गहणं ।
पुव्वं तु भत्तपाणं सोहेउं छुहंति इयरेसु ॥ १२ ॥ (ओ० ७२०)
वेउव्ववाउडे वाइए हीय खद्धपजणणे चेव ।
तेसिं अणुग्गहट्ठा लिंगुदयट्ठा य पट्टो उ ॥ १३ ॥ (ओ० ७२२)
पाणाईरेणुसरक्खणट्ठया हुंति पट्टगा चउरो ।
छप्पइयरक्खणट्ठा तत्थुवरिं खोमियं कुज्जा ॥ १४ ॥ (ओ० ७२४)
दुट्ठपसुसाणसावयविज्ज(चिक्खल्ल)लविसमेसु उदगमज्झेसु ।
लट्ठी सरीररक्खा तवसंजमसाहणी भणिया ॥ १५ ॥ (ओ० ७३९)
मुक्खट्ठा नाणाई तणू तयट्ठा तयट्ठिया लट्ठी ।
दिट्ठो जहोवयारो कारणमि कारणेसु जहा (कारणतकारणेसु तहा?) ॥ १६ ॥"
(ओ० ७४०)

इति कारणम्. इनकू जतनासे लेवे, जतनासे मेले ए चौथी समिति.

अथ पांचमी समिति अचित्त स्थंडले दस दोष ते रहितमे मल आदि व्युत्सर्जन करे. मन, वचन, काया पापसे गोपे ते 'गुप्त'.

---

१ आदाने निक्षेपे स्थाने निषदने त्वग्वर्तने सङ्कोचने । पूर्वं प्रमार्जनार्थं लिङ्गार्थं चैव रजोहरणम् ॥ ८ ॥
सम्पातिमरजोरेणुप्रमार्जनार्थं वदन्ति मुखवस्त्रिकाम् । नासिकां मुखं च बध्नाति तया वसतिं प्रमार्जयन् ॥ ९ ॥
सम्पातिमत्रसप्राणा धूलिसरजस्के च परिगलमाने । पृथिव्युदकाग्निमारुतोद्धसणपरिभवडहरे ॥ १० ॥
आचार्य ग्लाने प्राघूर्णके दुर्लभे सहसादाने । संसक्तके भक्तपाने मात्रकपरिभोगमनुज्ञात ॥ ११ ॥
संसक्तभक्तपानेषु वाऽपि देशेषु मात्रकग्रहणम् । पूर्वं तु भक्तपानं शोधयित्वा प्रक्षिपन्ति इतरेषु ॥ १२ ॥
वैक्रियोऽप्रावृतो वातिको ह्रीको बृहत्प्रजनन चैव । तेषामनुग्रहार्थं लिङ्गोदयार्थं च पट्टस्तु ॥ १३ ॥
प्राण्यादिरेणुसंरक्षणार्थं च भवन्ति पट्टकाश्चत्वार । षट्पदिकारक्षणार्थं तत्रोपरि क्षौमिकं कुर्यात् ॥ १४ ॥
दुष्टपशुश्वश्वापदचिक्खलविषमेषूदकमध्येषु । यष्टि शरीररक्षार्थं तपःसंयमसाधिनी भणिता ॥ १५ ॥
मोक्षार्थं ज्ञानादीनि तनु तदर्थं तदर्थिका यष्टि । दृष्टो यथोपकारः कारणतकारणेषु तथा ॥ १६ ॥

अथ द्वादशभावनास्वरूप. दोहरा—

पावन भावन मन वसी, सब दुप मेटनहार; श्रवण सुनत सुप होत है, भवजलतारनहार १

अथ 'अनित्य' भावना. सवईया इकतीसा—

सध्या रग छिन भग सजन सनेही सग उडत पतंग रग चद रवि सगमे
तन कन धन जन अवधि तरग मन सुपनेकी सपतमे रांक रमे रगमे
देषते ही तोरे भोरे रक कोरे तोरे भये राजन भिपारी भये हीन दीन नगमे
बादरकी छाया माया देषते विनस जात भोरे चिदानद भूलो काहेकी तरगमे ? १
इद चंद सुरगिंद आनन आनद चद नरनको इद सोहे नीके नीके वेसमे
उत्तम उत्तग सोध जगमे अभग जोध धुमत मतग रग रानत हमेसमे
रंभा तरपंभा जैसी माननी अनूप ऐसी रसक दसक दिन माने सुप ए समे
परले पवन तृण उडत गगन जेसे पवर न काहु वाहु गये काहु देसमे २

अथ 'असरण' भावना(स्व)रूप—

मात तात दारा भ्रात सजन सनेही जात कोउ नही त्रात भ्रात नीके देप जोयके
तन धन जोवन अनग रग सग रसे करम भरम बीज गये मूढ वोयके।
नाम न निशान थान रान पानलेपि यत दरव गरव भरे जरे नगे होयके
त्राता नही कोउ ऐसे बलवत जत सत अंतकाल हाथ मल गये सब रोयके १
सानन सुहाये लाप प्रेमके सदन बीच हसे मोह फसे कसे नीके रग लसे है
माननीके प्रेम लसे फसे धसे कीच बीच भीचके हिंडोले हीच मूढ रग रसे है
चपलासी झमक अनित बाजी जगतकी स्पनमे वास रात पपी चह चसे है
मोहकी मरोर मोर ठानत अधिक ओर छोर सन जोर सिर काल वली हसे है २ इति

अथ 'ससार' भावना—

राजा रंक सुर कैक सुदर सरूप भक रति पति रूप भूप कुष्ठ सरवंग है
अरी मरी मीत धरी तात मात नारी करी रामा मात परी करी धूयावरी रग है
उलट पलट नट वट कैमो पेल रच्यो मच्यो जगजालमे विहाल वहु रग है
एते माहे तेरो जोरो कोउ नाही नम्र फेरी गेरो चिदानद मेरो तुही सरवग है १
रंग चग सुप मग राग लाग मोहे सोहे छिनकमे दोहे जोहे मौत ही मरदके
नीके वाजे गाजे साजे राजे दरबार ही मे छिनकमे कूकहूक सुनीये दरदके
जगमे विहाल लाल फिरत अनादि काल सारमेय थाल जैसे चाटत छरदके
मद भरे मरे परे जगरमे परे जरे देप तन जरे घरे छरे है गरदके २

अथ 'एकत्व' भावना—

एक टेक पकर फकर मत मान मन जगत स्वरूप सब मिथ्या अधरूप है
चारों गत भटक पटक सब रूप रग यति मति सति रति छति एकरूप है

करमको घेरे गेरे नाना कछु नही तेरो मात तात भ्रात तेरो नाही फर चूप है
चिदानद सुपकद राकाके पूरन चद आत्मसरूप मेरे तूही निज भूप है १
आथ साथ नाही चरे काहेकू गेरत गरे सगी रगी साथी तेरे जाथी दुख लहिये
एक रोच फेरो तेरो सगी साथी नही नेरो मेरो मेरो फरत अनत दुप सहिये
ऊपरमे मेह वसो सजन सनेह जेह पेहके बनाये गेह नेह काहा चहिये
जान सब ज्ञान फर वासन विषम हर इहां नही तेरो घर जाते वो सो कहिये २ इति

अथ 'अन्य' भावना—

तेल तिल सग जैसे अगनि वसत संग रग है पतग अग एक नाही किन्न है
करमके सग एक रग ढग तग हूया डोल तस छद मद गद भरे दिन्न है
दधि नेह अभ्र मेह फूलमे सुगध जेह देह गेह चित एह एक नही मिन्न है
आतमसरूप धाया पुग्गलकी छोर माया आपने सदन आया पाया सब चिन्न है १
काया माया बाप ताया सुत सुता मीत भाया सजन सनेही गेही एही तासो अन्न है
बाज बाज राज साज मान गान थान लाज चीत प्रीत रीत चीव काहुका ए धन्न है।
चेतन चगेरो मेरो सबसे एकेरो होरे डेरो हु वसेरो तेरो फेरे नेरो मन्न है
आपने सरूप लग माया काया जान ठग उमग उमग पग मोषमे लगन्न है २

अथ 'अशुच(चि)' भावना—

पट चार द्वार पुले गदगीके संग झुले हिले मिले पिले चित कीट जु पुरीसके
हाड चाम खेल धाम काम आम आठो जाम लपट दपट पट कोथरी भरी सके
गदगीमे जदगी है बदगी करत नव वत्त धात आत जात रात दिन जीसके
मैली थेली मेली चेली वैलीवद फैली जैली अतकाल मूढ तेऊ भूए दाव पीसके १
जननीके खेत सुग रेतको करत हार उर धर चरन करी धरी देह दीन रे
सातो धात पिंड धरी चमक दमक धरी मद भरी मरी परी करी वाजी छीन रे
प्रिये मीत जार कर छर न मे राख कर आन वेठे निज घर साथ दीया कीन रे
छरद करत फिर चाटत रसक अत आतम अनूप तोहे उपजेना घीन रे २

अथ 'आश्रव' भावना—

हिंसा झूठ चोरी गोरी कोरी फेरे रग रस्यो क्रोध मान माया लोभ पोम घेरो देतु है
राग द्वेष ठग भेस नारी राज भत्त देस कथन करन कर्म भ्रमका सहेतु है
चचल वरग अग भामनिके रग चग उद्वत विहग मन अति गर भेतु है
मोहमे मगन जग आतम धरम ठग चले जग मग जिय-ऐसें दुप लेतु है १
नाक कान रान काट वाटमे उचाट ठाट सहे गहे वदी रहे दुख भय मानने
जोग रोग सोग भोग वेदना अनेक थोग परे विल लाये दुख लीये पीये जानने

आपने कमाये पाप भोगनमे आपे आप अंग जरे कुष्ट भरे इंदुवत आनने
आपने करम करी दुप रोग पीर परी मिथ्यामति कहे ए तो कीये भगवानने २
अथ 'संवर' भावना—

हिरदेमे ज्ञान धर पापपथ परहर निहचे सरूप कर डर जर करसे
आवत महान अघ रोध कर हो अनघ आपने विकार तज भज कर भरसे
करम पटल ठग तिन माही देह अगनि कसत गुन दग आप परठरसे
करम भरम जावे मोद मन बोध पावे ऐसा रसरसीया ते आ रसज्ञ परसे १
सत मत नव तत भेदाभेदवित हित मीत जीत तीन नित तीन तेरे बोधके
तीन चीन मीन लीन उदक प्रवीन पीन खीन दीन हीन तज रजक जु सोधके
सत्ताको सरूप जान परणत भ्रम मान निज गुन तान जेही महानंद सोधके
भ्रमजाल परहरे काहुकी न भीत करे सजमके बारे मारे कर्म सारे रोधके २
अथ 'निर्जरा' भावना—

जैसे न्यारी सुध रीत छानत कनक पीत डारत असुध लीत मोद मन कर्यो है
तैसी ही सुधार यार करम पकार डार मार मार चार यार लार तेरे पर्यो है
जोलों चित रीत नाही तोलों मिटे भीत नाही कुगुर डगर वीच लूटवेको प(रि प)र्यो है
आतम सियाने वीर करमकी मिते पीर परम अजीत जीत सिवगढ चर्यो है १
सत जत सील तप करम भरम कप वासना सनेह गेह चितमे न धरीये
नरक निगोद रोग भोगत अनत काल माया भ्रम जाल लाल भवदधि तरिये
सकटमे पर्यो दुप भर्यो मर्यो वसुधामे चर्यो जगछोर भोर अब मन डरिये
धारत करुन धर दोस दुष्ट दूर कर अरहत ध्यान कर मोप(क्ष)वधू वरिये २
अथ 'लोकस्वरूप' भावना—

जामाधार नराकार भामरी करत यार लोकाकार रूप धार कह्या करतार रे
राज दस चार जान ऊचताको परिमान अधो विसतार रान सात है पतारने
घटत घटत मृत मडलमे एक राज पचम सुरग मध्य पांच रान धारने
आदि अत नही सत स्वय सिद्धरूप ए तो षट द्रव्य वास एही आपत उचारने १
नरक भवन पिति तनुवात घन मिति वसत पवार यार करमके दोपमे
पिति आप तेन वात घन रन त्रस घन विगल तिगल पसु पषी अहि रोपमे
नर नारी भेस धारी धरम विहारी सारी वीतराग ब्रह्मचारी नारी घन तोपमे
सुरगन सुपमन नाटक करत धन धन धन प्रभु सिद्ध पूरे सुप मोपमे २
अथ 'धर्म' भावना—

पिमा धर तोप कर कपट लपट हर मान अरि मार कर भार सब छोरके
सत परिमान कर पाप सब छार कर करम इंधन जर तप धूनी जोरके

तपोधन दान कर सील मीत चीत धर निज गुण वास कर दस धम्म दोरके
आतम सियाने माने एह धर्म्मरूप जाने पाने जाने दोरे मोरे फल मल तोरके १
असी चार लाप जोन पाली तिहां रही कोन चार ही अनत जत जिहा नही जाया है
नवे नवे मेस धार रांक ढांक नर नार दूप भूप मूक धूक ऊच नीच पाया है
राजा राना दाना माना सूरवीर धीर छाना अतकाल रोया सब काल वाज पाया है
तो है समजाया अब ओसर पुनीत पाया निज गुन धाया सोइ धीर प्रभु गाया है २

अथ 'बोध(धि)दुर्लभ' भावना—

सुदर रसीली नार नाककी वसनहार आप अनतार मार सुदर दिदार रे
इद चद धरणिंद माधव नरिंद चद वसन भूपन पंद पाये बहु वार रे
जगतके प्याल रगवद रग लाल माल मुगता उजाल डाल रे(हृ)दे बीच हार रे
ए तो सन पाये मन माये काम जगतके एक नही पाये विभु धीर वच तार रे १
सुदर सिंगार करे वार वार मोती भरे पति विन फीकी नीकी निंदा करे लोक रे
वदन रदन सित दग विन फीके नित पगरि तेरि तकित भूपनके थोक रे
जीव विन काया माया दान विन सूम गाया सील विन वायां खाया तोष विन लोक रे
तप जप ज्ञान ध्यान मान सनमान सब सम कद रस विन जाने सब फोक रे २

इति द्वादशभावनाविचार.

अथ प्रत्याख्यानस्वरूप ठाणाग, आवश्यक, आवश्यकभाष्यात्

(१) भावि—आचार्य आदिकनी वैयावृत्त्य निमित्ते जो तप आगे करणा था पर्युर्षण आदिमे अष्टम आदि सो पहिला करे ते 'भावि-अनागत तप.' (२) अईय—आचार्य आदिकनी वैयावृत्त्य निमित्ते पर्युषण आदिमे अष्टम आदि तप न करे, पर्युषण आदिकके पीछे करे ते 'अतीत तप' कहिये. (३) कोडिसहिय—आरभता अने मूकतां छोडवां चतुर्थ आदिक सरीषो तप ते बेहु छेहडा मेल्या हुइ ते 'कोटिसहितम्' (४) सागार—अणत्थणा भोग सहसागार इन दोना विना अपर महत्तरागार आदि आगार राषे ते 'सागारतप.' (५) अणागार—अणत्थणा-भोगेण सहसागारेण ए दो विना होर (और) कोइ आगार न राषे ते 'अणागार तप'. (६) परिमाण—एक दाता आदि १ कवल २ घर ३ द्रव्य सख्या करे ते 'प्रमाणकृत.' (७) निरविसेसे—सर्व अशन आदि वोसरावे ते 'निर्विशेष.' (८) नियट्टि—अमुको तप अमुक दिने निश्चे करूगा 'नियन्त्रित तप.' ए जिनकल्पी विषे प्रथम सघयण होता है, सो वर्तमानमे व्यवच्छेद (विच्छिन्न) है. (९) सकेय—अगुष्ठि १ मुष्टि २ गठ्ठी ३ घर ४ से ५ ऊसास ६ थिवुग ७ जोइरके ८; ए आठ 'संकेत'के भेद जानने (१०) अद्धा—नमुक्कारसहिय १ पोरसि २ साढपोरसि ३ पुरिम ४ अपार्द्ध ५ विगय ६ निवीता ७ आचाम्ल ८ एकासणा ९ बे-आसणा १० एकलठाणा ११ पाण १२ दिस १३ अभत्तठ्ठ १४ चरम १५ अभिग्रह १६

(११८) १९ भेद पाण विना द्वार दूजा [illegible]

	नमोकार सहिय १	पोरसी २	साढपोरसी ३	पुरम ४	अपार्द्ध ५	विगय ६	निर्वीता ७	[illegible] ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अणत्थणाभोगे	थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सहसागारेण	स	स	स	स	स	स	स	स	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पच्छन्नकालेण	०	प	प	प	प	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिसामोहेण	०	दि	दि	दि	दि	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
साहुवयणेण	०	सा	सा	सा	सा	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अचुंचनपसा०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गुरुअब्भुट्ठा	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सागारियागा०	०	०	०	०	०	०	०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पारिट्ठावणिया	०	०	०	०	०	पा	पा	पा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
लेवालेवेण	०	०	०	०	०	ले	ले	ले	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उक्खित्तविवेगे	०	०	०	०	०	उ	उ	उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गिहत्थसंसट्ठे	०	०	०	०	०	गि	गि	गि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पडुच्चमक्खियेणं	०	०	०	०	०	प	प	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
महत्तरागारे	०	०	०	म	म	म	म	म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सव्वसमाहिव०	०	स	स	स	स	स	स	स	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आगारसंख्या	२	६	६	७	७	९	९	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ आगार-अर्थ लिख्यते—अणत्थ० अत्यंत मूढ [illegible] भोजन मुखमें दीया पीछे पच्चक्खाण समार्यो तदा तत्काल थूक [illegible] आदि दोहना मुखमें छींट पडे, बलात्कारे मुखमे पडे [illegible] गाय बादलसे ढक्यो पूरी पोरसीकी बुद्धिसे पारे पीछे सूर्य देख्या [illegible] करलकू रापमें यत्नसे थूके, पूरी हुइ पोरसी तदा फेर जीमे [illegible] मुनके ३. दिसामो० पूर्व दिस(श) पश्चिम जाणे तदा पारे पीछे [illegible] जानना साधुके वचनथी पोरसी जाणी जीमे पीछे जाण्या पोरसी [illegible] थूके ४. सा[illegible] अति मोटा काम संघ गुरुकी आज्ञासे जीमे तो भंग नहीं, [illegible] वैयावृत्य [illegible] विना खाया होइ नहीं, इस वास्ते भोजन करे तो भंग नहीं ६ [illegible] है अने तीव्र शूल आदि उपना अथवा [illegible] इसो [illegible] मरे तो

इस वास्ते औपधी करे भंग नही ७. सागारी० जिसकी नजर लगे दोष हूइ तो अध जीमे उठके ओर जगे जायके जीमे पिण तिसकी दृष्टि आगे न जीमे अथवा साधुरु भोजन करतां गृहस्थ देखता होइ तो तिहाथी अन्यत्र जाइ जीमे तो भग नही होइ ८. आउट्टण०—हाथ, पग आदि सकोचे पसारे तो भग नही, वात आदि कारणात् ९. गुरुअब्भु०—गुरुरु आवता देखके जो खडा होवे तो भग नही १०. पारिट्टा०—विधिसे लीया विधिसे जीम्या इम करतां जे विगय प्रमुख आहार ऊगर्या ते परिठावणिया गुरुनी आज्ञाये लेवे तो भग नहीं. ११. लेवालेवे०—जे विगय त्याग्या है तिणे करी कडछी आदिक खरडी हूइ तिण कडछी करी आहर आदिक दीइ ते लेवा व्रत भग नही होइ १२. गिहत्थस०—गृहस्थे आपणे काजे उ(ओ)दन दूधे(धसे) अथवा दही करी उत्या हूइ तिहा जे धान्य उपरि च्यार आंगुल चढिउ दूध दही हूइ ते निवीये कल्पे, जो पांच अगुल तो विग(य) ही जाननी. ए आचाम्ल ताइ कल्पे १३. ए आगार साधुने. उक्खित्तवि०—गाढी विगय गुड पकवान आदिक पोली ऊपरि मूकी हूइ ते उपाडी दूर करी ते पोली आचाम्ल ताइ कल्पे १४. ए आगार साधुने. पडुच्चमक्खि०—सर्वथा रूपा मडक आदिकने रारा दूर करनेकू हाथ फेरे मडा फेरे १५.

पचक्खाण तिविहार करे तदा पाणीके छ आगार—पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा वहलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसरामि. अस्य अर्थ—पाण० जिस करी भाजन आदि खरडाइ ते खजुर आदिकनउ पाणी लेपकृत १. अलेवे० अलेप पाणी कांजिका प्रमुख २. अच्छेण० अच्छा निर्मल तत्ता पाणी ३. वहलेण० वहल डोहलउ तदुल धोवल प्रमुख ४. ससित्थे० सीथ सहित उसामण आदि ५. असित्थे० सीथ रहित पाणी ६; ए ६ पाणी लेवे तो भग नही. पचक्खाण करणेवाला वोसरामि कहै; गुरु करावणेवाला वोसरइ कहै. श्रावककू आचाम्ल नीवीमे पाणी भोजन अचित्त करे, सचित्त न करे, अने श्रावकने आचाम्ल नीवीमे तीन आहारका त्याग जानना. नमोकारसीमे अने रात्रिभोजनमे साधुके च्यार ही आहारका त्याग निश्चै करी होय है, शेष पचक्खाण तिविहार चौविहार होय है. रात्रिभोजन १ पोरसि २ दोपहीरी ३ एकासणेमे श्रावकने दो आहार, तीन आहार, चार आहारका त्याग होवे है. ए सर्व पचक्खाणका भेद जानना.

अथ च्यार आहारका स्वरूप लिख्यते—प्रथम अशनके भेद—शालि, ज्वारि, वरटी प्रमुख सर्व ओदन १, मूग आदि सर्व दाल २, सत्तू आदि सर्व आटा ३, पेठ आदि सर्व तीमण ४, मोदक आदि सर्व पकवान ५, सूरण आदि सर्व कद ६, मंडक आदि सर्व तली वस्तु ७, वेसण ८, विराहली ९, आमला १०, सैंधव ११, कउठपत्र १२, लींबुपत्र १३, लूण १४, हींग १५, ए सर्व अशनका भेद जानना. १.

पाण० पाणी कांजिक १, जव २, कयर ३, ककोडा आदिकनो धोवण ४, अवर सर्व शास्त्रोक्त धोवण ५, ए सर्व पाणी; साकरपाणी १ आंबिलपाणी इक्षु रसप्रमुख सर्व सरस पाणी. ए पाणीमे गिण्या पिण व्यवहारे अशन ही है. २.

खादिम० मूलदी पताशा आदि १, केरवा [illegible] २, [illegible] ३, [illegible] ४, [illegible]
५, अक्षोट ६, खजूर ७, प्रमुख सर्व मेवा [illegible], [illegible]

साइम० [illegible] १, हरडे २, पीपर ३, मिरि ४, [illegible] ५, [illegible] ६, [illegible]
७, कायो ८, खयरटी ९, जेटी मधु १०, [illegible] ११, [illegible] १२, [illegible] १३, [illegible]
१४, विडग १५, काठा १६, विडलवन, १७, [illegible] १८, [illegible] १९, [illegible] २०,
पीपलामूल २१, पीर्णाकवाव २२, कचूरउ २३, [illegible] २४, [illegible] २५, [illegible] २६, [illegible]
२७, छोगी हरडे २८, बहेडा २९, कुमडउ ३०, [illegible] ३१, [illegible] ३२, [illegible]
३३, पुष्करमूल ३४, जवासामूल ३५, बावची ३६, वउलछाल ३७, [illegible] ३८, [illegible]
३९, खेजडेकी छाल ४०, ए सर्व 'स्वादिम' कहिये. गुड 'खादिम' कहीए [illegible] व्यवहारे
'अशन' ही ज है. फोकोत्त्यो(?) नीर साकर वासिउ १, पाटल वासिउ २, सूठनउ पाणी
३, हरडइनउ पाणी, ए जो निवारीने छाण्या होइ तो 'खादिम' नही, तिविहारमे लेणा कल्पे.
जीरा प्रवचनसारोद्धारमे 'खादिम' कह्या अने श्रीकरपवृत्तिमे 'खादिम' कह्या है. ए चार
आहारनो विचार सपूर्णम्.

नीर छाल १, मूल पनदा मिर्ली २, गोमूत्र ३, गिलो ३ (?) कडु ४, चिरायता ५, अति-
विस ६, चीटी ७, सूकड ८, राख ९, हलद १०, रोहिणी ११, उपलोठ १२, वेनत्रिफला
१३, पांच फलि भूनिव १४, धमासउ १५, नाहि १६, असुविगेगधी १७, एलुउ १८,
गुगल १९, हरडा दालि २०, [illegible] २१, [illegible] २२, [illegible] २३, [illegible] मूल २४,
पूयाड २५, आछी २६, मजीठ २७, [illegible] २८, [illegible] २९, [illegible] ३०, इत्यादि जे
अनिष्टपणे इच्छा विना लीने ते चारि आहार [illegible], [illegible] अनाहार'.

अथ विगय स्वरूप—दूध १, [illegible] २, [illegible] ३, [illegible] ४, [illegible] ५, पक्वान ६, ए छ
'भक्ष्य विगय' है. अथ दूध विगयके भेद ५—[illegible] १, [illegible] २, [illegible]का ३,
बकरीका ४, मेडका ५, और दूध विगय [illegible] [illegible] ४ [illegible]—[illegible] विना. अथ
तेल विगय ४ भेदे—तिल १, सरसव २, [illegible] ३, [illegible] ४. [illegible] २ भेदे—ढीलालाला
१, काठा २. पकवान विगय जे घृत तेलनी [illegible].

अथ महाविगय ४ अभक्ष्य—[illegible] १, [illegible] २, [illegible] ३, ए मधु सहित.
काष्ठका १ पीठीका २ मद्य २ भेदे. [illegible] १, [illegible] २, [illegible] ३ का मास तीन भेदे.
माखण चार भेदे घृतवत् जानना. ए ४ [illegible].

अथ विगयके अतर्गत तीस भेद, [illegible], [illegible] दूधनी पाच द्राक्ष सहित रांधिउ
दूध ते 'पय' १, घणे चावल थोडा दूध [illegible] २, [illegible] चावल घणा दूध ते 'पेया'
३, तंदुलना चूर्ण सहित दूध राध्या ते '[illegible]' ४, आटा सहित वितरेढिउ ते दूध
'दुग्धाटी' ५; ए पांच दूधना विगयगत भेद [illegible].

अथ घृतना ५—पकवान जिसमे तल्या ते 'दग्धघृतनिभजन' कहीये १, दहीने तारी घी काढे ते वीसदन २, औपधी पकाके काढ्या घी ३, घृत नीतार्या पीछे छाछ रही ते ४, औपधी करी राध्या पचिउ घृत ५. ए पांच घृतना विगयगत भेद.

अथ दहीनी ५—करवो १, शिपरणी मीठा घाली दही मसल्या २, लूण सहित दही मथ्यो ३, कपडसे छाणी दही घोल ४, घोलवडा उकालिउ दही जे माहे वडा घोल्या ते ५. ए ५ दहीना निगयगत भेद जानना.

अथ तेलना ५—जिसमे पकवान तलिया ते 'तेलदग्धनिभजन' १, तिलकुट्टि माहे जो गुड आदि घणा घाल्या होइ ते वासी राख्या पीछे विगयगत २, लाक्षा आदि द्रव्ये करी पच्यो तेल ३, औपध पची नितार्यो तेल ४, तेलना मल ५, ए ५ तेलनी.

अथ गुडनी ५—साकरना गुलवाणी १, उकालिउ २, गुडनी पात ३, खाडकी रान ४, अधकटिउ इक्षुरस, ए पाच गुडनी.

अथ पकवाननी ५—तवी भरी घीकी पूडे करी सगली भरी तिहां जे पाछे पूडा तले ते १, नवा घी अणघाले तवीमें जे तीन पूर उतर्या पाछे जे पकवान उतरे ते २, गुडधाणी ३, पहिला कढाइहीमे सोहाली करी पाछे तिणे घी खरडी कडाहीमें जे लापसी आदिक करे ते ४, खरडी तवी मे जे पूडा कर्या ५. ए पाच पकाननां विगयगत भेद. एव ३०. ए नीवीमे लेणे नही कल्पते, गाढा कारण हूइ तो वात न्यारी.

अथ २२ अभक्ष्य लिख्यन्ते-गाथा—

"[1]पचुबर(रि) ५ चउ विगई ९ हिम १० विस ११ करगे य १२ सव्वमट्टी १३ य।
रयणीभोयण १४ वयगण १५ बहुवीय १६ मणत १७ सधाणा(ण) १८ ॥ १ ॥
विदलामगोरसाइ १९ अमुणियनामाइ पुप्फफलयाइ २० ।
तुच्छफल २१ चलियरस २२ वज्जह वज्जाणि बावीस ॥ २ ॥"

इति गाथाद्वय. अनयोरर्थः—वडवटा १, पीपलवटा २, गूलिर ३, पीलुखण ४, कठुवर ५, ए ५ 'उंवर' कहीए. इन पांचो माहे मसाने आकारे घणा त्रस जीव भर्या होइ हे तिस वास्ते अभक्ष्य ५, मधु १, माखण २, मध ३, मास ४ ए माहे तद्वर्णे निरतर समूर्च्छिम पचेंद्री उपजे इस वास्ते अभक्ष्य, माखण इहां छाछेथी अलग हुया जानना ९, हेमनि केवल असख्य अप्काय भणी अभक्ष्य १०, विसउदर माहिला गडोला आदि सर्व जीवने मारे अने मरण समय असावधानपणाना कारण ११, करहा गडाओले असख्याता अप्काय भणी अभक्ष्य १२; खडीमरुहड प्रमुख सर्व जातिनी मट्टी, मींडक आदिक पचेंद्री जीवनी उत्पत्ति भणी अने आम वात आदि रोग उपजे तिस वास्ते अभक्ष्य १३; रात्रिभोजन एह लोक परलोक विरुद्ध १४, बहु बीजा पपोट, रींगणा आदि फल जेह माहे जितने बीज ते माहे तीतने जीव १५;

[1] पचोदुम्बरी चतस्रो विकृतयो हिमं विष करक च सर्वमृत्तिका च। रजनीभोजन वृन्ताक बहुबीजमनन्त(कायिकं) सन्धानम्। द्विदलामगोरसे अज्ञाननामानि पुष्पफलानि। तुच्छफल चलितरसं वजत वर्ज्यानि द्वाविंशतिम्॥

घोलवडा जे काचा गोरस माहें घाल्या वडा हुइ ते अभक्ष्य, तत्काल जीवनी उत्पत्ति होइ है, एव सर्व मूंग आदि दो दल जानना. जेहनी दो दाल होइ अने घाणी पील्या तेल न निकले ते काचा गोरसमें मिल्या अभक्ष्य ए विदल आममोरसका अर्थ १६, अनतकाय ३२ अभक्ष्य ते बत्तीस आगे कहेंगे १७, सधाण कहींये अथाणा अर्थात् आचार विल्व, अब, पाडल, नींबू आदि ते जीवनी उत्पत्ति रस चलतके कारण अभक्ष्य १८, बहुगण काम दीपावे अने नींद घनी आवे अने आकार बुरा १९; अजाण फल फूल आदि कदे (?) विषफल होइ २०, तुच्छ फल जिसके घणे खाणेसे तृपित न होइ २१; चलित रस जे कुहिया अन्न आदिक उदन पहर उपरात दही, १६ पहर, छाछ १२ पहर, करवा ८ पहर, जाडी रावडी १२ पहर, पतली रावडी ८ पहर, लापसी ४ पहर, पूडा ४ पहर, रोटी ४ पहर, कांजीके वडे ४ पहर, कोरे वडे ४ पहर, खीरडी ४ पहर, पीछे ए सर्व रस चलित होइ है जोकर वस्र आदि कारणे जलदी रस चले तो विवेकीये पहिला ही वरजणा, ए व्यवहारकी अपेक्षा है. एव २२ वर्जनीय.

अथ बत्तीस अनतकाया—सर्व कद जाति सूरणकद १, वज्रकद २, आली हलद ३, आदउ ४, आला कपूर ५, सतावरि ६, विराली ७, कुमारि ८, थोहर ९, गिलो १०, लहसण ११, वासना करल १२, गाजर १३, लाणा जिसकू वाली साजी करे १४, लोटो पोपणनउ कद १५, गिरिकर्णिका वेलि १६, नवा ऊगता किसलय पत्र १७, खेरिं सुया १८, थेगकद १९, आला मोथ २०, लवण वृक्षकी छाल २१, खेलूडा २२, अमृतवेलि २३, मूली २४, भूमिफोडा जे वर्षाकाले छत्रडा उपजे २५, विरूहा जे कठुल धान्य अङ्कुरिया हुइ २६, जे छेद्या पीछे उगे २७, सूयरवाल जे मोटउ होइ २८, कोमल आम्बली जेह माहे चीचकउ सचरिउ नही २९, पलक ३०, आलू ३१, पिंडालू ३२, ए अनतकाय प्रसिद्ध है और अनंतकायके लक्षण श्रीपन्नवणाजीके(प्रथम) पद (पृ. २५) थी जानना "चक्कग भज" इत्यादि.

अथ भग १४७ श्रावकके श्रीभगवतीजीसे जानने कारण कारवण आदि. गुरुमुखे पचक्खाण करे; इहां गुरु अने श्रावक आश्री च्यार भांगा है. ते किम ? गुरु पचक्खाणनउ जाण अने श्रावक पचक्खाणनउ जाण, ए भांगा शुद्ध १, अने गुरु जाणकार पिण श्रावक अजाण तउ तेहने पचक्खाण सखेपथी सुणा कर भेद करावे ए भांगा शुद्ध २, तथा गुरु अजाण पिण श्रावक जाणकार ए भागामां मलउ ३, तथा श्रावक अजाण अने गुरु अजाण, ए भांगा सर्वथा अशुद्ध ४. एव च्यार भागा जानना.

अथ पचक्खाणकी ६ शुद्धि—(१) फासिय-विशुद्धिसे यथावत् उचित काल प्राप्त, (२) पालिय-वार वार स्मरण करणा, (३) सोहिय-गुरुदत्त शेष भोजन करणा, (४) तीरिय-आपणे काल तक पूरी करे, (५) किट्टिय-भोजनके अवसर फेर सरण करे, (६) आराहिय-उपरिले बोल पूरे करे ते आराध्या. अथवा छ शुद्धि प्रकारांतरे—सद्दहणा शुद्ध १, जानना शुद्ध २, विनयशुद्धि ३, अनुभासणशुद्ध ४, अनुपालनशुद्ध ५, भावशुद्ध ६. इस विध पच-क्खाण पालीने अनत जीव तरे, आगे तरसे इति समाप्त.

अथ आगे श्रावकके बारह व्रतोंके सर्व भंगका स्वरूप लिख्यते—

प्रा	मृ	अ
१	१	१
२	१	१
३	१	१
४	१	१
५	१	१
६	१	१
१	२	१
२	२	१
३	२	१
४	२	१
५	२	१
६	२	१
१	३	१
२	३	१
३	३	१
४	३	१
५	३	१
६	३	१
१	४	१
२	४	१
३	४	१
४	४	१
५	४	१
६	४	१
१	५	१
२	५	१
३	५	१
४	५	१
५	५	१
६	५	१
१	६	१
२	६	१
३	६	१
४	६	१
५	६	१
६	६	१

प्रा	६	एक सयोग १	६	६
प्रा मृ	६ ३६	प सं २ द्वि „ १	१२ ३६	४८
प्रा मृ अ	६ ३६ २१६	प „ ३ द्वि „ ३ त्रि „ १	१८ १०८ २१६	३४२
प्रा मृ अ मै	६ ३६ २१६ १२९६	प „ ४ द्वि „ ६ त्रि „ ४ चा „ १	२४ २१६ ८,४ १२९६	२४००
प्रा मृ अ म प	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६	१ „ ५ २ „ १० ३ „ १० ४ „ ५ ५ „ १	३० ३६० २१६० ६४८० ७७७६	१६८०६
प्रा मृ अ मै प दि	६ ३६ २१६ १२२६ ७७७६ ४६६५६	१ „ ६ २ „ १५ ३ „ २० ४ „ १५ ५ „ ६ ६ „ १	३६ ५४० ४३२० १०४४० ४६६५६ ४६६१६	११७६४८
प्रा मृ अ मै प दि मो	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६ ४६६५६ २७९९३६	१ „ ७ २ „ २१ ३ „ ३५ ४ „ ३५ ५ „ २१ ६ „ ७ ७ „ १	४२ ७१६ ७५६० ४५३६० १६३२९६ ३२६५९२ २७९९३६	८२३५४२
प्रा मृ अ मै प दि मो अ	६ ३६ २१६ १२९६ ७७७६ ४६६१६ २७९९३६ १६७९६१६	१ „ ८ २ „ २८ ३ „ ५६ ४ „ ७० ५ „ ५६ ६ „ २८ ७ „ ८ ८ „ १	४८ १००८ १२०९६ ९०७२० ४३५४५६ १३०६३६८ २२३९४८८ १६७९६१६	५७६४८००

मा	६	१	,, ९	५४	४०३५३६०६
मृ	३६	२	,, ३६	१२९६	
अ	२१६	३	,, ८४	१८१४४	
मै	१२९६	४	,, १२६	१६३२९६	
प	७७७६	५	,, १२६	९७९७७६	
दि	४६६५६	६	,, ८४	३९१९१०४	
मो	२७९९३६	७	,, ३६	१००७७६९६	
अ	१६७९६१६	८	,, ९	१५११६५४४	
सा	१००७७६९६	९	,, १	१००७७६९६	
मा	६	१	,, १०	६०	२८२४७५२४८
मृ	३६	२	,, ४५	१६२०	
अ	२१६	३	,, १२०	२५९२०	
मै	१२९६	४	,, २१०	२७२१६०	
प	७७७६	५	,, २५२	१९५९५५२	
दि	४६६५६	६	,, २१०	९७९७७६०	
मो	२७९९३६	७	,, १२०	३३५९२३२०	
अ	१६७९६१६	८	,, ४५	७५५८२७२०	
सा	१००७७६९६	९	,, १०	१००७७६९६०	
दे	६०४६६१७६	१०	,, १	६०४६६१७६	
मा	६	१	,, ११	६६	१९७७३२६७४२
मृ	३६	२	,, ५५	१९८०	
अ	२१६	३	,, १६५	३५६४०	
मै	१२९६	४	,, ३३०	४२७६८०	
प	७७७६	५	,, ४६२	३५९२५१२	
दि	४६६५६	६	,, ४६२	२१५५५०७२	
मो	२७९९३६	७	,, ३३०	९२३७८८८०	
अ	१६७९६१६	८	,, १६५	२७७१३६६४०	
सा	१००७७६९६	९	,, ५५	५५४२७३२८०	
दे	६०४६६१७६	१०	,, ११	६६५१२७९३६	
पी	३६२७९७०५६	११	,, १	३६२७९७०५६	
मा	६	१	,, १२	७२	१३८४१२८७२००
मृ	३६	२	,, ६६	२३७६	
अ	२१६	३	,, २२०	४७५२०	
मै	१२९६	४	,, ४९५	६४१५२०	
प	७७७६	५	,, ७९२	६१५८५९२	
दि	४६६५६	६	,, ९२४	४३११०१४४	
मो	२७९९३६	७	,, ७९२	२२१७०९३१२	
अ	१६७९६१६	८	,, ४९५	८३१४०९९२०	
सा	१००७७६९६	९	,, २२०	२२१७०९३१२०	
दे	६०४६६१७६	१०	,, ६६	३९९०७६७६१६	
पी	३६२७९७०५६	११	,, १२	४३५३५६४६७२	
अ	२१७६७८२३३६	१२	,, १	२१७६७८२३३६	

प्रथमव्रते षट् भगा त एव सप्तगणाः, कथ? षट्गुणने ३६ द्वितीयव्रतस्य ६ षट् प्रथम व्रतस्य प्रक्षेप्यन्ते यथा ४८; एव सर्वत्र ७ गुणा' षट्प्रक्षेपः

प्रा १,२,३,४,५,६ भगा एकसयोगे १	प्रा १,२,३,४,५,६, ३६ मृ ६,६,६,६,६,६ द्विकसयोग २

प्रा १ १ १ १ १ १ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६ त्रिकसयोग ३	प्रा २ २ २ २ २ २ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	प्रा ३ ३ ३ ३ ३ ३ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६

प्रा ४ ४ ४ ४ ४ ४ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	प्रा ५ ५ ५ ५ ५ ५ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	प्रा ६ ६ ६ ६ ६ ६ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ अ ६ ६ ६ ६ ६ ६	एव ३६, षट् षट्त्रिंशद्भि' भग २१६, एव अग्रेऽपि भावना कार्या

प्रा १ १ १ १ १ १ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ४ ४ ४ ४ ४ ४ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	एव ३६, प्रथम व्रतस्य षट्, द्वितीयव्रतस्य षट्, एव १२, एव ३६ मध्ये प्रक्षेपे ४८	प्रा	९	१	९	९
प्रा २ २ २ २ २ २ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ५ ५ ५ ५ ५ ५ मृ १ २ ३ ४ ५ ६		प्रा मृ	९ ८१	२ १	१८ ८१	९९
प्रा ३ ३ ३ ३ ३ ३ मृ १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ६ ६ ६ ६ ६ ६ मृ १ २ ३ ४ ५ ६		प्रा मृ अ	९ ८१ ७२९	३ ३ १	२७ २४३ ७२९	९९९

एव अग्रेतन अष्ट यत्र ज्ञेय १२ मे

३ ३ ३ २ २ १ १ ३ ३	२ २ २ ३ २ १ ३ ९ ९	१ १ १ ३ २ १ ३ ९ ९	क का अ नु लब्ध	नव भग्युक्त २ भेद ४९ भगयत्र म १ व २ का ३ मावा ४ माका ५ वाका ६ मावाका ७ कर १ करा २ कराकरा ३ सस त्रि २१; एह एकवीस भगाचा स्वरूपम्

नव भङ्ग्या तु प्रथमव्रते भङ्गा नव ९, ततो द्विकादि व्रते सयोगे दशगुणित नवकप्रक्षेप-क्रमेण तावद् गन्तव्य यावदेकादशवेलायां द्वादशव्रतसयोगभङ्गसङ्ख्या ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९, ए सर्व नवभगीना भांगा

२ २ २ ३ २ १ १ ३ ३	१ १ १ ३ २ १ २ ६ ६	क का म व का	षट्भग्युत्तरभेद २१ भगयत्रम्		
प्रा					
मृ	९	१२	१०८		९
अ	८१	६६	५३४६		९
मे	७२९	२२०	१६०३८०		९
प	६५६१	४९५	३२४७६९५		९
दि	५९०४९	७९२	४६७६६८०८		९
मो	५३१४४१	९२४	४९१०११४८४		९
अ	४७८२९६९	७९२	३७८८११४४८		९
सा	४३०४६७२१	४९५	२१३०८१२६९५		९
दे	३८७४२०४८९	२२०	८५२३२५०७५८०		९
पौ	३४८६७८४४०१	६६	२३०१२७६७०४६६		९
अ	३१३८१०४९६०९	१२	३७६५७२७१५३०८		९
	२८२४२९५३६४८१	१	२८२४२९५३६४८१		

षड् एकविंशति भंग न्यायेन

मा	२१	१२	२५२	१२८५५००२६३३१०४४१२५
मू	४४१	६६	२९१०६	
अ	९२६१	२२०	२०३७४२०	
मै	१९४४८१	४९५	९६२६६०९५	
प	४०८४१०१	७९२	३२३४६०७९९२	
दि	८५७६६१२१	९२४	७९२४७८९५८०४	
मो	१८०१०८८५४१	७९२	१४२६४६२१२४४७२	
अ	३७८२२८५९३६१	४९५	१८७२२३१५२८३६९६	
सा	७९४२८००४६५८१	२२०	१७४७४१६१०२४७८२०	
दि	१६६७९८८०९७८२०१	६६	११००८१२१४४५६१२६६	
पौ	३५०२७७५००५४२२२१	१२	४२०३३३०००६५०६६४२	
अ	७३५५८२७५११३८६६४१	१	७३५५८२७५११३८६६४१	

कर १ करा २ अनु ३ कर । करा ४ कुरा अनु ५ कार अनु ६ कारका अनु ७ सस सस गुणा ४९ भंगी भवति

मा	४९	१२	५८८	२५४१४०६२५०९९९९९९९९९९
मू	२४०१	६६	१५८४६६	
अ	११७६४९	२२०	२५८८२७८०	
मै	५७६४८०१	४९५	२८५३५७६४९५	
प	२८२४७५२४९	७९२	२२३७२०३९७२०८	
दि	१३८४१२८७२०१	९२४	१२७९९३४९३७३७२४	
मो	६७८२२३०७२८४९	७९२	५३७१५२६७३६९६४०८	
अ	३३२३२९३०५६९६०१	४९५	१६४ ०३००६३१९५२४९५	
स	१६२८४१३५९९७९१०५४९	२२०	३५८२५०९९१५४०२९८७८०	
सं	७९७९२२६६२९७६१२००१	६६	५२६६२८२५५७६१६४२३९२०६६	
पौ	३९०९८२१०४८५८२९८८०४९	१२	४६९१७८५२५८२९९५८९६६१८	
अ	१९१५८१२३१३८०५६६४१४४०१	१	१९१५८१२३१३८०५६६४१४४०१	

एकसो सैंताळीस १४७ भंगी न्यायेन

प्र	१४७	१२	१७६४	१३०४४४३९०७७१९६६११४३३५६०५५६९४
मू	२१६०९	६६	१४२६१९४	
अ	३१७६५२३	२२०	६९८८३५०६०	
मै	४६६९४८८८१	४९५	२३११३३९६९६०९५	
प	६८६४१४८५५०७	७९२	५४३६४०५६५२१५४४	
दि	१००९०२९८३६९५२९	९२४	९३२३४३५६९३४४७७९६	
मो	१४८३२७३८६०३२०७६३	७९२	११७४७ २८९७३८०४४२९६	
अ	२१८०४१२५७४६७१५२१६१	४९५	१०७९३०४२२४६२४०३१९६९	
सा	३२०५२०६४८४७८७३६७६६७	२२०	७०५१४५७२६६४८७७००८८६७४०	
सं	४७११६५३५३२६०७८९१०४७०४९	६६	३१०९६९१३३१५२१०७६०९१०५२३४	
पौ	६९२६१३९६९२९३३३०१८३९१६२०३	१२	८३११३७६८३१५१९९६७००६९९४४३६	
अ	१११८१५४०६४८६११९५९३८३५६८१८४१	१	१११८१' ४०६४८६११९५९३८३५६८१८४१	

एकविंशतिमङ्गा'—प्रथमव्रते एकविंशतिमङ्गास्ततो द्विकादिव्रतसंयोगे द्वाविंशतिगुणित एकविंशतिप्रक्षेपक्रमेण तावद् गन्तव्य यावदेकादशवेलाया द्वादशव्रतसंयोगे भङ्गसङ्ख्या।

एकोनपञ्चाशद् भङ्गाः—प्रथमव्रते एकोनपञ्चाशद् भङ्गास्ततो द्विकादिव्रतसंयोगे पञ्चाशद्गुणित एकोनपञ्चाशत्प्रक्षेपक्रमेण तावद्०।

सप्तचत्वारिंशत्शतभङ्गाः—प्रथमव्रते सप्तचत्वारिंशत्शतं भङ्गाः द्विकादिसंयोगे अष्टचत्वारिंशत्शतगुणित सप्तचत्वारिंशत्शत-प्रक्षेपक्रमेण तावद्० ।

( )

प्रा० १	मृ० २	अ० ३	मैथुन ४	परि० ५	दिग् ६	भोगो० ७	अन० ८	सामा० ९	दिशा० १०	पौषध ११	अतिथि० १२
मने करी करू नही	—	—	→	ए	व	म्			→		→
मने करी करावु नही १	६	३६	२१६	१२९६	७७७६	४६६५६	२७९९३६	१६७९६१६	१००७७६९६	६०४६६१७६	३६२७९७०५६
वचने करी करू नही २	१२	७२	४३२	२५९२	१५५५२	९३३१२	५५९८१२	३३५९२३२	२०१५५३९२	१२०९३२३५२	७२५५९४११२
वचने करी करावू नही ३	१८	१०८	६४८	३८८८	२३३२८	१३९९६८	८३९८०८	५०३८८४८	३०२३३०८८	१८१३९८५२८	१०८८३९११६८
काया करी करू नही ४	२४	१४४	८६४	५१८४	३११०४	१८६६२४	१११९७४४	६७१८४६४	४०३१०७८४	२४१८६५७०४	१४५११८८२२४
काया करी करावू नही ५	३०	१८०	१०८०	६४८०	३८८८०	२३३२८०	१३९९६८०	८३९८०८०	५०३८८४८०	३०२३३०८८०	१८१३९८५२८०
१ संयोगी	२ सं०	३ सं०	४ सं०	५ सं०	६ सं०	७ सं०	८ सं०	९ सं०	१० सं०	११ सं०	१२ सं०
६	३६	२१६	१२९६	७७७६	४६६५६	२७९९३६	१६७९६१६	१००७७६९६	६०४६६१७६	३६२७९७०५६	२१७६७८२३३६

एग वए छ भगा, निद्दिठा सावयाण जे सुत्ते । ते चिय वयवुड्ढीए, सत्तगुणा छजुया कमसो ॥ १ ॥

इति सर्वव्रतानां भङ्गोत्पत्तिकारिका मतव्या इति श्रावकनवाना भङ्गाः समर्थिताः।
इति आत्मारामसङ्कलिताया संवरतत्त्व सपूर्णम्।

अथ 'निर्जरा' तत्त्व लिख्यते—अथ 'निर्जरा' शब्दार्थ—'निर्' अतिशय करके 'जॄ' कहतां हानि करे कर्मपुद्गलनी ते 'निर्जरा' कहीये. अथ निर्जराके बारा भेद लिख्यते—अनशन १, ऊनोदरी २, भिक्षाचरी ३, रसपरित्याग ४, कायक्लेश ५, प्रतिसंलीनता ६; प्रायश्चित्त १, विनय २, वैयावृत्त्य ३, स्वाध्याय ४, ध्यान ५, व्युत्सर्ग ६; एव १२. पहेले ६ भेद बाह्य निर्जराके जानने, आगले ६ भेद अभ्यतर निर्जराके जानने, तपवत्. इस तरे निर्जराके भेदोंका विस्तार उववाइ शास्त्रसे जानने. इहां तो किंचित् मात्र ध्यान च्यारका स्वरूप लिख्यते श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणविरचित ध्यानशतकथी।

अथ ध्यानस्वरूप दोहरा—

शुक्ल ध्यान पावक करी, करमेधन दीये जार, धीर धीर प्रणमु सदा, भवजल तारनहार १
अथ आर्त्तध्यानके च्यार भेद कथन सवईया इकतीसा—
द्वेषहीके वश पर अमनोग विसे धर तिनका विजोग चिंते फेर मत मिलीयो
शूल कुण्ठ तप रोग चाहे इनका विजोग आगेकू न होय मन औषधिम मिलियो
राग वस इष्ट विसे साता सुप माहि लिये नारी आदि इष्टके सजोग भोग किलियो
इद चद धरनिंद नरनको इद थऊ इत्यादि निदान कर आरतमे झिलियो १
अथ स्वामी अने लेश्या कथन सवईया ३१ सा—
राग द्वेष मोह भर्यो आरतमे जीव पर्यो बीज भयो जगतरु मन भयो आध रे
किसन कपोत नील लेसा मइ मध मही उतकृष्ट जगनमे एकही न सांध रे
आरतके वस पर्यो नर जन्म हार कर्यो चलत दिखाइ हाथ चढ चहू काध रे
आतम सयाना तोकू एही दुपदाना जाना दाना मरदाना है तो अब पाल बांध रे २
अथ आर्तके लिंग—
रोद करे सोग करे गाढ स्वर नाद करे हिरदेकू कूट मरे इष्टके विजोग ते
चित्त मांजि पेद करे हाय हाय साद करे वदन ते लाल गिरे कष्टके सजोग ते
निंदे कृत आप पर रिद्धि देष चित ताप चाहे राग फाहे मेरे ऐसा क्यु न जोग ते
विसेका पिया सामन आसा पासा भासा घन आलसी विसेमे गृद्ध मूढ मति जोग ते ३
इति आर्तध्यान सपूर्णम् अथ रौद्र ध्यानके च्यार भेद—
निर्घृण चित्त करी जीव वध नीत धरी वेध वध दाह अक मारण प्रणाम रे
माया झूठ पिशुनता कठन वचन भने एक ब्रू (ब्र)ह्म जग मने नाना नही काम रे
पचभूतरूप काया देवकू कुदेव गाया आतम सरूप भूप नही इन ठाम रे
छाना पाप करे लरे दुष्ट परिणाम धरे ठगबासी रीत करे दूजा भेद आम रे ४

पर धन हरे क्रोध लोभ चित धरे दूर दिल दया करे जीव वध करी राजी है
पापसे न डरे कष्ट नरकके गरे परे तिनकी न भीत करे कहे हम हाजी है
मांस मद पान करे भामनि लगावे गरे रात दिन काम जरे मन हूये रानी है
नरककी आग जरे जमनकी मार परे रोय रोय मरे जिहां अल्ला है न काजी है ५

अथ चौथा भेद—

साद आद साधनके धनकु समार रखे कारण विसेके सब मेलत महान है
वीणा आद साद पूर पूतरी गध कपूर मोदक अनेक कूर ललना सुहान है
अमनोगसे उदास दुष्ट मनन विसास पर घात मन धरे मलिन अग्यान है
आतमसरूप कोरे तप जप दान चोरे ग्यानरूप मारे कोरे टरे रुद्र ध्यान है ६

अथ स्वामी—

राग द्वेस मोह भरे चार गति लाभ करे नरकमे परे जरे दुखकी अगनसे
किसन कपोत नील सक्लेस लेस तीन उतकिरू(कृ)ष्ट रूप भइ गइ है जगनसे
मोहकी मरोर पगे कामनीके काम लगे निज गुन छोर भगे होरकी लगनसे
एही रीत जिन टारी भय है धरम धारी मात तात सुत नारी जाने है ठगनसे ७

अथ लिंग ४ कथन—

दिव माहे बहु वार जीव वध आदि चार चिंतन कर करत लिंग प्रथम कहातु है
बहु दोस एक दोन तीन चार चिंते सोय मोहमे मगन होय मूढ ललचातु है
नाना दोस अमुकक अमुक प्रकार करी मार गारु पार डारु रिदेमे ठरातु है
आमरण दोस काही अतकाल छोडे नाही जगमे रुलाइ भव भ्रमण करातु है ८

अथ कृत(कर्त)व्य—

रुद्रध्यान पर्यो जीव पर दुष देष कर मनमे आनद माने ठाने न दया लगी
पाप करी पछाताप मनसे न करे आप अपर करीने पाप चिते मेरि झालगी
किसकी न सार करे निरदयी नाम परे करथी न दान करे जरे कामदा लगी
कही समझाया फिर जात उर झाया समझे न समझाया मेरे कह की कहा लगी ९

इति रौद्र ध्यान सपूर्णम् ॥ २ ॥ अथ धर्मध्यानका स्वरूप लिख्यते—द्वार १२—भावना १, देश २, काल ३, आसन ४, आलबन ५, क्रम ६, ध्यातव्य ७, ध्याता ८, अनुप्रेक्षा ९, लेश्या १०, लिंग ११, फल १२ तत्र प्रथम भावना ४—ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३ वैराग्य ४. अथ प्रथम 'ज्ञान'-भावना, सवईया इकतीसा—

यथावत् जोग यही गुरुगम्य ग्यान लही आठ ही आचार ही ग्यान सुद्ध धर्यो है
ग्यानके अभ्यास करी चचलता दूर टरी आसवास दूर परी ग्यानघट्ट भर्यो है

प्रकट तुरग रग कूदित विहग खग मन थिर भयो जु निवात दीप जयों है
ग्यान सार मन धार विमल मति उनार आतम सभार थिर ध्यान जोग कयों है १
इति 'ग्यान' भावना. अथ 'दर्शन'–भावना—
सखा कखा दूर करी मूढता सकल हरी सम थिर गुन भरी टरी सन मोहनी
मिथ्या रग भयो भग कुगुर कुसग फग सतगुर सग चग तत्त वात टोहनी
निर्वेद सम मान दयाने सवेग ठान आसति करत जान राग द्वेस दोहनी
ध्यान केरी तान धरे आतमसरूप भरे भावना समरू करे मति सोहनी १
इति. अथ 'चारित्र'–भावना—
उपादान नूतन करम कोन करे जीन पुन्न भव सचित दगध करे छारसी
सुमका गहन करे ध्यान तो धरम धरे विना ही जतन जैसे चाकर गुहारसी
चारतको रूप धार करम पपार डार मार धार मार चूद गिरे जैसे ठारसी
करम कलक नासे आतमसरूप पासे सत्ताको सरूप भासे जैसे देखे आरसी १
इति. अथ 'वैराग'–भावना—
चक्रपति विभो अति हलधर गदाधर मडलीक रान जाने फूले अतिमानमे
रतिपति विभो मति सुखनकू मान अति जगमे सुहाये जैसे वादर विहानमे
रंभा अनुहार नार तनमे करे सिंगार पिनक तमासा जैसे चीन आसमानमे
पवन झकोर दीप बुझत छिनकमा जिऐसे बुझ गये फिर आये न जिहानमे १
खासा खाना खाते मनमाना सुख चाते ताते जानते न जात दिन रात तान मानमे
सुदर सरूप वने भूपनमे घने घने पोर समेमने अने वच मद मानमे
गेह नेह देह सग आस लोभ नार रग छोरके विहग जैसे जात असमानमे
पवन झकोर दीप बुझत छिनकमां जिऐसे बुझ गये फिर आये न जिहानमे २
रोया रीकी घरे परी राषत न एक घरी प्रिया मन सोग करी परीकूने जाइ रे
माता हु विहाल कहे लाल मेरो गयो छोर आसमान माही मेरी पूरी हु न काइ रे
मिल कर चार नर अरथीमे धर कर जगमे दिखाइ कर कूटे सिर माइ रे
पीछे ही तमासा तेरो देखेगा जगत सब आपना तमासा आप क्यू न देखे भाइ रे ! ३
हाथी आथी छोर करी धाम वाम परहरी ना तातां तोर करी घरी न ठराइ रे
पान पीन हार यार कोउ नही चले नार आपने कमाये पाप आप साथ जाइ रे
सुदरसी वपु जरी छारनमे छार परी आतम ठगोरी भोरी मरी धोखो पाइ रे
पीछेहि तमासा तेरो देखेगा जगत सब आपना तमासा आप क्यू न देखे भाइ रे ! ४
इति 'भावना' द्वार सपूर्णम्. अथ 'देखा' द्वारमाह–कुशीलसगवर्जन सवईया इकतीसा—
भामनि पसु ने पड रहित स्थान चग विजन कुसील जनसगत रहतु है
धूतरार १ हस्तिपार २ सनतिकार ३ नार ४ छातर पवनहार ५ कुद्दिनी सहतु है

नट विट भांड रांड पर घर नित हांड एही सन दूर छांडकु 'सील' कहतु है
ध्यान दृढ मुनि मन सुन्य गृह ग्राम वन तथा जना कीरण विसेस न लहतु है १
मन वच काये साधि होत है जहां समाधि तेही देस थानक थियानजोग कहे है
पृथी (थ्वी) आप तेज वन बीज फूल जीव घन कीट ने पतंग भृंग जीव वचन हे है
ऐसा ही सथान ध्यान करनेके जोग जान सग एकलो विसेस नहीं लहे है
एही देस द्वार मान ध्यान केरा वान तान मिष्ट कर अरि थान सदा जीत रहे है २
इति 'देश' द्वार २. अथ 'काल' द्वारमाह-दोहरा—
जोग समाधिमे वसे, ध्यान काल है सोय, दिनस घरीके कालको, ताते नियम न कोय १
इति 'काल' द्वार ३. अथ 'आसन' द्वार-दोहरा—
सोवत बैठे तिष्ठते, ध्यान सभी विध होय, तीन जोग थिरता करो, आसन नियम कोय १
इति 'आसन' द्वार ४. अथ 'आलंबन' द्वार, सवईया इकतीसा—
वाचन पूछन कित वार वार फेरे नित अनुपेहा सुद्ध मेहा धरम सहतु है
समक श्रुत समाय देस सब वृत्ति थाय चारो ही समाय धाय लाभ लहतु है
विषम प्रसाद पर चरवेको मन कर रजुरू पकर नर सुपखे चरतु है
ऐसो 'धर्म' ध्यान सौंध चरवेको भयो बोंध वाचनादि 'आलंबन' नामसु कहतु है १
इति 'आलंबन' द्वार ५. अथ 'क्रम' द्वार-योगनिरोधविधि, दोहरा—
प्रथम निरोधे मन सुद्धी, वच तन पीछे जान, वा वचन मन रोधे तथा, वचन तन मन इक ठान १
इति 'क्रम' द्वार ६. अथ 'ध्यातार' द्वार, सवैया ३१ सा—
धरमका ध्याता ग्याता मुनिजन जग त्राता जगतहू देत साता गाता निज गुणने
छोरे सब परमाद जारे सब मोह माद ग्यान ध्यान निरावाद वीर धीर धुणने
खीण उपसत मोह मान माया लोभ कोह चारों गेरे खोह जोह अरि निज मुणने
आलस उजारी टारी करम कलंक भारी महावीर वैन ऐननीकी भांत सुणने १
इति 'ध्यातार' द्वार ७. अथ 'ध्यातव्य' द्वार प्रथम आज्ञाविज(च)य—
निपुन अनादि हित मोल तोलके न कित कथन निगोद मित महत प्रभावना
भामन सरूप धरे पापको न लेस करे जगत प्रदीप जिनकथन सुहावना
जड मति बूझे नहि नय भंग सूझे नहि गमक परिमान गेय गहन भुलावना
आरज आचारजके जोग विना मति तुच्छ सका सब छोर वाद वारके कहावना १
अथ अपायविज(च)य—
कुटुमके काज लाज छोरके निलज्ज भयो ठान तसका जतन सीत घाम सहे है
चिंता करी चकचूर दुपनमे भरपूर उड गयो तननूर मेरो मेरो कहे है
पाप केरी पोटरी उठाय कर एक रोतु रींक झींक सोग भरे साथी इहां रहे है
नरक निगोद फिरे पापनको हार गरे रोय रोय भरे फेर ऊन सुरा चहे है २

अथ विपाकविज(च)य—

करम समावथित रस परदेस मित मन वच काये थित सुभासुभ कर्यो है
मूल आठ भेद छेद एकसो अठावना है निज गुन सन दबे प्राणी भूल पर्यो है
राजन ते रंक होत ऊंच थकी नीच गोत कीट ने पतग भृग नाना रूप धर्यो है
छेदे जिन कर्म भ्रम ध्यानकी अगन गर्म मानत अनग सर्म धर्मधारी ठर्यो है ३

अथ सठाणविज(च)य—

आदि अत वेहू नही वीतराग देव कही आसति दरब पंचमय स्वय सिद्ध है
नाम आदि भेद अष्टुपूव्व धार कहे बहु अधो आदि तीन भेद लोक केरे किद्ध है
पिति वले दीप वार नरक विमानाकार भवन आकार चार कलस महिद्ध है
आतम अपड भूप ग्यान मान तेरो रूप निज दग पोल लाल तोपे सब रिद्ध है ४

इस सवईयेका भावार्थ आगे यत्रोमे लिखेंगे तहासे जानना इति सस्थानविज(च)य इति 'ध्यातव्य' द्वार ८.

अथ 'अनुप्रेक्षा' द्वार–ध्यान कर्या पीछे चितना ते 'अनुप्रेक्षा.' सवईया ३१ सा, समुद्रचिंतन—

आपने अग्यान करी जम्म जरा मीच नीर कषाय कलस नीर उमगे उतावरो
रोग ने विजोग सोग स्वापद अनेक थोग धन धान रामा मान मूढ मति बावरो
मनकी भमर तोह मोहकी भमर जोह वातही अग्यान जिन तान वीचि धावरो
सका ही लघु तरंग करम कठन द्रग पार नही तर अब कहू तो हे नावरो १

अथ पोतवरनन—

सत जन वणिग विरतमय महापोत पत्तन अनूप तिहा मोषरूप जानीये
अवधि तारणहार समक बधन द्वार ग्यान है करणधार छिदर मिटानीये
तप वात वेग कर चलन विराग पथ सकाकी तरग न ते पोम नही मानीये
सील अंग रतन जतन करी सौदा भरी अवाबाध लाभ धरी मोष सौध ठानीये २

इति अनुप्रेक्षा द्वार ९. अथ अनुप्रेक्षा चार कथन, सवैया ३१ सा—

जगमे न तेरो कोउ सपत विपत दोउ ए करो अनादिसिद्ध भरम भुलानो है
जासो तूतो माने मेरो तामे कोन प्यारो तेरो जग अध कूप झेरो परे दुख मानो है
मात तात सुत भ्रात भारजा बहिन आत कोइ नही त्रात थात भूल भ्रम ठानो है
थिर नही रहे जग जग छोर धम्म लग आतम आनद चद मोष तेरो थानो है ३

इति अनुप्रेक्षा द्वार ९. अथ 'लेश्या' द्वारकथन, दोहरा—

पीत पउम ने सुक है, लेसा तीन प्रधान, सुद्ध सुद्धतर सुद्ध है, उत्कट मद कहान १

इति लेश्याद्वार १०, अथ 'लिंग' द्वार, सवैया इकतीसा—

धमा धम्म आदि गेय ग्यान केरे जे प्रमेय सत सरद्धान करे सका सब छारी है
आगम पठन करी गुरुवैन रिदे धरी वीतराग आन करी स्वयबोध भारी है

चार ही प्रकार करी मिथ्या भ्रम जार जरी सतका सरूप धरी भय ब्रह्मचारी है
आतम आराम ठाम सुगतिको करी वाम भयो मन सिद्ध काम फूलनकी वारी है १
इति 'लिंग'द्वारम्. अथ 'फल'द्वार—
कीरति प्रशसा दान विने श्रुत सील मान धरम रतन जिन तिनही को दीयो है
सुरगमे इंद भूप थान ही विमानरूप अमर समरसुप रमा चमा कीयो है
नर केरी जो न पाय सुप सहु मिले धाय अंत ही विहाय सन तोपरस पीयो है
आतम अनत वल अघ अरि तोर दल मोपमे अचल फल सदा काल जीयो है १
इति फलम्. इति धर्मध्यान सपूर्णम् ३.

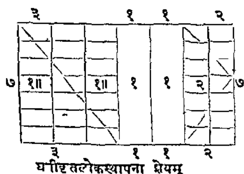
अथ शुक्ल ध्यान लिख्यते-अथ 'आलम्बन' कथन, दोहरा—
खति आर्जव मार्दव, मुक्ति आलवन मान, सुकल सौधके चरनको, एही भये सोपान १
इति आलवन. अथ ध्यानक्रमस्वरूप, सवैया ३१ सा—
त्रिभुवन फख्यो मन क्रम सो परमानु विषे रोक करी धर्यो मन भये पीठे केवली
जैसे गारुडिक तन विसकू एकत्र करे डक मुप आन धरे फेर भूम ठेवली
ध्यानरूप वल भरी आगम मंतर करी जिन वैद अनु थकी फारी मनने वली
ऐसे मन रोधनकी रीत वीतराग देव करे धरे आतम अनत भूप जे वली १
जैसे आगइ धनके घट ते घटत जात स्तोक एध दूर कीये छार होय परी है
जैसे घरी कुड जर धर नार छेर कर सने सने छीज तजु मन दोर हरी है
जैसे तत्ततवे धर्यो उदग जर तपस्यो तैसें विभु केवलीकी मनगति जरी है
ऐसें वच तन दोय रोधके अजोगी भये नाम है 'सेलेस' तव ए जनही करी है २

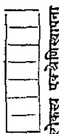
अथ शुक्ल ध्यानके च्यार भेद कथन, सवैया—
एक हि दरव परमानु आदि चित धरी उतपात व्यय ध्रुवस्थिति भग करे है
पुन्व ग्यान अनुसार पर जाय नानाकार नय विसतार सात सात सात सत धरे है
अरथ विजन जोग सविचार राग विन भगके तरग सन मन वीज भरे है
प्रथम सुकल नाम रमत आतमराम पृथग वितर्क आम सविचार परे है १ इति प्रथम.
एक हि दरवमाजि उतपात व्यय ध्रुव भग नय परि जाय एकथिर भयो है
निरवात दीप जैसे जरत अकप होत ऐसे चित घोत जोत एकरूप ठयो है
अरथ विजन जोग अविचार तत जोग नाना रूप गेय छोर एकरूप छयो है
'एकतवितर्क' नाम अविचार सुप धाम करम थिरत आग पाय जैसे तयो है २ इति दूजा.
विमल विग्यान कर मिथ्या तम दूर कर केवल सरूप धर जग ईस भयो है
मोपके गमनकाल तोर सव अघनाल ईपत निरोध काम जोग वस ठयो है
वनु काय क्रिया रहे तीजा भेद वीर कहे करम भरम सव छोरवेको थयो है
सूछम तो होत क्रिया 'अनिवृत्त' नाम लीया तीजा भेद सुकर सुकर दरसयो है ३ इति तीजा.

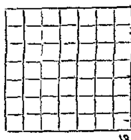
ईस सब कर्म पीस मेरु नगरा जईस ऐसे भयो थिर धीम फेर नही कपना
कदे हीन परे ऐसो परम सुकल भेद छेद सब किया ऐही नाम याको जपना
प्रथम सुकल एक योग तथा तीनहीमे एक जोग माहे दूजा भेद लेइ ठपना
काय जोग तीजो भेद चौथ भयो जोग छेद आतम उमेद मोष महिल धरपना ४
जैसे छदमस्थ केरो मनोयोग ध्यान कह्यो तैसे विभु केवलीके काय छोरे ध्यान ठेरे है
विना मन ध्यान कह्यो पूरव प्रयोग करी जैसे कुमकारचाक एक येरे है
पीछे ही फिरत आप ऐसे मन करे थाप मन रुक गयो तो ही ध्यानरूप लेरे है
वीतराग वैन ऐन मिथ्या नही कहै जैन ऐसे विभु केवलिने कर्म दूर गेरे है ५
इति चौथा. अथ अनुप्रेक्षाकथन, सवैया ३१ सा—
पापके अपथ केरी नरकमे दुप परे सोगकी अगन जरे नाना कष्ट पायो है
गर्भके वास वसे मूत ने पुरीष रसे जन्म पाय फेर हसे जरा काल खायो है
फेर ही निगोद वसे अंत विन काल फसे जगमे अभव्य लसे अंत नही आयो है
राजन ते रंक होत सुप मान देप रोत आतम अपद जोत घोत चित ठायो है १
अथ लेश्याकथन, दोहरा—
प्रथम भेद दो सुकलमे, तीजा परम चरान, लेश्यातीत चतुर्थ है, ए ही जिनमतवान १
अथ लिंगकथन, सवईया एकतीसा—
परीसहा आन परे ध्यान थकी नाही चरे गज मुनि जैसे परे ममताकू छोरके
देवमाया गीत नृत मूढता न होत चित सूषम प्रमान ग्यान धारे भ्रम तोरके
दीपे जो ही नेत्रको ही सब ही विनास होही निज गुन टोही तोही कहू कर जोरके
घर नर नार यार धन धान धाम वार आतमसे न्यार धार डार पार दोरके १
इति लिंग. अथ फल—
देव इंद चंद पद दोनोचर नारविंद पूजन आनंद छंद मंगल पठतु है
नाकनाथ रमापति नाटक विबुध रति भयो है विमानपति सुप न घटतु है
हलधर चक्रधर दाम धाम वाम घर रात दिन सुषभर कालयू कटतु है
जोग धार तप ठये अध तोर मोष गये सिद्ध विभु तेरी जयनाम यू रटतु है १ इति फल.
दोनो सुभध्यान धरे पापको न लेस करे ताते दोनो नही भये कारण ससार के
सवर निर्जर दोय भाव तप दोनो पोय तप सब अध खोय धोय सब छार के
याते दोनो तप भरे जीव निज चित धरे करम अधारे टारे ग्यानदीप जार के
करम करूर भूर आतमसे कीये दूर ध्यान केरे सूरने तो मारे है पछार के १
अथ आतम कर्म ध्यान दृष्टांतकथन—
वस्त्र लोह मही चक मलिन कलंक पंक जलानल सूर नूर सोधन करतु है
अबर ने लोह मही आतमसरूप कही करत कलंक पक मलिन कहतु है

जलानल दूर ध्यान ओतर्म अधिष्टधान जलानले ग्यान भानं मानके रहतु है
वसनकी मैल झरे लोह केरी कीटी जरे मही केरो पंक हरे उपमा लहतु है १
जैसे ध्यान धर करी मन वच काय लरी ताप सोस भेद परी ऐसे कर्म कहे है
जैसे वैद लघन विरेचन उपध कर ऐसे जिनवैद विधुरीत परठहे है
तप ताप तप सोस तप ही उपध जोस ध्यान भयो तपको स रोग दूर थहे है
ए ही उपमान ग्यान तपरूप भयो ध्यान मार फिर पान भान केवलको लहे है १
जैसे चिर सचि एध अगन भसम करे तैसे ध्यान छाररूप करत कर्मको
जैसे वात आमवृंद छिनमे उडाय डारे तैसे ध्यान ढाह डारे कर्मरूप हर्मको
जव मन ध्यान करे मानसीन पीर करे तनको न दुप धरे धरे निज सर्मको
मनमे जो मोप वसी जग केरी तो (?) रसी आतमसरूप लसी धार ध्यान मर्मको १

अथ पिछले सवैइयेका भावार्थमे लोकसरूप आदि विवरण लिख्यते—


घनीकृतलोकस्थापना ज्ञेयम्




लोकप्रतरस्थापना

अथ घनीकृत लोकस्वरूप लिख्यते—अथ पुनः किस प्रकार करके लोक सवर्त्य समचतुरस्र करीये तिसका स्वरूप कहीये है. स्वरूप थकी इह लोक चौदां रज्जु ऊचा है, अने नीचे देश ऊन सात रज्जु चौडा है, तिर्यग्लोकने मध्य भागे एक रज्जु चौडा है, ब्रह्मदेवलोकने मध्ये पाच रज्जु विस्तीर्ण है, ऊपर लोकांते एक रज्जु चौडा है, शेष स्थानकमे अनियत विस्तार है रज्जुका प्रमाण–'स्वयंभूरमण' समुद्रकी पूर्वकी वेदिकासे पश्चिमकी वेदिका लगे; अथवा दक्षिणनी वेदिकाथी उत्तरकी वेदिका पर्यंत एक रज्जु जान लेना. ऐसे रज्जु इह लोकना बुद्धि करी कल्पना करके सवर्त्य धन करीये है तथाहि–एक रज्जु विस्तीर्ण त्रसनाडीके दक्षिण दिशावर्ती अधोलोकको खड नीचे देश ऊन रज्जु तीन विस्तीर्ण अनुक्रमे हाय मान विस्तारथी उपर एक रज्जुका संख्यातमे भाग चौडा अने सात रज्जु झझेरा ऊचा एहवा पूर्वोक्त खड लइने त्रसनाडीके उत्तर पासे विपरीतपणे स्थापीये, नीचला भाग उपर अने उपरला भाग नीचे करी जोडना इत्यर्थ. ऐसे कर्या अधोवर्ति लोकका अर्ध देश ऊन चार रज्जु विस्तीर्ण विस्तीर्ण झझेरा सात रज्जु ऊचा अने चौडा नीचे तो किहा एक देश ऊन सात रज्जु मान अने अन्यत्र तो अनियत प्रमाणे जाडा अर्थात् बाद(हु)ल्यपणे है. अव उपरला लोकार्ध,संवर्त्ती-

(की)ये है तिहां पिण रज्जु प्रमाण त्रसनाडीके दक्षिण दिशे रह्या ब्रह्मलोकके मध्य भाग थकी नीचला अने उपरना दो दो खड, ब्रह्मलोकके मध्यमे प्रत्येक प्रत्येक दो दो रज्जु विस्तीर्ण उपर लोकने समीपे अने नीचा रत्नप्रभाने क्षुल्लक प्रतर समीपे अंगुल सहस्र भाग विस्तारे देश ऊन साढे तीन रज्जु प्रमाण दोनो खडांने बुद्धि कर करे गृहीने तेहने उत्तरने पासे पूर्वोक्त रीत करके स्थापीये. ऐसा कर्यां हुतें उपरले लोकांनो अर्ध अंगुलना दो सहस्र भाग अधिक तीन रज्जु विस्तीर्ण हुइ, इहां चारो ही खडांने छेहडे चार अंगुलना सहस्र भाग हुइ केवल एक दिशने विषे दोनो ही भागे करी एक ज अंगुल सहस्र भाग होइ एक दिग्वर्तीपणा थकी, इम अनेराइ जे दो भाग तिने करी एक सहस्र भाग हुइ, इस वास्ते दो भाग अधिकपणे कह्यो. देश ऊन सात रज्जु ऊचा बाहल्य थकी ब्रह्मलोकने मध्ये पाच रज्जु बाहल्य अने अन्यत्र ओर जगें अनियत विस्तार. ऐसा ऊर्ध्व लोक गृहीने हेठला संवर्तिक लोकना अर्द्धने उत्तरने पासे जोडीये तिवारे अधोलोकना खड थकी जे प्रतर अधिक हुइ ते खडने ऊपरिला जोड्या खडना बाहल्यने विषे उर्द्धायत जोडीये. इम कर्यां पांच रज्जु झझेरा किंहाएक बाहल्यपणे हुइ तथा हेठिले खडने हेठे यथासभव देश ऊन सात रज्जु बाहल्य पूर्वे कह्या है. ऊपरिला खडना देश ऊन रज्जुद्वय बाहल्य थकी जे अधिक हुइ ते खडीने ऊपरिला खडना बाहल्यने विषे जोडीये. इम कर्यां हुते बाहल्य थकी सर्व ए चउरंस कृत आकाशनो खड कितनेक प्रदेशाने विषे रज्जुना असख्यातमो भाग अधिक छ रज्जु होइ ते व्यवहार थकी ए सर्व सात रज्जु बाहल्य बोलाये, जे भणी व्यवहार नय ते कुछुक ऊणा सात हस्तप्रमाण पट आदि वस्तुने परिपूर्ण सात हस्त प्रमाण माने, एतले देश ऊन वस्तुने व्यवहार नय परिपूर्ण कहे इम वास्ते एहने मते इहा सात रज्जु बाहल्यपणे सर्वत्र जानना अने आयाम विष्कंभपणे प्रत्येक प्रत्येक देश ऊन सात रज्जु प्रमाण हुया है ते पिण 'व्यवहार' नयमते सात सात रज्जु पूरा गिण्या. एवं 'व्यवहार' नयमते सब जगे सात रज्जु प्रमाण घन होइ तथा श्रीसिद्धातमे जहा कही श्रेणीनाम न प्राह्यो है तिहां सब जगे घनीकृत लोकनी सात रज्जुप्रमाण लंबी श्रेणी जाननी, एव प्रतर पिण एह घनीकृत लोकनो सरूप अनुयोगद्वारनी वृत्तिथी लिख्या है.

१	१	१	१
१	१	१	१
१	१	१	१
१	१	१	१

प्रतररज्जुस्थापना

४	४	४	४
४	४	४	४
४	४	४	४
४	४	४	४

घनरज्जुस्थापना

१
१
१
१

सूचीरज्जुस्थापना

१

पड्डक

६४ पड्डकका एक 'घन-रज्जु' होता है. १६ पड्डकका एक 'प्रतर रज्जु' होता है. ४ पड्डकका एक 'सूची रज्जु' होता है. निश्चे लोकसरूप वो अनियत प्रमाण है, सो सर्वज्ञ गम्य है, परतु स्थूल दृष्टिके वास्ते सर्व प्रदेशांकी घाटवाध एकठी करके एह सरूप लोकका जानना लोकनालिकाबत्तीसीसे.

(१२०) अथ अधोलोकमे नाम आदि नरकका स्वरूप चिंतवे तेहना यंत्रम्

नाम नरकका	नरक ७	घमा १	वंशा २	शैला ३	अंजना ४	अरिष्टा ५	मघा ६	माघवती ७
गोत्र सार्थक	,, ,,	रत्नप्रभा	शर्कराप्रभा	वालुका प्रभा	पंकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमतमप्रभा
पृथ्वीपिंड	० ० ० ० ० ०	१,८०,०००	१,३२,०००	१,२८,०००	१,२०,०००	१,१८,०००	१,१६,०००	१,०८,०००
घनोदधि	० ० ० ० ० ०	२०,०००	——	——→	प	घ	म्	→
घनवात	० ० ० ० ० ०	असंख्य योजन	——	——→	प	घ	म्	→
तनुवात	० ० ० ० ० ०	,,	——	——→	प	घ	म्	→
आकाश	० ० ० ० ० ०	,,	——	——→	प	घ	म्	→
वलय	० ० ० ० ० ०	१२ योजन	१२ २/३	१३ १/३	१४ योजन	१४ २/३	१५ १/३	१६ योजन
घनोदधि वलय	० ० ० ० ० ०	६ ,,	६ १/३	६ २/३	७ ,,	७ १/३	७ २/३	८ योजन
घनवात वलय	० ० ० ० ० ०	४॥ ,,	४।॥ योजन	५ यो०	५। ,,	५॥ यो०	५।॥ यो०	६ ,,
तनुवात वलय	० ० ० ० ० ०	१॥ ,,	१ ७/१२	१ ८/१२	१।॥ ,,	१ १०/१२	१ ११/१२	२ ,,
आकाश वलय	० ० ० ० ० ०	अलोक	——	——→	प	घ	म्	→
प्रतर	४९	१३	११	९	७	५	३	१
शून्य पृथ्वी	० ० ० ० ० ०	१००० योजन	——	——→	प	घ	म्	→
प्रतर अंतर	० ० ० ० ० ०	११५८३ १/३ भाग	९,७००	१२,३७५	१६,१६६ २/३	२५,२५०	५२,५००	० ० ० ० ० ०
आवलि	० ० ० ० ० ०	८	८	८	८	८	८	४
नरकावास	८४,००,०००	३० लाख	२५ लाख	१५ लाख	१० लाख	३ लाख	९९,९९५	५
दिशा विदिग्	० ० ० ०	४९ ४८	३६ ३५	२५ २४	१६ १५	९ ८	४ ३	१ ०
प्रमाण	० ० ० ० ० ०	असंख्य संख्य	—— ——	——→ ——→	प प	घ घ	म् म्	→ →
उत्सेध	० ० ० ० ० ०	३,००० योजन	——	——→	प	घ	म्	→

अथ (१२१) दशभवनपतियन्त्रम्

भुवन पतिनाम	असुर कुमार	नाग	सुवर्ण	विद्युत्	अग्नि	द्वीप	उदधि	दिक्	पवन	स्तनित
विमान	३४ लाख	४४ लाख	३८ लाख	४० लाख	४० लाख	४० लाख	४० लाख	४० लाख	५० लाख	४० लाख
	३० ,,	४० ,,	३४ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	४६ ,,	३६ ,,
विमान परिमाण जघन्य	जम्बू द्वीप	——	——	——→	ए	व	म्	——	——	——→
मध्यम	संख्य योजन	——	——	——→	ए	व	म्	——	——	——→
	असंख्य ,,	——	——	——→	ए	व	म्	——	——	——→
चिह्न	चूडा मणि	फण	गरुड	वज्र	कलश	सिंह	अश्व	गज	मगर	वर्ध मान
वर्ण	काला	पडुर	कनक	अरुण	अरुण	अरुण	पडुर	कनक	प्रियगु	कनक
वस्त्र	राता	नीला	धवला	नीला	नीला	नीला	नीला	धवला	संध्या वर्ण	धवला
इन्द्र	चमर	धरण	वेणुदेव	हरिकंत	अग्नि सिंह	पूरण	जलकांत	अमित गति	वेलंब	घोष
	बल	भूतानंद	वेनुदालि	हरिसिंह	अग्नि मानव	विशिष्ट	जलप्रभ	अमित वाहन	प्रभंजन	महा घोष
सामानिक	६४,०००	६,०००	——	——	——→	प	व	म्	——	——→
	६०,०००	६,०००	——	——	——→	प	व	म्	——	——→
आत्म रक्षक	२५६०००	२४,०००	——	——	——→	प	व	म्	——	——→
	२४०००	२४,०००	——	——	——→	प	व	म्	——	——→
त्राय स्त्रिंश	३३	——	——	——→	प	व	म्	——	——	——→
अणिका	७	——	——	——→	प	व	म्	——	——	——→
लोक पाल	४	——	——	——→	प	व	म्	——	——	——→
अग्र महिषी	५	६	——	——	——→	प	व	म्	——	——→
	५	६	——	——	——→	प	व	म्	——	——→
परिषद्	३	——	——	——→	प	व	म्	——	——	——→

अथ (१२२) व्यंतर २८ का यंत्र तिर्यग् लोके चिंतवे

व्यंतरनाम	पिशाच	भूत	यक्ष	राक्षस	किन्नर	किंपुर(रुष)	महोरग	गान्धर्व
नगरसंख्या	असंख्य	———	———→	ए	व	म्	———	——→
नगरपरिमाण	जंबूद्वीप	———	———→	ए	व	म्	———	——→
मध्यम	विदेह	———	———→	ए	व	म्	———	——→
जघन्य	भरतक्षेत्र	———	———→	ए	व	म्	———	——→
चिह्न	कलंब	सुलस	वड वृक्ष	खडग	अशोक	चंपग	नाग	तुंबरु
वर्ण	श्याम	श्याम	श्याम	धवल	नील	धवल	श्याम	श्याम
इन्द्र	काल	सरूप	पूर्णभद्र	भीम	किन्नर	सत्पुरुष	अति काय	गीतरति
	महाकाल	प्रतिरूप	मणिभद्र	महाभीम	किंपुरुष	महापुर(रुष)	महा काय	गीतयश
सामानिक	४०००	———	———→	ए	व	म्	———	——→
आत्मरक्षक	१६,०००	———	———→	ए	व	म्	———	——→
अनीक	७	———	———→	ए	व	म्	———	——→
अग्रमहिषी	४	———	———→	ए	व	म्	———	——→
परिषद्	३	———	———→	ए	व	म्	———	——→
व्यंतर लघु	अणपन्नी	पणपन्नी	इसिवाइ	भूयवाइ	कंदिय	महा कंदिय	कुहुंड	पयगदेव
इन्द्र	संनिहिय १	धाइ ३	इसि ५	ईसरप ७	सुवत्स ९	हास्य ११	श्वेत १३	पयग १५
	समाणि २	विधाइ ४	इसिपाल ६	महेप ८	सुविशाल १०	हास्य रति १२	महा श्वेत १४	पयगे १६

(१२३) ज्योतिपचक्रस्वरूप चिंतवे यंत्रम्

ज्योतिपचक्र आबाधा	मेरथी ११२१ योजन	अलोकथी ११११ योजन
अबधा मेरु पर्यंत थकी	चद्र चद्रके ४४८२० योजन	सूर्य सूर्यके ४४८२० योजन
जंबूद्वीपप्रवेश	१८० योजन	१८० योजन
लवणप्रवेश	३३० योजन ५६।६१ भाग	३३० योजन ४८ भा ६१
मडलक्षेत्र	५१० योजन ५६।६१ भा	५१० योजन ४८ भा ६१
मडलसख्या	१५	१८४
पक्ति	२	२
मडलातर	चद्र ३५ योजन, ३० भा, चूर्णि ४ भाग	सूर्यके २ योजन
जबूद्वीपे चद्रसूर्यसङ्ख्या	२	२

(१२४)

ज्योतिषी	ज्योतिपचक्र	चद्र	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	तारक
समभूतलथी	७९० योजन	८८० योजन	८०० योजन	८८८ योजन	८८४ योजन	७९४ योजन
विष्कंभ	१ रज्जु	५६।६१	४८।६१	१।२	१।७	१।८
उच्चत्व	११०	२८।६१	२४।६१	१।४	१।८	१।१६
अतर जघन्य	जघन्य	९९६४०	९९६४०	३	२	२६६ यो ५०० ध
अतर उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	१००६६०	१००६६०	,,	,,	१२२४२ यो ४०० ध
गति	००	१ मद	२ शीघ्र	३ शीघ्र	४ शीघ्र	५ शीघ्र
ऋद्धि	००	५ महा	४ महा	३ महा	२ महा	१ अल्प
विमानवाहक	००	१६,०००	१६,०००	८,०००	४,०००	२,०००
अल्पबहुत्व	००	१ स्तोक	१ स्तोक	३ सख्येय	२ सख्येय	४ सख्येय

(१२५)

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीख
अदरले माडलेकी परिधि	३,१५,०८९	२,७६८	४५॥	०	०	०
अदरले माडलेकी चक्षुस्पर्श	४७,२६३	३,२१५	२६	०	४	०
अभ्यतरलेकी चाल	५,२५१	३,९१२	७७	४	४	०
चक्षुस्पर्शना घटावना वधावना	८३	३,६०७	४१	७	२	१
मुहूर्तकी चाल घटावना वधावना	०	२,३५०	१०	२	७	३॥

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीख
परिधिका घटावना वधावना	१७	५,००६	४६	०	०	०
बाहिरले माडलेकी परिधि	३,१८,३१४	६,९५४	१५॥	०	०	०
बाहिरले माडलेकी चाल मुहूर्तमे	५,३०५	१,९८२	५८	५	॥	०
बाहिरले माडलेकी चक्षुस्पर्श	३१,८३१	३,८९५	३९	६	३	०

(१२६)

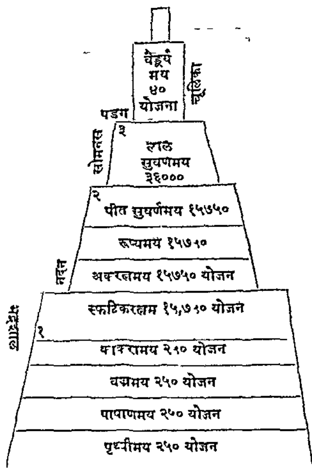
संख्या	जंबूद्वीप	लवण	धातकी	कालोदधि	पुष्कर	द्वीपोदधि	श्रेणय	चंद्र सूर्य
चंद्र, सूर्य	२	४	१२	४२	७२	जंबू	१	२
नक्षत्राणि	५६	११२	३३६	१,१७६	२,०१६	लवण	२	४
ग्रहा	१७६	३५२	१,०५६	३,६९६	६,३३६	धातकी	६	१२
तारका	१,३३,९५०	२,६७,९००	८,०३,७००	२,८२,९५०	४८,२२,२७०	कालोदधि	२१	४२
कोडाकोडि संख्या(ख्या) सब जगे जाननी ताराकी						पुष्कर	३६	७२

कर्कसक्रान्ति ने प्रथम दिन सर्व अभ्यंतर मंडल सूर्यना तापक्षेत्र स्थापना सर्वत्र यंत्र, ते दिन मान १८ मुहूर्त, रात्रिमान १२ मुहूर्त, मेरु थकी ४५,००० योजन जगती हे अने लवण समुद्र माहि ३३,३३३ योजन अने एक योजनका तीजा भाग अधिक एतले वेहु मिलीने ७८,३३३ योजन एक योजनका तीजा भाग अधिक इतना तापक्षेत्र है लांबा अने अंधकार-क्षेत्रनी अभ्यंतरकी बाह मेरु पास ६३,२४५ योजन, एक योजनका दसीया पद भाग ६ जानने. बाहिरली बाह ६३,२४५ योजन, एक योजनना दसीया ६ भाग, तापक्षेत्रनी अंतर बाह ९४८६ योजन, एक योजनना दसीया ९ भाग, बाहिरली बाह ९४,०६८ योजन, एक योजनका दसीया ९ भाग है; इम अभ्यंतरले माडले थकी बाहिर जाता हूया ताप क्षेत्र घटे, अंधकार वधे शनि ९००, मंगल ८९७, बृहस्पति ८९४, शुक्र ८९१, बुध ८८८–ग्रह उंचत्व

([1]१२७)

०	महाकलश	लघुकलश	०
संख्या	४	७,८८४	कलश
वलयसंख्या	एक वलय	९ वलय	वलय
विष्कंभ	१०,०००	१००	मुख
,,	१ लाख योजन	१,०००	मध्य
,,	१०,०००	१००	तले
ठीकरी	१,०००	१०	जाडी
त्रिभाग	जल	जल	उपरि
,,	जल १, वायु २	जल १, वायु २	मध्य
,,	वायु	वायु	तले

[1] आ यन्त्रनु स्थान १२८ मा यन्त्रनी बरावर उपर छे परंतु १८९ मा पृष्ठ गत चित्रने अहीं स्थलसंकोचने लीधे स्थान नहि आपी शकावाथी आनो अहीं निर्देश करायो छे



भूतले मेरुपरिधि २१,६२३, भूतले मेरुविष्कम १०,०००, मेरु उपरि विष्कभ १०००, मेरु उपरि परिधि ३१६२, मेरु मूलविष्कभ १००९०$\frac{१०}{११}$, मेरु मूलपरिधि ३१९१०$\frac{३}{११}$ एक सहस्र योजनप्रमाण मेरुका प्रथमकाड जानना, ६३ सहस्र योजनका द्वितीय काड, ३६ सहस्र योजनप्रमाण तीजा काड भद्रशालथी ५०० योजन उचा नदन वन है नन्दन वनस्य परिधि ३१, ४७९, नन्दनवन मध्ये परिधि (?), नन्दनवनस्य विष्कम ९९५४$\frac{८}{११}$, नन्दनवनमध्ये विष्कभ ८९५४$\frac{८}{११}$, सौमनसवनस्य परिधि १३५११$\frac{६}{११}$, सौमनसवनमध्ये परिधि १०३४९$\frac{३}{११}$, सौमनसवनस्य विष्कभ ४२७२$\frac{८}{११}$, सौमनसवनमध्ये विष्कभ ३२७२$\frac{८}{११}$, चूलकके मूलथी ४९४ योजन वल्याकारे विष्कम पडग वन (का) है जिनप्रसाद अध कोश पृथुत्व, कोश लावा, १४४० धनुष उच्चत्व पडग वनमे चार शिला ५०० योजनकी लावी, २०० योजन पिहुली ४ योजनकी उची है अधच द्राकारे श्वेत सुवर्ण मयी शिलाना मानथी थार सहस्रमे भागे सिंहासनका प्रमाण जानना पूर्व पश्चिमकी शिला उपरि दो दो सिंहा सन है अने दक्षिण, उत्तरकी शिला उपरि एकेक सिंहासन है इन शिला उपरि भगवानका जन्ममहोत्सव इन्द्र करते है

(१२८) हैमवंत १ शिखरीकी दाढा चार, चार, तिस उपरि सात सात अतरद्वीप

०	१	२	३	४	५	६	७
जगती परस्पर अतर	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००
विष्कभ	"	"	"	"	"	"	"
परिधि	९४९ यो०	१२५८ यो०	१५८१ यो०	१८९७ यो०	२२१३ यो०	२५२९ यो०	२८४५ यो०
जल उपरि	२॥ २ ९५	२॥ ९० ९५	३ ६ ९५	४ ४० ९५	५ १५ ९५	५ ८९ ९५	६ अभ्य ६० तर ९५
योजन २	२ योजन	→	प	ध	म्	———	——→ बाह्य

(१२९)

०	वेलधर	अनुवेलधर	०
संख्या	४	४	०
दिग्	दिग् ४	दिग् ४	०
समुद्रमे जाय	४२,०००	४२,०००	०
निष्कंभ	४२४	४२४	शिखर
०	१,०२२	१,०२२	०
०	१,७२१	१,७२१	०
दिसें	९६,९४,०९५	९६,९४,०९५	उ० दिसा
	९६,९७,७९५	९६ ९७,७,९५	" "

नन्दीश्वरद्वीपे यतः अञ्जनगिरिवृत्तसामः (?) वापीमध्ये दधिमुखाः वृत्ताः श्वेता', वाप्यन्तरे द्वौ द्वौ रतिकरौ अञ्जो (स्तः ?) एव अष्टौ रतिकराः, चत्वारो दधिमुखाः, एकोऽञ्जनगिरि, एव एकास्या(कस्यां?) दिशि त्रयोदश पर्वताः स्युः, चतुर्दिशौ(क्षु) च द्विपञ्चाशदिति विदिक्षु च इन्द्राणीनां राजधानी (?) सन्ति नन्दीश्वरे. अग्रे सर्वाणां स्थाना(नि) चित्रात् ज्ञेय (ज्ञेयानि).

(१३०) नन्दीश्वरद्वीपयन्त्रम् स्थानागचतुर्थस्थानात्

१	नामानि	आयाम	विष्कंभ	परिधि	उंचा	अध	संस्थान
२	अंजनगिरि	०	१०,००० मू १०,००० उपर	यथायोग्य	८४ सहस्र योजन	१००० यो	गोपुच्छ
३	वापी	एक लाख योजन	५०,००० योजन	०	०	" "	आयाम
४	दधिमुख	०	१०,००० "	यथायोग्य	६४ सहस्र योजन		पलय
५	रतिकर	०	" "	"	१००० योजन	२५० योजन	
६	राजधानी	०	जंबूद्वीप	जंबूद्वीप	०	०	चंद्र

(१३१) अथ ऊर्ध्वलोके स्वरूपचिंतनयंत्र प्रथम बारदेवलोके देवता

देवलोक-नामानि	सौधर्म १	ईशान २	सनत्कुमार ३	माहेन्द्र ४	ब्रह्म ५	लान्तक ६	शुक्र ७	सहस्रार ८	आनत ९ प्राणत १०	आरण ११ अच्युत १२
संस्थान	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	अर्ध चंद्र	अर्ध चंद्र
आधार	घनोदधि	घनोदधि	घनवात	घनवात	घनवात	२	२	२	आकाश	आकाश

विमान सङ्ख्या	३२ लाख	२८ लाख	१२ लाख	८ लाख	४ लाख	५० सहस्र	४० सहस्र	६ सहस्र	४००	३००
पृथ्वी पिंड	२७००	२७००	२६००	२६००	२५००	२५००	२४००	२४००	२३००	२३००
विमान उच्चत्व	५०० यो	५०० यो	६०० यो	६०० यो.	७०० यो.	७०० यो	८०० यो	८०० यो.	९०० यो.	९०० यो
विष्कम	सख्येय	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
निमान	असख्य	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
विमान वर्ण	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१
प्रतर ६२	१	३	१	२	६	५	४	४	४	४
आवलि	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
चिह्न	मृग	महिष	वराह	सिंह	व्याघ्र	शार्दूल	हय	गज	भुजग शशी	वृषभ विडाल
शरीर वर्ण	कनक	कनक	पद्म	पद्म	पद्म	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत
यान विमान	पालक	पुष्कर								
इन्द्र	सुधर्म	ईशान	सनत्कुमार	माहेन्द्र	ब्रह्म	शुक्र	लान्तिक	सहस्रार	प्राणत	अच्युत
सामानिक	८४,०००	८०,०००	७२,०००	७०,०००	६०,०००	५०,०००	४०,०००	३०,०००	२०,०००	१०,०००
आत्म रक्षक	४ गुणा	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
त्राय स्त्रिंश	३३	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
लोक पाल	४	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
अनीक	७	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
देवी अग्र महिषी	८	८	०	०	०	०	०	०	०	०
परिषद्	३	—	—	→	प	घ	मू	—	—	→
पदप किल्बिषिक आभियोगिक	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१

सौधर्म देवलोक अपरिगृहीत देवीना विमान ६ लाख, ते किणि किणि देवलोकि भोग आवे ते (१३२) यन्त्रम्

सनत्कुमार	पल्योपम १०	स्पर्शभोगी
ब्रह्म	„ २०	रूप देखी भोगवे
महाशुक्र	„ ३०	शब्द साभळी भोगवे
आनत	„ ४०	मन करी विकार करी
आरण	„ ५०	मनह चिंतवी

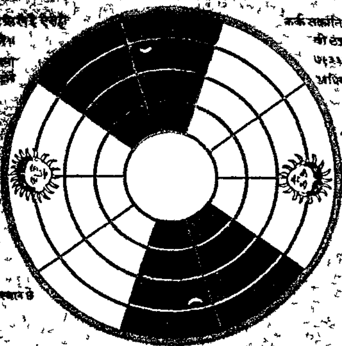
(१३३) ईशान देवलोके अपरिगृहीत देवीना विमान ४, ते किस किसके ?

माहेंद्र	पल्योपम १५	स्पर्शभोगी
लान्तक	„ २५	रूप देखी
सहस्रार	„ ३५	शब्दभोगी
प्राणत	„ ४५	मनि विकार करी
अच्युत	„ ५५	मन चिंतवी भोगवे

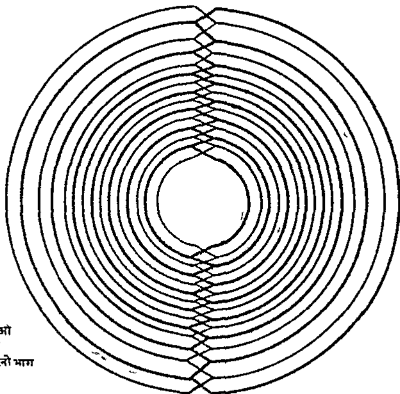
(१३४) अथ ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानयन्त्रम्

	हेठत्रिक	मध्यत्रिक	उपरत्रिक	४ अनुत्तर	सर्वार्थसिद्ध
संस्थान	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	त्रस	वृत्त
विमान-संख्या	१११	१०७	१००	४	१
पृथ्वीपिंड	२,२००	२,२००	२,२००	२,१००	२,१००
विमान-उच्चत्व	१,०००	१,०००	१,०००	१,१००	१,१००
विष्कंभ	संख्य असंख्य	संख्य असंख्य	संख्य असंख्य	असंख्य	संख्य
प्रतर	३	३	३	१	०
पदवी	अहमिंद्र	अहमिंद्र	अहमिन्द्र	अहमिंद्र	अहमिंद्र

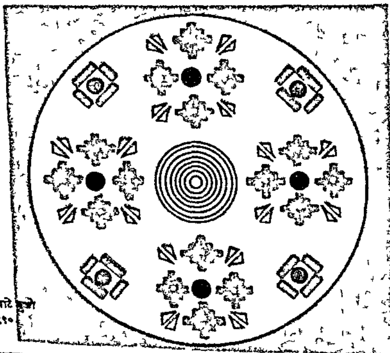
(१) उडु प्रतर, (२) चंद्र प्र०, (३) रजत प्र०, (४) वाल्गु प्र०, (५) वीर्य प्र०, (६) वारुण प्र०, (७) आनंद प्र०, (८) ब्रह्म प्र०, (९) कांचन प्र०, (१०) रुचिर प्र०, (११) चंद्र प्र०, (१२) अरुण प्र०, (१३) दिशि प्र०, (१४) वैडूर्य प्र०, (१५) रुचक प्र०, (१६) रुचक (?) प्र०, (१७) अंक प्र०, (१८) मेघ प्र०, (१९) स्फटिक प्र०, (२०) तपनीय प्र०, (२१) अर्घ प्र०, (२२) हरि प्र०, (२३) नलिन प्र०, (२४) लोहिता प्र०, (२५) वज्र प्र०, (२६) अंजन प्र०, (२७) (?), (२८) ब्रह्माख्य प्र०, (२९) ह्व प्र०, (३०) सौम्य प्र०, (३१) लांगल प्र०, प्र०, (३२) बलभद्र प्र०, (३३) चक्र प्र०, (३४) गदा प्र०, (३५) स्वस्तिक प्र०, (३६) व्यर्वत (?) प्र०, (३७) आरंभ प्र०, (३८) गृद्धि प्र०, (३९) केतु प्र०, (४०) गरुड प्र०, (४१) ब्रह्मित



कर्क संक्रांतिने प्रथम दिन सर्व अभ्यंतर मंगल सूर्यना ताप क्षेत्र स्थापना सर्वत्र यंत्र ५



आना अनुसंधान माटे जुओ
१८८ मा पृष्ठनुं १८७मुं यंत्र



अनुसंधान माटे जुओ
पृष्ठ-१९०

प्र०, (४२) ब्रह्म प्र०, (४३) ब्रह्मोत्तर प्र०, (४४) लांतक प्र०, (४५) महाशुक्र प्र०, (४६) सहस्रार प्र०, (४७) आनत प्र०, (४८) प्राणत प्र०, (४९) पुष्प प्र०, (५०) अलका प्र०, (५१) आरण प्र०, (५२) अरुण प्र०, (५३) सुदर्शन प्र०, (५४) सुप्रबद्ध प्र०, (५५) मनोहर प्र०, (५६) सर्वतो प्र०, (५७) विशाल प्र०, (५८) सुमनस प्र०, (५९) सौमनस प्र०, (६०) प्रीतिकर प्र०, (६१) आदित्य प्र०, (६२) सर्वतोभद्र प्र० इति ६२ प्रतरनामानि.

अथ ध्यानसामासी (?) सवैइया ३१ सा—

पूज जो खमाश्रमण जिनभद्र गणि मिथ्रु दूषण अधारे वीच दीप जो कहायो है
सत सात अधिक जो गाथाबद्धरूप करी ध्यानको सरूप भरी सतक सुहायो है
टीका नीका सुपजीका भेदने प्रभेद धीका तुच्छ मति भये नीका पठन करायो है
लेसरूप भाव धरी छद बध रूप करी आतम आनद भरी या लष्या लगायो है ॥ १ ॥

इति श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितध्यानशतकात्.

(१३५) असज्झाइ स्थानाग, निसी[ह]थ, प्रवचनसारोद्धार (द्वा २६८) थकी

१	उत्कापात तारा टूटे उजाला हुइ रेषा पडे आकाशमे	क्षेत्र जिस मडलमे	निघर्त्या पीछे १ प्रहर सूत्र न पढे
२	षणगते वहीये जिहा रेषा हुइ उजाला नही	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
३	दिग्दाह दसो दिसा अग्निवत् राती होइ	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
४	आकाशे गधर्वनगर देवताना कीधा दीसे	,, ,, ,,	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
५	आकाशथी सूक्ष्म रज पडे	,, ,, ,,	जा लग पडे ता लगे
६	मासरुधिरवृष्टि	,, ,, ,,	१ अहोरात्र निघरया पीछे
७	मैस १ पाषाणवृष्टि	,, ,, ,,	निघर्त्या पछे सूझे
८	अकाल गर्जे	,, ,, ,,	२ पहर
९	,, वीजळी	,, ,, ,,	१ ,,
१०	आसो सुदि ५ना दो पहरथी लेकर कार्तिक वदि १	सब जगे	११ दिन असज्झाइ
११	आषाढ चौमासी पडिक्कमणाथी श्रावण वदि	,, ,,	२, २॥ दिन
१२	एव कार्तिक चौमासी	,, ,,	२, २॥ दिन असज्झाइ
१३	एव चैत्र सुदि ५ थी वैशाख वदि पडवा लगे	,, ,,	११ ,, ,,
१४	राजाना युद्ध	जिस मडले	निवरया पछे सूझे
१५	म्लेच्छने भये	,, ,,	,, ,, ,,

१६	उपाश्रय ढुकडा स्त्री पुरुष झझे मल्लयुद्धे	उपाश्रय ढूकडा	निवर्त्यां पछे सूझे
१७	होली पर्वे रज उडे	जिस जगे	,, ,, ,,
१८	निघात वादले अथवा अणवादले शब्द फडकड होवे	,, मडले	१ प्रहर
१९	जूव० शुक्ल पक्षनी पडियासे ३ दिन	सब जगे	१ प्रहर रात्रि
२०	जक्खालिप्त आक्रोशे अग्नियक्षप्रभावे	जिस मडले	१ प्रहर
२१	काची धौली धूयर गर्भमासे	,, जगे	जा लग पडे ता लग सर्व क्रिया न करे
२२	पचेन्द्रिय तिर्यचना हाड, मास, लोही, चाम	६० हाथ दूर नही	३ प्रहर
२३	माजारी मुसा आदि मारे उपाश्रये तथा ले आवे	उपाश्रय अभ्यतर	१ अहोरात्रि
२४	मनुष्याना हाड, मास, लोही, चाम	१०० हाथ उरे	,, ,,
२५	स्त्रीधर्मनी	उपाश्रयमे	३ दिन
२६	स्त्रीन मनी		८ ,,
२७	पुरुषज मनी		७ ,,
२८	हाड पुरुषथी अलग कीया	१००० हाथ माहे	१२ वष लगे
२९	मलमूत्र	जा लग दीपे गध आवे	तव लगे
३०	मसाणना समीपे	१००० हाथ चौफेरे	सदा
३१	राजावे पडणे	जहा ताइ आण	नवा राजा न बैठे
३२	गाममे असमजस प्रवर्त न भाजे तो	जिस मडले	८ प्रहर
३३	सात घरमे कोइ प्रसिद्ध पुरुष मरे	,, गामे	१ अहोरात्रि
३४	तथा सामान्य पुरुष सात घरातरे मरे	,, ,,	कलेवर काढ्या पीछे सूझे
३५	इडा पू(फू)टे गाय वियाइ जर पडे	,, जगे	१ प्रहर
३६	भूमी कपे	,, ,,	८ ,,
३७	बुदबुदा रहित तथा सहित वर्षे	,, ,,	अहोरात्रि उपरात असज्झाइ
३८	मा ही फुवारे निरतर वर्षे	,, मडले	७ दिन ,, ,,
३९	पक्षी री रात्रि	सब जगे	४ प्रहर असज्झाइ
४०	प्रभात १ मध्याह्न २, अस्त ३, अर्ध रात्रि ४	,, ,,	२ घटी
४१	आसो १ कार्तिक २, चैत्र ३, आषाढ ४ पूणमासी	,, ,,	१ अहोरात्रि

४२	कार्तिक १ मागसर २ वैशाख ३, श्रावण ४ वदी पडिवा	" "	८ प्रहर
४३	चन्द्रग्रहणे	" "	" " १२ "
४४	सूर्यग्रहणे	" "	१६ " १२ " ४ "

चंद्रग्रहणे ऊगतो ग्रसो ग्रसो ज आग्रम्यो तदा ४ प्र हर दिन रात्री १ अहोरात्र आगे, एव १२; रात्रिने छेहडे ग्रसा तदा ८ पहर आगले, एवं ८ बीचमे मध्यम, तथा सूर्यो ऊगता ग्रसो ग्रसो ज आथम्यो तो ४ प्रहर दिनना, ४ रात्रिरा अने एक अहोरात्रि आगे, एव १६, आथमतो ग्रहे १२ प्रहर, दिने ग्रह्यो दिने छूटा तो रात्रिना ४ प्रहर, एव ४.

इति 'निर्जरा' तत्त्वसंपूर्णम् ॥



अथ अग्रे 'बन्ध' तत्त्व लिख्यते प्रथम सर्वबंध देशबंधनो स्वरूप लिखीये हे ते यत्नात् ज्ञेयम्.

(१३६) औदारिक शरीरना सर्वबंध, देशबंधनी स्थिति

१	सर्वबन्ध स्थिति	देशबन्धस्थिति
समुच्चय औदारिक शरीरना प्रयोगबंधनी स्थिति	१ समय	जघन्य १ समय, उत्कृष्ट एक समय ऊणा तीन पल्योपम
एकेन्द्रिय औदारिक	" "	ज० १ समय, उ० एक समय ऊणा २२,००० वर्ष
पृथ्वीना "	" "	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० १ समय ऊणा २२,००० वर्ष
अप्, तेजस्काय, वनस्पति, बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री औदारिक	" "	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० जिसकी जितनी स्थिति है उत्कृष्टी सो १ समय ऊणी कहणी
वायु औदारिक शरीर प्रयोग बंध	" "	ज० १ समय, उ० १ समय ऊणा ३,००० वर्ष ज्ञेयम्
तिर्यंच पंचेंद्री मनुष्य औदारिक शरीर	" "	ज० १ समय, उ० ३ समय ऊणे ३ पल्योपम

एह औदारिकना देशबंध, सर्वबंधनी स्थिति.

(१३७) औदारिक शरीरके सर्वबंध, देशबंधका अंतरा

२	सर्वबंधका अंतरा	देशबंधका अंतरा
समुच्चय औदारिक	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० ३३ सागर पूर्व कोड १समय अधिक	ज० १ समय, उ० ३ समय अधिक ३३ सागर
समुच्चय एकेन्द्रिय औदारिक	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० १ समय अधिक २२,००० वर्ष	ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त १
पृथ्वीके औदारिकका	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० १ समय अधिक २२ ००० वर्ष	ज० १ समय, उ० ३ समय
अप्, तेउ, वणस्सइ, बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव १, उ० १ समय अधिक जिसकी जितनी स्थिति	ज० १ समय, उ० ३ समय
वायु औदारिक	ज० २ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० समय अधिक ३,००० वर्ष	ज० १ समय, उ० अंतमुहूर्त
पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज० ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ० पूर्व कोड १ समय अधिक	ज० १ समय, उ० १ अंतर्मुहूर्त

जीव एकेन्द्रियपणा छोडी नोएकेन्द्रिय हुवा फेर एकेन्द्रिय होय तो सर्वबंध, देशबंधना कितना अंतर ए (१३८) यंत्रम्

३	सर्वबंधांतरम्	देशबंधांतरम्
एकेन्द्रिय नोएकेन्द्रिय फेर एकेन्द्रिय हुया	ज० ३ समय ऊणा २ क्षुल्लक भव, उ० २,००० सागर संख्याते वर्ष अधिक	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव, उ० २,००० सागर संख्याते वर्ष अधिक
पृथ्वी, अप्, तेउ, वाउ, बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री, तिर्यंच पंचेंद्री, मनुष्य	ज० ३ समय ऊणा २ क्षुल्लक भव, उ० वनस्पति काल असंख्य पुद्गलपरावर्त	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव, उ० वनस्पतिकाल असंख्य पुद्गलपरावर्त
वनस्पति	ज० ३ समय ऊणा २ क्षुल्लक भव, उ० असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव १, उ० असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

(१३९) औदारिक शरीरके सर्वबंध, देशबंध, अबंधकाकी अल्पबहुत्व

देशबंध	सर्वबंध	अबंधक
असंख्य गुणा ३	सर्वसे स्तोक १	विशेषाधिक २

ए औदारिकका यंत्र चौथा इति औदारिक.

(१४०) वैक्रिय शरीरके सर्वबंध, देशबंधनी स्थिति

१	सर्वबंधनी स्थिति	देशबंधनी स्थिति
समुच्चय वैक्रिय	ज० १ समय, उ० २ समय	ज० १ समय, उ० १ समय ऊणा ३३ सागर
वायु वैक्रिय	ज० १ समय	ज० १ समय, उ० १ अंतर्मुहूर्त
रत्नप्रभा वैक्रिय	" " "	ज० ३ समय ऊणा १०,००० वर्ष, उ० १ समय ऊणा १ सागर
शेष ६ नरक, भवनपति १०, व्यंतर, जोतिषी, वैमानिक	" " "	ज० ३ समय ऊणी जेहनी जितनी जघन्य स्थिति कहनी, उ० उत्कृष्टी स्थितिमें १ समय ऊणी कहनी
तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य	" " "	ज० समय, उ० १ अंतर्मुहूर्त

(१४१) वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तरम्

२	सर्वबंधान्तरम्	देशबंधान्तरम्
ओघवैक्रिय	ज० १ समय, उ० वनस्पतिकाल	ज० १ समय, उ० वनस्पतिकाल
वायु वैक्रिय	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग
पंचेंद्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पृथक् पूर्व कोड	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पृथक् पूर्व कोड

(१४२) जीव हे भगव(न्) वायुकाय हुइने नोवायुकाय हुया फेर वायुकाय हुइ तो अंतरयन्त्रम्

३	सर्वबन्धान्तर	देशबन्धान्तर
वायु, पंचेंद्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पति काल

वायु, मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्रिय वैक्रिययन्त्रम् (१४३)

रत्नप्रभा पुनरपि रत्नप्रभा	ज० अंतर्मुहूर्त अधिक १०,००० वर्ष, उ० वनस्पतिकाल	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल
शेष ६ नरक, भवनपति आदि यावत् सहस्रार	ज० अंतर्मुहूर्त अधिक जिसकी जितनी जघन्य स्थिति, उ० वनस्पतिकाल	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल
आनतसे ग्रैवेयक पर्यंत	ज० पृथक् वर्ष अधिक जेहनी जितनी जघन्य स्थिति, उ० वनस्पतिकाल	ज० पृथक् वर्ष, उ० वनस्पतिकाल
४ अनुत्तर वैमानिक	ज० पृथक् वर्ष अधिक ३१ सागर, उ० संख्याते सागर	ज० पृथक् वर्ष अधिक, उ० संख्याते सागर

(१४४) वैक्रियना सर्वबंधादि सबधी अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व	देशबध	सर्वबध	अबंधक
०	असख्यगुणा २	१ स्तोक	अनतगुणा ३

इति वैक्रिययन्त्रचतुष्टयम्.

(१४५) आहारक शरीरना प्रयोगबंधनी स्थिति

१	सर्वबंधस्थिति	देशबंधस्थिति
आहारक मनुष्य	ज० १ समय	ज० अतर्मुहूर्त, उ० अतमुहूर्त

(१४६) अतर

२	सर्वबंधान्तर	देशबन्धान्तर
आहारक अतर	ज० अतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त	ज० अतमुहूत, उ० देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त

(१४७) अल्पबहुत्व सर्व० देश० अबन्ध

आहारककी अल्पबहुत्व	देशबन्ध	सर्वबन्ध	अबन्धक
	सख्यात गुणे २	सर्व स्तोक १	अनत गुणे ३

इति आहारकयन्त्र तीन.

(१४८) (तैजस शरीर)

१	देशबन्धस्थिति	
तैजस शरीर	अनादि अपर्यवसित, अनादिसपर्यवसित	
२	देशबंधान्तर	
तैजस	दोनाका अंतर नही	
३	देशबंध	अबंधक
तैजस शरीर	अनत गुणा २	सर्व स्तोक १
अल्पबहुत्व	०	

(१४९) (कार्मण शरीर)

१	देशबंधस्थिति	
कार्मणशरीरस्थिति	अनादि अपर्यवसित, अनादि सपर्यवसित	
२	देशबंधांतर	
कार्मण	दोनाका अतर नही	
३	देशबंध	अबन्धक
कर्म ७ अल्पबहुत्व	अनत गुणा २	सर्व स्तोक १
आयु अल्पबहुत्व	१ स्तोक	सख्यात गुणा २

(१५०) आपसमे नियम भजनेका यंत्र

१	औदारिक २	वैक्रिय २	आहारक २	तैजस १	कार्मण १
औदारिक सर्व देश ३	०	नथी	नथी	भजना	भजना
वैक्रिय सर्व १, देश २	नथी	०	,,	,,	,,
आहारक सर्व १, देश २	,,	नथी	०	,,	,,
तैजस देशब ध १	नियमा	नियमा	नियमा	०	,,
कामण देशबन्ध १	,,	,,	,,	नियमा	०

(१५१) अल्पबहुत्वयंत्रम्

अल्पबहुत्व	देशबन्ध	सर्वबन्ध	अबन्धक
औदारिक	असख्य ८	अनत ६	विशे० ७
वैक्रिय	,, ४	असख्य ३	,, १०
आहारक	सख्यात २	स्तोक १	,, ११
तैजस	विशे० ९	०	अनत ५
कार्मण	तुल्य ,,	०	तुल्य ,,

तेरह बोलकी अल्पबहुत्व सपूर्ण

(१५२) आपआपनी अल्पबहुत्व

औदारिक	१ स्तोक	३ असख्य	२ विशे०
वैक्रिय	,, ,,	२ ,,	३ अनत
आहारक	,, ,,	२ सख्येय	,, असख्य
तैजस	०	,, अनत	१ स्तोक
कामण	०	, ,,	,, ,,
आयुकर्म	०	१ स्तोक	२ सख्येय

इति श्रीभगवत्या सर्वबन्ध देशबन्ध अधिकार शते ८, उ० ९ और विशेष सरूप टीकासे जानना. किस वास्ते ? थोडे घणे है टीकामे सरूप कथन कीया है.

"जीवा १ य लेस्स २ पक्खी ३ दिट्ठी ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७ ।
वेद ८ कसाय ९ उवओग १० जोग ११ एगारस जीवट्ठाणा ॥ १ ॥"

गाथा है भगवती श० २६ (उ० १).

१ छाया—जीवाश्च लेश्या पक्षी दृष्टिरज्ञानज्ञानसञ्ज्ञा ।
वेद कषाय उपयोगो योग एकादश जीवस्थानानि ॥

बधी बधइ बधिस्सइ १, बधी बधइ न बधिस्सइ २, बधी न बधइ बधिस्सइ ३, बधी न बधइ न बधिस्सइ ४, ए च्यार भांगा जान लेना.

(१५३) (पापकर्मादि आश्री भग)

जीव मनुष्य १,२,३,४	पापकर्म १ ज्ञानावरणी २ दर्शनावरणी ३ मोहनीय ४ नाम ५ गोत्र ६ अतराय आश्री
१ ३ २ ४ भग	सलेसी १, शुक्लेशी २, शुक्लपक्षी ३, सम्यग्दृष्टि ४, सज्ञान आदि जाव मन पर्यव ज्ञानी ९, नोसज्ञोपयुक्त १०, अवेदी ११, सजोगी १२, मन १३, वाक् १४, काया १५ योगी, साकारोपयुक्त १६, अनाकारोपयुक्त १७
१ २	कृष्णा आदि लेश्या ५, कृष्णपक्षी ६, मिथ्यादृष्टि ७, मिश्रदृष्टि ८, चार सज्ञा १२, अज्ञान ४।१६, सवेद आदि ४।२०, क्रोध २१ मान २२ माया २३
४	अलेशी १, केवली २, अयोगी ३
३ ४	अकषायी १, एव ४६ (?) बोल

(१५४) (वेदनीय आश्री भग)

जीव मनुष्य	वेदनीय कर्म आश्री बधभग १२४
१ २ ४	सलेशी १, शुक्लेशी २, शुक्लपक्षी ३, सम्यग्दृष्टि ४, नाणी ५, केवलनाणी ६, नोसज्ञोपयुक्त ७, अवेदी ८, अकषायी ९, साकारोपयुक्त १०, अनाकारोपयुक्त ११
४	अलेशी १, अयोगी २,
१ २	कृष्ण आदि लेश्या ५, कृष्णपक्षी ६, मिथ्यादृष्टि ७, मिश्रदृष्टि ८, अज्ञान आदि ४।१२, सज्ञा ४।१६, ग्यान ४।२०, सवेद आदि ४।२४, सकषाय आदि ५।२९ सयोग आदि ४।३३ एव बोल ४६

(१५५) (आयु आश्री भग)

जीव मनुष्य	आयुकर्म आश्री बधभग १, २, ३, ४
१ ३ २ ४	सलेशी आदि ७, शुक्लपक्षी ८, मिथ्यादृष्टि ९, अज्ञान आदि ४।१२, सज्ञा ४।१७, सवेद आदि ४।२१, सकषाय आदि ५।२६, सयोग आदि ४।३०, साकारोपयुक्त ३१, अनाकारोपयुक्त ३२
१, २, ३	मन पयव १, नोसज्ञोपयुक्त २
४	अलेशी १, केवली २, अयोगी ३
१, ३	कृष्णपक्षी
३ ४	मिश्रदृष्टि १, अवेदी २ अकषायी ३: एव ४६ (?) बोल

परपरोगवन्नगा १, पर० गाढा २, परपरो आहारगा ३, पर० पज्जत्तगा ४, चरम ए पांच उद्देशा जीव मनुष्यना प्रथम उद्देशावत् ज्ञेय. नवर इतना विशेष चरम मनुष्यने आयुना बध आश्री एक चौथा भग समवे, और भग नही. एह अर्थ श्रीमद्भयदेवसूरिये भगवती-जीकी टीकामे लिख्या है जो कर चौथा भंग आदि सर्व भग पावे तो चरमपण कैसे होय? इस वास्ते चौथा भग सभवता है

(१५६) पापकर्म १ मोह २ ज्ञाना० ३ दर्शना० ४ वेदनीय ५ नाम ६ गोत्र ७ अतराय ८ आश्री

३४	३६	७६	२५	३०	३९	३६	३३	३५
नरक	भवनपति	पृथ्वी १, अप् २ वन स्पति ३	तेज १, वायु २	विगलेंद्री	तिर्यंच	व्यतर	जो ति षी	वैमा निक
१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२	१।२

(१५७) आयु आश्री यत्र

कृष्णलेशी	१।३ भग	०	तेजो लेश्यामे तीजा भग ३, शेष २५	समदिट्ठी	४ज्ञानीमे ३ भग	सम० १ ज्ञानीमे ४ १।३।४	०	०	०
कृष्णपक्षी	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३
मिश्रदृष्टि	३।४	३।४	०	०	०	३।४	३।४	३।४	३।४
शेष बोल	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४	१।३	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४	१।२।३।४

मनुष्य अनतरो० मे नही	अलेशी १, मन पर्यव २, केवल ३, नो सन्नोपयुक्त ४, अवेदी ५, अकषायी ६, अयोगी ७ ए ७ नही	मिश्रदृष्टि नही	मन १, वचन २, योग नही	विभग नही	अवधि है
नरक, देव	उपरले सात मूलसे नही	०	०	है	है
तिरिय	,, ,, ,,	०	०	०	
विगलेंद्री	,, ,, ,,	मूले नही	वचन नही	मूले नही	मूले नही

नारक आदि २४ दडकमे आयु वर्जी शेष ज्ञानावरण १ पापकर्म आदि ८ बोल आश्री जिसमे जितने बोल है लेश्या आदि सर्व बोलमे १।२ भग जानना आयु आश्री २३ दडकमे एक त्रीजा ३ भग, मनुष्यमे आयु आश्री ३।४ भग अनतरोववन्नगा १, अनतरोगाढा २, अन

तरआहारगा ३, अनंतपज्जत्तगा ४; ए चार उद्देशे एक सरीखे है. एवं सर्व उद्देशे १० हूये.

अथ अचरमना ११ मा उद्देशा लिख्यते—मनुष्य वर्जी २३ दंडके आयु वर्जी पापकर्म आदि ८ आश्री सर्व बोला मे १।२ भांगा. आयु आश्री नरक १, तिर्यंच २, देव ३ मे मिश्रदृष्टिमे भंग ३ तीजा. पृथ्वी १, अप २, वनस्पति ३, तेजोलेश्यीमे ३ तीजा भंग. विगलेंद्रीमे सम्यक्त्व १, ज्ञान आदि ३ ए ४ मे ३ तीजा भंग, मनुष्य अचरममे अलेश्यी १, अकेवली २, अयोगी ३, ए ३ नही, शेष बोल ४३ मे जहां चौथा भंग है सो नही कहना और सर्व प्रथम उद्देशवत् इति बंध अलम्.

(१५८) (अतीतादि आश्री भंग)

भंग	अतीत	वर्तमान	अनागत
१	ब	ब	ब
२	,,	,,	न
३	,,	न	ब
४	,,	,,	न
५	न	ब	ब
६	,,	,,	न
७	,,	न	ब
८	,,	,,	न

(१५९) (भव आश्री भंग)

घणे भव अपेक्षा	एक भव अपेक्षा
श्रेणिथी गिर फेर ११ मे	कति समये उपशांत
पूर्व भवे ११ मे, वर्तमाने क्षीणमोह	सयोगीने छेहले समये
पूर्व भवे ११ मा, वर्तमान नही, आगे होगा ११	११ मे से गिर फिर श्रेणि पावे नही
सिद्ध	१४ मे गुणस्थाने
उपशांत पहिले ही पाया है	उपशांत मोहके प्रथम समये
क्षपकश्रेणि चढ्या, उपशम करे नही	शून्य
भव्य मोक्षार्ह	१० मे गुणस्थानवाळा भव्य
अभव्य	मिथ्यादृष्टि वा अभव्य

(१६०) संपरायके बंधके भंग

ऽ ऽ ऽ	अभव्य वा भव्यक
ऽ ऽ ।	भव्य

ऽ । ऽ	उपशांतमोह गुणस्थान
ऽ ॥ ऽ	क्षीणमोह आदिक

एह दोनो यंत्र भगवतीजीके

(१६४) भगवती घधी ५० बोलकी अष्ट कर्म आश्री

		ज्ञाना॰, दर्शना॰, अंतराय	वेदनीय	मोहनीय	आयु	नाम, गोत्र
१-३	स्त्री, पुरुष, नपुंसक वेद	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	नियमा
४	अवेदी संयत	भ	भ	भ	०	भ
५	संयती	,,	,,	,,	भ	,,
६	असंयती	नि	नि	नि	,,	नि
७	श्रावक संयतासंयत	,,	,,	,,	,,	,,
८	नोसंयत, नोअसंयत, नोसंयतासंयत	०	०	०	०	०
९	सम्यग्दृष्टि	भ	भ	भ	भ	भ
१०	मिथ्यादृष्टि	नि	नि	नि	,,	नि
११	मिश्रदृष्टि	,,	,,	,,	०	,,
१२	संज्ञी	भ	नि	भ	भ	भ
१३	असंज्ञी	नि	,,	नि	,,	नि
१४	न संज्ञी न असंज्ञी	०	०	०	०	०
१५	भव्य	भ	भ	भ	भ	भ
१६	अभव्य	नि	नि	नि	,,	नि
१७	न भव्य न अभव्य	०	०	०	०	०
१८-२०	चक्षु आदि ३ दर्शन	भ	नि	भ	भ	भ
२१	केवलदर्शन	०	भ	०	०	०
२२	पर्याप्त	भ	,,	भ	भ	भ
२३	अपर्याप्त	नि	नि	नि	,,	नि
२४	न पर्याप्त न अपर्याप्त	०	०	०	०	०
२५	भाषक	भ	नि	भ	भ	भ
२६	अभाषक	,,	भ	,,	,,	,
२७	परत संसारी	,,	,,	,,	,,	,,
२८	अपरत संसारी	नि	नि	नि	,,	नि
२९	न परत न अपरत	०	०	०	०	०
३०-३३	मति आदि ४ ज्ञान	भ	नि	भ	भ	भ
३४	केवलज्ञान	०	भ	०	०	०

३५-३७	मति आदि ३ अज्ञान	नि	नि	नि	भ	नि
३८-४०	मन, वचन, काया योग	भ	,,	भ	,,	भ
४१	अयोगी	०	०	०	०	०
४२-४३	साकार अनाकार उपयोग	भ	भ	भ	भ	भ
४४	आहारक	भ	नि	,,	,,	,,
४५	अणाहारी	,,	भ	,,	०	,,
४६	सूक्ष्म	नि	नि	नि	भ	,,
४७	बादर	भ	भ	भ	,,	,,
४८	न सूक्ष्म न बादर	०	०	०	०	०
४९-५०	चरम, अचरम	भ	भ	भ	भ	भ

अथ द्वार गाथा (१)—

वेय संजय दिट्ठी सन्नी भविए दसण पज्जत्त भासय परित्त नाण जोगो ३ उवओग आहारग सुहुम चरम बद्धे य अप्पाबहु १

अल्पबहुत्व सुगम

अथ मार्गणा उपरि बंधद्वार. अथ धर्मा आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४, बंधप्रकृति १०१ अस्ति. एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त(प्त) १, साधारण १, विकलत्रय ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, एवं १९ नास्ति

१	मि	१००	तीर्थंकर उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति व्यौरा सास्वादनवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु उतारी १
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १, एवं २ मिलै

अथ अंजना आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४; बंधप्रकृति १०० अस्ति. १९ पूर्वोक्त अने तीर्थंकर १; एवं २० नास्ति

१	मि	१००	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु उतारी १
४	अ	७२	मनुष्यायु १ मिले

१ छाया—वेदः संयमो दृष्टिः सञ्ज्ञी भविको दर्शनं पर्याप्तो भाषकः परीतो ज्ञानं योग उपयोग [illegible] रमबद्धे चाल्पबहुत्वम् ॥ २ विवरण।

अथ माघवी नरक रचना गुणस्थान ४; बधप्रकृति ९९, पूर्वोक्त २०, मनुष्यायु १, एवं २१ नास्ति.

१	मि	९६	मनुष्यद्विक २, उच्च गोत्र १, एव ३ उतारे मिथ्यात्व १, हुडक १, नपुसक १, छेवट्ठा १, तिर्यंचायु १; एव ५ विच्छित्ति
२	सा	९१	अनतानुबधी आदि २४ विच्छित्ति व्यौरा सास्वादनवत्
३	मि	७०	मनुष्यद्विक २, उच्च गोत्र १ मिले
४	अ	७०	० ० ०

अथ तिर्यग् गति रचना गुणस्थान ५ आदिके बधप्रकृति ११७ अस्ति, तीर्थंकर १, आहारकद्विक नास्ति.

१	मि	११७	मिथ्यात्व १, हुड १ नपुसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३; एव १६ विच्छित्ति
२	सा	१०१	अनतानुबधी आदि २५ तो सास्वादन गुणस्थानवत् अने वज्रऋषभ १, औदारिक द्विक २, मनुष्यत्रिक ३; एव ३१ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवायु १ उतारे
४	अ	७०	देवायु १ मिले अप्रत्याख्यान ४ विच्छित्ति
५	दे	६६	० ० ०

अथ तिर्यंच अपर्याप्ति रचना गुणस्थान तीन–१।२।४, बधप्रकृति १११ अस्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आयु ४, नरकद्विक २, एव ९ नास्ति

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २ उतारे मिथ्यात्व १, हुड १, नपुसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्ति १, साधारण १, विकलत्रय ३; एव १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दु स्वर १, अनादेय १, सस्थान ४ मध्यके, सहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यचद्विक २, उद्योत १, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, एव २९ विच्छित्ति
४	अ	६९	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २; एव ४ मिले

अथ तिर्यंच अलब्धिपर्याप्त रचना गुणस्थान १–प्रथम, बधप्रकृति १०९ अस्ति, तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, नरकद्विक ३, एव ११ नास्ति उपरला पत्र करण अपर्याप्तिका जान लेना.

१	मि	१०९	० ० ०

अथ मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४, बंधप्रकृति १२० सर्वे अस्ति. आदिके च्यार गुणस्थान यत्र अन्य ५ मेरें लेकर सर्व गुणस्थान समुचयवत्.

१	मि	११७	आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व आदि १६ प्रकृतिकी विच्छित्ति औरा मिथ्यात्व गुणस्थान रचनाथी ज्ञेयम्
२	सा	१०१	अनतानुबंधी आदि २५ सास्वादन गुणस्थान रचनावाली अने वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २ मनुष्यत्रिक ३, एव ३१ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवायु १ उतारी
४	अ	७१	देवायु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ मनुष्य अलब्धिपर्याप्ति रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्व, बंधप्रकृति १०९. तीर्थंकर १, आहारक २, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, एव ११ नास्ति. भवनपति, व्यंतर, जोतिषी तत्‌देवी ३ तथा वैमानिकदेवी रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०३ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एव १७ नहीं.

१	मि	१०३	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १; एव ७ वि०
२	सा	९६	अनतानुबंधी आदि २५ सास्वादन गुणस्थानवाली विच्छित्ति
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७१	मनुष्यायु १ मिले

तत्‌ अपर्याप्ति रचनामे गुणस्थान यथा संभवे तिनमे मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १; एव २ नास्ति.

अथ सौधर्म, ईशान रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०४ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, एव १६ नहीं. बंध भवनपतिवत् जहां संभवे तिहां तीर्थंकर अधिक चौथेमे.

तत्‌ अपर्याप्तमे गुणस्थान तीन–१।२।४, बंध १०२ का. १६ पूर्वोक्त अने मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, एव १८ नही. पहिले १०१, दूजे ९४, चौथे ७१ उपरवत्.

अथ सनत्कुमार आदि ६ कल्परचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०१ है. पूर्वोक्त (१६) सौधर्म, ईशानवाली अने एकेंद्रिय १, थावर १, आतप १, एव १९ नही.

१	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १; एव ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १ मिले

वत् अपर्याप्ति रचना गुणस्थान ३–१।२।४, बंधप्रकृति ९ है. पूर्वोक्त तिर्यचायु अने मनुष्यायु, एवं २ नास्ति. पहिले, दूजे, चौथे पर्याप्तवत्.

१	मि	९८	तीर्थंकर उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठ १; एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि २४ विच्छित्ति ब्यौरा माघवीके सास्वादनवत्
४	अ	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ आनत आदि ग्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति ९७ अस्ति. पूर्वोक्त १९ सनत्कुमार आदिवाली अने तिर्यचत्रिक ३, उद्योत १; एवं २३ नही. तीसरे गुणस्थानकी रचना बहुश्रुतसें समज लेनी.

१	मि	९६	तीर्थंकर उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १; एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९२	अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १; सर्वे २१ विच्छित्ति
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १; एवं २ मिले

वत् अपर्याप्ति रचना गुणस्थान ३–१।२।४, बंधप्रकृति ९६ है, पूर्वोक्त २३ अने मनुष्यायु १, एवं २४ नास्ति मनुष्यायु घटा देना पहिले ९५, दूजे ९१, चौथे ७१ है.

अथ पांच अनुत्तर रचना गुणस्थान १–चौथा; बंधप्रकृति ७२. पूर्वोक्त २३ तो आनत आदि रचनावाली अने मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, एवं ४८ नही

वत् अपर्याप्तरचना मनुष्यायु १ नही और सर्व पूर्वोक्तवत्.

अथ एकेंद्रिय १, विकलत्रय ३, अपर्याप्ति रचना गुणस्थान २ आदिके बंधप्रकृति १०७ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, मनुष्यायु १, तिर्यचायु १; एवं १३ नास्ति. करण-अपर्याप्त

१	मि	१०७	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेंद्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, विकलत्रय ३, एवं १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	० ० ०

अथ एकेन्द्रिय १, विकलत्रय ३ पर्याप्त रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व १, बंधप्रकृति १०९ है पूर्वोक्त १०७, मनुष्यायु १, तिर्यचायु १, ए दोइ अधिक बंधी.

अथ एकेन्द्रिय, विकलत्रय अलब्धिपर्याप्त रचना गुणस्थान १–मि०, बंध १०९ पूर्वोक्त.

अथ पचेंद्रियरचनागुणस्थानवत्. अथ पृथ्वीकाय, अप्, वनस्पति अपर्याप्तरचना, एकेंन्द्रियविकलत्रयपर्याप्तवत्. अथ तेजवायुरचनागुणस्थान १-मिथ्यात्व १, बंधप्रकृति १०५ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, मनुष्यत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, उच्च गोत्र १, एवं १५ नास्ति. अथ त्रसकायरचना गुणस्थानवत्. अथ मनोयोग ४, वचनयोग ४, रचनागुणस्थान १३ वत्. अथ औदारिकयोग रचना गुणस्थान सर्वे १४, बंधप्रकृति १२० सर्वे सन्ति, मनुष्यरचनागुणस्थानवत् सर्व अथ औदारिकमिश्रयोगरचनागुणस्थान ४-पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा, बंधप्रकृति ११४ है. देवायु १, नरकत्रिक ३, आहारकद्विक २; एवं ६ नही. इहां कार्मणसे मिल्या मिश्र ग्राह्य

१	मि	१०९	वैक्रियद्विक २, देवद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेंद्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, मनुष्यायु १, तिर्यंचायु १, एवं १५ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधी आदि २९ विच्छित्ति व्यौरा तिर्यंच अपर्याप्त रचना सास्वादन गुणस्थानवत्
४	अ	७०	वैक्रियद्विक २, देवद्विक २, तीर्थंकर १ मिले अप्रत्याख्यान ४, प्रत्याख्यान ४, षष्ठ गुणस्थानकी ६, अष्टम गुणस्थानकी ३४, आहारकद्विक २ विना नवमे गुणस्थानकी ५, दशम गुणस्थानकी १६, एवं ६९ विच्छित्ति
१३	स	१	० ० ० ०

अथ देवगति वैक्रियक मिश्रयोग रचना गुणस्थान ३-१।२।४, बंधप्रकृति १०२ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवद्विक २, वैक्रियकद्विक २, आहारकद्विक २, तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १; एवं १८ नही.

१	मि	१०१	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १; एवं ७ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधी आदि उद्योत पर्यंत २४ की विच्छित्ति सौधर्म, ईशान अपर्याप्ति रचना सास्वादनगुणस्थानवत् माधवीवाली
४	१	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ देवगति वैक्रियक रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०४ है. पूर्वोक्त सूक्ष्म आदि आहारकद्विक पर्यंत १६ नास्ति.

१	मि	१०३	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १; एवं ७ व्यवच्छेद
२	सा	९६	अनतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ नरकगति वैक्रियमिश्र रचना गुणस्थान २–पहिला, चौथा, बन्धप्रकृति ९९ है. एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्यंच-आयु १; एवं २१ नास्ति.

१	मि	९८	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंडक १, नपुंसक १, छेवट्ठ १, अनंतानुबंधी आदि २, एवं २८ व्यवच्छेद
४	अ	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ नरकगति वैक्रिय रचना गुणस्थान ४ आदिके बन्धप्रकृति १०१. पूर्वोक्त एकेंद्री आदि आहारकद्विक पर्यंत १९ नही, समुच्चयनरकवत्.

१	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठ १; एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुबंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्य-आयु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्य आयु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ आहारक काय योग तथा आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १–प्रमत्त, बन्धप्रकृति ६३ है. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यंचद्विक २, उद्योत १, तिर्यंच आयु १, अप्रत्याख्यान ४, वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, मनुष्य आयु १, प्रत्याख्यान ४, आहारकद्विक २, एवं ५७ नही.

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४–१।२।४।१३ मा बन्धप्रकृति ११२ है. देव-आयु १, नरक आयु १, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्यंच आयु १; एवं ८ नही

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ उतारे मिथ्यात्व आदि विकलत्रय पर्यंत १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि उद्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
४	अ	७५	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थकर १; एवं ५ मिले अप्रत्याख्यान ४ वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, प्रत्याख्यान ४, षष्ठ गुणस्थानकी ६, आहारकद्विक विना अष्टम गुणस्थानकी ३४, नवम गुणस्थानकी ५, दशम गुणस्थानकी १६, एवं ७४ व्यवच्छेद एक सातावेदनीय रही तेरमे
१३	स	१	० ० ० ० ०

अथ वेदरचना गुणस्थानकरचनावत् नवमे गुणस्थान पर्यंत अथ अनंतानुबंधिचतुष्क रचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ३ नास्ति.

१	मि	११७	मिथ्यात्व आदि नरक आयु पर्यंत १६ विच्छित्ति
२	सा	१०१	० ० ०

अप्रत्याख्यान ४ का बंध आदिके चार गुणस्थानवत् प्रत्याख्यान आदिके पांच गुणस्थानवत् सज्वलन क्रोध १, मान २, माया १ नवमे लग पूर्ववत् अने सज्वलन लोभ आदिके दश गुणस्थानवत्.

अथ अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ पहिले, दूजे १०१ पूर्ववत्.

अथ मति, श्रुत, अवधिज्ञान रचना चौथेसे लेकर बारमे ताइं समुचयगुणस्थानवत्. अथ मनःपर्यवज्ञान छट्ठेसे लेकर बारमे पर्यंत रचना समुचयवत् केवलज्ञान १३ मे १४ मे वत्.

अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय छट्ठे, सातमे, आठमे, नवमे गुणस्थानवत्. अथ परिहारविशुद्धि ६।७ मे वत्, सूक्ष्मसपराय दशमेवत् यथाख्यात ११।१२।१३।१४ वत्, देश सयम पांचमेवत्, असयती आदिके चार गुणस्थानवत्

अथ चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत् रचना १२ मे पर्यंत गुणस्थानवत्, केवलदर्शन केवलज्ञानवत्

अथ कृष्ण १, नील २, कापोत ३ लेश्या रचना बन्धप्रकृति ११८ है. आहारकद्विक नही गुणस्थानक ४ आदिके तीर्थंकर रहित पहिले ११७ आगले तीन गुणस्थान समुचय गुणस्थानवत्. अथ तेजोलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १११ है. सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, एव ९ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए तीन विना पहिले १०८ आगे ६ गुणस्थानोमे समुचयगुणठाणावत् पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १०८ है एकेंद्रि १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, एव १२ नास्ति तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए त्रण विना पहिले १०५ आगे गुणस्थानवत् अथ शुक्लेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके बन्धप्रकृति १०४ है पूर्वोक्त एकेंद्रिय आदि १२ अने तिर्यचत्रिक ३, उद्योत् १, एव १६ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारद्विक २ विना पहिले १०१ आगे सर्वगुणस्थानवत्

अथ भव्यरचना १४ गुणस्थानवत्, अभव्य प्रथम गुणस्थानवत् जानना

अथ क्षायिक सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ११–अविरति सम्यग्दृष्टि आदि, बन्धप्रकृति ७९ है. मिथ्यात्व आदि १६, अनतानुबधि आदि २५, एव ४१ नही. आहारकद्विक विना चौथे ७७ आगे समुचयगुणस्थानद्वारवत् अथ क्षयोपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४–अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; बन्ध पूर्वोक्त ७९ क्षायिकवत्, चारो गुणस्थान परि जान लेना. अथ उपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ८–अविरति सम्यग्दृष्टि आदि, बन्धप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ४१ तो क्षायिकवाळी अने मनुष्य आयु १, देव आयु १, एव ४३ नास्ति, क्षायिकवत्

बन्ध परंतु आयु दोनो सातमे ठाइ घटावनी सास्वादन सास्वादन गुणस्थानवत्, मिश्र मिश्र गुणस्थानवत्.

अथ सञ्ज्ञी रचना गुणस्थानरचनावत्. अथ असञ्ज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके बन्ध पहिले, दूजे पूर्ववत् ११७।१०१.

अथ आहारक रचना गुणस्थान १३ पर्यंत. अथ अनाहारक रचना गुणस्थान ४— १, २, ४ अने १३; बन्धप्रकृति ११२ अस्ति. आयु ४, आहारकद्विक २, एवं नरकद्विक २; एवं ८ नास्ति.

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १, एवं ५ उतारे मिथ्यात्व आदि विकलत्रिक ३ पर्यंत १३ की विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुबंधि आदि उद्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
४	अ	७५	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ मिले अप्रत्याख्यान आदि ९, प्रत्याख्यान ४, अथिर आदि ६, आहारकद्विक २ विना ३४ अपूर्वकरणकी, अनिवृत्तिकरणकी ५, सूक्ष्मसंपरायकी १६; एवं ७४ की विच्छित्ति
१३	स	१	एक सातावेदनीय रही

इति श्रीबन्धाधिकार संपूर्ण.

अथ उदयाधिकार. लिख्यते गुणस्थानेषु—

अथ नरकगति रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति. स्त्यानगृद्धित्रिक ३, पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १, आयु ३ नरक विना, उच्च गोत्र १, गति ३ नरक विना, जाति ४ पंचेंद्री विना, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २, संहनन ६, संस्थान ५ हुंडक विना, प्रशस्त गति १, नरक विना आनुपूर्वी ३, थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, यश १, आतप १, उद्योत १, तीर्थंकर १, एवं ४६ नास्ति.

१	मि	७४	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व (१) विच्छित्ति
२	सा	७२	नरकगति आनुपूर्वी १ उतारी अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	६९	मिश्रमोहनीय १ मिले मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७०	सम्यक्त्वमोहनीय १, नरकगति आनुपूर्वी १ मिले

अथ सामान्य तिर्यंच रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति १०७. आयु ३ तिर्यंच विना, मनुष्यद्विक २, उच्च गोत्र १, आहारकद्विक २, वैक्रियछक ६, तीर्थंकर १, एवं १५ नास्ति.

१	मि	१०५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १; एवं ५ विच्छित्ति
२	सा	१००	अनतानुबंधि ४, एकेन्द्रिय १, थावर १, विकलत्रय ३; एवं ९ विच्छित्ति
३	मि	९१	तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	० ० ०

अथ पचेंद्री रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति ९९ हैं. आयु ३ तिर्यंच विना, मनुष्यद्विक २, आहारकद्विक २, उच्च गोत्र १, वैक्रियपट् ६, तीर्थंकर १, एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, विकलत्रय ३, एवं २३ नास्ति.

१	मि	९७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	९५	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९१	तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोह० १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	० ० ० ०

अथ पर्याप्त तिर्यंचने रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति ९७ अस्ति. पूर्वोक्त २३, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १, एवं २५ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९०	मिश्रमोहनीय १ मिले तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोह १ विच्छित्ति
४	अ	९१	सम्यक्त्वमोहनीय १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति
५	दे	८३	० ० ० ०

अथ अलब्धिपर्याप्त तिर्यंच रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्व, उदयप्रकृति ७१ अस्ति. आयु ३ तिर्यंच विना, उच्च गोत्र १, मनुष्यद्विक २, आहारकद्विक २, वैक्रियपट् ६, तीर्थंकर १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, एकेंद्री १, बेंद्री १, तेंद्री १, चौरिंद्री १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, यश १, आदेय १, सुभग १, संस्थान ५ हुंडक विना, संहनन ५ छेवट्ठ विना, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १,

गृद्धित्रिक ३, पर्याप्त १, सुस्वर १, दुःस्वर १, मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १; एव ५१ नास्ति. एह समूर्च्छिम अपेक्षा जानना, पहिले ७१ है.

अथ सामान्य मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे, उदयप्रकृति १०२ हैं. थावर १, सूक्ष्म १, तिर्यंचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, आतप १, उद्योत १, एकेंद्री १, विकलत्रय ३, साधारण १, वैक्रियद्विक २, एव २० नास्ति.

१	मि	९७	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	९५	अनतानुबंधी ४ व्यवच्छेद
३	मि	९१	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, म(आ?)नुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुभग १, अनादेय १, अयश १; एव ८ विच्छित्ति
५	दे	८४	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १; एव ५ विच्छित्ति
६	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले

सातमेसे लेकर आगे सर्व समुच्चयगुणस्थानवत् जान लेना.

अथ पर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४; उदयप्रकृति १०० है. पूर्वोक्त २०, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १, एव २२ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एव ५ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनतानुबंधी ४ विच्छित्ति
३	मि	९०	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९१	सम्यक्त्वमोह० १, मनुष्यानुपूर्वी १ मिले अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुभग १, अनादेय १, अयश १; एव ८ विच्छित्ति
५	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १, एव ५ विच्छित्ति
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले आहारकद्विक २, स्त्यानगृद्धित्रिक ३; एव ५ विच्छित्ति
७	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, सहनन ३ अतके; एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७१	हास्य आदि षट् ६ विच्छित्ति
९	अ	६५	नपुसक १, पुरुषवेद १, सज्वलन क्रोध १, मान १, माया १ विच्छित्ति

शेष गुणस्थानमे समुच्चयवत्.

अथ अलब्धिपर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व, उदयप्रकृति ७१ है. ज्ञाना-

वरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसकवेद १, मनुष्यत्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिकद्विक २, वेदनीय २, हुडक १, छेवट्ठा १, पचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, अंतराय ५, एवं ७१ है.

अथ सामान्य देव रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७७. ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मोहनीय २७, नपुंसक विना वेद २, देव-आयु १, देवद्विक २, वैक्रियकद्विक २, पचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, प्रशस्त गति १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अशुभ १, त्रसदशक १०, उच गोत्र १, अंतराय ५, एवं ७७ अस्ति, शेष ४५ नास्ति

१	मि	७५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	७४	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	७०	देवानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोहनीय १ मिले मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७१	आनुपूर्वी देवस्य १, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले

अथ सौधर्म आदि नव ग्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति, स्त्रीवेद विना पूर्वोक्त, एवं भवनपति आदि ३.

१	मि	७४	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	७३	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	६९	देवानुपूर्वी १ उतारी, मिश्रमोहनीय १ मिली, मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ	७०	देवानुपूर्वी १, सम्यक्त्वमोहनीय १; एवं २ मिले

अनुत्तर ५ रचना गुणस्थान १—चौथा, उदयप्रकृति ७० है. पूर्वोक्त सामान्य देव रचनावाली ७७, तिण मध्ये मिथ्यात्व १, मिश्रमोहनीय १, अनंतानुबंधी ४, स्त्रीवेद १, एवं ७ नास्ति

४	अ	७०	० ० ० ०

अथ एकेंद्री रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ८० ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, वेदनीय २, मोहनीय २४, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, पुम (?) १ स्त्रीवेद विना, तिर्यंच-आयु १, तिर्यंचद्विक २, औदारिक शरीर १, हुंड १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, थावर १, एकेंद्री १, परा-

घात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, पर्याप्त १, साधारण १, सूक्ष्म १, यश १, नीच गोत्र १, अंतराय ५, एव ८०(?) है, शेष ४२ नही.

१	मि	८०	मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, स्त्यानर्द्धि ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्द्योत १; एव ११ विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ विकलत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्र० ८१. ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, वेदनीय २, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसकवेद १, तिर्यंच-आयु १, तिर्यंच द्विक २, औदारिकद्विक २, हुंडक १, छेवट्ठ १, विकलत्री स्वकीय १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण(चतुष्क) ४, अपर्याप्त १, अथिर ६, त्रस ६, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, निर्माण १, उच्छ्वास १, उद्द्योत १, यश १, अप्रशस्त गति १, नीच गोत्र १, अंतराय ५, एव ८१ है.

१	मि	८१	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्द्योत १, दु स्वर १, अप्रशस्त गति १; एव १० विच्छित्ति
२	सा	७१	० ० ०

अथ पचेंद्री रचना गुणस्थान १४ सर्वे, उदयप्रकृति ११४ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, विकलत्रय ३, आतप १, एव ८ नास्ति

१	मि	१०९	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एव ५ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	१०६	नरकानुपूर्वी १ उतारी, अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	शेष आनुपूर्वी ३ उतारी मिश्रमोहनीय १ मिली मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
४	अ		आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोहनीय १; एवं ५ मिले

पाचमेसे लेकर सर्व गुणस्थानमे समुच्चयवत्

अथ पृथ्वीकाय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ७९ ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, वेदनीय २, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसक १, तिर्यंच आयु १, तिर्यंच द्विक २, औदारिक १, हुडक १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, निर्माण १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, पर्याप्त १, एकेंद्री १, यश १, थावर १, सूक्ष्म १, नीच गोत्र १, अंतराय ५, एव ७९ है ४३ नही.

१	मि	७९	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, आतप १, सूक्ष्म १, थीणत्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्द्योत १; एव १० विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ अप्कायरचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ७८ है. पूर्वोक्त ७९, आतप १ विना.

१	मि	७८	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, सूक्ष्म १, थीणत्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १ विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ तेजोवायुकाय रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व; उदयप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ७९ आतप १, उद्योत १ विना.

अथ वनस्पतिकाय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति (७९). ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, अंतराय ५, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसक १, तिर्यंचत्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिक १, हुंडक १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, शुभ १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, पर्याप्त १, साधारण १, एकेंद्री १, यश १, थावर १, सूक्ष्म १, वेदनी २, सर्व अस्ति ७९, शेष ४३ नास्ति.

१	मि	७९	मिथ्यात्व १, सूक्ष्मत्रिक १, थीणत्रिक ३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १ विच्छित्ति
२	सा	६९	० ० ०

अथ त्रसकाय रचना गुणस्थान १४ सर्व, उदयप्रकृति ११७ अस्ति. थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, एकेंद्री १, आतप १, एवं ५ नास्ति.

१	मि	११२	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १; एवं २ विच्छित्ति
२	सा	१०९	नरकानुपूर्वी १ उतारी अनंतानुबंधि ४, विकलत्रय ३ विच्छित्ति
३	मि	१००	शेष आनुपूर्वी ३ उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०४	आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले

पांचमेसे लेकर चौदमे ताइ समुच्चयवत् जानना

अथ मनचतुष्क आदि वचनत्रिक, एवं ७ योगरचना गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, विकलत्रय ३, आनुपूर्वी ४, एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०८	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०३	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१००	सम्यक्त्वमोह० १ मिले अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, नरकगति १, देव आयु १, नरक आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	० ० ०

आगले गुणस्थानोमे समुचयवत् जानना.

अथ व्यवहार वचन योग रचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति ११२ है. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, आनुपूर्वी ४, एवं १० नास्ति.

१	मि	१०७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०६	अनतानुबंधि ४, विकलत्रय ३, एव ७ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१००	सम्यक्त्वमोह० १ मिली अप्रत्याख्या० ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, देव आयु १, नरकगति १, नरक आयु १, दुभग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	० ० ०

आगले गुणस्थानोमे समुचयवत् जानना.

अथ औदारिक काय योगरचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. आहारकद्विक २, वैक्रियकद्विक २, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देव आयु १, नरकगति १, नरक आयु १, अपर्याप्त १, एव १३ नास्ति

१	मि	१०६	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, साधारण १, एव ४ विच्छित्ति
२	सा	१०२	अनतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एव ९ विच्छित्ति
३	मि	९४	मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्व १ मिले अप्रत्याख्यान ४, दुभग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच गति १, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, एव ८ वि०
६	प्र	७९	० ० ०

आगले गुणस्थानोमे समुचयवत्

अथ औदारिकमिश्र योग रचना गुणस्थान ४–पहिलो, दूजो, चौथो, तेरमो, उदयप्रकृति ९८ है आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देव आयु १, नरकगति १, नरक आयु १, मिश्रमोह० १, थीणत्रिक ३, दु'स्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, एव २४ (?) नही

१	मि	९६	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, सूक्ष्मत्रिक ३ विच्छित्ति
२	सा	९२	अनतानु० ४, एकेंद्रिय १, थावर १, विकलत्रय ३, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, नपुंसकवेद १, स्त्री १; एव १४ व्यवच्छेद
४	अ	७९	सम्यक्त्वमोह० १ मिले अप्रत्या० ४, प्रत्या० ४, तिर्यंच गति १, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३, हास्य आदि ६, पुवेद १, सज्व लनके ४, ऋषभनाराच १, नाराच १, निद्रा १, प्रचला १, आवरण ९, अतराय ५; एव ४४ प्रकृतिकी विच्छित्ति हुइ
१३	स	३८	तीर्थंकर १ मिले

अथ वैक्रिय योग रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ८६ है ज्ञानावरण ५, दर्शना० ६ थीणत्रिक विना, वेदनीय २, मोहनीय २८, अंतराय ५, गोत्र २, देवगति १, देव-आयु १, वैक्रियद्विक २, पचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, हुडक १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अशुभ १, त्रसदशक १०, दुःस्वर १, अनादेय १, अयश १, नरक गति १, नरक-आयु १, दुर्भग १, एव ८६ (?) अस्ति, शेष ३६ नास्ति.

१	मि	८४	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	८३	अनतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	८०	मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	८०	सम्यक्त्वमोह० मिले

अथ वैक्रियमिश्र योग रचना गुणस्थान ३-प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, उदयप्रकृति ७९ अस्ति. पूर्वोक्त ८६ तिण मध्ये मिश्रमोह० १, पराघात १, उच्छ्वास १, सुस्वर १, दुःस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, एव ७ नास्ति.

१	मि	७८	सम्यक्त्वमोह० १ उतारी मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	६९	नरकगति १, नरक आयु १, नीच गोत्र १, हुडक १, नपुसक १, दुभग १, अनादेय १, अयश १; एव ८ उतारे अनता० ४, स्त्रीवेद १, एव ५ विच्छित्ति
४	अ	७३	सम्यक्त्वमोह० १, नरकगति १, नरक आयु १, नीच गोत्र १, हुडक १, नपुसक वेद १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एव ९ मिले

अथ आहारक योग रचना गुणस्थान १-प्रमत्त, उदयप्रकृति ६१ अस्ति. मिथ्यात्व १, मिश्रमोह० १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, अप्रत्या० ४, वैक्रियकद्विक २, देवगति १, देव-आयु १, नरक गति १, नरक आयु १, आनुपूर्वी ४, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, प्रत्या० ४, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, तिर्यंच गति १, उद्योत १, तीर्थंकर १, एव ४१ नास्ति, शेष ८१ षष्ठ गुणस्थान अस्ति. तिण मध्ये थीणत्रिक ३, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, अप्रशस्त गति १, दुःस्वर १, सहनन ६, औदारिकद्विक २, सस्थान ५ समचतुरस्र विना; एव २० नास्ति, शेष ६१ अस्ति

अथ आहारकमिश्र योग रचना गुणस्थान १-प्रमत्त, उदयप्रकृति ५७ अस्ति. पूर्वोक्त ६१ तिण मध्ये सुस्वर १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त गति १, एव ४ नही

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४-पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; उदयप्रकृति ८९ अस्ति. सुस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, प्रत्येक १, साधारण १, आहारकद्विक २, औदारिकद्विक २, मिश्रमोह० १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २, थीणत्रिक ३, सस्थान ६, सहनन ६, एव ३३ (?) नास्ति.

१	मि	८७	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	८१	नरकत्रिक उतारे अनंता० ४, एकेंद्रि १, थावर १, विकलत्रय ३, स्त्रीवेद १, एव १० विच्छित्ति
४	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, नरकत्रिक ३ मिले अप्रत्या० ४, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, प्रत्या० ४, नीच गोत्र १, सम्यक्त्वमोह० १, नपुसकवेद १, पुरुषवेद १, हास्य आदि ६, सज्वलन ४, निद्रा १, प्रचला १, आवरण ९ अतराय ५, एव ५१ विच्छित्ति
१३	स	२५	तीर्थंकर १ मिले

अथ पुरुषवेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०७ है थावर १, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकत्रिक ३, विकलत्रिक ३, एकद्री १, स्त्रीवेद १, नपुसकवेद १, आतप १, तीर्थंकर १, एव १० (?) नास्ति.

१	मि	१०३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०२	अनतानुबधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९६	आनुपूर्वी ३ नरक विना उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९९	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ नरक विना, एव ४ मिले अप्रत्या० ४, वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव १४ विच्छित्ति
५	दे	८५	प्रत्या० ४, तिर्यंच आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७९	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७४	सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	० ० ० ०

अथ स्त्रीवेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०५ अस्ति. पूर्वोक्त १०७, स्त्रीवेद १, एव १०८, तिण मध्ये आहारकद्विक २, पुरुषवेद १, एव ३ नही

१	मि	१०३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०२	अनता० ४, आनुपूर्वी ३ नरक विना, एव ७ विच्छित्ति
३	मि	९६	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्वमोह० १ मिले अप्रत्या० ४, देवगति १, देव आयु १, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एव ११ विच्छित्ति
५	दे	८५	प्रत्या० ४, तिर्यंच आयु १, उद्योत १, नीच गोत्र १, [illegible]

६	प्र	७७	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७४	सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३; एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	० ० ०

अथ नपुंसक वेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति ११४ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवत्रिक ३, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, एव ८ नही.

१	मि	११२	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३ वि०
२	सा	१०६	नरकानुपूर्वी १ उतारी अनता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यचापूर्वी १; एव ११ विच्छित्ति
३	मि	९६	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९७	सम्यक्त्वमोह० १, नरकानुपूर्वी १ मिले अप्रत्या० ४, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, दुभग १, अनादेय १, अयश १; एव १२ विच्छित्ति
५	दे	८५	प्रत्या० ४, तिर्यच-आयु १, उद्योत १, नीच गोत्र १, तिर्यच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७७	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७४	सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३, एव ४ विच्छित्ति
८	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	० ० ०

अथ क्रोधचतुष्क रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति तीर्थंकर १, मान ४, माया ४, लोभ ४, एव १३ नास्ति

१	मि	१०५	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३; एव ५ विच्छित्ति
२	सा	९९	नरकानुपूर्वी १ उतारी अनता० क्रोध १, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एव ६ विच्छित्ति
३	मि	९१	आनुपूर्वी ३ नरक विना उतारी मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	९५	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ४ मिले अप्रत्या० क्रोध १, वैक्रियक अष्टक ८, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यचानुपूर्वी १, दुभग १, अनादेय १, अयश १ एव १४ विच्छित्ति
५	दे	८१	प्रत्या० क्रोध १, तिर्यच आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७८	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७३	सम्यक्त्वमोह० १, अतके सहनन ३; एव ४ विच्छित्ति
८	अ	६९	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६३	० ० ०

एवं मानचतुष्क; एवं माया ४, एव लोभ ४. इतना विशेष–आपणे अपणे चतुष्क करी जानना. लोभ दशमे तांई है सोइ नवमे गुणस्थानकी ६३ माहिथी वेद तीनकी विच्छित्ति कर्यां ६० रही. अपणी बुद्धिसें विचार लेना.

अथ मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ११७ पहिले, १११ दूजे, समुच्चयवत्.

अथ विभंगज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति १०६ अस्ति. एकेंद्री १, आतप १, विकलत्रय ३, थावरचतुष्क ४, आनुपूर्वी मनुष्यकी १, तिर्यंचकी १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एव १६ नास्ति.

१	मि	१०६	मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	० ० ०

अथ ज्ञानत्रय रचना गुणस्थान ९ अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि, उदयप्रकृति १०६ है. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, तीर्थंकर १, एव १६ नास्ति.

४	अ	१०४	आहारकद्विक २ उतारे अप्रत्या० ४, वैक्रिय अष्टक ८, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुभग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
५	दे	८७	० ० ०

आगे सर्वत्र समुच्चयगुणस्थानवत्. मनःपर्याय छट्ठेसे लेकर पूर्वोक्तवत्. केवलज्ञान १३।१४ मे वत्. सामायिक, छेदोपस्थापनीय छट्ठेसे नवमे लग समुच्चयवत्.

अथ परिहारविशुद्धि रचना गुणस्थान २–प्रमत्त, अप्रमत्त, उदयप्रकृति ७८ है. पूर्वोक्त छट्ठेकी ८१, तिण मध्ये स्त्रीवेद १, आहारकद्विक २; एव ३ नही सातमे चीणत्रिक नही ७५. सूक्ष्मसपराय दशमे वत्. यथाख्यातमे ११।१२।१३।१४ मे गुणस्थानवत् जान लेनी. देशविरते ८७. अथ असयम प्रथम चार गुणस्थानवत्.

अथ चक्षुर्दर्शन रचना गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १०९ है. तीर्थंकर १, साधारण १, आतप १, एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, बेंद्री १, तेंद्री १ आनुपूर्वी ४, अपर्याप्त १, एव १३ नही.

१	मि	१०५	मिश्रमोह०१, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, एव ४ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	अनंतानुबंधि ४, चौरिंद्री १, एव ५ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्वमोह० १ मिली

आगे समुच्चयगुणस्थानवत्.

अचक्षुर्दर्शनमे गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १२१, तीर्थंकर १ नास्ति, गुणस्थानोमे समुच्चयवत् पहिले ११७, दूजे १११ इत्यादि अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत्. केवलदर्शन केवलज्ञानवत्.

अथ कृष्ण, नील, कापोत लेश्या रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ११९ हैं. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एव ३ नास्ति.

१	मि	११७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकानुपूर्वी १, एव ६ विच्छित्ति
२	सा	१११	अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, देवानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, एव ११ विच्छित्ति
३	मि	१००	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०४	आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोह० १, एव ५ मिली

अथ तेजोलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके उदयप्रकृति १०१ हैं. आतप १, विकलत्रय ३, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तीर्थंकर १, एवं ११ नास्ति

१	मि	१०७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २; एव ४ उतारे मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०६	अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, एव ६ विच्छित्ति
३	मि	९८	आनुपूर्वी ३ उतारे मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०१	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३; एव ४ मिले वैक्रियद्विक २, अप्रत्या० ४, देवत्रिक ३, आनुपूर्वी ३, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एव १४ (?) विच्छित्ति
५	दे	८७	प्रत्या० ४, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७६	० ० ०

अथ पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके उदयप्रकृति १०९ है आतप १, एकेंद्री १, थावरचतुष्क ४, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तीर्थंकर १, एव १३ नास्ति. १०५।१०४। ९८, चौथे १०१।८७।८१।७६.

अथ शुक्ललेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति ११० अस्ति. आतप १, एकेंद्री १, विकलत्रय ३, थावरचतुष्क ४, नरकत्रिक ३; एव १२ नास्ति

१	मि	१०५	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एव ५ उतारे मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९८	आनुपूर्वी ३ उतारी मिश्रमोह० १ मिली मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	१०१	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ मिले

आगे गुणस्थान समुचयवत्. अथ भव्यरचना गुणस्थानवत् १४ सर्व. अथ अभव्य प्रथम गुणस्थानवत्

अथ उपशम रचना गुणस्थान ८ चौथा आदि उदयप्रकृति १०० है. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ देव विना, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एवं २२ नास्ति.

४	अ	१००	अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३, नरकगति १, नरक आयु १, दुर्भग १, अनादेय १ अयश १, एवं १४ व्यवच्छेद
५	दे	८६	प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
६	प्र	७८	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७५	०

आगले च्यार गुणस्थानोमे समुचय गुणस्थानवत्

अथ क्षयोपशम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४–४।५।६।७ समुचयगुणस्थानवत्.

अथ क्षायिक सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ११–चौथा आदि, उदयप्रकृति १०६ है. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, एवं १६ नास्ति.

४	अ	१०३	आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे अप्रत्या० ४, वैक्रिय अष्टक ८, मनुष्य आनुपूर्वी १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, तिर्यंच-आयु १, उद्योत १, तिर्यंच गति १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं २० विच्छित्ति
५	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १ विच्छित्ति
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	७५	०

आगे समुचयवत् अथ मिश्र १, सास्वादनसम्यक्त्व १, मिथ्यात्व १, आपणे आपणे गुणस्थानवत्.

अथ संज्ञी रचना गुणस्थान १२ आदि के उदयप्रकृति ११३ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, विकलत्रय ३, तीर्थंकर १, एवं ९ नास्ति.

१	मि	१०९	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, एवं ४ उतारे मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	१०६	नरक-आनुपूर्वी १ उतारी अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	आनुपूर्वी ३, नरक विना उतारी मिश्रमोह० १ मिली

आगे समुचयवत्

अथ असञ्ज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ९४ अस्ति. उंच गोत्र १, वैक्रियछक्क ६, संहनन ५ छेवट्ठ विना, संस्थान ५ हुडक विना, प्रशस्त गति १, सुभगत्रिक ३, आयु २ देव, नरककी, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एव २८ नही.

१	मि	९४	मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, थीणत्रिक ३, पराघात १, मनुष्यत्रिक ३, उच्छ्वास १, उद्योत १, दु स्वर १, अप्रशस्त गति १; एव १६ विच्छित्ति
२	स	७८	०

अथ आहारक रचना गुणस्थान १३ है, आदिके उदय प्रकृति ११८, आनुपूर्वी ४ नही.

१	मि	११३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, एव ५ उतारे मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, एव ५ विच्छित्ति
२	सा	१०८	अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३; एव ९ विच्छित्ति
३	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिले मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
४	अ	,,	सम्यक्त्वमोह० १ मिली

आगे सर्व समुच्चयवत्

अथ अनाहारक रचना गुणस्थान ४–पहिलो, दूजो, चौथो, तेरमो, उदयप्रकृति ८९ अस्ति. दुःस्वर १, सुस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, प्रत्येक १, साधारण १, आहारकद्विक २, औदारिकद्विक २, मिश्रमोह० १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २, थीणत्रिक ३, संहनन ६, संस्थान ६, एव ३३ नास्ति.

१	मि	८७	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे मिथ्यात्व १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	८१	नरकत्रिक उतारे अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, स्त्रीवेद १; एव १० विच्छित्ति
४	अ	७१	सम्यक्त्वमोह० १, नरकत्रिक ३ मिले अप्रत्याख्यान आदि अंतराय पर्यंत ५१ विच्छित्ति व्यौरा कार्मणरचनावत्
१३	स	२५	तीर्थंकर १ मिले

इति उदयाधिकार समाप्त

अथ सत्ताधिकार कथ्यते. अथ घर्मा आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४ आदि, सत्ताप्रकृति १४७, देव आयु नही.

१	मि	१४७	०
२	सा	१४६	तीर्थंकर १ उतारे
३	मि	,,	०
४	अ	१४७	तीर्थंकर १ मिले

१	मि	१४६	०	अंजना आदि त्रयमे देव आयु १, तीर्थंकर १; एव २ नास्ति सातमीमे तीर्थंकर १, देव आयु १, मनुष्य आयु १, एव ३ नही १४५ मि १४५ सा १४५ मि १४५ अ
२	सा	,,	,,	
३	मि	,,	,,	
४	अ	,,	,,	

अथ सामान्य तिर्यंच रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४७; तीर्थंकर १ नही. पहिले १४७, दूजे १४७, तीजे १४७, चौथे १४७, मनुष्य रचना गुणस्थान १४ वत्.

अथ सौधर्म आदि सहस्रार पर्यंत देवलोक रचना गुणस्थान ४; सत्ताप्रकृति १४७; नरक-आयु नास्ति. अथ आनत आदि नव ग्रैवेयक पर्यंत सत्ता० १४६; नरक १, तिर्यंच आयु नही.

१	मि	१४६	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	०
३	मि	,,	०
४	अ	१४७	तीर्थंकर १ मिले

१	मि	१४५	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	०
३	मि	,,	०
४	अ	१४६	तीर्थंकर १ मिले

अथ ५ अनुत्तर रचना गुणस्थान १—चौथा; सत्ता० १४६, नरक आयु १, तिर्यंच-आयु १; एव २ नही

अथ भवनपति, व्यंतर १, जोतिषि १, सर्व देवी १, रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४६ अस्ति. तीर्थंकर १, नरक आयु १, एव २ नास्ति.

१	मि	१४६	०
२	सा	,,	०
३	मि	,,	०
४	अ	,,	०

अथ एकेंद्री विकलत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ताप्रकृति १४५ अस्ति तीर्थंकर १, नरक आयु १, देव आयु १ नही अथ पचेद्री रचना गुणस्थानवत्

१	मि	१४५
२	सा	,,

अथ पृथ्वीकाय १, अप्काय १, वनस्पतिकाय रचना एकेंद्री विकलत्रय रचनावत्. अथ तेजोवातकाय रचना गुणस्थान १—मिथ्यात्व १, सत्ताप्रकृति १४४ है. तीर्थंकर १, देव आयु १, मनुष्य आयु १, नरक आयु १, एव ४ नास्ति. अथ त्रसकाय रचना गुणस्थानवत्. अथ मनोयोगचतुष्क ४, वचनयोगचतुष्क ४, औदारिककाययोग १, एवं योग ९ गुणस्थान रचनावत्. अथ वैक्रियकाययोग रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४८, पहिले १४८, दूजे १४७, तीजे १४७, चौथे १४८.

अथ आहारक आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १—प्रमत्त, सत्ताप्रकृति १४८ सर्वे.

अथ औदारिकमिश्रयोग रचना गुणस्थान ४—पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा, सत्ता० १४६ अस्ति. देव आयु १, नरक-आयु १ नही.

१	मि	१४५	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,	०
४	अ	१४६	तीर्थंकर १ मिले सातमे गुणस्थानकी, नवमे गुण०की, दशमे गुण०की, बारमे गुण०की; एव ६१ की विच्छित्ति शेष ८५ रही तेरमे गुणस्थानमे
१३	स	८५	०

अथ नरकगति मिश्रवैक्रियका गुणस्थान २–पहिला, चौथा; सत्ता० १४५. मनुष्य आयु १, तिर्यंच-आयु १, देव आयु १, एव ३ नही. पहिले १४५, चौथे १४५ है.

अथ देवगति सवधि वैक्रियकमिश्रयोग रचना गुणस्थान ३–पहिला, दूजा, चौथा, सत्ता० १४५. मनुष्य-आयु १, तिर्यंच आयु १, नरक आयु १, एव ३ नही.

अथ कार्मणरचना गुणस्थान ४–पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा, सत्ता० १४८ सर्वे सन्ति.

१	मि	१४४	तीर्थंकर १ उतारे	१	मि	१४८	०
२	सा	,,	०	२	सा	१४६	तीर्थंकर १, नरक आयु १ उतारे
४	अ	१४५	तीर्थंकर १ मिले	४	अ	१४८	तीर्थंकर १, नरक-आयु १ मिले
०	०	०	०	१३	स	८५	रही ८५का व्यौरा गुणस्थानवत्

अथ वेद तीनो नव गुणस्थान लग समुच्चयगुणस्थानवत् जानना. अथ अनतानुबधिचतुष्क रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० पहिले १४८, दूजे १४७. अथ अप्रत्याख्यान ४ रचना गुणस्थान ४ आदि सत्ता० समुच्चयगुणस्थानवत्. अथ प्रत्याख्यानमे गुणस्थान ५ आदिके रचना समुच्चयगुणस्थानवत्. अथ सज्वलन क्रोध १, मान १, माया १ नवमे ताइ लोभ दशमे ताइ समुच्चयवत्. अथ अज्ञानत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० समुच्चयवत् जानना. अथ ज्ञानत्रय रचना गुणस्थान ९ चौथा आदि बारमे लग सत्ता० १४८ समुच्चयवत्. अथ मन.पर्यायज्ञानरचना गुणस्थान ७–प्रमत्त आदि; सत्ता० १४८ सर्वे, समुच्चयवत् केवलज्ञानमे सत्ता० ८५ की, गुणस्थान १३।१४ मा समुच्चयवत् अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय रचना गुणस्थान ४–प्रमत्त आदि; सत्ता० १४८ समुच्चयवत्. अथ परिहारविशुद्धि रचना गुणस्थान २–प्रमत्त, अप्रमत्त, सत्ताप्रकृति १४८ समुच्चयवत् सूक्ष्मसपराय चारित्र दशमेवत्. अथ यथाख्यात रचना ११।१२।१३।१४ मे वत् अथ देशविरति पचमे वत् अथ असयम रचना आदिके ४ गुणस्थानो वत्. अथ अचक्षु, चक्षुदर्शन रचना गुणस्थानरचनावत् गुणस्थान १२ पर्यंत. अथ अवधिदर्शन रचना अवधिज्ञानवत्. अथ केवलदर्शन केवलज्ञानवत्. अथ कृष्ण, नील लेश्या, कापोत लेश्या रचना गुणस्थान ४ प्रथमवत् अथ तेजो पद्मलेश्या रचना गुणस्थान ७ आदिके समुच्चयवत् अथ शुक्ल लेश्या रचना गुणस्थान १३ आदिके रचना १४८ सत्ता० समुच्चयवत् अथ भव्य रचना गुणस्थानवत्. अथ अभव्य रचना गुणस्थान १–मिथ्यात्व, सत्ताप्रकृति १४१. मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आहारकबधन १, आहारकसघातन १; एव ७ नही. अथ उपशमसम्यक्त्वरचना गुणस्थान ८–अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि, सत्ता० सर्व गुणस्थानोकी १४८ जाननी. अथ क्षयोपशमसम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४–अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि; सत्ता० १४८ समुच्चयगुणस्थानवत्. अथ क्षायिक सम्यक्त्वरचना गुणस्थान ११–अविरतिसम्यग्दृष्टि आदि, सत्ताप्रकृति १४१ अस्ति. अनतानुबधि ४, मिथ्यात्व १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एव ७ नास्ति. यत्र नाम मात्र लिख्या. विस्तार समुच्चयसत्ताथी जानना.

४	अ	१४१	
५	दे	,,	
६	प्र	,,	
७	अ	,,	आयु ३ की विच्छित्ति
८	अ	१३८	०
९	अ	,,	भाग ९करी ३६की विच्छित्ति ब्योरा गुणस्थानरचनावत्
१०	सू	१०२	सज्वलन लोभ विच्छित्ति
११	उ	१०१	०
१२	क्षी	,,	निद्रा १, प्रचला १, ज्ञानावरण ५, दर्शना० १, यण ४, अतराय ५ विच्छित्ति
१३	स	८५	०
१४	अ	,,	० ८५ व्यवच्छेदे मुक्ती

मिथ्यात्व मिथ्यात्ववत्, सास्वादन सास्वादनवत्, मिश्र मिश्रगुणस्थानवत्. अथ सज्ञी रचना गुणस्थानरचनावत् गुणस्थान १२ पर्यंत. अथ असज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० १४७ अस्ति; तीर्थंकर १ नही. पहिले १४७, दूजे १४७ अथ आहारक रचना गुणस्थान-रचनावत् १३ लगे. अथ अनाहारक रचना कार्मणयोगरचनावत् इति सत्ताधिकार सपूर्ण.

(१६५) उत्कृष्ट प्रकृतिबन्धयन्त्रम् शतकात्

प्रकृति	स्वामि
तीर्थंकर १	४ गुणस्थान
आहारकद्विक २, देव-आयु १	७ अप्रमत्त
विकलत्रिक ३, सूक्ष्म ३, नरक, तिर्यग्, मनुष्य आयु ३, सुरद्विक २, वैक्रियद्विक २, नरकद्विक २; सर्व १५	तिर्यंच, मनुष्य मिथ्यात्वी
एकेंद्री १, थावर १, आतप १	मिथ्यात्वी ईशानात
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, उद्योत १, छेवट्ठा १	देवता, नारकी मिथ्यात्वी
शेष ९२ प्रकृति	चारो गतिका मिथ्यात्वी

(१६६) जघन्यप्रकृतिबन्धस्वामियन्त्रम्

प्रकृति	बन्ध-स्वामि
आहारक २, तीर्थंकर १	८ गुणस्थान
सज्वलन ४, पुरुषवेद १	नवमा गुणस्थाने
साता १, यश १, उच्चगोत्र १, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरण ४, अतराय ५; सर्व १७,	सूक्ष्मसपराय गुणस्थानवाला
नरकद्विक २, वैक्रियद्विक २, देवद्विक २	असज्ञी तिर्यंच पर्याप्त
आयु ४	सज्ञी असज्ञी
शेष प्रकृति ८५ रही	बादर एकेंद्री पर्याप्त

(१६७) अथ स्थितिबंध अल्पबहुत्व संख्या

यति सूक्ष्म संपराय जघन्य	स्तो १	चउरिंद्री अपर्याप्त जघन्य	वि १९
बादर एकेंद्री पर्याप्त ,,	अस २	,, ,, उत्कृष्ट	,, २०
सूक्ष्म ,, ,, ,,	वि ३	,, पर्याप्त ,,	,, २१
बादर ,, अपर्याप्त ,,	,, ४	असंज्ञी पचेंद्री पर्याप्त जघन्य	स २२
सूक्ष्म ,, ,, ,,	,, ५	,, ,, अपर्याप्त ,,	वि २३
,, ,, ,, उत्कृष्ट	,, ६	,, ,, ,, उत्कृष्ट	,, २४
बादर ,, ,, ,,	,, ७	,, ,, पर्याप्त ,,	,, २५
सूक्ष्म ,, पर्याप्त ,,	,, ८	यतिना उत्कृष्ट स्थितिबंध	स २६
बादर ,, ,, ,,	,, ०	देशविरति जघन्य स्थिति	,, २७
बेइंद्री पर्याप्त जघन्य	स १०	,, उत्कृष्ट ,,	,, २८
,, अपर्याप्त ,,	वि ११	अविरतिसम्यग्दृष्टि पर्याप्त जघन्य	,, २९
,, ,, उत्कृष्ट	,, १२	,, अपर्याप्त ,,	,, ३०
,, पर्याप्त ,,	,, १३	,, ,, उत्कृष्ट	,, ३१
तेइंद्री ,, जघन्य	,, १४	,, पर्याप्त ,,	,, ३२
,, अपर्याप्त ,,	,, १५	संज्ञी ,, जघन्य	,, ३३
,, ,, उत्कृष्ट	,, १६	,, अपर्याप्त ,,	,, ३४
,, पर्याप्त ,,	,, १७	,, ,, उत्कृष्ट	,, ३५
चउरिंद्री पर्याप्त जघन्य	,, १८	,, पर्याप्त ,,	,, ३६

(१६८) अथ ४१ प्रकृतिका अबंध कालयंत्र

प्रकृति	अबंधकाल
नरकत्रिक ३, तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १, एवं सर्वे ७	१६३ सागरोपम, ४ पल्योपम मनुष्य-भव अधिक जुगलियाने
थावरचतुष्क ४, एकेंद्री १, विकलत्रिक ३, आतप १	१८५ सागरोपम, ४ पल्योपम मनुष्यभव अधिक नारकने
प्रथम संहनन वर्जी ५ संहनन, प्रथम संस्थान वर्जी ५ संस्थान, अशुभ गति १, अनंतानुबंधि ४, मिथ्यात्व १, दुर्भग १, दु स्वर १, अनादेय १, थीणत्रिक ३, नीच गोत्र १, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १	१३२ सागरोपम मनुष्य भवे अधिक यति भव आदि देइ पचेंद्रीने अबंधस्थिति

अथ १६३।१८५ कह्या ते पूरवाना ठाम लिख्यते विजय आदिकने विषय दो २ वार तीन वार अच्युतने विषय १३२ एक ग्रैवेयकने विषे १६३, इम तमाने विषे १८५.

(१६९) अथ ७३ अध्रुवबंधनो उत्कृष्ट जघन्य निरंतर बन्धयन्त्र

प्रकृतिनामानि	निरंतर बन्ध
सुरद्विक २, वैक्रियद्विक २	तीन पल्योपम
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १	समयथी लइ असंख्य काल
आयु ४	१ अंतमुहूर्त
औदारिक शरीर १	असंख्य पुद्गलपरावर्त
सातावेदनीय १	देश ऊन पूर्व कोड
पराघात १, उच्छ्वास १, पचेंद्री १, त्रसचतुष्क ४	१३२ सागरोपम
शुभ विहायगति १, पुरुषवेद १, सुभगत्रिक ३, उच गोत्र १, समचतुरस्र संस्थान १, अशुभ विहायगति १, जाति ४, अशुभ संहनन ५, अशुभ संस्थान ५, आहारकद्विक २, नरकगति १, नरकानुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, थिर १, शुभ १, यश १, स्थावरदशक १०, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, असातावेदनीय १	जघन्य उत्कृष्ट समयथी लेइ अंतर्मुहूर्त
मनुष्यद्विक २, जिननाम १, वज्रऋषभनाराच १, औदारिक अंगोपांग १	३३ सागर, जघन्य अंतर्मुहूर्त

(१७०) अथ उत्कृष्ट रसबन्धस्वामियन्त्र शतककर्मग्रन्थात्

प्रकृतिनामानि	रसबन्धस्वामि
एकेंद्री १, थावर १, आतप १	मिथ्यात्वी ईशानांत देवता बांधे
विकलत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, तिर्यंच आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकत्रिक ३,	मिथ्यात्वी तिर्यंच, मनुष्य
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेवट्ठ १,	देवता, नारकी
वैक्रियद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, शुभ विहायोगति १, शुभ वर्ण चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचतुरस्र १, पराघात १, त्रसदशक १०, पचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत्र १, एवं सर्व ३२	अपूर्वकरण गुणस्थानमें क्षपकश्रेणिमें बंध करे
उद्योत	सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख
मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १	सम्यग्दृष्टि देवता
देवायु १	७ अप्रमत्त
शेष प्रकृति	४ गतिना मिथ्यात्वी

(१७१) अथ जघन्यरसबन्धयन्त्रम्

प्रकृति	बंधस्वामि
स्त्यानर्द्धि १, प्रचला १, निद्रानिद्रा १, अनतानुबंधि ४, मिथ्यात्व १	सयम स मुख मिथ्यात्वी
अप्रत्याख्यान ४	अविरतिसम्यग्दृष्टि सयम स मुख
प्रत्याख्यान ४	देशविरति
अरति १, शोक १	प्रमत्त यति
आहारकद्विक २	अप्रमत्त ,,
निद्रा १, प्रचला १, शुभ वर्णचतुष्क ४, हास्य १, रति १, कुत्सा (?) १, भय १, उपघात १	अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती
पुरुषवेद १, सज्वलनचतुष्क ४	नवमे गुणस्थानवाला
अतराय ५, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४	१० मे गुणस्थाने क्षपक
सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, आयु ४, वैक्रियकषट्क ६	मनुष्य, तिर्यंच
उद्द्योत १, आतप १, औदारिकद्विक २	देवता, नारकी
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १	सातमी नरके उपशमसम्यक्त्वके सन्मुख
जिननाम १	अविरतिसम्यग्दृष्टि
एकेंद्री १, थावर १	नरक विना तीन गतिना
आतप १	सौधर्म लगे देवता
साता १, असाता १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, यश १, अयश १	समदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि परावर्त्तमान मध्यम परिणाम
त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, अशुभ वर्ण आदि चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरु लघु १, निमाण १, मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, शुभ विहायगति १, अशुभविहायगति १, पचेंद्री १, उच्छ्वास १, पराघात १, उच्चगोत्र १, सहनन ६, सस्थान ६, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, दुर्भग १, दु स्वर १, अनादेय १	चार गतिका मिथ्यात्वी बांधे

इति रसबन्ध समाप्त.

(१७२) अथ प्रदेशबन्धयन्त्रम्, मूल प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबन्धस्वामि शतकात्

मोहनीय	९।४।५।६।७ गुणस्थानवर्ती
आयु, मोहनीय वर्जी ६ कर्म	१० गुणस्थानवर्ती

(१७३) अथ उत्तर प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशबंधयंत्र शतककर्मग्रन्थात्

ज्ञानावरणीय ५, दर्शना० ४, साता० १, यश १, उच्च गोत्र १, अंतराय ५	१० गुणस्थानवर्ती
अप्रत्याख्यान ४	४ गुणस्थाने
प्रत्याख्यान ४	देशविरति
पुरुषवेद १, सज्वलन ४	९ मे गुणस्थाने
शुभ विहायगति १, मनुष्य आयु १, देव आयु १, देवगति १, देवानुपूर्वी १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, वैक्रियद्विक २, सम चतुरस्र १, असाता० १, वज्रऋषभ १, एव सर्व १३	सम्यग्दृष्टी, मिथ्यादृष्टि
निद्रा १, प्रचला १, हास्य आदि षट् ६, तीर्थंकर १	अविरतिसम्यग्दृष्टि
आहारकद्विक २	अप्रमत्त ७ मे वाला
शेष ६६ प्रकृति	मिथ्यात्वी

(१७४) अथ जघन्यप्रदेशबन्धस्वामियन्त्रम्

आहारकद्विक २	अप्रमत्त यति
नरकत्रिक ३, देव-आयु १	असज्ञी पर्याप्त जघन्य योगी
देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, जिननाम १	मिथ्यात्वने सन्मुख सम्यग्दृष्टि
शेष १०९ प्रकृति	आपणे भवके प्रथम समय सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जघन्य योगी

(१७५) अथ सात बोलकी अल्पबहुत्व

योगस्थान	स्तोक १
प्रकृतिभेद	असख्य २
स्थितिभेद	,, ३
स्थिति बधाध्यवसाय	,, ४
अनुभागस्थानक	,,
कर्मप्रदेश	अनत
रसच्छेद	,,

(१७६) जीव बधवर्गणा ग्रहे तिसका कर्मपणे बाटा

कर्म	बाटा
आयु	१
नाम	
गोत्र	

(१७८)

संख्या	बंधप्रकृति ८	मूल प्रकृति ८	ज्ञाना० १	दर्शना० २	वेदनीय ३	मोह० ४	आयु ५	नाम ६	गोत्र ७	अंतराय ८
१	बंधस्थान	८।७।६।१	५	९ ६ ४	१	२२।२१। १७।१३। ९।५।४।१	१	२३।२५। २६।२८। २९।३०। ३१	१	५
२	भुयस्कार	६।७।८	०	६ ९	०	२।३।४।५। ९।१३। १७।२१। २२	०	६	०	०
३	अल्पतर	७।६।१	०	६ ४	०	१७।१३। ९।५।४।३। २।१	०	७	०	०
४	अवस्थित	८।७।६।१	१	९ ४	१	१०	१	८	१	१
५	अवक्तव्य	०	१	४ ६	०	१ १७	१	३	१	१

अधिक बंध करे ते 'भुयस्कार' कहीये. अल्प अल्प बंध करे तेहने 'अल्पतर बंधक' कहीये. जितने है तितने ही बंध करे ते 'अवस्थित बंध' कहीये. अबंधक होय कर फेर बांधे ते 'अवक्तव्य' कहीये. अग्रे सधिया[1] विचारणीया.

अथ अग्रे बन्धकारण लिख्यते कर्मग्रन्थात्—

ज्ञानावरणीय कर्म	मति आदि ५ ज्ञान, ज्ञानी-साधु प्रमुख, ज्ञानसाधक(न)-पुस्तक आदि तेहना बुरा चिंतणा १, निह्नवणा गुरुलोपणा २, सर्वथा विनाश करणा ३, अंतरंग अप्रीत ४, अंतराय-भक्त, पान, वस्त्र आदिना विघ्न करणा ५, अति आशातना जाति प्रमुख करी हीलणा ६, ज्ञान-अवर्णवाद ७, आचार्य, उपाध्यायनो अविनय ८, अकाले स्वाध्याय करणी ९, षट्कायकी हिंसा १०
दर्शनावरणीय	दर्शन-चक्षु आदि ४, दर्शनी-साधु आदि, दर्शनसाधन-श्रोत्र, नयन आदि अथवा सम्मति, अनेकान्तजयपताका आदि प्रमाणशास्त्रना पुस्तक आदिकने प्रत्यनीक आदि। पूर्वोक्त ज्ञानावरणीयवत् दश बोल जानने
सातावेदनीय	गुरु जे माता, पिता, धर्माचार्य तेहनी भक्ति १, क्षमावान् २, दयावान् ३, ५ महाव्रतवान् ४, दशविधसामाचारीवान् ५, बाल, वृद्ध, ग्लान आदिकना वैयावृत्त्यनो करणहार ६, भगवान्‌की पूजामे तत्पर ७, सरागसंयम ८, देशसंयम ९, अकामनिर्जरा १०, बालतप ११
असाता	गुरुनी अवज्ञानो करणहार १, रीसालु २, दया रहित ३, उत्कट कषाय ४, कृपण ५, प्रमादी ६, हाथी, घोडा, बळदने निर्दयपणे दमन, वाहन, लांछन आदिकनो करवो ७, आप परने दुःख, शोक, वध, ताप, मदकारक ८
दर्शनमोहनीय	उन्मार्गना उपदेशक १, सन्मार्गना नाशक २, देवद्रव्यनो हरणहार ३, वीतराग, श्रुत, संघ, धर्म, देवताना अवर्णवाद बोले ४, जगमे सर्वज्ञ है नही इम कहे ५, धर्ममे दूषण काढे ६, गुरु आदिकनो अपमानकारी ७

1 आगळ पोतानी बुद्धि प्रमाण विचारी लेवु

कषाय	कषाये करी परवश चित्त थकउ सोला कषाय बांधे
हास्य	उत्प्रासन १ कदर्प २, प्रहास ३, उपहास ४, शी(अश्ली?)ल घणा बोले ५, दीन वचन बोले ६
रति	देश आदि देखनेमे ओत्सुक्य १, चित्राम, रमण, खेलन २, परचित्तावजन ३
अरति	पापशील १, परकीर्तिनाशन २, खोटी वस्तुमे उत्साह ३
शोक	परशोकप्रगटकरण १, आपको शोच उपजावनी २, रोणा ३
भय	आप भय करणा १, परकू भय करणा २, त्रास देणी ३, निर्दय ४
जुगुप्सा	चतुर्विध सघनी जुगुप्सा करे १, सदाचारजुगुप्सा २, समुच्चयजुगुप्सा ३
स्त्रीवेद	ईर्ष्या १, विषाद २, गृद्धिपणा ३, मृषावाद ४, वक्रता ५, परस्त्रीगमनरक्त ६
पुरुषवेद	स्वदारसंतोष १, अनीर्ष्या २, मद कषाय ३, अवक्रचारी ४
नपुंसकवेद	अनगसेवी १, तीव्र कषाय २, तीव्र काम ३, पापडी ४, स्त्रीका व्रत पडे ५
नरक आयु	महारंभ १, महापरिग्रह २, पंचेन्द्रियवध ३, मासाहार ४, रौद्र ध्यान ५, मिथ्यात्व ६, अनतानुबंधि कषाय ७, कृष्ण, नील, कापोत लेश्या ८, अनृत भाषण ९, परद्रव्यापहरण १०, वार वार मैथुनसेवन ११, इन्द्रियवशवर्ती १२, अनुग्रह रहित १३, स्थिर घणा काल लग रोस राखणहार १४
तिर्यच आयु	गूढ हृदय १, शठ बोले मधुर, अदर दारुण २, शल्य सहित ३, उन्मार्गदेशक ४, सत्‌मार्गनाशक ५, आर्त्त ध्यानी ६, माया ७, आरंभ ८, लोभी ९, शीलव्रतमें अतिचार १०, अप्रत्याख्यान कषाय ११, तीन अधम लेश्या १२
मनुष्य आयु	मध्यम गुण १, अल्प परिग्रह २, अल्प परिग्रह (?) ३, मार्दव ४, आर्जव स्वभाव ५, धर्मध्याननो रागी ६, प्रत्याख्यान कषाय ७, सविभागनो करणहार ८, देव, गुरुना पूजक ९, प्रिय बोले १० सुखे (?) प्रज्ञापनीया ११, लोकव्यवहारमें मध्यम परिणाम स्वभावे पतली कषाय १२, क्षमावान् १३
देव आयु	अविरतिसम्यग्दृष्टि १, देशविरति २, सरागसयम ३, बालतपस्वी ४, अकामनिर्जरा ५, भले साथ प्रीति ६, धर्मश्रवणशीलता ७, पात्रमें दान देणा ८, अव्यक्त्य सामायिक अजाण पणे सामायिक करे ९
शुभ नाम	माया रहित १, गारव तीनसे रहित २, ससारभीरु ३, क्षमा, मादर्व, आर्जव आदि गुणे सहित ४
अशुभ नाम कर्म	मायावी १, गौरववान् २, उत्कट क्रोध आदि परिणाम ३, परकू विप्रतारण ४, मिथ्यात्व ५, पैशुन्य ६, चल चित्त ७, सुवर्ण आदिकमें खोट मिलावे ८, कूडी साख ९, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श अन्यथाकरण १०, अंगोपांगनउ छेदन करणा ११, यत्र पजर बणावे १२, कूडा तोला, कूडा मापा १३, आपणी प्रशसा १४, पांच आश्रवना सेवनहार १५, महारंभ परिग्रह १६, कठोर भाषी १७ जूठ बोले १८, मुखरी १९ आक्रोश करे २०, आगलेके सुभागका नाश करणा २१, कार्मण करे २२, कुतूहली २३, चैत्याश्रयविंबका नाश करणहार २४, चैत्येषु अगराग २५, परकी हासी २६, परकू विडबना करणी २७, वेश्या आदिकू अलंकार देणा २८, घनमे आग लगावे २९, देवताना मिस करी गंध आदि चोरे ३०, तीव्र कषाय ३१

शुभ नाम	ससारभीरु १, अप्रमादी २, सूत्रा स्वभाव ३, क्षमावान् ४, सधर्मीना स्वागतकारक ५, परोपकारी ६, सारका ग्रहणहार ७
उच्च गोत्र	गुण बोले यथावत् १, दूषणमे उदासीन २, अष्ट मद रहित ३, आप ज्ञान पठन करे ४, अवराकू पढावे ५, बुद्धि थोडी होवे तो पढणेवालोकी बहुमानसे अनुमोदन करे ६, जिन, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, चैत्य, साधु, गुणगरिष्ठ तेहने विषे भक्ति, बहुमान कारक ७
नीच गोत्र	परनिंदा १, अपहास २, सद्गुणलोपन ३, असत्दोषकथन ४, आपणी कीर्ति वाछे ५, आपणा दोष छिपावे ६, अष्ट मदका करक ७
अतराय कर्म	तीर्थंकरकी पूजामे विघ्न करे १, हिंसा आदि ५ आश्रव सेवे २, रात्रिभोजन आदिक करे ३, ज्ञान, दर्शन, चारित्रको विघ्न करे ४, साधु भले देता भात, पाणी, उपाश्रय, उपगरण, भेपज आदि निवारे ५, अन्य प्राणीने दान, लाभ, भोग, परिभोगना विघ्न करे ६, मत्र आदिक करी अनेराना वीर्य हरे ७, बध, बधन करे ८, छेदन, भेदन करे जीवाने ९, इन्द्रिय हणे १०

इति अष्ट कर्मना बधकारण सपूर्ण अथ पचसग्रह थकी युगपत् बधहेतु लिख्यते—

पृथक् पृथक् गुणस्थानोपरि पाच प्रकारे मिथ्यात्व, एकैक मिथ्यात्वमे छ छ काया, एवं ३० हुइ. एकैक इन्द्रिय व्यापार पूर्वोक्त ३० मे, एव १५० हुइ. ऐसे ही एकैक युग्म साथ दोढसै दोढसै, एव ३०० होइ. एव एकैक वेदसे तीन सो तीन सो, एव ९०० हुए एव एकैक क्रोध आदि च्यारि कषायसे नव(से) नवसे, एव ३६०० हुइ. एव दश योगसे ३६०० कू गुण्या ३६००० होइ ५×६×५×२×३×४×१०.

मिथ्यात्व १, काय १, इन्द्रिय १, एक युगल २, तीनो वेदमेसू एक वेद १, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलनका क्रोध आदि त्रिक कोइ एक, एव ९, दश योगमेसू एक व्यापार योगका, एव दश बधहेतुसे ३६००० भग हुइ.

दस तो पूर्वोक्त अने भय युक्त कीये ११ हुइ. तिसकी विभाषा पूर्ववत् करणेसे ३६००० हुइ. एव जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ३६०००. अथवा अनतानुबधी प्रक्षेपणे ते ११ हुइ अने योग १३ जानने तिहां भग ४६८००. अथवा कायद्वयबधसयोग क्षेपणे ते ग्यारे सयोग वियोग ते पूर्ववत् लब्ध भगा ९००००. एव सर्व २०८८००, दो लाख अठ्यासी सैं. एकादश समुदाय करी इतने भग हुइ.

दस तो पूर्वोक्त सयोग अने भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ सयोग हुइ, तिसके भग ३६०००. अथवा भय अनतानुबधी युक्त करे योग तिहा १३ जानने तदा भग ४६८००. जुगुप्सा, अनतानुबधी प्रक्षेपे पिण भग ४६८००. अथवा त्रिकायबध प्रक्षेपणे ते १२ होय है ते पिण वीस होय है तदा पूर्ववत् लब्ध भगा १२००००. भय द्विकायबध क्षेपते लब्ध भग पूर्ववत् ९००००. एव जुगुप्सा द्विकायबध क्षेपे पिण भगा ९००००. अनतानुबधी द्विकायबध क्षेप पूर्ववत् लब्ध भगा ११७०००. एव सर्व बारे समुदायके हतु ५४६६०० हुइ.

दस तो तेही ज पूर्वोक्त भय, जुगुप्सा, अनतानुवंधी युक्त १३ हुइ इहा १३ सयोगना भगा ४६८०० चार कायना वध प्रक्षेपणे ते १३ होय है तिहा १५ सयोगना भगा पूर्ववत् लब्ध भगा ९००००. त्रिकायवध भय क्षेपे १२०००० भगा. एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण लब्ध भगा १२००००. त्रिकायवध अनतानुवंधी प्रक्षेपे १५६०००. द्विकायवध, भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३, तिहा पिण ९०००० भगा. द्विकायवध भय अनतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००. एव द्विकायवध अनतानुवंधी जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ११७०००. एव तेरा समुदायना सर्व हेतुना भगा ८५६८००

दस तो तेही ज पूर्वोक्त अने पांच काय वध संयुक्त १४ होते है, तिहां पट् पाचना सयोग पूर्ववत् ३६००० भगा. चार काय वध भय प्रक्षेपे १४, तिहा पिण ९०००० भगा. एवं चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ९०००० भगा. चार काय वध अनतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००. त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२००००. त्रिकायवध भय अनतानुवंधी प्रक्षेपे १५६०००. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा अनतानुवंधी पे(प्रक्षे)पे पिणि १५६०००. द्विकाय वध भय जुगुप्सा अनतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००. सर्व भग १४ समुदायके ८८२०००.

दस तो तेही पूर्वोक्त अने छकाय वध युक्त १५ होते है. तिहा पट्काययोग १, तिहां ६००० पूर्ववत्. पांच काय वध भय प्रक्षेपणे ते १५, तिहां ३६००० भगा. एव पाच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६००० भगा. पाच काय वध अनतानुवंधी प्रक्षेपे ४६८००. चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ९००००. चार काय वध भय अनतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००. एव चार काय वध जुगुप्सा अनतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००. त्रिकायवध भय जुगुप्सा अनतानुवंधी १५६०००. १५ समुदायना सर्व भग ६०४८००.

दस पूर्वोक्त पट् काय वध भय युक्त १६ होते है; तिहां ६००० [illegible] पट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेप पिण ६०००. पट्कायवध अनतानुवंधी प्रक्षेपे ७८००. [illegible] वध जुगुप्सा प्रक्षेप ३६०००. पांच काय वध भय अनतानुवंधी प्रक्षेपे ४६[illegible] भय जुगुप्सा अनंतानुवंधी प्रक्षेप पिण ४६८००. चार काय वध भय [illegible] प्रक्षेपे ११७०००. ए सर्व सोला समुदायके भगा २६६४००.

दस पूर्वोक्त पट्कायवध भय जुगुप्[illegible] [illegible]ते है; तिहां भ[illegible] [illegible] अनंतानुवंधी प्रक्षेप ७८००. [illegible] अनता[illegible] पांच काय वध भय जुगुप्सा अनंतानुवंधी [illegible] सर्व १७[illegible]

दस पूर्वोक्त पट्कायवध भय जुगु[illegible] [illegible] भंगा.

[illegible] [illegible]सर्व भंगा पूर्वोक्त [illegible]

अनतानुबंधी रहित योगका कारण कहीये है—अनतानुबधीके उदय १३ योग होते है, परतु दस नही होते तिसका कारण कहीये है उद्वेलना करता हूया अनतानुबधीकी सम्यग्दृष्टि प्राप्त मिथ्यात्व उदयके नही सकामआवलिका जां लगे अनतानुबधीका उदय तिसके उदय अभाव ते मरणका पिण अभाव है. भवा(त?)रके अभाव ते वैक्रियमिश्र १, औदारिकमिश्र १, कार्मण १ इन तीनोका अभाव है, इस वास्ते अनतानुबधी भय जुगुप्साके निरूपोदयमे तथा उत्तर पदामे हेतुयाका अभाव सूचन कर्या.

अथ सास्वादनका विशेष कहीये है—सास्वादनमे मिथ्यात्वके अभाव ते प्रथम पद गया शेष पूर्वोक्त नव अनतानुबधीके विकल्प अभाव ते दस. ६।५।२।३।४।१३. इस चक्र विषे प्रथम वेदां ३ करके योगानू गुणाकार करके एक रूप ऊठा करणा यथा एकैक वेदमे तेरा योग है एव ३९ हूये. नपुसक वेदे वैक्रियमिश्र नही. एव एक काढ्या ३८ रहे इन ३८ करी एकैक काय वधसू गुण्या २२८ होय है. इन २२८ कू एकेक इन्द्रियव्यापारसू गुण्या ११४० हुइ. इन ११४० कू एकेक युगमसू गुण्या २२८० हुइ. २२८० कू एकैक कषाय चारसू गुण्या ९१२०. इतने हेतुसमुदाय हुये. एव शेष विषे भावना करवी.

दस पूर्वोक्त अने द्विकायवध युक्त ग्यारे हूये, तिहा पूर्ववत् २२८०० भगा. भय प्रक्षेपणे ते ११ हूये, तिहां ९१२० भगा. एव जुगुप्सा प्रक्षेप ९१२०. सर्व ग्यारे समुदायना भगा ४१०४०.

पूर्वोक्त दस त्रिकायवध प्रक्षेपे बारा होते हैं, तिहा पिण पूर्ववत् ३०४००. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे पिण बारा होत है, तिहां पिण २२८००. एव द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २२८००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२, तिहा पिण ९१२०. एव सव बारा समुदायके ८५१२० भगा.

दस पूर्वोक्त चार काय वध युक्त तेरा होते है. पूर्ववत् तिहा २२८००. अथवा भय त्रिकायवध प्रक्षेप तेरा, तिहां ३०४०० भगा. एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे ३०४००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३, तिहा भागा २२८००. एव सव तेराके भग सख्या १०६४००.

दस पूर्वोक्त पचकायवध प्रक्षेपे चौदा हुइ; तिहा भगा ९१२०. अथवा चार काय वध प्रक्षेपे चौदा; तिहा २२८०० भगा एव चतुःकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २२८००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४, तिहा ३०४००. सव एकत्र मेले ८५१२०.

पूर्वोक्त दस षट्कायवध युक्त पदरा हुइ, तिहा १५२० भगा. पचकायवध प्रक्षेपे १५, तिहा ९१२०. एव पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेप ९१२०. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षपे १५; तिहां २२८०० भगा. सर्व एकत्र करे ४२५६०.

दस पूर्वोक्त षट्कायवध भय युक्त १६ होते है; तिहां भांगा १५२०. षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १५२०. अथवा पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १६; तिहा ९१२० भगा. सर्व एकत्र करे १२१६०.

दस तो तेही ज पूर्वोक्त भय, जुगुप्सा, अनतानुबंधी युक्त १२ हुइ. इहां १२ सयोगना भगा ४६८०० चार कायना वध प्रक्षेपणे ते १३ होय है तिहा १५ सयोगना भगा पूर्ववत् लब्ध भगा ९००००, त्रिकायवध भय क्षेपे १२०००० भगा, एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण लब्व भगा १२००००, त्रिकायवध अनतानुबंधी प्रक्षेपे १५६०००, द्विकायवध, भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३; तिहां पिण ९०००० भगा द्विकायवध भय अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००, एव द्विकायवध अनतानुबंधी जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ११७०००, एव तेरा समुदायना सर्व हेतुना भगा ८५६८००,

दस तो तेही ज पूर्वोक्त अने पांच काय वध सयुक्त १४ होते है, तिहां षट् पाचना सयोग पूर्ववत् ३६००० भगा, चार काय वध भय प्रक्षेपे १४, तिहां पिण ९०००० भगा, एव चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ९०००० भगा, चार काय वध अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००, त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२००००, त्रिकायवध भय अनतानुबंधी प्रक्षेपे १५६०००, एव त्रिकायवध जुगुप्सा अनतानुबंधी पे(प्रक्षे)पे पिणि १५६०००, द्विकाय वध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००, सर्व भग १४ समुदायके ८८२०००,

दस तो तेही पूर्वोक्त अने छकाय वध युक्त १५ होते है, तिहा षट्काययोग १; तिहां ६००० पूर्ववत्, पाच काय वध भय प्रक्षेपणे ते १५, तिहां ३६००० भगा, एव पाच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६००० भगा, पाच काय वध अनतानुबंधी प्रक्षेपे ४६८००, चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ९००००, चार काय वध भय अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००, एव चार काय वध जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००, त्रिकायवध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी १५६०००, १५ समुदायना सर्व भग ६०४८००,

दस पूर्वोक्त षट् काय वध भय युक्त १६ होते है, तिहां ६००० भगा, षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षप पिण ६०००, षट्कायवध अनतानुबंधी प्रक्षेपे ७८००, पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६०००, पाच काय वध भय अनतानुबंधी प्रक्षेपे ४६८००, एव पाच काय वध जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेपे पिण ४६८००, चार काय वध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेपे ११७०००, ए सव सोला समुदायके भगा २६६४००,

दस पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा युक्त १७ होते है; तिहां भंगा ६०००, षट्कायवध भय अनतानुबंधा प्रक्षेपे ७८००, एव षट्कायवध जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेपे ७८०० पाच काय वध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी प्रक्षेप ४६८००, एव सर्व १७ ना भगा ६८४००,

दस पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा अनतानुबंधी युक्त १८ होते है, तिहां ७८०० भगा,

एव मिथ्यादृष्टिके सब भगा पूर्वोक्त मेलनसे ३४,७७,६००, मिथ्यादृष्टिना हेतु समास, १

गुणना तिवारे पीछे पूर्वोक्त भांगे च्यार काढे शेष ३५ रहे. यली शेष अंक करी गुण्या हुइ ८४००, ए नवकी समुदायके भावना पीछे कही ही है.

ते नव पूर्वोक्त द्विकायवध प्रक्षेपे १० हुइ; इहां भागा २१०००. अथवा भय प्रक्षेपे १० हुइ; तिहां भागा ८४००; एव जुगुप्साप्रक्षेपात् ८४००. सर्व एकत्र ३७८००. ए दस समुदायके.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहा २८००० भांगा. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां २१००० भगा. एव द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २१०००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइ; इहा ८४०० भांगा. सर्व एकत्र ७८४००. ए एकादश समुदाय.

ते नव पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे १२ होते है; तिहां पूर्ववत् २१००० भांगा. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां भागे २८०००. एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २८०००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ, तिहां २१००० भांगा. सर्व एकत्र करे ९८०००. ए बारा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पांच काय वध युक्त १३ हुइ; तिहां भागा ८४००. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेप १३ हुइ, तिहां भांगा २१००० एव चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण २१०००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ, तिहां पिण २८००० भागा. सर्व एकत्र करे ७८४००. ए तेरा समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध प्रक्षेपे १४ होते है, तिहा भांगा १४००. अथवा पाच काय वध भय प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहां भांगा ८४००. एव पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ८४००. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ, तिहा भांगा २१०००. सर्व एकत्र करे थके ३९२००. ए चौदा समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय प्रक्षेपे १५ हुइ, तिहां १४०० भांगा. एव षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १४०० भागा. अथवा पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५ हुइ; तिहां भगा ८४००. सर्व एकत्र मेले ११२००. ए पांच समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे सोला होते है, तिहां भांगा १४००. एव सर्व एकत्र करे ३५२८००. ए अविरतिके बधहेतु समाप्त. ४

देशविरतिके त्रस कायकी विरति है, इस कारण ते पांच काय, तिसके द्विक, त्रिक, चार, पांच सयोग विचारने. तिसके आठ हेतु—एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युगम १, एक वेद १, दो २ कषाय, एक योग १, ए आठ चक्ररचना–५×५×२×३×४×११. एकैक काये पांच पाच इन्द्रिया; एव २५. ते युग्म भेदते ५०. ते पिण तीन वेदसे १५०, ते पिण चार कषायसे ६००, ते पिण ११ योगसे गुण्या ६६००. ए आठ हेतुसमुदाय.

दस पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १७ होते है; तिहां भंगा १५२०.

एवं पूर्वोक्त सास्वादनके बंधहेतु सर्व एकत्र करे ३८३०४०. इति सास्वादनके बंधहेतु समाप्त २.

मिश्रदृष्टिके तेही दसमेसुं अनंतानुबंधी वर्जित नव होय है. एकैक काया वधे पांच इंद्रिय व्यापारा, एवं ३० भांगे एकैक युगले त्रिंशत्; एवं ६०. एकैक वेदे साठ साठ, एवं १८०. एकैक कषाये ७२०. एवं दश जोगसे गुण्या ७२००. ६×५×२×३×४×१०.

ए नव हेतु नव पूर्वोक्त द्विकायवध युक्त १० होइ पूर्ववत् १८०००. अथवा भय प्रक्षेपे १०; तिहां ७२०० भंगा. एवं जुगुप्सा प्रक्षेपे ७२००. एवं एकत्र दस समुदायना सर्व ३२४०० भंगा.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त ११ होते है, तिहां २४००० भंगा. तथा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ. तिहां १८०००. एवं द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १८०००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां भंगा ७२००. एवं सर्व ६७२००.

नव पूर्वोक्त चार काय वध युक्त बारा हुइ, तिहां १८०००. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२, तिहां २४००० भंगा. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २४०००. अथवा द्विकाय-वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२, इहां पिण १८०००. एवं सर्व मिले ८४०००.

नव पूर्वोक्त पांच काय वध युक्त १३ हुइ; तिहां भांगा ७२००. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १३, तिहां १८००० भंगा. एवं चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे १८०००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३, तिहां भांगा २४०००. सर्व एकत्र ६७२००.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध युक्त १४ होते है; इहां भांगा १२००. अथवा पांच काय वध भय प्रक्षेपे १४, तिहां भांगा ७२००. एवं पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ७२००. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४, तिहां १८००० भांगा. सर्व एकत्र करे ३३६००. इति १४ समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय प्रक्षेपे १५ होते है, तिहां पूर्ववत् भांगा १२००. एवं षट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १२००. अथवा पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५, तिहां भांगा पूर्ववत् ७२००. ए सर्व ९६००. ए १५ समुदाय.

नव पूर्वोक्त षट्कायवध भय जुगुप्सा युक्त सोला होते है; इहां भांगा १२००.

सर्व मिश्रदृष्टिके भंगा मिलाय करे ३०२४०००. इति मिश्रदृष्टिहेतवः समाप्ताः. ३

एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युग्म १, एक वेद १, तीन कषाय ३, एक योग १, एह नव हेतु होते है जघन्य. अथ चक्ररचना ६।५।२।३।४।३. इहां प्रथम योगा करी वेदांक

गुणना तिवारे पीछे पूर्वोक्त भांगे च्यार काढे शेप ३५ रहे. वली शेप अंक करी गुण्या हुइ ८४००. ए नवकी समुदायके भावना पीछे कही ही है.

ते नव पूर्वोक्त द्विकायवध प्रक्षेपे १० हुइ, इहां भांगा २१०००. अथवा भय प्रक्षेपे १० हुइ, तिहां भागा ८४००; एव जुगुप्साप्रक्षेपात् ८४००. सर्व एकत्र ३७८००. ए दस समुदायके.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहा २८००० भागा. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहां २१००० भगा. एव द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २१०००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइ, इहां ८४०० भांगा. सर्व एकत्र ७८४००. ए एकादश समुदाय.

ते नव पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे १२ होते है, तिहां पूर्ववत् २१००० भांगा. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२ हुइ, तिहां भागे २८०००. एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २८०००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ, तिहां २१००० भांगा. सर्व एकत्र करे ९८०००. ए बारा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पाच काय वध युक्त १३ हुइ, तिहां भागा ८४००. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ, तिहा भांगा २१००० एव चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण २१०००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ, तिहा पिण २८००० भागा. सर्व एकत्र करे ७८४००. ए तेरा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पट्कायवध प्रक्षेपे १४ होते है; तिहा भांगा १४००. अथवा पाच काय वध भय प्रक्षेपे १४ हुइ, तिहां भांगा ८४००. एव पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ८४००. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ, तिहां भांगा २१०००. सर्व एकत्र करे थके ३९२००. ए चौदा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पट्कायवध भय प्रक्षेपे १५ हुइ, तिहा १४०० भांगा. एव पट्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १४०० भागा. अथवा पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५ हुइ; तिहां भगा ८४००. सर्व एकत्र मेले ११२०० ए पांच समुदाय.

नव पूर्वोक्त पट्कायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे सोला होते है, तिहां भांगा १४००. एव सर्व एकत्र करे ३५२८००. ए अविरतिके बंधहेतु समाप्त. ४

देशविरतिके त्रस कायकी विरति है, इस कारण ते पांच काय, तिसके द्विक, त्रिक, चार, पांच संयोग विचारने तिसके आठ हेतु—एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युग्म १, एक वेद १, दो २ कषाय, एक योग १, ए आठ चक्ररचना–५×५×२×३×४×११. एकैक काये पांच पाच इन्द्रिया, एव २५. ते युग्म भेदते ५०. ते पिण तीन वेदसूं १५०. ते पिण चार कषायसे ६००. ते पिण ११ योगसे गुण्या ६६००. ए आठ हेतुसमुदाय.

आठ पूर्वोक्त अने द्विकायवध प्रक्षेपे नव हुइ, तिहां १३२०० भागा. अथवा भय प्रक्षेपे ९ हुइ, तिहा ६६०० भांगा. अथवा जुगुप्सा प्रक्षेपे ९, तिहां ६६०० भागा है. सर्व एकत्र करे २६४००. ए नव हेतु समुदाय.

आठ पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त करे दस हुइ. तीन संयोग इहां दस होय, तिस कारण ते भागा १३२००. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे १० हुइ, इहा दस द्विकसयोग है. भागा १३२००. द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३२००. अथवा भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १० हुइ, तिहा ६६०० भगा. सर्व एकत्र ४६२०० ए दस समुदाय.

आठ पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहा ६६०० भागा अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहा १३२००. एव त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १३२००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा घाले ११ हुइ, तिहा भग १३२००. सर्व एका ४६२००. ए ग्यारे समुदायना.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध प्रक्षेपे १२ हुइ, तिहा भग १३२०. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १२ हुइ, तिहा ६६०० भग. एव चार काय वध जुगुप्सा घाले ६६००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ, तिहा १३२०० भांगा. सर्व एकत्र करे २७७२०. भग. ए बारा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पाच काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ, तिहां १३२० भग. एव पाच काय वध जुगुप्सा घाले १३२०. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ, तिहा भगा ६६००. सर्व एकत्र करे ९२४० भग. ए तेरा समुदाय

आठ पूर्वोक्त पाच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ, तिहा १३२० भागा. ए चौदा हेतु समुदाय.

सर्व एकत्र मेले १६३६८०. ए देशविरतिना भागा. ५

अथ प्रमत्त अप्रमत्त विचार—प्रमत्तमे स्त्रीवेदमे आहारक १, आहारकमिश्र नही. अप्रमत्तमे आहारकद्विक ही नही है. प्रमत्त यत्रक २।१।१।१,२।३।४।१३. प्रमत्त आदिकोंके पाच हेतु है—युग्म २, वेद ३, कषाय ४, योग. १३ योगा करी तीन वेद गुण्या ३९ हुइ दो काढे ३७ रहै. युग्म भेदते द्विगुणा ७४ कषाय भेदते च्यार गुणा २९६. ए पाच हेतुसमुदाय. पांच तो तेही ज अने भय प्रक्षेपे ते तेही ज भांगा २९६. एव जुगुप्सा घाले २९६. एव भय, जुगुप्सा घाले ७ हेतु हुइ, भागे तेही ज २९६. सर्व एकत्र करे ११८४. ए प्रमत्त भागा. ६

अप्रमत्त यत्रक—२।१।१।१,२।३।४।११. वेदासे योग गुण्या ३३. एक रूप काढे ३२ रहै. युग्म भेदते दुगुणे ६४. कषाय भेदते च्यार गुणा २५६. ए पांच हेतुसमुदाय. एव भय साथ पद २५६ एव जुगुप्सा साथ भांगा २५६. सर्व मेले १०२४. ए अप्रमत्तना भागा. ७

अपूर्वकरण यत्र—२।१।१।१,२।३।४।९. युग्मसे वेद गुण्या ६ ते पिण कषाय भेदते २४. ए पिण चउवीस नव योगसे गुण्या २१६ (२×३×४×९). ए पांच हेतुसमुदाय. भय

प्रक्षेपे ६; भांगा २१६. जुगुप्सा प्रक्षेपे पद्. भांगा २१६. उभय प्रक्षेपे सात हुइ भंग २१६. सर्व एकत्र करे ८६४. ए अपूर्वकरणना हेतु. ८

बादरका यत्रक—१।१, ४।९. कषाय ४, योग ९. द्विकसयोगे ३६. ए द्विकसमुदाय. बादर पांच बधकके वेदका पिण उदय है; इस कारण ते वेद प्रक्षेपे. तीन हेतु भागे त्रिगुणे करे १०८. ए तीन हेतुसमुदाय. सर्व एकत्र करे १४४ भंग. ए बादर कषायना हेतु.

सूक्ष्मके एक कषाय एकैक योगसे नव योग साथ ९ द्विकयोग. उपशांतके नव हेतु. एव क्षीणके नव हेतु. सयोगीके सात हेतु.

सर्व गुणस्थानना विशेषबधहेतुसख्या ४६८२७७०. इति गुणस्थानकमे बध हेतु समाप्त.

इति श्रीआत्मारामसकुलता(ना)यां बन्धतत्त्वमष्टम सम्पूर्णम्.

अथ अग्रे 'मोक्ष' तत्त्व लिख्यते. प्रथम तीन श्रेणी रचना. (१७९) अथ गुणश्रेणि-रचनायन्त्र शतकात्—

	सम्यक्त्वप्राप्ति आदि लेद	निर्जरा	काल अल्प-बहुत्व
१	सम्यक्त्वप्राप्ति	स्तोक १	असख्य ११
२	देशविरति	असख्य गुणा	,, १०
३	सर्वविरति	,, ,,	,, ९
४	अनतानुबधिविसयोजन	,, ,,	,, ८
५	दर्शनमोहनीयक्षय	,, ,,	,, ७
६	उप(शम)श्रेणि चढता	,, ,,	,, ६
७	उपशातमोह ११ मे	,, ,,	,, ५
८	क्षपकश्रेणि चढता	,, ,,	,, ४
९	क्षीणमोह	,, ,,	,, ३
१०	सयोगी केवली	,, ,,	,, २
११	अयोगी केवली	,, ,,	स्तोक १

(१८०) उप(शम)श्रेणियन्त्रम् आवश्यकनिर्युक्तेः

| सज्वलन लोभ |
| अप्रत्याख्यान लोभ | प्रत्याख्यान लोभ |
| सज्वलन माया |
| अप्रत्याख्यान माया | प्रत्याख्यान माया |
| सज्वलन मान |
| अप्रत्याख्यान मान | प्रत्याख्यान मान |
| सज्वलन क्रोध |
| अप्रत्याख्यान क्रोध | प्रत्याख्यान क्रोध |
| पुरुषवेद |
| हास्य | रति | शोक | अरति | भय | जुगुप्सा |
स्त्री
नपुंसक
मिथ्यात्वमोह / मिश्रमोह \ सम्यक्त्वमोह
अनंतानुबधि क्रोध / अनंता मान | अनंता० माया \ अनंतानुबधि लोभ

क्षपकश्रेणिस्वरूपयन्त्र आवश्यकनिर्युक्ति थकी लिखतोऽस्ति (लिखितमस्ति) चरम समये पांच ज्ञानावरणीय ५, च्यार दर्शनावरणीय ४, पांच अतराय ५, एव सर्व १४ खेपे बार गुणस्थानके जद दो २ समये बाकी रहे तदा पहिले समय निद्रा १, प्रचला १, देवगति १, देवानुपूर्वी १, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अगोपांग १, प्रथम सहनन वर्जी ५ सहनन, एक सस्थान वर्जी पाच सस्थान ५, तीर्थ(कर)नाम १, आहारकद्विक २; एव सर्व १९ प्रकृति पहिले समय खेपवे. जो तीर्थंकर होय तो १९ प्रकृति न होय तो तीर्थंकर(नामकर्म) टाली १८ प्रकृति खेपइ ए प्रथम.

(१८१)

संज्वलन लोभ

, माया

, मान

,, क्रोध

पुरुषवेद षेपे

हास्य | रति | शोक | अरति | भय | जुगुप्सा

स्त्रीवेद षपावे

नपुंसकवेद

अप्र क्रोध | अप्र० मान | अप्र० माया | अप्र० लोभ | प्र० लोभ | प्र० मान | प्र० माया | प्र० लोभ

सम्यक्त्वमोहनीय

मिश्रमोहनीय

मिथ्यात्वमोहनीय

अनंता० क्रोध | अनंता० मान | अनंता० माया | अनंता० लोभ

आठ कषाय क्षपाया पीछे कुछक शेष रहे आठ कषाय षेपता बीचमे १७ प्रकृति षेपे तेहना नाम—नरकगति १, नरकानुपूर्वी १, तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, आतप १, उद्द्योत १, थावर १, सूक्ष्म, साधारण १, अपर्याप्त १, निद्रानिद्रा १, प्रचला १, थीणद्धि १. ए सत्तरे प्रकृति आठ कषाय क्षेपता बीचमे क्षपावे. तदनतर अवशेष आठ कशाय षेपे, पीछे नपुंसकवेद, स्त्रीवेद.

(१८२) अथ सीझणद्वार लिख्यते श्रीपूज्यमलयगिरिकृत नंदीजीकी वृत्तिथी

	बोल सख्यानामानि	द्रव्य परिमाण	निरंतर सीझे
१	ऊर्ध्वलोके उत्कृष्ट	४	२
२	समुद्रे उत्कृष्ट सर्वत्र	२	,,
३	सामान्य जले	४	,,
४	तिर्यग्लोके	१०८	८
५	अधोलोके	२० पृथक्	४
६	नंदनवने	४	२
७	पंडगवने	,,	,,
८	एकैक विजयमे	वीस वीस	४
९	३० सर्व अकर्मभूमौ	दस दस	,,
१०	१५ कर्मभूमिमे	१०८	८
११	कालद्वारे सुषमसुषम	१०	४
१२	कालद्वारे सुषम	१०	४
१३	,, सुषमदुःषम	१०८	८
१४	,, दुःषमसुषम	,,	,,
१५	,, दुःषम	२०	४
१६	,, दुःषमदुःषम	१०	,,
१७	गतिद्वारे देवगति आया	१०८	८
१८	,, शेष ३ गतिका ,,	दस दस	४
१९	,, रत्नप्रभाना ,,	१०	,,
२०	,, शर्कराप्रभाना ,,	,,	,,
२१	,, वालुकाप्रभाना ,,	,,	,,
२२	,, पंकप्रभाना ,,	४	२

२३	गति० पृथ्वी, अप्कायना आया	४।४	२।२	४७	लिंगद्वारे स्वलिंगी	१०८	८
२४	,, वनस्पतिकायना ,,	६	२	४८	चारित्रद्वारे सा, सू, य	,,	,,
२५	,, तिर्यंच पचेंद्रिय, पुरुपना ,,	१०	४	४९	,, सा, छे, सू, य	,,	,,
				५०	सा, प, सू, य	१०	४
२६	,, तिर्यंच स्त्रीना ,,	,,	,,	५१	,, सा, छे, प, सू, य	,,	,,
२७	,, सामान्ये मनुष्य गतिना ,,	२०	,,	५२	बुद्धद्वारे प्रत्येकबुद्ध	,,	,,
२८	,, मनुष्यपुरुपना ,,	१०	,,	५३	,, बुद्धबोधित पुरुष	१०८	८
२९	,, मनुष्यस्त्रीना ,,	२०	,,	५४	,, ,, स्त्री	२०	४
३०	,, भवनपतिना ,,	१०	,,	५५	,, ,, नपुंसक	१०	,,
३१	,, भवनपतिनीना ,,	५	२	५६	,, बुद्धिबोधित स्त्री	२०	,,
३२	,, व्यंतरना ,,	१०	४	५७	,, ,, पुरुष सामान्ये	२० पृथक्	,,
३३	,, व्यंतरीना ,,	५	२	५८	ज्ञानद्वारे, मति, श्रुत	४	२
३४	,, जोतिषीना ,,	१०	४	५९	,, मति, श्रुत, मन पर्याय	१०	४
३५	,, जोतिषीनी देवीना ,,	२०	,,				
३६	,, वैमानिक देवना ,,	१०८	८	६०	,, मति, श्रुत, अवधि	१०८	८
३७	,, वैमानिक देवीना ,,	२०	४	६१	,, मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय	,,	,,
३८	पुरुष मरी पुरुष	१०८	८				
३९	शेष भागे ८	दस दस	४	६२	अवगाहनाद्वारे जघन्य	४	२
४०	तीर्थद्वारे तीर्थंकर	४	२	६३	,, मध्यम	१०८	८
४१	,, स्वयंबुद्ध	,,	,,	६४	,, उत्कृष्ट	२	२
४२	,, बुद्धबोधित	१०८	८	६५	उत्कृष्टद्वारे अच्युत सम्यक्त्वधी	४	,,
४३	,, स्त्री	२०	४				
४४	,, तीर्थंकरी	२	२	६६	संख्या, असंख्यकाल च्युत	१०।१०	४४
४५	लिंगद्वारे गृहस्थलिंगी	४	,,				
४६	,, अन्यलिंगी	१०	४	६७	,, अनंत कालथी पतित	१०८	८

अथ सांतरद्वारे एक सो तीन १०३ से लेकर एक सो आठ वाद सीझे तो एक समय पीछे अवश्य अंतर पडे; ९७ से लेकर १०२ पर्यंत दो समय निरंतर सीझे; ८५ से लेकर ९६

लगे तीन समय निरंतर सीझे, ७३ से लेकर ८४ लगे चार समय निरंतर सीझे; ६१ से लेकर ७२ लगे ५ समय०, ४९ से लेकर ६० ताइ ६ समय०, ३३ से लेकर ४८ लगे ७ समय०; एक से लेकर ३२ लगे ८ समय०.

गणनद्वार पूर्ववत् जघन्य १।२ यावत् ३२. एवं सर्व जगे जान लेना.

(१८३) क्षेत्रद्वार, अतरद्वार लिख्यते. सांतर

१	जंबूद्वीप धातकी षंडे	पृथक् वर्ष
२	जंबूद्वीपके तथा धातकी षंड विदेहे	,, ,,
३	पुष्करार्द्धीपे १ तथा तिसके विदेहे	१ वर्ष झझेरा
४	कालद्वारे भरत, ऐरावतमे जन्म आश्री	युगलकाल १८ सा नून (?)
५	साहारण आश्री भरत, ऐरावते	संख्याते हजार वर्ष
६	नरकगतिना आया उपदेशथी सीझे तिसका	१००० वर्ष
७	,, ,, हेतुये सीझे	संख्येय सहस्र वर्ष
८	तिर्यंच गतिना आया उपदेशे	पृथक् १०० वर्ष
९	अनंतरोक्त तिर्यंचना हेतुये सीझे तिसका	संख्येय सहस्र वर्ष
१०	तिर्यंच स्त्रीना १, मनुष्यना २, मनुष्यस्त्रीना ३, सौधर्म, ईशान वर्जके सर्व देवता देवीना आया उपदेशे	१ वर्ष झझेरा
११	अनंतरोक्त बोल हेतुये	संख्येय सहस्र वर्ष
१२	पृथ्वी १, अप् २, वनस्पति, गर्भज, पहिली, दूजी नरक, सौधर्म, ईशान देवका आया हेतुये सीझे	संख्येय सहस्र वर्ष
१३	वेदद्वारे पुरुषवेदे	१ वर्ष झझेरा
१४	स्त्री, नपुंसक वेदे	संख्येय सहस्र वर्ष
१५	पुरुष मरी पुरुष हुइ	१ वर्ष झझेरा
१६	शेष ८ भांगे	संख्येय सहस्र वर्ष
१७	तीर्थद्वारे तीर्थंकर	पृथक् ,, ,,
१८	तीर्थंकरी	अनंत काल
१९	अतीर्थंकर	१ वर्ष झझेरा
२०	नोतीर्थसिद्धाका प्रत्येकबुद्धी	संख्येय सहस्र वर्ष
२१	लिंगद्वारे अन्यलिंगे गृहलिंगे	,, ,, ,,
२२	स्वलिंगे	१ वर्ष झझेरा

२३	चारित्रद्वारे सामायिक १, सूक्ष्मसंपराय २, यथाख्यात ३	१ वर्ष झझेरा
२४	सामायिक १, छेदोपस्थापनीय २, सूक्ष्मसंपराय ३, यथाख्यात ४	१८ कोडाकोडी सागर किंचित् ऊणा
२५	सा० १, परिहारविशुद्धि २, सूक्ष्म० ३, यथा० ४	,, ,, ,, ,,
२६	सा० १, छेदो० २, परिहार० ३, सूक्ष्म० ४, यथा० ५	,, ,, ,, ,,
२७	बुद्धद्वारे बुद्धबोधित	१ वर्ष झझेरा
२८	बुद्धबोधित स्त्रियाका १, प्रत्येक बुद्धियाका २	संख्येयसहस्र वर्ष
२९	सयबुद्ध	पृथक् ,, ,,
३०	ज्ञानद्वारे मति १, श्रुत २	पल्यका असंख्य भाग
३१	,, मति १, श्रुत २, अवधि ३	१ वर्ष झझेरा
३२	,, ,, मन पर्याय ३	संख्येय सहस्र वर्ष
३३	,, ,, अवधि ३, मनःपर्याय ४	,, ,, ,,
३४	अवगाहनाद्वारे जघन्य १, उत्कृष्ट २, यवमध्यम ३	श्रेणिके असंख्य भाग
३५	अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना	१ वर्ष झझेरा
३६	उत्कृष्टद्वारे अप्रतिपतित सम्यक्त्व	१ सागरके असंख्य भाग
३७	संख्य, असंख्य कालका पतित	संख्येय सहस्र वर्ष
३८	अनंत कालका पतित	१ वर्ष झझेरा
३९	निरंतरद्वारे	
४०	सांतरद्वारे	संख्येय सहस्र वर्ष

अल्पबहुत्वद्वारे च्यार च्यार सिद्धा अने दस दस सिद्धा परस्पर सर्व तुल्य, तिण थकी वीस सिद्धा अने पृथक् वीस सिद्धा थोडा, तिण थकी एक सो आठ सिद्धा संख्येय गुणा. इति अनंतरसिद्धा प्ररूपणा समाप्ता.

अथ परम्परासिद्धस्वरूप लिख्यते—द्रव्यपरिमाणमे सर्व जगे अढाइ द्वीपमे, अनंते अनंते कहणे अंतर नहना (?), अंतरका असमय हे इस वास्ते.

(१८४)

	नामानि	अल्पबहुत्व		नामानि	अल्पबहुत्व
१	समुद्रसिद्धा	१ स्तोक	१	ऊर्ध्वलोकसिद्धा	१ स्तोक
२	द्वीपसिद्धा	२ संख्येय	२	अधोलोकसिद्धा	२ संख्येय
३	जलसिद्धा	१ स्तोक	३	तिर्यग्लोकसिद्धा	३ ,,
४	स्थलसिद्धा	२ संख्येय			

(१८५)

लवणसमुद्रे सिद्धा	१ स्तोक
कालोदधि ,,	२ स
जंबूद्वीप ,,	३ स

धातकीखंड सिद्धा	४
पुष्करार्धद्वीप ,,	५

(१८६) अथ तीनो द्वीपकी मिलायके अल्पबहुत्वयंत्रम्. ए तीनो यंत्र परंपरा

द्वीपनाम	भरत ऐरावत	हैमवत शिखरी	हैमवत ऐरण्यवत	महाहैमवत रूपी	हरिवास रम्यक	निषध नीलवत	देवकुरु उत्तरकुरु
जंबू	७ स	१ स्तो	२ स	३ स	५ स	६ स	४ स
धातकी	,, ,,	,, ,,	४ वि	२ ,,	६ वि	३ ,,	५ ,,
पुष्करार्ध	,, ,,	,, ,,	,, स	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,

(१८७)

द्वीपनाम	भरत ऐरावत	हैमवत शिखरी	हैमवत ऐरण्यवत	महाहैमवत रूपी	हरिवास रम्यक	निषध नीलवत	देवकुरु उत्तरकुरु
जंबू	१९ स	१ स्तो	२ स	३ स	५ स	६ स	४ स
धातकी	२० ,,	७ वि	१२ ,,	८ वि	१५ ,,	१० ,,	१४ ,,
पुष्करार्ध	२१ ,,	९ स	१६ ,,	११ स	१८ ,,	१३ ,,	१७ ,,

(१८८) अथ आगे कालद्वारे परंपरासिद्धाकी अल्पबहुत्व लिख्यते-

आरे ६	सुषमसुषम	सुषम	सुषमदुःषम	दुःषमसुषम	दुःषम	दु
अवसर्पिणी	५ वि	४ वि	३ असंख्येय	६ संख्येय	२ संख्येय	
उत्सर्पिणी	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	

(१८९) अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी दोनाकी एकठी अल्पबहुत्वयं

आरे ६	सुषमसुषम	सुषम	सुषमदुःषम	दुःषमसुषम	दुःषम	दुःषमदुःषम
अवसर्पिणी	५ वि	८ वि	४ असंख्येय	६ संख्येय	३ संख्येय	१ स्तोक
उत्सर्पिणी	४ ,,	,, ,,	,, ,,	,, ,,	२ ,,	,, ,,

(१९०) गतिद्वारे

गतिसे आया अनंतर अल्पबहुत्व	नरक	तिर्यंच	तिर्यंचिणी	मनुष्य	मनुष्यणी	दे
	३ स	५ स	४ स	२ स	१ स्तोक	७

(१९१)

एकेंद्रियना आया अनंतर	१ स्तो
पचेंद्रियना ,, ,, सर्व जगे	२ स
वनस्पतिना ,, अनंतर	३ ,,
पृथ्वीना ,, ,,	४ ,,
त्रसकायना ,, ,,	५ ,,
चौथी नरकना ,, ,,	१ स्तो
त्रीजी ,, ,, ,,	२ स
द्वितीय ,, ,, ,,	३ ,,
बादर वनस्पति पर्याप्तना आया	४ ,,
,, पृथ्वी ,, ,,	५ ,,
,, अप्काय ,, ,,	६ ,,
भवनपति देवीना आया अनंतर	७ ,,
,, देवताना ,, ,,	८ ,,
व्यंतरीना ,, ,,	९ ,,
व्यंतर देवताना	१० ,,
जोतिषीनी देवीना ,, ,,	११ ,,
जोतिषी देवताना	१२ ,,
मनुष्य स्त्रीना ,, ,,	१३ ,,
मनुष्यना ,, ,,	१४ स
प्रथम नरकना ,, ,,	१५ ,,
तिर्यंच स्त्रीना ,, ,,	१६ ,,
तिर्यंचना ,, ,,	१७ ,,
अनुत्तर विमानना ,, ,,	१८ ,,
ग्रैवेयकना ,, ,,	१९ ,,
अच्युतना ,, ,,	२० ,,
आरणना ,, ,,	२१ ,,
एम अधोमुख सनत्कुमार लगे	२८ ,,
ईशान देवीना आया	२९ ,,
सौधर्म ,, ,,	३० ,,
ईशान देवताना ,,	३१ ,,
सौधर्म देवताना ,,	३२ ,,

वेदद्वारे	अल्पबहुत्व
नपुंसकसिद्धा	१ स्तो
स्त्रीसिद्धा	२ स
पुरुषसिद्धा	३ ,,
तीर्थद्वारे	अल्पबहुत्व
तीर्थंकरी	१ स्तो
तीर्थंकरीतीर्थे प्रत्येकबुद्धी	२ स
,, अतीर्थंकरी	३ ,,
,, अतीर्थंकर	४ ,,
तीर्थंकरसिद्धा	५ ,,
तीर्थंकरतीर्थे प्रत्येकबुद्धा	६ ,,
,, साध्वी	७ ,,
,, अतीर्थंकर	८ ,,
लिंगद्वारे	अल्पबहुत्व
,, गृहलिंगी	१ स्तो
,, अन्यलिंगी	२ अस
,, स्वलिंगी	३ ,,
चारित्रद्वारे	अल्पबहुत्व
छेद०, परि०, सू०, यथा०	१ स्तो
सामा०, छेद०, परि०, सू०, यथा०	२ अस
छेद०, सूक्ष्म०, यथा०	३ ,,
सामा०, छेद०, सू०, यथा०	४ स
सामा०, सूक्ष्म०, यथा०	५ स
बुद्धद्वारे	अल्पबहुत्व
स्वयंबुद्धा	१ स्तो
प्रत्येकबुद्धा	२ स
बुद्धिबोधितसिद्धा	३ ,,
बुद्धबोधितसिद्धा	४ ,,
ज्ञानद्वारे	अल्पबहुत्व
मति, श्रुत, मन पर्याय	१ स्तो
मति, श्रुत	२ स

मति, श्रुत, अवधि, मन पर्याय	३ स
मति, श्रुत, अवधि	४ ,,
अवगाहनाद्वारे	अल्पबहुत्व
द्विहस्त अवगाहना	१ स्तो
पृथक् धनुष अधिक ५०० धनुषवाला	२ अस
मध्यम अवगाहना	३ ,,
अवगाहनाविशेष	अल्पबहुत्व
७ हस्त अवगाहना	१ स्तो
५०० धनुष ,,	२ स
,, सें ऊणी ऊणी	३ ,,

झझेरी ७ हस्त	४ वि
उत्कृष्टद्वारे	अल्पबहुत्व
अप्रतिपतितसिद्धा	१ स्तो
सख्येयकालपतित	२ अस
असख्येयकालपतित	३ स
अनतकालपतित	४ अस
अतरद्वारे	अल्पबहुत्व
६ मास अतरे सिद्धा	१ स्तो
द्वि समय ,, ,,	२ स
त्रि ,, ,, ,,	३ ,,

एव तां लगे कहना जां लगे मध्य तिवारे पीछे सख्येय गुण हीना कहना. जां लगे १ समय हीन ६ मास सिद्धा सख्येय गुण हीना.

(१९२)

अनुसमयद्वारे	अल्पबहुत्व
१०८ सिद्धा	१ स्तो
१०७ ,,	२ स
१०६ ,,	३ स

एव समय समय हानि ता लगइ कहनी जा लगे द्वि समय सिद्धा सख्येय गुणा

गणनद्वारे	अल्पबहुत्व
१०८ सिद्धा	१ स्तो
१०७ ,,	२ अनत
१०६ ,,	३ ,,
१०५ सीझे	४ ,,

एव एकैक हानि ता लगे जा लग ५० सिद्धा अनत गुणा ५

४९ सिद्धा	६ अस
४८ ,,	७ अस

एव २१ लग कहेना

२४ सीझे	८ सं
२३ ,,	९ स

एव एकेक हानि तां लगे कहनी जा लगे द्वि समय

विशेष सिद्धप्राभृतटीकात लिख्यते

अधोमुख सिद्धा	१ स्तो
ऊर्ध्वमुख सिद्धा कायोत्सर्ग	२ स
ऊकडू आसन सिद्धा	३ ,,
वीरासन	४ ,,
युक्तासन ,,	५ ,,
पासेस्थित ,,	६ ,,
उत्तानस्थित ,,	७ ,,
सनिकर्षद्वारे	अल्पबहुत्व
सर्वसे बहोत एकेक सिद्धा	१
दो दो सिद्धा सख्येय गुण हीन	२

एव ता लगे कहना जा लगे २५ सिद्धा सख्येय गुण हीना ३

पचीस पचीस थकी छव्वीस छव्वीस सिद्धा असख्येय गुण हीना ४

एव एकैक वृद्धि असख्येय गुण हीन ता लगे कहना जा लगे ५० सिद्धा. पचास पचास सिद्धाथी ५१ सिद्धा अनत गुण हीन, बावन बावन सिद्धा अनत गुण हीन, एव एकैक हानि ता लगे कहनी जां लगे १०८ आठ आठ सिद्धा अनत गुण हीना

तथा जिहा जिहां वीस वीस सिद्धा तिहा एकैक सिद्ध सर्वसे घणे १, द्वौ द्वौ सिद्धा सख्येय गुण हीन २, एव तां लगे कहना जा लगे पाच पाच सिद्धा.

अथ छ छ सिद्धा असख्येय गुण हीना. एव दश लगे कहना. ग्यारेसे लइ अग्रे अनत गुण हीना.

तथा अधोलोक आदिमे पृथक्त्व वीस सिद्धा. तिहां पहिले चौथे भागमे सख्येय गुण हीना, दूजे चौथे भागमे असख्येय गुण हीना, तीजे चौथे भागसें लेकर आगे सर्वत्र अनत गुण हीना. तथा जिहा हरिवर्ष आदिमे दश दश सिद्धा तिहा तीन लगे तो सख्येय गुण हीन, चौथे पांचमे असख्येय गुण हीन, ६ से लेकर सर्वत्र अनत गुण हीना.

जिहां पुनः अवगाहना यवमध्य ते अनुत्कृष्टी आठ तिहा चार लगे सख्येय गुण हानि तिस ते परे अनत गुण हानि.

जिहां वली ऊर्ध्वलोक आदिमे चार सीझे एकैक सिद्धा सबसे बहुत, दो दो सिद्धा असख्येय गुण हीना, तीन तीन सिद्धा अनत गुण हीना, चार चार सिद्धा अनत गुण हीना.

जिहा लवण आदिकमे दो दो सिद्धा तिहा एकैक सिद्धा बहुत, दो दो सिद्धा अनत गुण हीना. इति सन्निकर्ष द्वार सपूर्ण. शेष द्वार सिद्धप्राभृत टीकासे जानने. श्री ६ परमपूज्य महाराज आचार्य श्रीमलयगिरिकृत श्रीनदीजीकी वृत्तिथी ए सरूप लिख्या.

इति नवतत्त्वसकलनाया मोक्षतत्त्व नवम सम्पूर्णम्

अथ ग्रथसमाप्ति सवईया इक्तीसा—

आदि अरिहत वीर पचम गणेस धीर भद्रबाहु गुर फी(फि) सुद्ध ग्यान दायके
जिनभद्र हरिभद्र हेमचद देव इद अभय आनद चद चदरिसी गायके
मलयगिरि श्रीसाम विमल विग्यान धाम ओर ही अनेक साम रिदे बीच धायके
जीवन आनद करो सुध(ख)के भडार भरो आतम आनद लिखी चित्त हुलसायके १
वीर विभु बैन ऐन सत परगास दैन पठत दिवस रैन सम रस पीजीयो
मै तो मूढ रिदे शुद्ध ग्यान विन महाकूढ कथन करत रूढ मोपे मत खीजीयो
जैसे जिनराज गुरु कथन करत धुर तैसे ग्रथ सुद्ध करु मोपे मत धीजीयो
मै तो बालख्यालवत् चित्तकी उमग करी हमके सुभाव ग्या(ज्ञा)ता गुण ग्रह लीजीयो २
ग्राम तो 'वि(नि)नोली' नाम लाला चिरजी व स्याम भगत सुभाव चित्त धरम सुहायो है

१ जीवनराम ए ग्रथकर्त्ताना स्थानकवासी गुरुनु नाम छे।

२-३ लाला चिरजीलाल अने लाला श्यामलाल ए बने श्रावको भक्त अने समजदार हता

गुपसे चोमास करी ग्यानकी लगन परी तिनकी कहन करी ग्यानरूप ठायो है
भव्य जन पठन करत मन हरषत ग्यानकी तरग देत चित्तमे सुहायो है
संवत तो मुनि करे 'अंक 'इंदु 'सप धर कातिक सुमास वर तीज बुध आयो है २

दोहा—ग्यान कला घटमे वसि, रसेगु निज गुण माहि
परचे आतमरामसे, अचल अमरपुरि जाहि १
संघ चतुर्विध वांचिउ, ग्यानकला घट चग
गुरुजन केरे मुख थकी, लहिमो तत्त्वतरग २

इति श्रीआत्मारामकृत नवतत्त्वसंग्रह संपूर्ण. लिपीचक्रे 'वि(वि)नोली' मध्ये.
शुभ भवतु. वाच्यमान चिर नन्द्यात्. श्रीरस्तु.



श्रीविजयानन्दसूरीश्वरकृत
॥ उपदेशबावनी ॥
(सवैया एकतीसा)

श्रीपार्श्वनाथाय नमो नमः ॥

ॐ नीन पच मीत समर समर चीत अजर अमर हीत नीत चीत धरीए
सूरि उज्झा मुनि पुज्जा जानत अरथ गुज्झा मनमथ मथन कथनसु न ठरीए
धार आठ पटतीस पणवीस सातवीस सत आठ गुण ईस माल बीच करीए
एसो विभु ॐकार बावन वरण सार आतम आधार पार तार मोक्ष वरीए १

अथ देवस्तुति —

नथन करन पन हनन करमघन धरत अनघ मन मथन मदनको
अजर अमर अज अलख अमल जस अचल परम पद धरत सदनको
समर अमर वर गनधर नगवर शकन कथन कर भरम कदनको
सरन परत तभ(स) नमत अनघ जस अतम परम पद रमन ददनको २
नमो नीत देव देव आतम अमर सेव इद चद तार वृंद सेवे कर जोरके
पाच अतराय मीत रति ने अरति जीत हास शोक काम वीत(धीन?) मिथ्यागिरि तोरके
निंद ने अत्याग राग द्वेष ने अज्ञान याग अष्टादश दोष इन निन गुण फोरके
रूप नान मोक्ष जश वध ने वैराग सिरी इच्छा धर्म वीरज जतन ईश घोरके ३

अथ गुरुस्तुति —

मगन भजन मग धरम सदन जग ठरत मदन अग भग तज सरके
कटत करम वन हरत भरम जन भवबन सघन हटत सन जरके
नमत अमरवर परत सरन तस करत सरन भर अघ मग टरके
धरत अमल मन भरत अचर धन करत अतम जन पग लग परके ४
महामुनि पूर गुनी निज गुन लेत चुनी मार धार मार धुनि धुनी सुरा सेजको
ज्ञान ते निहार छार दाम धाम नार पार सातवीस गुण धार तारक से हजको
पुगल भरम छोर नाता ताता जोर तोर आतम धरम जोर भयो महातेजको
जग भ्रमजाल मान ज्ञान ध्यान तार दान सचाके सरूप आन मोक्षमे रहेन(ज)को ५

अथ धर्मस्वरूपमाह—

सिद्धमत स्यादवाद कथन करत आद भगके तरंग साद सात रूप भये है
अनेकत माने संत कथचित रूप ठत मिथ्यामत सब हत तत्त्व चीन लये है

नित्यानित्य एकानेक सासतीन वीतारेक भेद ने अभेद टेक भयाभव्य ठये है
शुद्धाशुद्ध चेतन अचेतन मूरती रूप रुपातीत उपचार परमकु ल्ये हे ६
सिद्ध मान ज्ञान शेप एकानेक परदेश द्रव्य खेत काल भाव तत्त्व नीरनीत है
नय सात सत सात भगके तरग थात व्यय ध्रुव उतपात नाना रूप कीत है
रसकुप घेरे रस लोहको कनक जेसे तैसे स्यादवाद करी तत्त्वनकी रीत है
मिथ्यामत नाश करे आतम अनघ धरे सिद्ध वधु वेग वरे परम पुनीत है ७
धरती भगत हीत जानत अगीत जीत मानत आनद चित भेदको दरसती
आगम अनुप भूप ठानत अनत रूप मिथ्या भ्रम मेटनकु परम फरसती
जिन मुख वैन ऐन तत्त्वज्ञान कामधेन कवि मति सुधि देन मेघ ज्यु वरसती
गणनाथ चिन(त) भाइ आतम उमग धाइ सतकी सहाइ माइ सेवीए सरसती ८
अधिक रसाले झीले सुखमे उमग कीले आतमसरूप ढीले रातन जीहानमे
कमलवदन दीत सुदर रदल(न) सात कनक वरन नीत मोहे मदपानमे
रग वदरग लाल मुगता कनकजाल पाग धरी भाल लाल राचे ताल तानमें
छीनक तमासा करी सुपनेसी रीत धरी ऐसे वीर राय जैसे बादर विहानमें ९
आलम अजान मान जान सुख दु ख खान रान सुलतान रान अनकाल रोये
रतन जरत ठान राजत दमक भान करत अधिक मान अत खाख होये है
केसुकी कलीसी देह छीनक भगुर जेह तीनहीको नेह एह दु खबाज बाये है
रखा धन धान जोर आतम अहित भोर करम कठन जोर छारनमे सोये है १०
इत उत डोले नीत छोरत विवेक रीत समर समर चित नीत ही धरतु(त) है
रग राग लाग मोहे करत कूकर धोहे रामा धन मन टोहे चितमे अचेतु(त) है
आतम उधार ठाम समर न नेमि नाम काम दगे(हे) आठ जाम भयो मदप्रेतु(त) है
तनके धरम ठाम परके नरक धाम जरे नाना दु ख भरे नाम कौन लेतु(त) है ११
ईस जिन भजी नाथ हिरदे कमलपाथ नाम वार सुधारस पीके महमहेगो
दयावान जगहीत सतगुरु सुर नीत चरणकमल मीत सेव सुख लहेगो
आतमसरूप धार मायाभ्रम जार छार करम वी(वि)डार डार सदा जीन रहेगो
दी(दे)ह खेह अत भइ नरक निगोद लइ प्यार मात पुन कर फर कौन कहेगो १२
उदे भयो पुन पूर नरदेह शुरी नूर वाजत आनदतूर मगल कहाये है
भववन सघन दगध कर अगन ज्यु सिद्धवधु लगन सुनत मन भाये है
सरध्या(धा)न मूल मान आतम सुज्ञान जान जनम मरण दु ख दूर भग जाये है
सजम खडग धार करम भरम फार नहि तार विपे पिछे हाथ पसताये है १३
ऊच नीच रक कक कीट ने पतग ढक ढोर मोर नानाविध रूपको धरतु है
अगधार गनाकार वान बानी नराकार पृथ्वी तेज वात वार रचना रचतु है

आतम अनत रूप सत्ता भूप रोग धूप वडे (परे¹) जग अध कूप भरम भरतु है
सत्ताको सरूप भुल करनहींडोरे जुल कुमताके वश जीआ नाटक करतु है १४
रिधी सिद्धि ऐसे जरी खोदके पतार धरी करथी न दान करी हरि हर लहेगो
रसना रसक छोर वसन ज(अं)सन दोर अतकाल छोर कोर ताप दिल दहेगो
हिंसा कर मृषा धर छोर घोर काम पर छोर जोर कर पाप तेह साथ रहेगो
जौलो मित आत(दे) पान तौलो कर कर दान वसेहु मसान फेर कोन देद(दे) करेगो १५
रीत विपरीत करी जरता सरूप धरी करतो बुराइ लाइ ठाने मद मानकु
द्युत धुत (झूठ) मस खात सुरापान जीवघात चोरी गोरी परजोरी वेश्यागीन गानकु
सत कर तुत उत जाने न धरमसूत माने न सरम मूत छोर अमेदानकु
मुत ने पुरीम खात गरभ परत जात नरक निगोद वसे तजके जहानकु १६
लिखन पठन दीन शीखत अनेक गिन क(को)उ नहि तात(³तत्त)चिन छीनकमे छिजे है
उत्तम उतग संग छोरके विविध रंग रमा दमा भोग लाग निश दिस भींने है
काल तो अनत बली सुर वीर धीर दली ऐसे भी चलत ज्यु सींचान चिट लीजे है
छोरके धरम द्वार आतम विचार डार छारनमे भइ छार फेर कहा किने है १७
लीलाधारी नरनारी खेभग जोगकु वारि ज्ञानकी लगन हारि करे राग ठमको
योवन पतग रंग छीनकमे होत भग सजन सनेहि सग विजकेसा चमको
पापको उपाय पाय अध पुर सुर थाय परपरा तेहे घाय चेरो भये जमको
अरे मूढ चेतन अचेतन तु कहा भयो आतम सुधार तु भरोसो कहा दमको¹ १८
एक नेक रीत कर तोष धर दोष हर कुफर गुमर हर कर संग ज्ञानीको
खति निरलोभ भज सरल कोमल रज मत धार मा(मा)र तज तज सग मानीको
तप त्याग दान जाग शील मित पीत लाग आतम सोहाग माग माग सुख दानीको
देह खेह रूप एत(ते) सदा मीत थिर नही अत हि विलाय जैसे बुदबुद पानीको १९
ऐरावत नाथ इद चदन अनुप चद रमा आद नारद्द तु(धु³)जे द्रग जोयके
खट षड राजमान तेज भरे वर भान भामनिके रूप रग दीसे सेन सोयके
हलधर गदाधर धराधर नरवर खानपान गानतान लाग पाप वोयके
आतम उधार तज चीनक इशक भज अत वेर हाय ⁴टेर गये सन रोयके २०
⁵ओडक वरस शत आयु मान मान सत सोनत विहात आध लेतहे विभावरी
तत वाल खेल ख्याल अरध हरत प्रौढ आध व्याध रोग सोग सेव कांता भावरी
उदग तरग रग योवन अनग सग सुखकी लगन लगे भई मित(मति) बावरी
मोह कोह दोह लोह अटक पटक खोह आतम अजान मान फेर कहा दावरी¹ २१

---

१ आनद। २ धर्मसूत्र। ३ तत्त्वज्ञाता। ४ आवाज। ५ आखर।

औषध अनेक जरि मत्र ता रास करी होत न बचाव घरि एक कहु मानको
सार मार करी छार रूप रस धरे परे यम निशदिन खरे हरे मानी मानको
बाल लाल माल नाल थाल पाल भाल साल ढाल जाल डाल चले छोर थानको
आतम अनर कार सिंचत अमृत धार अमर अमर नाम लेत भगवानको २२
अध ज्ञान द्रगरित मानत अहित विन ग(गि)नत अधम रीत रूप निज हार रे
अरव अनत अश ज्ञान विन तेरो हस केवत अखड वस बाके कर्म भार रे
चुरा नुरा लुरा सुरा श्यामा श्वेत रूप भूरा अमर नरक सुरा नर है न नार रे
सत चित निराबाध रूप रंग विना लाध पूरण अखड भाग आतम संभार रे २३
अधिक अज्ञान करी पामर स्वरूप धरी मागे भीख घरि घरि नाना दु ख लहीये
गरे घरि रिध खरि करमत बिन जरी मुल विन ज्ञान दिन हीन रहीये
गुरु विमु वेन ऐन सुनत परव चेन करत जतन जैन फेन सब दहिये
करमकलक नासे आतम विमल भासे खोल द्रग देख लाल लोपे सर्व(ब) कहिये २४
काची काया मायाके भरोसो भमीयो तु बहु नाना दु ख पाया काया जात तोड छोरके
सास खास सुल हुल नीर भरे पेट फुल कोढ मोढ राज खाज जुरा तुर छोरके
मुरछा भरम रोग सदल डहल सोग सुत ने पुरीस रोक होक सहे जोरके
इत्यादि अनेक खरी काया संग पीड परी सुदर मसान जरी परी प्यार तोरके २५
खेती करे चिदानद अघ बीज बोत वृद रसहे शींगार आद लाठी रूप लह हे
राग द्वेष तुव धोर कसाय बल्द जोर शिरधी मिथ्यात भोर गर्द्मी लगइ हे
तो होय प्रमाद आयु चक्रकार फार घटी लायु शिर मति भ्रष्ट हारा कर खइ हे
नाना अवतार करार चिदानद वार धार इत उत भेरकार आतमकु दइ हे २६
गेरके विभाव दूर असि चार लाख नूर एहि द्रव्य वजन मजाय नाम ल्यो हे
मति आदि ज्ञान चार व्यजन विभाव गुन परजाय नाम सुन शुद्ध ज्ञान ट्यों हे
चरम शरीर पुन आतम किंचित न्यून व्यजन सुभाव द्रव्य परजाय धर्यो हे
चार हि अनत फुन व्यजन सुभाव गुन शुद्ध परजाय थाय धाय मोक्ष वर्यो हे २७
घरि घरि आउ घटे घरि काल मान घटे रूप रंग तान हटे मूढ कैसें सोइये ?
जीया तु तो जाने मेरो मात तात सुत चेरो तामे कौन प्यारो तेरो पान कि गोइये
चाहत करण सुख पावत अनत दु ख धरम विमुख रूख फेर चित रोइये
आतम विचार कर करतो धरम वर जनम पदारथ अकारथ न खोइये २८
नरको जनम वार वार न विचार कर रिदे शुद्ध ज्ञान धर परहर कामको
पदम वदन घन पद मन अठ भन कनक वरन तन मनमथ वामको
हरि हर ब्रम(ब्रह्म)वर अमर सरब भर मन मद पर छर धरे चित भामको
डील फिर चरे अबु जारके मदनवबु निरारंग अगकबु आतम आरामको २९

छरद करत फीर चाटत अनत रीत जानत ना हित कित श्वानदशा धरके
क्षुरी कुरी कुम्व परे नाना रूप धीर परे जात ही अगन जरे मरे दु ख करके
कुगुरु कुदेव सेव जानत न तत्त्व भेव मान अहमेव मूढ कहे हम टरके
मिथ्यामति आतमसरूप न पिछाने ताते डोलत जजारमें अनत काल भ(म)रके ३०
जोर नार गरभसें मद (मोह) लोभ असे राग रग जग लसें रसक जीहान रे
मनकी तरग फसे मान सनमान हसे खान पान घरमसें आतम अज्ञान रे
सिद्धि रिद्धि चित लावे पुतने विमुत भावे पुगलकु भोर धावे परो दु खखान रे
करमको चेरो हुवो आस वाघ पुर मुवो फेर मूढ कहेवे हम हुवो ब्रम(ब्रह्म) ज्ञान रे ३१
जननी रोआई जेति जामा(म) जनम धार आसुनसे पारावार भरीए महान रे
आतम अज्ञान भरी चाटत छरद करी मनमे न धी(धी॰)न परि मरे गद खान रे
तिशना तिहोरी यारी छोरत न एक घरी ममे जग जाल लाल भुले निज थान रे
अध मति मद भयो तप त्याग छोर दयो फेर मूढ कहे हम हुवो ब्रह्मज्ञान रे ३२
जलके विमल गुण दलके करम फुन हलके अटल धुन अघ जोर कसीए
टलके सुधार धार गलके मलिन भार छलके न पुरतान मोक्ष नार रसीए
चलके सुज्ञान मग छलके समर ठग मलके मरम जगजालमें न फसीए
थलके वसन हार खलके लगन टार टलके कनक नार आतम दरसीए ३३
टहके सुमन जेम महके सुवास तेम जहके रतन हेम ममताकु मारी हे
दहके मदनवन करके नगन तन गहके केवलधन आस वा(ना॰)स डारी हे
फहके सुध्यानभान लहके अमर थान गहके अखर तान आतम उजारी हे
चहके उधार दीन राजमति पारकीन ऐसे संत ईश प्रभु (बाल)ब्रह्मचारी हे ३४
ठोर ठोर ठानत विवाद पखपात मूढ जानत न मूर चूर सत मत वातकी
कनक तरग करी श्वेत पीत मान परि स्यादवाद हान करी निज गुण घातकी
पर्यो ब्रह्मजाल गरे मिथ्यामत रीझ धरे रहत मगन मूढ क्षुरी भरे स्वातकी
आतमसरूपघाती मिथ्यामतरूपकाति ऐसो ब्रह्मघाति है मिथ्याति महापातकी ३५
डर नर पाप करी देत गुरु शिख खरी मान ले ए हित धरी जनम विहातु है
जोवन न नित रहे वाग गुल जाल महे आतम आद चहे रामा गीत गातु है
बके परनिंदा जेति तके पर रामा तेती थके पुन्य सेती फेर मूढ मुसकातु है
अरे नर धोरे तोकु कहु रे सचेत होरे पिंजरेकु तोरे देख परसी उड जातु है ३६
दोरवत रीत धरी खान पान तान करी पुरन उदर च(भ)री भार नित वह्यो है
पीत अनगल नीर करत न पर पीर रहत अधीर कहा शोध नही लह्यो है
वाल विन पल तोल भक्षाभक्ष खात घोल हरत करत होल पाप राच रह्यो है
सींग पुछ दाढी मुछ घात न विशेष कछु(कुछ) आतम निहार अछु(उछ) ढोग रूप कह्यो है ३७

नीके मधु पीके टीके शीखद सुगड लीके करत कलोल जीके नागबेर चाख रे
अतर कपूर पूर अव(ग)र तगर गूर मृगमद घनसार भरे धरे सात(ख) रे
सेव आरू आब दारु पीसता बदाम चारु आतम चगेरा पेरा चखत सुदाख रे
मृदु तन नार फास सजक(कि) जजीर पास पकरी नरकवास अत भई खाख रे ३८
तर खग वास बसे रात भए कसमसे सूर उगे जात दसे दूर करी चीलना
प्यारे तारे सारे चारे ऐसी रीत जात न्यारे कोउ न समारे फर मोह कहा कीलना
जैसे हटवाले मोल मीलके बीछर जात तैसे जग आतम सजोग मान दीलना
कौन वीर मीत तेरो जाको तु करत हेरो रयेन बस(से)रो तेरो फेर नहि मीलना ३९
थोरे सुख काज मूढ हारत अमर राज करत अकाज जाने लेयु जग लुटके
कुटबके काज करे आतम अकाज खरे रुठी जोरी चोर हरे मरे शीर फुटके
करग सनेह जोर ममता मगन भोर प्यारे चले छोर जोर रोवे शीर कुटके
नरको जनम पाय वीरथा गमाय ताइ भूले सुख राह छले रीते हाथ उठके ४०
देवता प्रयास करे नर भव कुल खरे सम्यक श्रद्धान धरे तन सुखकार रे
करण अखड पाय दीरघ सुहात आय सुगुरु सजोग थाय वाणी सुधा धार रे
तत्त्व परतीत लाय सजम रतन पाय आतमसरूप धाय धीरज अपार रे
करत सुधार लाल छोर जग भ्रमजाल मान मीत जित काल वृथा मत हार रे ४१
धरत सरूप खरे अधर प्रवाल जरे सुदर कपुर खरे रदन सोहान रे
इदुवत वदन ज्यु रतिपति मदन ज्यु भये सुख भगन ज्यु प्रगट अज्ञान रे
पीक धुन साद करे धाम दाम भुर भरे कामनीके काम जरे परे खान पान रे
करता तु मान काहा(ह) आतम सुधार राह नहि भारे मान छोरे सोवना मसान रे ४२
नरवर हरि हर चक्रपति हलधर काम हनुमान वर भानतेज लसे है
जगत उद्धार कार सघनाथ गणधार कुरन पुमान सार तेउ कालु ग्रसे है
हरिचद मुज राम पाडुसुत शीनगाम नल ठाम छर धाम नाना दु ख फसे है
देढ दिन तेरी वानी करतो निदान राजी आतम सुधार शिर काल खरो हसे है ४३
परके भरम भोर करके करम घोर गरके नरक जोर भरके भरदमे
धरके कुटब पूर जरके आतम नूर हरके लगन भूर परके दरदमें
सरके कुटब दूर जरके परे हजूर मरके वसन मूर खरके खलदमे
भरके महान मद धरके निव न हद धरके पुरान रद मीलके गरदमे ४४
फटके सुजान सग मटके मदन अग भटके जगत फग कटके करदमें
रटके तो नार नाम खटके कनक दाम गटके अभक्षचाम भटके विहदमें
हटके धरम नाल डटके भरमजाल छटके कगाल लाल रटके दरदम
झटके करत मान लटके नरक थान खटके व्यसन मिर(ल) आतम गरदमे ४५
द्वा(बा)रामती नाथ निके सकल जगत टीके हलधर भ्रात जीके सेवे बहु रान हे
हाटक प्रकार करी रतन कोशीश जरी शोभत अमरपुरी स(सा)जन महान रे

पुन ही(बी ?)ते हाथ रीते सपत विपत लीते हाय साद रोद कीते जयों निन नाय(थान ?) रे
सोग भरे छोर चरे वनमे विलाप करे आतम सीयानो काको करता गुमान रे ४६
भूल परी मीत तोय निज गुन सब खोय कीट ने पतंग होय अप्पा वीसरतु है
हीन दीन डीन चास दास वास खीन त्रास काश पास दु ख भीन ज्ञानते गीरतु है
दु ख भरे झूर मरे आपदाकी खान गरे नाना सुत मित करे फिर विसरतु है
आतम अखंड भूप करतो अनंत रूप तीन लोक नाथ होके दीन क्यु फीरतु है ? ४७
महाजोधा कर्म सोधा सत्ताको सरूप बोधा ठारत अगन क्रोधा जडमति धोया हु
अजर अमर सिद्ध पुरन अखंड रिद्ध तेरे विन कौन दीप सब जग जोया हु
तुससें तु न्यारो भयो चार गति वास थयो दु ख कहु(?) अनंत रयो आतम वीगोया हु
करता भरमजाल फस्यो हु बीहाल हाल तेरे विन मित मैं अनंत काल रोया हु ४८
यम आठ कुमतासें प्रीत करी नाथ मेरे हरे सब गुन तेरे सत बात बोलु हु
महादुखकारी प्यारी नारी न्यारी छारी धारी मोह नृप दारी कारी दोष भरे ढोरु हु
हित करु चित धरु सुखके भंडार भरु सम्यक सरूप धरु कर्म छार छोरु हु
आतम पीयार कर कता(कुमत ?) भरम हट तेरे विन नाथ हु अनाथ भई डोलु हु ४९
रह्यो हु अनादि काल जगमें बीहाल हाल काट गत चार जाल ढार मोहकीरको
नर भव नीठ पायो दुषम अधेर छायो जग छोर धर्म धायो गायो नाम वीरको
कुगुरु कुसंग नो(तो)र सत मत जोर दोर मिथ्यामति करे सोर कौन देवे धीरको ?
आतम गरीब खरो अब न विसारो धरो तेरे विन नाथ कौन जाने मेरी पीरको ५० ?
रोग सोग दु ख परे मानसी वीथाकु धरे मान सनमान करे हु करे जजीरको
मदमति भूप(त) रूप कुगुर नरक कूत संग करे होत भग काची (काजी ?) संग छिरको
चचल विहग मन दोरत अनत(ग ?) वन वरी शरि हाथ कौन पुछे कृग नीरको
आतम गरीब खरो स(अ)ब न विसारो धरो तेरे वीन नाथ कौन मेटे मेरी पीरको ? ५१
लोक थोक जाने मीत आतम अनंत मीत पुरन अखंड नीत अव्याबाध भूपको
चेतन सुभाव धरे जडतासो दूर परे अजर अमर खरे छांडत विरूपको
नरनारी ब्रह्मचारी श्वेत श्याम रूपधारी करता करम कारी छाया नहि धूपको
अमर अकंप धाम अविकार बुध नाम कृपा भई तोरी नाथ जान्यो निज रूपको ५२
वार वार कहु तोय सावधान कोन होय मिता नहि तेरो कोय उंधी मति छई है
नारी प्यारी जान धारी फिरत जगत भारी दुद्ध बुद्ध लेत सारी लूटवेको ठई है
संग करो दु ख भरो मानसी अगन जरो पापको भंडार भरो सुधीमति गई है
आतम अज्ञान धारी नाचे नाना संग धारी चेतनाके नायकु अचेतना क्या भई है ? ५३
शीत सहे ताप दहे नगन शरीर रहे घर छोर वन रहे तज्यो धन थोक है
वेद ने पुराण परे तत्त्वमसि तान धरे तर्क ने मीमासा भरे करे कंठ शोक है
क्षणमति ब्रह्मपति संख ने कणाद गति चारवाक न्यायपति ज्ञान विनु फोक है
रंगबी(व)हीरंग अङ्गु मोक्षके न अग कछु आतम सम्यक निज जान्यो सब फोक है ५४

घट पीर सात डार आठ छार पाच जार चार मार तीन फार टार तेरी फेरे है
तीन दह तीन गह पाच कह पाच लह पाच गह पाच बह पाच दूर करे है
नव पार नव धार तेरकु विडार डार दशकु निहार पार आठ सात टरे है
आतम सुज्ञान जान करतो अमर थान हरके तिमिर मान ज्ञानभान चरे है ५५
शीतल सरूप धरे राग द्वेष वास जरे मनकी तरंग हरे दोषनकी हान रे
सुदर कपाल उच कनक वरण कुच अधर अनग रुच पीक धुन गान रे
षोडश सिंगार करे जोबनके मद भरे देखके नमन चरे जरे कामरान रे
ऐसी जिन रीत मित आतम अनग जित काको मूढ वेद चीत ऐही ब्रह्मज्ञान रे ५६
हिरदेमे सुन भयो सुधता विसर गयो तिमिरअज्ञान छयो भयो महादु खीयो
निज गुण सुज नाहि सत मत बुज नाहि भरम अरुझे ताहि परगुण रुखीयो
ताप करवेको सुर धरम न जाने मूर समर कसाय वह्नि अरणमे धुखीयो
आतम अज्ञान वश करतो अनेक छल धार अधमल भयो मूढनमे मुखीयो ५७
लचन महान अग सुदर कनक रंग सदन वदन चग चादसा उजासा है
रसक रसील द्र(द)ग देख माने हार मृग शोभत मादार शृग आतम बरासा है
सनतकुमार तन नाकनाथ गुण मन दव आय दरशन कर मन आसा है
छिनमे बिगर गयो क्या हे मूढ मान गयो पानीमें पतासा तेसा तनका तमासा है ५८
क्षीण भयो अग तोउ मूढ काम धन जोउ की(क)डा करे गुरु कोउ पापमति साजी है
खे(खे)लने शीयान चाट माने सुख केरो थाट आनन उचाट मूढ ऐसी मति चाजी है
मूत ने पुरिश परि महादुरगध भरी ऐसी जोनी वास करी फेर चहे पाजी है
करतो अनित रीत आतम कहत मित गदकीको कीरो भयो गदकीमें राजी है ५९
ज्ञाता धाता मोक्षदाता करता अनत साता वीर धीर गुण गाता तारो अब चेरेको
तु ज (तुम) हे महान मुनि नायनके नाथ गुणी सेवु निसदिन पुनी जानो नाथ देरेको
जैसो रूप आप धरो तैसो मुज दान करो अतर न कुछ करो फेर मोह चेरेको
आतम सरण पर्यो करतो अरज खरो तेरे विन नाथ कोन मेटे भव फेरेको १ ६०
ज्ञान मान का(क)डा मोरे खान पान ता(दा)रा जोरे मन हु विहग दोरे करे नाहि थीरता
मुजसो कठोर घोर निज गुण चोर मोर डारे ब्रह्म डोर जोर फीरु जग फीरता
अब तो ठी(ठि)काने चर्यो चरण सरण पर्यो नाथ शिर हाथ धर्यो अध जाय खीरता
आतम गरीब साथ जैसी कृपा करी नाथ पीछे जो पकरो हाथ काको जग फीरता ६१
खी(खि?)लीवार ब्रह्मचारी धरमरतन धारी जीवन आनदकारी गुरु शोभा पावनी
तिनकी कृपा ज करी तत्त्व मत जान परि कुगुरु कुसंग टरी सुद्ध मति धावनी
पढतो आनद करे सुनतो विराग धरे करतो मुगत वरे आतम सोहावनी
संवत सो मुनि कर निधि इदु सख धर तत चीन नाम कीन उपदेशबावनी ६२
करता हरता आतमा, धरता निरमल ज्ञान, वरता भरता मोक्षको, करता अमृत पान. १

ग्राहकोनी शुभ नामावली

२५१ श्रीविजयदेवसूर संघनी पेढी
१०० श्रीसंघ पुना (उपधाननी उपजमांथी) ह. संघवी केशवलाल मणिलाल
५१ रा. मोतीलाल मूलजी
५१ ,, रायचंद मोतीचंद झवेरी
२५ अ. सौ. स्व. मंगलाना स्मरणार्थे ह. वाडीलाल चत्रभूज
२५ रा. नरोत्तम खेतसी
२५ ,, हीरालाल बकोरदास ह. कांतिलाल
२५ , सकराभाइ ल्लुभाइ
२० ,, कोठारी सुरजमल पुनमचंद
१५ श्री जैन आत्मानंद सभा (भावनगर)
१५ रा. लालचंद खुशालचंद
१३ ,, पोपटलाल उत्तमचंद
११ ,, उत्तमचंद मानचंद
११ ,, जीवणचंद केसरीचंद (राधनपुर)
११ ,, बाबु जीवणलाल पनालाल जे. पी. / भगवानलाल ,, / मोहनलाल ,,
११ ,, भोगीलाल लहेरचंद
१० ,, नगीनचंद कपुरचंद
५ ,, ककलभाई भूधरभाइ वकील
५ ,, कान्तिलाल इश्वरलाल मोरखीआ
५ ,, गोदडजी छोगाजी
५ ,, गोविंदजी मारमल
५ ,, चिमनलाल धीरचंद
५ ,, चुनीलाल उत्तमचंद
५ ,, चुनीलाल गुलाबचंद
५ ,, चुनीलाल वीरचंद
५ ,, चदुलाल वछराज
५ ,, जेठाभाई कशलचंद
५ ,, त्रिकमलाल न्यालचंद
५ ,, त्रिकमलाल मगनलाल वीरवाडीया
५ ,, दोशी कालीदास सांकलचंद
५ ,, नगीनदास लल्लुभाई झवेरी
५ ,, नेमचंद अमरचंद
५ ,, प्रागजी धरमसी
५ रा. बापुलाल चुनीलाल
५ ,, बाबु दोलतचंदजी अमीचंदजी
५ ,, मोहनलाल हेमचंद झवेरी
५ ,, वाडीलाल पुनमचंद
५ ,, वाघमल खीमराज सादडीवाला
५ श्री जैन धर्म प्रसारक सभा
५ रा. हरगोविंददास हरजीवनदास
५ ,, हरीलाल पानाचंद
४ ,, रायचंद रूजमचंद
३ ,, नवाब साराभाई मणिलाल
३ ,, पानाचंद प्रेमचंद जामनगरवाला
३ ,, मूलचंद हीराचंद जामनगरवाला
२ ,, अमृतलाल रायचंद झवेरी
२ ,, केरीमजी मोनजी
२ ,, केशवलाल नरपतलाल
२ ,, खीमचंद तलकचंद
२ ,, गोविंदजी खुशाल
२ ,, चांपसीभाई वसनजी पानाणी
२ ,, चीमनलाल मणिलालनी कपनी
२ ,, चुनीलाल ऊजमचंद
२ ,, जीवतलाल चत्रभाण कोठारी
२ ,, जीवनचंद धरमचंद
२ ,, डीसा कॅम्प श्रीसंघ
२ दक्षिणविहारी मुनिराज श्रीअमरविजयजी
२ देवेन्द्रविजय (यति)
२ रा. दोशी हीरालाल पुरुषोत्तम
२ ,, नागरदास हकमचंद
२ ,, पेराज मनाजी
२ ,, प्रेमजी नागरदास
२ ,, प्रेमराज महेता
२ ,, मगुभाई हीराभाई
२ भातबजारना श्रीआदीश्वरजीना देहेरासरनी पेढी
२ रा. भोगीलाल प्रेमचंद
२ ,, मगनभाई नगीनभाई
२ , मणिलाल त्रिकम मरचंद
२ ,, माणेकलाल न्यालचंद
२ ,, मोतीलाल मानचंद
२ ,, मगनदास मोतीचंद महुवावाला
२ राजपुर (डीसा) श्रीसंघ

२ रा रीखबचद ऊजमचद पालनपुरवाला
२ ,, रहुभाइ करमचद
२ ,, लाला संतराम भगतराम
२ ,, बनमालीदास रामजी
२ ,, वाडीलाल मगनलाल
२ श्रीकुसुमविजयजी जैन श्वेतांबर पुस्तकालय
२ रा साकरचद हेमचद
२ श्री प्रवचन पूजक सभा (मुंबई)
१ रा अमीचद खेमचद
१ , अमीचद मथुतमल
१ ,, अमृतलाल पुनमचद
१ ,, उमरीबाई धर्मपत्नी लाला सुदरमल
१ ,, कीर्तिलाल हीरालाल भणशाली
१ ,, कीसनचद पुजाशा
१ ,, कुकुचद जेचद
१ ,, केशरीचद चोकमल
१ ,, केशरीचद पुनमचद
१ केशरबेन मोहनलाल पाटणवाला
१ ,, केशवजी नारण
१ ,, केशवलाल बालाराम
१ ,, केशवलाल दलसुखभाइ
१ ,, केतुराम तेजमाल
१ ,, कोठारी सरदारमल जेठाजी
१ ,, खेमचद छोटालाल पाटणवाला
१ ,, गन्कावाईओ तरफथी
१ ,, गिरधरलाल हरजीवन
१ ,, गुलाबचद गगाराम
१ ,, गुलाबचद तीलोकचद
१ , चिमनलाल म्यालचद
१ ,, चिमनलाल नगीनदास
१ ,, चदुलाल सरूपचद
१ ,, चदुलाल साराभाई मोदी बी ए.
१ ,, चंदनदेइ धर्मपत्नी लाला गोकुलचद
१ ,, चनालाल पोपटलाल
१ ,, चुनीलाल खेतसी धानेरावाला
१ ,, छगनलाल मगनलाल
१ ,, छोटालाल छगनलाल काजी
१ ,, छोटालाल लहेरचद
१ ,, छोटुभाई ईच्छाचंद
१ ,, जवानमल देवाजी
१ रा जवानमल प्रेमचदजी
१ ,, जीवाभाई वाडीलाल
१ ,, जुवारमल मानमल
१ ,, जुमखराम गोदडचद
१ ,, जेठमलजी मगनीरामजी
१ ,, जेसिंगलाल खीमचद पाटणवाला
१ ,, जेसिंगलाल मोतीलाल
१ , जेसिंगलाल ललुभाइ
१ जैनानद पुस्तकालय धनकोडा
१ रा झवेरचद ठाकरशी
१ ,, डाह्याभाई पेलाभाइ मेसाणावाला
१ ,, श्री शान्तिलाल कान्तिलाल
१ ,, तलकचद प्रेमचद
१ ,, ताराचद जसरामजजी
१ ,, ताराचद वर्धिचद
१ ,, ताराचद हीराचद
१ ,, तिलोकचद राजमल
१ , दलपतलाल मनसुखलाल
१ ,, दिगबरदास देवलाल
१ ,, दीपचद केवलचद चोटीलावाला
१ ,, दीपचद सुरजमलजी
१ ,, दुर्लभ देवाजी
१ ,, देवसी हरपाल
१ , देवीदास कानजी
१ , दोसी हीराचद मयाचद
१ ,, धीरजलाल सरूपचद
१ ,, नगीनदास रतनचंद
१ ,, नयमल मुलचद
१ , नरोतमदास भगवानदास
१ नवलाजी फुवाजी
१ ,, नानाभाइ दीपचद
१ ,, नेणसी आसु कच्छी
१ ,, न्यालचद सरूपचद पाटणवाला
१ ,, पारोबाइ धर्मपत्नी लाला हरदयाल जोधांवाला
१ ,, पारेख नेमचद रोजी
१ पालनपुर जैनशाला
१ रा पारी दलपतलाल चदुलाल
१ ,, पुनमचद मोतीचद
१ ,, पोखराज धनराज मुना
१ , पोपटलाल पुजाशा
१ ,, प्रागजी धनाजी

१ रा प्रभुलाल वेलजी
१ ,, फतेहचंद नवलचंद
१ ,, फुलचंद केशरीचंद उदडीवाला
१ ,, फुलचंद वेलजी
१ बहादीबाई धर्मपत्नी लाला अमरनाथ बब
१ बाई नरमेश्वर
१ बाई नाथीबाई
१ रा बापुलाल हीराचंद गांधी
१ ,, बापुलाल ठाकरलाल मुंबईगरा
१ ,, बापुलाल मोहनचंद कापडीया
१ ,, बाबू गोपीचंद बी ए एडवोकेट
१ ,, बाबू वेलचंद देवलाल
१ ,, बालाभाई जेसिंगलाल
१ ,, बालुभाई कस्तुरचंद
१ ,, भगचंद आदवजी
१ ,, भगुनमल जोराजी
१ ,, भीमाजी हुकमाजी
१ ,, भोगीलाल सूरचंद खंभातवाला
१ ,, भोगीलाल ताराचंद
१ , भोगीलाल दोलतचंद
१ , भोगीलाल दोलतचंद शाह
१ ,, मगनभाई कल्याणचंद
१ ,, मगनलाल गिरधरदास
१ ,, मगनलाल हीराचंद
१ ,, मणियार मोतीलाल नरपतलाल
१ ,, मणियार छिबालाल नरपतलाल
१ ,, मणिलाल मोहकमचंद
१ ,, मणिलाल एम् दुबेवीया
१ ,, मणिलाल वेनचंद
१ ,, मणिलाल लल्लुभाई
१ ,, मणिलाल वाडीलाल सुतरीया
१ ,, मणिलाल सुरजमलजी पेढी
१ ,, मीठालाल सुखाजी
१ ,, मीठालाल दुलीचंद
१ ,, मुनशी भगवीचंद मोणपोलवाला
१ ,, मेहता जीवराज ममलजी पालनपुरवाला
१ मोतीबेन हमदीवी
१ रा मोहनलाल बोटादला
१ ,, मोहनलाल लखमीचंद पालनपुरवाला
१ ,, मोहनलाल हरखचंद
१ रा मोहनलाल हीरचंद
१ ,, मोहनलाल धर्मसिंह
१ ,, मोहनलाल खोडीदास
१ ,, मधुभाई अमरचंद
१ ,, मथुरा टीकमलाल
१ ,, रतनचंद हीराचंद पाटणवाला
१ ,, रतनाजी जोराजी
१ ,, रतिलाल फुलचंद
१ ,, रतिलाल भीखाभाई
१ ,, रतिलाल साराभाई
१ ,, रामलाल केशवलाल मास्तर राधनपुरवाला
१ ,, रामदास धीलाचंद
१ ,, रीखवचंद बालचंद
१ ,, लखमीचंद लल्लुभाई
१ ,, लखमीचंद हेमराज कोठारी
१ ,, लाला अगरमल अगवाय
१ ,, लाला अमरनाथ हीरानाम गंदेरवाल
१ , लाला कपूरचंद मेहरचंद
१ ,, लाला कालुमल चांदनमल
१ , लाला कुन्दनलाल बनारसीदास
१ ,, लाला गुलजारीमल मुनशीराम
१ ,, लाला गोपीचंद किशोरीलाल
१ ,, लाला गोपीचंद रिखबदास
१ ,, लाला गोकुलमल अमरनाथ
१ ,, लाला गंगाराम बनारसीदास
१ ,, लाला चांदनमल रतनचंद
१ , लाला जयकिसनदास परसराम
१ ,, लाला तारचंद निहालचंद
१ ,, लाला तुलसीदास मोहनलाल (मेरठ)
१ , लाला धीरचंद किशोरीलाल
१ ,, लाला दौलतराम रतनचंद सराफ
१ ,, लाला दीनानाथ रामचंद
१ ,, लाला नेमदास रतनचंद
१ ,, लाला परशुराम जैन
१ , लाला परमानंद गौरीदत्त
१ , लाला फग्गुमल प्यारेलाल
१ ,, लाला महताबराय सराफ
१ ,, लाला महेरचंद प्रेमचंद मल हेरी
१ , लाला मुकुन्ददास देवराज
१ , लाला देवराज दुर्गादास गौहरी

1 रा लाला राधामल जोतिप्रसाद
1 ,, लाला राधामल नथुमल (जीरा)
1 ,, लाला रामप्रसाद किशोरीलाल जैन
1 ,, लाला रामशरणदास विलायतीराम,
1 ,, लाला वर्सतामल महरचद
1 ,, लाला सदासुखराय सुनीलाल
1 ,, लाला हरिचद इदसेन
1 ,, लाला हसराज (पपनाखा)
1 ,, छेरुभाइ न्यालचद
1 ,, वमल्सी जीतमल
1 ,, वाडीलाल कपलचद
1 ,, वाडीलाल मगनलाल
1 ,, वाडीलाल मगनलाल वडोदरावाला
1 ,, वाडीलाल हरजीवनदास (अमरेली)
1 ,, विठलदास हरखचद
1 ,, विठलदास गोविंदराम
1 ,, वीरचद पानाचद बी ए
1 ,, बीजपाल भोजराज कच्छपत्री
1 ,, वृजलाल वी पटेल
1 ,, वृजलाल भीखाभाई
1 ,, शेठ मघस
1 श्री आत्मानद जनपुस्तकभडार (माळेरकोटला)
1 श्री आत्मानद पुस्तकालय (अवापुर)
1 श्रीकपूरविजय जैन पाठशाला
1 श्री जैन लोंका गच्छ ज्ञानवर्धक लायब्रेरी (बालापुर)
1 श्री वर्धमानज्ञानमदिर
1 श्री वीरतत्त्वप्रकाशकमडल (शिवपुरी)
1 श्री सनातन जैन विद्यार्थी
1 श्री सीनोर सघ
1 श्री सुमति विजय जैन लायब्रेरी, कसूर (लाहोर)
1 श्री सघ खालगाह डोगरी
1 श्रीहसविजय जैन लाइब्रेरी (अमदावाद)
1 ,, ,, , (वडोदरा)
1 रा सरदारमल फुलचदजी
1 रा सुरचद नगीनचद, (मुबई)
1 ,, सुरचद नगीनचद (पाटण)
1 ,, सोनराज हेमराज सुत्ता
1 ,, हरलाल सुदरलाल
1 ,, हरजीवन गोपालजी
1 ,, हरिचद मीठाभाई
1 ,, हरिलाल मनसुखलाल
1 ,, हरिलाल सोभागचद
1 ,, हीमतलाल माधवलाल
1 ,, हीराचद फकीरचद
1 ,, हीराभाई अमीचद
1 ,, हीराभाई रामचद मलबारी
1 ,, हीरालाल रायचद

